श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति, बाहुबली, धर्मतीर्थ एवं आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान

आशीर्वाद

जगद्गुरु गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

वैज्ञानिक धर्माचार्य निर्यापकाचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

आशीर्वाद, सम्पादन एवं रचनाकार

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी

दिगम्बर जैनाचार्य निर्यापकाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचयित्री

आगमस्वरा गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पुस्तक का नाम	:	**श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली, धर्मतीर्थ एवं आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान**
आशीर्वाद	:	**गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव** **वैज्ञानिक धर्माचार्य निर्यापकाचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव**
संपादन एवं रचनाकार	:	**आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य निर्यापकाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव**
रचयित्री	:	**आगमस्वरा गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी**

सर्वाधिकार सुरक्षित	:	**रचनाकाराधीन**

प्रतियाँ	:	1000
संस्करण	:	**द्वितीय, वर्ष-2024**
प्रकाशक	:	**श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)** Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान	1.	**प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ**
	2.	**श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) मो. 9421503332**
मुद्रक	:	**राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर** 9829050791, Email : rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.स.	विषय	पेज नं.
1.	आशीर्वाद –ग.ग. कुन्थुसागरजी	4
2.	पूजा विधान का स्वरूप व फल –वैज्ञानिक आचार्य कनकनन्दीजी	5
3.	बहु उपयोगी विधान –आचार्य गुप्तिनंदी जी	8
4.	भक्ति मुक्ति की चाबी – ग.आर्यिका आस्थाश्री माताजी	9
5.	मण्डल	11
6.	विनय पाठ	13
7.	पूजा प्रारम्भ	14
8.	श्री नित्यमह पूजा	19
9.	गणधर वलय (ऋद्धि मंत्र)	23
10.	श्री आदिनाथ विधान 48 अर्घ	24
11.	श्री अजितनाथ विधान 48 अर्घ	36
12.	श्री संभवनाथ विधान 48 अर्घ	49
13.	श्री अभिनन्दननाथ विधान 48 अर्घ	57
14.	श्री सुमतिनाथ विधान 48 अर्घ	66
15.	श्री पदमप्रभु विधान 48 अर्घ	75
16.	श्री सुपार्श्वनाथ विधान 48 अर्घ	86
17.	श्री चन्द्रप्रभ विधान 48 अर्घ	95
18.	श्री पुष्पदंत विधान 48 अर्घ	103
19.	श्री शीतलनाथ विधान 48 अर्घ	115
20.	श्री श्रेयांसनाथ विधान 48 अर्घ	125
21.	श्री वासुपूज्य विधान 48 अर्घ	133
22.	श्री विमलनाथ विधान 48 अर्घ	144
23.	श्री अनंतनाथ विधान 48 अर्घ	153
24.	श्री धर्मनाथ विधान 48 अर्घ	162
25.	श्री शांतिनाथ विधान 48 अर्घ	171
26.	श्री कुंथुनाथ विधान 48 अर्घ	183
27.	श्री अरहनाथ विधान 48 अर्घ	192
28.	श्री मल्लिनाथ विधान 48 अर्घ	202
29.	श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान 48 अर्घ	214
30.	श्री नमिनाथ विधान 48 अर्घ	227
31.	श्री नेमिनाथ विधान 48 अर्घ	237
32.	श्री पार्श्वनाथ विधान 48 अर्घ	250
33.	श्री महावीर विधान 48 अर्घ	263
34.	श्री लक्ष्मी प्राप्ति विधान 48 अर्घ	277
35.	श्री बाहुबली विधान 48 अर्घ	287
36.	श्री धर्मतीर्थ विधान 48 अर्घ	299
37.	आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी विधान 56 अर्घ	309
38.	सर्व विधान प्रशस्ति	323
39.	समुच्चय अर्घ	324
34.	शांतिपाठ (हिन्दी) विसर्जन पाठ	325–326
41.	साहित्य–सूची	327–328

आशीर्वाद

प्रसन्नता इस बात की है कि हमारे शिष्य **आचार्य गुप्तिनंदीजी** ने तीर्थंकर भगवान के विधान लिखे हैं एवं अनेक विधानों का संपादन किया है। **गणिनी आर्यिकाश्री आस्थाश्री माताजी** द्वारा 24 विधान लिखे गये हैं, लक्ष्मी प्राप्ति और बाहुबली, धर्मतीर्थ विधान की रचना की गई है। विधान करने से महापुण्य बंधता है, कर्मों की निर्जरा होती है, आचार्यश्री व माताजी ने यह कार्य बहुत ही अच्छा किया है। आगे और भी इसी तरह रचना करते रहें, आपका क्षयोपशम ज्ञान बढ़ता रहे, ऐसा मेरा आशीर्वाद है।

– ग.ग. आचार्य कुन्थुसागर

पूजा विधान का स्वरूप व फल

एकापि समर्थेयं जिनभक्ति दुर्गतिं निवारयितुम्।
पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः ॥8॥
(पूज्यपाद, समाधिभक्तिः)

एक ही परम जिन भक्ति भक्त की समस्त दुगर्तियों का निवारण करने के लिये सातिशय पुण्य को संपादन करने के लिये एवं मोक्ष पदवी देने के लिये समर्थ होती है।

देवाधिदेव चरणे परिचरणं सर्वदुःखनिहरणम्।
कामदुहिकामदाहिनी परिचिनुयाददृतो नित्यम् ॥
(119, रत्नकरण्डक श्रा.)

श्रावक को आदर से युक्त होकर प्रतिदिन मनोरथों को पूर्ण करने वाले और काम वेदना को भस्म करने इन्द्रादिक द्वारा वंदनीय अरहंत भगवान् के चरणों में समस्त दुःखों को दूर करने वाली भगवान की पूजा करनी चाहिए–

देवेन्द्रचक्र महिमानममेयमानम्।
राजेन्द्र चक्रमवनीन्द्रशिरोऽर्चनीयम्॥
धर्मेन्द्र चक्रमधरीकृत सर्वलोकं।
लब्ध्वा शिवं च जिनभक्तिरूपैति भव्यः॥ 42॥
(रत्नकरण्डक श्रा.)

जिनेन्द्र भगवान में सातिशय अनुराग को रखने वाला जिनेन्द्र भक्त सम्यग्दृष्टि जीव अपरिमित प्रतिष्ठा और ज्ञान से सहित इन्द्र समूह की महिमा को प्राप्त करता है। 32 हजार मुकुट बद्ध राजाओं से पूजनीय चक्रवर्ती के चक्र रत्नों को प्राप्त करके चक्रवर्ती बनता है। केवल इस प्रकार अभ्युदय सुख का ही अधिकारी नहीं होता है परन्तु समस्त लोक से पूजनीय

धर्मचक्र के अधिपति होकर अर्थात् तीर्थंकर बनकर शेष त्रिलोक का प्रभु स्वरूप सिद्ध भगवान बनकर मोक्ष साम्राज्य को प्राप्त करता है।

* **अरहंत णमोकारं भावेण य जो करेदि पयदमदि।**
सोसव्वदुक्खमोक्खं पावदि अचिरेणकालेण॥ (मूलाचार)

जो उत्कृष्ट मतिवाला अरहंत भगवान को भावपूर्वक नमस्कार करता है वह समस्त दुःख से चिरकाल से अर्थात् अतिशीघ्र मुक्त होकर मुक्त अवस्था को प्राप्त करेगा।

आचार्यश्री वीरसेन स्वामी ने धवला में कहा है–

अरहंत भक्ति से तीन लोक को क्षुभित करने वाला सातिशय पुण्य स्वरूप और परम्परा मोक्ष के लिये निश्चित कारण है, इसी प्रकार का तीर्थंकर नामकर्म बंधता है। जिन्होंने घातियाँ कर्म को नष्ट कर केवलज्ञान के द्वारा सम्पूर्ण पदार्थों को देख लिया है वह अरहंत अथवा 8 कर्मों को नष्ट करने वाले सिद्ध और घातिया कर्मों को नष्ट करने वालों का नाम अरहंत (सकल परमात्मा) है क्योंकि कर्मशत्रु के नाश के प्रति दोनों में कोई भेद नहीं है। उन अरहंतों में जो गुणानुराग भक्ति होती है वही अरहंत भक्ति कहलाती है। इस अरहंत भक्ति से तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है।

शंका– केवल अरहंत भक्ति में अन्य भावनाओं की संभावना कैसे है ? (क्योंकि 16 भावनाओं से तीर्थंकर नाम कर्म बंधता है तो केवल अरहंत भक्ति से किस प्रकार बंध हो सकता है)

समाधान– अरहंत के द्वारा उपदिष्ट अनुष्ठान से अनुकूल प्रवृत्ति करने या उस अनुष्ठान के स्पर्शों को अरहंत भक्ति कहते हैं और यह दर्शन विशुद्धि आदि बिना ऐसा संभव नहीं है क्योंकि ऐसा मानने में विरोध है। अतएव अरहंत भक्ति तीर्थंकर प्रकृति का बंध 11वाँ कारण है।

उपरोक्त सिद्धांत से सिद्ध होता है कि जहाँ अरहंत भक्ति वहाँ दर्शन विशुद्धि, विनय संपन्नता आदि सम्पूर्ण भावना का सद्भाव है क्योंकि अरहंत भक्ति जब होती है तब हृदय में सम्यग्दर्शन के बिना यथार्थ अरहंत भक्ति हो ही नहीं सकती है। उपरोक्त समस्त सिद्धांत से सिद्ध होता है कि देवदर्शन, अरहंत भक्ति सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के लिये कारण, पाप कर्मों की निर्जरा के लिये कारण निधत्ति, निकाचित कर्म नष्ट के लिए कारण, राजा, महाराजा, चक्रवर्ती, तीर्थंकर प्रकृति के लिये कारण है। इसलिये मोक्ष पद की प्राप्ति के लिये कारण है। इसलिए आचार्य ने बताया कि 'वन्दे तद्गुण लब्धये'। भक्त ही भक्ति के माध्यम से सम्पूर्ण कर्म को नष्ट करके भगवान बन जाता है।

''दासोऽहं रटता प्रभो ! आया जब तुम पास।
'द' दर्शन ही हट गयो, ''सोऽहं' रहो प्रकाश।।
'सोऽहं सोऽहं' ध्यावतो रह ना सको सकार।
'दीप' अहं मम हो गयो अविनाशी अविकार।।

हमारे प्रिय शिष्य युवा कविहृदय आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी और मम प्रिय शिष्या गणिनी आर्यिका **'आस्थाश्री'** ने स्व-पर-विश्वकल्याणार्थे विभिन्न विधानों की रचनायें की हैं। एतदर्थ आचार्य गुप्तिनंदीजी ससंघ को व आस्थाश्री को मेरा मंगलमय शुभाशीर्वाद। पूजा के द्वारा पूजक पूज्य के गुरु-स्मरण-कीर्तन-अनुकरण से आध्यात्मिक विकास करें ऐसी शुभ भावनाओं के साथ-

-निर्यापकाचार्य कनकनन्दी

बहु उपयोगी विधान

श्री आदिनाथ, शांतिनाथ आदि चौबीस तीर्थंकरों की साधना व पंचकल्याणक से यह सम्पूर्ण भरत क्षेत्र पावन हुआ है। सभी तीर्थंकर जिनेन्द्र एक समान पूज्य होते हैं, चौबीस तीर्थंकरों के आध्यात्मिक रहस्यों को बताने वाला ये चौबीस तीर्थंकर विधान हमारे संघ से नया प्रकाशित हुआ है। इसमें चौबीस तीर्थंकरों के साथ श्री लक्ष्मी प्राप्ति विधान व श्री बाहुबली एवं धर्मतीर्थ विधान आदि पर **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने लघुकाय विधान की रचना की है।

सभी विधान संक्षिप्त सरल, रुचिकर, सारगर्भित और संकट मोचक हैं। तन–मन–धन से दुःखी प्राणियों के लिए बहुत ही उपयोगी है। सब दुःखों का निदान इस विधान में समाहित है।

आप सभी अवश्य इसका लाभ लें। माताजी लेखन कार्य में निरन्तर प्रयत्नशील रहती हैं, उनकी लेखनी अनवरत चलती रहे। निरन्तर श्रुत आराधना से उन्हें आगे निकट भव में महान् सर्वज्ञ पद की प्राप्ति हो। यही उनके लिए मेरा शुभाशीर्वाद, शुभकामना है।

विधान के लेखन, प्रकाशन, प्रचार, वितरण में सहयोगी, संघस्थ सभी साधु वृन्द, आर्यिका, क्षुल्लिका, व्रती, श्रावक वृन्द को हमारा यथायोग्य हमारा शुभाशीर्वाद।

पाठक, पूजक, मुद्रक, प्रकाशक, पुण्यार्जक सभी को हमारा बहुत सारा आशीर्वाद।

– आचार्य गुप्तिनंदी

भक्ति मुक्ति की चाबी

कम समय में हर व्यक्ति अधिक लाभ लेना चाहता है। आज किसी भी व्यक्ति को बोलो आप पूजा, अभिषेक करते हो, सबका एक ही जवाब रहता है। हमारे पास समय नहीं है। 24 घंटे व्यक्ति दूसरों के पीछे भाग रहा है। खुद के लिये एक घंटा भी नहीं निकाल रहा है। हम दूसरों के लिये कितना भी अच्छा करते जायें परन्तु उससे पुण्य का बंध नहीं होने वाला है। उल्टा उससे पाप का ही बंध होने वाला है।

हर व्यक्ति को पूजा–पाठ–विधान आदि करने का कभी–कभी समय मिलता है, उसमें भी अगर अधिक समय हो जाये तो बार–बार घड़ी पर नजर जाने लगती है। भगवान के चरणों में अधिक समय मन नहीं लगता है।

जब व्यक्ति किसी भी आपत्ति में फँस जाता है, कोई संकट आ पड़े या शरीर में कोई ऐसी बिमारी आ जाये जिसका कोई ईलाज ना हो। ईलाज तो है परन्तु धन (पैसा) उतना हमारे पास में नहीं हो, तब इन सब कष्टों से बचाने वाले गुरु और भगवान का दर हमारे सामने आता है। हम उनके पास जाते हैं, उनसे रास्ता पूछते हैं। इसलिये आप सब भक्तगण कम समय में हरदिन अकेले ही ये छोटे–छोटे विधान करके अपने जीवन की आपदा–विपदा संकट से मुक्ति पा सकें। अपनी हर समस्या हल कर सके, ऋद्धि–सिद्धी, सुख–शांति, धन–धान्य, ऐश्वर्य ज्ञान, बुद्धि, यश–कीर्ति को प्राप्त कर सकें। इस हेतु इन विधानों की रचना की है। अपनी हर मनोकामना को पूर्ण करने वाले इस धरती पर 24 तीर्थंकर भगवान वर्तमान में हुये हैं, 24 कामदेव हुये हैं और उनमें भी मुख्य रूप से भक्त जिन भगवान की अर्चा अधिक करते हैं। ऐसे ये छोटे–छोटे 24 विधान उन सब भक्तों के लिये लिखे हैं।

सभी भक्त हर रोज ये विधान करें, अपने दुःख–संकटों से मुक्ति पायें। हम श्रद्धा भक्ति से जितना प्रभु का नाम, जाप, पूजा पाठ, स्तुति, स्तोत्र पढ़ते

हैं। उतना ही हमें सुख–शांति का अनुभव होता है। धर्म करने के हमारे पास कई प्रकार के साधन है, कैसे भी हम अपने मन को धर्म में थोड़ी देर के लिये भी लगायेंगे तो भी अनंत कर्मों की निर्जरा कर लेंगे, धर्म करते हुये पूजा–पाठ मंत्र जाप करते हुये जो आनंद की अनुभूति होती है, प्रसन्नता मिलती है, सुख और शांति मिलती है वही धर्म है। वह धर्म ही हमारे भव–भव के दुःखों से छुड़ाने वाला है। संसार के दल–दल से छुड़ाकर मोक्ष पहुँचाने वाला है। इस छोटी सी विधान की पुस्तक में 'श्री आदिनाथ विधान' से लेकर'श्री महावीर विधान', इसमें भी अजितनाथ, वासुपूज्य, मुनिसुव्रत, नेमीनाथ ये चार विधान **आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** ने बनाये हैं। 'लक्ष्मी प्राप्ति विधान', 'श्री बाहुबली विधान', श्री धर्मतीर्थ विधान एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान ये सभी विधान 20–25 मिनिट में आप आराम से कर सकते हैं। हर दिन आप ये विधान करते रहें। सभी माताओं की विशेष इच्छा थी हमारे लिये आप छोटे–छोटे विधान लिखकर दे दो, हम हर दिन विधान करते हैं। उनकी भावना को ध्यान में रखते हुये आचार्यश्री ने व मैंने ये 24 विधान छोटे रूप में बनाये हैं।

हमारे धर्मतीर्थ पर विराजमान आदिनाथ भगवान के अतिशय से ये सब विधान अल्प समय में ही पूर्ण हुए हैं। भगवान आदिनाथ–शांतिनाथ–पार्श्वनाथ को कोटि–कोटि नमोऽस्तु–2

दीक्षा–शिक्षादाता **जगद्गुरु ग. गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी गुरुदेव** वैज्ञानिक **धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव** को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु....

आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव ने इन सब विधानों का संपादन किया है। मैं उनके चरणों में बारम्बार त्रय भक्ति पूर्वक नमोऽस्तु करती हूँ।

मुद्रक, पूजक, पाठक, पुण्यार्जक सभी भक्तों को आशीर्वाद।

– गणिनी आर्यिका आस्थाश्री

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ॥1॥

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार॥2॥

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास॥3॥

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल॥4॥

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष॥5॥

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय॥6॥

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें॥1॥

सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो॥2॥

अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी॥3॥

महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता॥4॥

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता॥5॥

अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी॥6॥

जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता॥7॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत् के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमात्मा का अवलम्बन, आत्मा को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।2।।
अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।3।।
स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।4।।
फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।5।।
अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।6।।
मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।7।।
उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।8।।
आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आशीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।9।।
क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।10।।

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज- हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन-माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म-जरा-मृत हरता हूँ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोड़ूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा- **काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।**
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **जयमाला की माल से, गूंजे जय-जयकार।**
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर-नार।।

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ।।
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ।।1।।

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ।।
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि-सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले।।2।।

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत-शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन।।
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन।।3।।

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता।।

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा॥4॥
विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन॥
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर॥5॥
कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन॥
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी॥6॥
श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरूओं को है वंदन॥7॥
श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें॥
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं (णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री आदिनाथ भगवान

परिचय

महापुराण में भगवान ऋषभदेव के 'दशावतार' नाम भी प्रसिद्ध हैं–

(1) विद्याधर राजा महाबल (2) ललितांग देव (3) राजा वज्रजंघ (4) भोगूमिज आर्य (5) श्रीधर देव (6) राजा सुविधि (7) अच्युतेन्द्र (8) वज्रनाभि चक्रवर्ती (9) सर्वार्थ सिद्धि के अहमिन्द्र (10) भगवान ऋषभदेव।

इन भगवान को ऋषभदेव, वृषभदेव, आदिनाथ, पुरुदेव और आदि ब्रह्मा भी कहते हैं।

अन्य नाम	–	आदिनाथ, ऋषभनाथ, वृषभनाथ
शिक्षाएँ	–	अहिंसा, अपरिग्रङ

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	नाभिराज
माता	–	महारानी मरूदेवी
पत्नियाँ	–	यशस्वती, सुनंदा,
पुत्र	–	भरत चक्रवर्ती, बाहुबली और वृषभसेन,
		अनन्तविजय, अनन्तवीर्य आदि 101 पुत्र
पुत्री	–	ब्राह्मी और सुन्दरी

पंचकल्याणक

गर्भ	–	आषाढ़ कृष्ण पक्ष द्वितीया
जन्म	–	चैत्र कृष्ण 9
जन्म स्थान	–	अयोध्या
वैराग्य निमित्त	–	नीलांजना का मरण
दीक्षा	–	चैत्र माह, कृष्ण पक्ष नवमी
दीक्षा स्थान	–	प्रयाग
सह दीक्षित मुनि	–	4000
प्रथम पारणा स्थान	–	हस्तिनापुर

प्रथम दाता	–	राजा श्रेयांसकुमार
पारणा	–	इक्षुरस (तेरह महीने 8 दिन बाद)
पारणा तिथि	–	अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ला तीज)
कैवल्य ज्ञान	–	फाल्गुन कृष्ण पक्ष ग्यारस
समोशरण का विस्तार	–	12 योजन
गणधर	–	वृषभसेन आदि 84
कुल मुनि	–	84000
गणिनी	–	ब्राह्मी सुन्दरी
कुल आर्यिका	–	350000 (साढ़े तीन लाख)
श्रावक	–	तीन लाख
श्राविका	–	पाँच लाख
मोक्ष	–	माघ कृष्ण 14
मोक्ष स्थान	–	कैलाश पर्वत (अष्टापद)

लक्षण

रंग	–	स्वर्ण
चिह्न	–	वृषभ (बैल)
चैत्य वृक्ष	–	न्यग्रोध

शासक देव

यक्ष	–	गोमुख देव
यक्षिणी	–	चक्रेश्वरी
क्षेत्रपाल	–	(1) जयभद्र (2) विजयभद्र (3) अपराजित (4) मणिभद्र

***

इच्छापूरक श्री आदिनाथ विधान

स्थापना (अडिल्ल छन्द)

युग निर्माता धर्म प्रवर्तक आदि जिन।
आद्य बंधु पुरुदेव प्रथम तीर्थेश जिन।।
कर युग में हम पुष्प सजा आह्वान कर।
पायें सिद्धी आदिनाथ विधान कर।।

ॐ ह्रीं श्री आद्य बंधु धर्म प्रवर्तक इच्छापूरक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

प्रासुक चढ़ाया हमने प्रभु नीर आपको।
भक्ति से सिर झुकाया हमने नाथ आपको।।
हे आदिनाथ ! आपका विधान हम करें।
त्रैलोक्य पूज्य नाथ से त्रैलोक्य सुख वरें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म चक्र को चलाया प्रथम आपने।
हमने चढ़ाया गंध पाप ताप नाशने।। हे आदिनाथ..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु बने बिना किसी को मोक्ष ना मिले।
अक्षत चढ़ायें आपको जिन पद हमें मिले।। हे आदिनाथ..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! आपने ही कृषि कर्म सिखाया।
पुष्पों से नाथ आपका दरबार सजाया।। हे आदिनाथ..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पन प्रकार की मिठाई शुद्ध बनायें।
लेकर मिठाई थाल हम जिनवर को चढ़ायें॥
हे आदिनाथ ! आपका विधान हम करें।
त्रैलोक्य पूज्य नाथ से त्रैलोक्य सुख वरें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस कर्म भू पे आपने दी ज्ञान रोशनी।
हम आरती करें प्रभू दो ज्ञान रोशनी॥ हे आदिनाथ.. ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों करम को नाश प्रभु मोक्ष को गये।
सब कुछ सिखाके आप सिद्ध आप्त हो गये॥ हे आदिनाथ.. ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार में सर्वोच्च श्रेष्ठ मोक्षफल कहा।
सर्वोच्च फल की प्राप्ति हेतु भक्त भज रहा॥ हे आदिनाथ.. ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घों की थाल को सजा हम नित्य चढ़ायें।
श्री धर्मतीर्थ नाथ सबके कष्ट मिटायें॥ हे आदिनाथ.. ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- आदिनाथ भगवान का, करते भव्य विधान।
सुख शान्ति हमको मिले, माँगे यह वरदान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(दोहा)

नगर अयोध्या में हुआ, गर्भ जन्म कल्याण।
उन कल्याणक में हुआ, त्रिभुवन का कल्याण॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं अयोध्या तीर्थे गर्भ जन्म मंगल मंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम आये प्रयाग में, धरा दिगम्बर वेश।
महातीर्थ वह बन गया, पा पहला मुनिवेश॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रयाग तीर्थे तपोमंगल मंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निराहार इक वर्ष तक, रहे आदि भगवान।
धन्य किये तिथि तीर्थ सब, ले आहार भगवान॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षय तृतीया पर्वे हस्तिनापुर तीर्थे आहारदान प्रवर्तकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टापद कैलाश में, ज्ञान मोक्ष कल्याण।
मोदक लेकर हम भजें, आदिनाथ भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टापद कैलाश तीर्थे ज्ञान मोक्ष मंगल मंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चूलगिरी बावनगजा, बावनगज भगवान।
हम पूजें दिन रात बस, आदिनाथ भगवान॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं चूलगिरी बावनगजा तीर्थ स्थित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरती से प्रगटे प्रभु, आदिनाथ भगवान।
चाँदखेड़ी कुण्डलपुरी, रानीला जिन थान॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं चाँदखेड़ी कुण्डलपुर रानीला अतिशय क्षेत्रस्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मांगीतुंगी ऋषभगिरी, प्रतिमा अति विशाल।
भातकुली महाराष्ट्र के, जिनवर करें निहाल॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं मांगीतुंगी ऋषभगिरी भातकुली तीर्थस्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ राजे प्रथम, आदिनाथ भगवान।
इच्छापूरक नाथ का, करते हम गुणगान॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित इच्छापूरक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

युगब्रह्मा आदीश्वर भगवन्, सबके तारणहारे।
इस धरती पर आकर भगवन्, सबका भाग्य संवारें॥
आदिनाथ जय आदिनाथ जय, सब जयघोष लगायें।
ऋषभदेव की अर्चा करने, हम सब मिलकर आये॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगब्रह्मा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ अयोध्या में तुम जन्मे, कर्मभूमि के पहले।
काल तीसरा जब अंतिम था, तब प्रभु जन्मे पहले॥ आदिनाथ.. ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदहवें कुलकर नाभि तो, पन्द्रहवें आदीश्वर।
कुल संस्थापक और प्रवर्तक, कहलाये प्रभु कुलकर॥ आदिनाथ.. ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगप्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाभिराय नृप माँ मरुदेवी, ऐसे सुत को पायें।
प्रभु के मात-पिता बनने से, महापुरुष कहलायें॥ आदिनाथ.. ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं नाभिनंदन श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य जनक-जननी जिनवर के, जग में पूजें जायें।
निश्चित प्रभु के मात-पिता भी, आगे शिवपुर पायें॥ आदिनाथ.. ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं जनक जननी महिमोदिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, चौबीस जिन बतलाये।
सब जिनवर का मेरुगिरि पर, सुरपति न्हवन कराये॥ आदिनाथ.. ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं मेरुपुरुषाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाण्डुक वन व मेरू पूज्य है, आगम महिमा गाये।
पाण्डुक गिरी पर मंत्र बोलकर, प्रभु को इन्द्र बिठाये॥ आदिनाथ.. ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामंत्र रूपाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते फिर अभिषेक नाथ का, घंटा वाद्य बजायें।
ॐ ह्रीं मंत्रों की ऊर्जा, स्वर्गों तक फैलायें॥ आदिनाथ.. ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऊर्जाशक्ति प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद

जब भोग भूमि का अंत हुआ, तब प्रजा शरण प्रभु के आई।
हे नाथ ! करो रक्षा सबकी, कुछ मार्ग दिखाओ जिनरायी॥
हे आदि प्रभो ! तव चरणों में, हर प्राणी की रक्षा होती।
हम आदि विधान महान् करें, पायें सम्यक् पथ की ज्योती॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं रक्षाधिपतये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षक बनकर भगवन् तुमने, जीने का मार्ग बताया था।
असि–मषि आदिक की शिक्षा दे, जीवन जीना सिखलाया था॥ हे आदि. ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व संरक्षकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वो काल तीसरा था भगवन्, जब तुमने कृतयुग सिखलाया।
षट् कर्म व्यवस्था को भगवन्, हम सबने ही तब अपनाया॥ हे आदि. ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं षट्कर्म उपदेशकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको तीर्थंकर पिता मिलें, उन पुत्र पुत्री का क्या कहना।
दिन–रात आपके साथ रहे, बन कर वे प्रभु पथ का गहना॥ हे आदि. ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थ जनकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षा दी एक शतक सुत को, द्वय पुत्री को लिपि ज्ञान दिया।
सब पुत्र मुनि बन मोक्ष गये, ऐसा प्रभु ने सद्ज्ञान दिया॥ हे आदि. ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानप्रदाकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वय कन्या प्रभु से दीक्षा ले, जग को यह शिक्षा देती हैं।
नारी भी व्रत पालन करके, रत्नत्रय गुण पा लेती हैं॥ हे आदि. ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं नारीवर्ग उद्धारकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पंच कल्याण मनाने को, चारों निकाय के सुर आते।
सुर कन्यायें नर्तन करती, गुणगान प्रभु का हम गाते॥ हे आदि. ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्णिकाय देवपूजिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के हर कार्य पूर्व, अभिषेक देवगण करते हैं।
जन्मोत्सव व राज्याभिषेक, नाना द्रव्यों से करते हैं॥
हे आदि प्रभो ! तव चरणों में, हर प्राणी की रक्षा होती।
हम आदि विधान महान् करें, पायें सम्यक् पथ की ज्योती॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं बहुविध उत्सवे अभिषिक्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

हे नाथ ! हम पढ़ते बहुत, पर याद कुछ रहता नहीं।
क्षण एक में सब भूलते, यह दुःख सहा जाता नहीं॥
विद्यापति वृषभेश का, हम सब विधान रचा रहे।
दुःख संकटों से मुक्ति हो, यह प्रार्थना हम कर रहे ॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धिप्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौभाग्यवति नारी वही, कुल को करे रोशन सदा।
संतान हो धर्मात्मा, निष्पाप निर्व्यसनी सदा॥ विद्यापति..॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं सौभाग्यवती नारी-धर्मात्मा संतान प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवा गुरु की जो करे, उनको मिले ना दुःख कभी।
कर्तव्य छह जो पालते, मिलते उन्हीं को सुख सभी ॥ विद्यापति..॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावक धर्मोपदेशकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धर्म व गुरु को तजे, पाये वो संकट अनगिना।
आयु घटे चिंता बढ़े, दुःख ना मिटे प्रभु के बिना ॥ विद्यापति..॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुःखहरणाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होती कई बीमारियाँ, मन धर्म से जब दूर हो।
सौभाग्य भी दुर्भाग्य बन, तब पुण्य चकनाचूर हो ॥ विद्यापति..॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वरोग-दुर्बुद्धि निवारणाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार बंधु जन सभी, किंचित् मधुर ना बोलते।
बोले तो मुख से विष झरे, ऐसे वचन सब बोलते।।
विद्यापति वृषभेश का, हम सब विधान रचा रहे।
दुःख संकटों से मुक्ति हो, यह प्रार्थना हम कर रहे ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुमधुर वाणी प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूलें ना हम प्रभु आपको, भूले नहीं जिन शास्त्र को।
पूजा करें ऋषियों की हम, पूजें सदा जिनराज को।। विद्यापति.. ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनभक्ति प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दाता विधाता मात-पितु, आये शरण हम आपकी।
हमको चरण शरणा मिले, अरजी सुनो इस दास की।। विद्यापति.. ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्बंधु रूपाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

आदिनाथ भगवान, सब दुःख संकटहर्त्ता।
कर दो मम उत्थान, तुम ही सब सुखकर्त्ता।।
ऋषभदेव का आज, हम विधान करते हैं।
ऋषि मुनियों के नाथ, हम तुमको भजते हैं।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसंकटहराय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में हो जब व्याधि, पीड़ा धर्म छुड़ाये।
हरने हम सब व्याधि, प्रभु की भक्ति रचायें।। ऋषभदेव... ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं शारीरिक व्याधि निवारकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकस्मिक दुर्योग, परिजन में घट जाये।
दुःख देता ये शोक, प्रभुवर मुक्त करायें।। ऋषभदेव... ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं आकस्मिक शोकादि निवारकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष व मोह, भव-भव भ्रमण कराये।
इन सबसे उद्धार, प्रभुवर आप करायें।।
ऋषभदेव का आज, हम विधान करते हैं।
ऋषि मुनियों के नाथ, हम तुमको भजते हैं।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं राग-द्वेष-मोहादि निवारकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म हमारे आठ, क्या-क्या खेल दिखायें।
हमको हसा-रुलाय, फिर अघ बंध करायें।। ऋषभदेव... ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं वसुकर्म बंध निवारकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाँधव या परिवार, सब स्वारथ के साथी।
तन छूटे अनिवार, जिनवर सच्चे साथी।। ऋषभदेव... ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं निस्वार्थ बंधु रूपाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन सदैव हो स्वस्थ, धर्म करें हम मन से।
हो प्रभु गुण में मस्त, बोलें भजन वचन से।। ऋषभदेव... ।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थ मन-वच-काय प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन तुम्हें त्रिकाल, है जिनदेव हमारा।
पूजें तुम्हें त्रिकाल, देना हमें सहारा।। ऋषभदेव... ।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल पूजिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त व्यसन को त्याग, जो भविजन व्रत पाले।
व्रत संयम तप दान, करके पुण्य कमाले।। ऋषभदेव... ।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्रत-संयम प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पुण्य दिलाय, ये प्रभुवर की वाणी।
सर्वकर्म नश जाय, कहते गुरुवर ज्ञानी।। ऋषभदेव... ।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकर्म विनाशकाय-पुण्य प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पूजा के भाव, लेकर प्रभु दर आये।
प्रभु चरणों की छाँव, हम सबको मिल जाये॥
ऋषभदेव का आज, हम विधान करते हैं।
ऋषि मुनियों के नाथ, हम तुमको भजते हैं॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं भक्तजन शरण प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गति से बच जाय, जो करते जिन पूजा।
प्रचुर संपदा पाय, बढ़े पुण्य बल दूजा॥ ऋषभदेव... ॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुर्गति निवारकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व सुखों का दान, हम प्रभुवर से पाते।
हो जाये कल्याण, इस हित प्रभु गुण गाते॥ ऋषभदेव... ॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकल्याणकारकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होता भव दुःख नाश, आगमोक्त पूजा से।
प्रभु चरणों में वास, मिलता जिन पूजा से॥ ऋषभदेव... ॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं भवदुःखनाशकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ प्रथमेश, कर जिन धर्म प्रवर्तन।
पूजें उन्हें गणेश, भाव सहित कर अर्चन॥ ऋषभदेव... ॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ प्रवर्तकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा पूरक नाथ, इच्छा पूरी करते।
होवे जो नतमाथ, उसके सब दुःख हरते॥ ऋषभदेव... ॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं इच्छापूरक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

हे नाथ ! हम तुम सम बने, इस हेतु यह आराधना।
आराधना दे साधना, हो सर्व पाप विराधना॥

हम लाये आठों द्रव्य नित, श्रीफल ध्वजा व दीप संग।
पूर्णार्घ अर्पण हम करें, जिनभक्ति का चढ़ जाये रंग।।

ॐ ह्रीं अर्हं विद्या, बुद्धि, सौभाग्य, आरोग्य, धन, धान्य, ऐश्वर्य, सन्तान, रत्नत्रय प्रदायक, सर्वदुःख संकट, कोरोना रोग विनाशक श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री इच्छापूरक आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवतार छंद

श्री आदिनाथ भगवान, अरजी सुन लेना।
करते हम सब गुणगान, सब दुःख हर लेना।।
सब हरो अशांति नाथ, शांति सबको मिले।
कमलादि सजा द्रव्य हाथ, लाये पुष्प खिले।।

शांतये शांतिधारा/दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– जयमाला हम गा रहे, पाने दिव्य प्रकाश।
करें संस्तुति वंदना, अंतस् हो प्रभु वास।।

(शेर छंद)

हे प्रथम सूर्य आद्यबंधु आदिनाथ जी।
इस वर्तमान युग में प्रथम आदिनाथ जी।।
मरुदेवी लाल आपने जग को किया निहाल।
पितु नाभिराय ने किया जनता को मालामाल।।1।।

कल्याण पाँच आपके करते सदा कल्याण।
निज पर का आपने किया कल्याण ही कल्याण।।
जो चाहते कल्याण वो ही भक्ति रचायें।
कल्याण की शुभ भावना से पाठ रचायें।।2।।

जिसने जहाँ जिस भावना से आपको ध्याया।
उसको प्रभुवर आपने सन्मार्ग दिखाया।।
सीता व सोमा अंजना श्रीपाल भी ध्यायें।
मैना मनोरमा के प्रभु कष्ट मिटायें।।3।।
आचार्य मानुतंग को बंधन से छुड़ाया।
श्री वादिराज जी का कुष्ठ रोग मिटाया।।
कविराज धनंजय के सुत का जहर उतारा।
प्रभु आपने चतुः संघ को संसार से तारा।।4।।
श्री धर्मतीर्थ क्षेत्र में प्रभु आदि से आये।
आचार्य गुप्तिनंदी धर्म तीर्थ बनाये।।
इसमें गुरु ने आपको प्रभु पहले बिठाया।
तुमने भी धर्मतीर्थ को दिन-रात बढ़ाया।।5।।
सम्पूर्ण इच्छा पूर्ण करे देव आदिनाथ।
सब रोग शोक कष्ट हरें देव आदिनाथ।।
परिवार विद्या ऋद्धि-सिद्धि देय आदिनाथ।
धन धान्य शांति सौख्य देवें देव आदिनाथ।।6।।
करते रहे पूजा सदा हम देव आपकी।
मन में सदा छवि रहे जिनदेव आपकी।।
जब तक न मुक्ति प्राप्त हो हम भक्ति नित करें।
'आस्था' से हम भी एक दिन मुक्ति अवश वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व रोग, शोक, दुःख संकट, अपमृत्यु, कष्ट पीड़ा, दुर्घटना, अपघात, तनाव, चिंता, कोरोना रोग विनाशक, कामनापूर्ण, कामधेनु, कल्प वृक्ष प्रज्ञा प्रदायकाय, सुख, शांति, समृद्धि, यश, कीर्ति, ऋद्धि-सिद्धि प्रदायकाय, आदिब्रह्मा, युगपवर्तक श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित इच्छापूरक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- समिति गुप्ति हम धारकर, धारें समता भाव।
ऋषभदेव के चरण की, मिले सदा सुख छाँव।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

आरती (तर्ज - मेरा मन डोल...)

जय-जय बोलो, आरती कर लो, श्री आदिनाथ विधान की।
हम करें सभी मिल आरतियाँ।।

ऋषभदेव प्रभु आदिनाथ जी, नाभिराय सुत प्यारे।
मरुदेवी के राजदुलारे, प्रभु तीर्थेश हमारे-2
मूरत प्यारी, मंगलकारी, श्री आदिनाथ भगवान की...हम करें सभी...

सर्व प्रजा को प्रभुवर तुमने, जीवन कला सिखाई।
ब्राह्मी सुन्दरी द्वय कन्या को, प्रज्ञा घुट्टी पिलाई-2
हम भी ध्यायें, आरती गायें, श्री ऋषभदेव भगवान की...हम करें सभी...

सांझ सवेरे नाथ आपके, दर पे दीप जलायें।
धर्मतीर्थ के आप प्रवर्तक, सबके कष्ट मिटायें-2
'आस्था' से करें, भक्ति से करें, श्री वृषभनाथ भगवान की...हम करें सभी...

***

धर्मतीर्थ के आदिनाथ भगवान का अर्घ
(तर्ज- माईन-माईन...)

धर्म तीर्थ पर आदिनाथ जी, सबसे पहले आये।
हम सब मिलकर आदिनाथ को, आठों द्रव्य चढ़ायें।।
बोलो आदिनाथ की जय, बोलो वृषभनाथ की जय..-2

थाल सजाकर, ताल बजाकर, प्रभु को अर्घ चढ़ाये।
धर्मतीर्थ के आदिनाथ को, हम सब शीश झुकाये।।
श्री आचार्य गुप्तिनंदी जी-2, धर्मतीर्थ बनवाये।
अतिशय सुन्दर स्वर्ग सरीखा, सबके मन को भाये।।
बोलो आदिनाथ की जय, बोलो वृषभनाथ की जय..-2

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ विराजित इच्छापूरक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा– आदिब्रह्म आदीश जिन, नमन प्रथम भगवान।
पंच प्रभु को है नमन, गणधर प्रभु गुणखान।।
जिनवाणी माँ को नमन, नमन सर्व जिनराज।
चालीसा प्रभु का पढ़ें, सिद्ध होय सब काज।।

चौपाई

प्रथम सूर्य जिन आदि जिनेशा, पूजें तीनों लोक हमेशा।
हर दिन हम चालीसा गायें, जिन गुण गा मनवा हर्षाये।।1।।
काल तीसरे में प्रभु जन्में, नर–नारी हर्षें घर–घर में।
नाभिराज के राजदुलारे, मरुदेवी के नयन सितारे।।2।।
जन्म अयोध्या नगर कहाये, भरत क्षेत्र चमकाने आये।
नगर पूज्य प्रभु से हो जाये, देव पूजने निशदिन आये।।3।।
पूर्व भवों की सुखद कहानी, जिनवाणी से हमने जानी।
जिनवाणी दस भव बतलाये, प्रभु पुराण नित पुण्य बढ़ाये।।4।।
नाम महाबल भूप तुम्हारा, स्वयंबुद्ध मंत्री को प्यारा।
मुनि आदित्यगति बतलाये, दसवें भव जिनवर पद पायें।।5।।
करी समाधि स्वर्ग सिधाये, ललितांग तुम देव कहाये।
आयु छह महीने रह जाये, प्रभु की पूजा पाठ रचायें।।6।।
महामंत्र को जपते जायें, स्वर्ग लोक तज भू पर आये।
वज्रजंघ राजा बन जाये, वन में मुनिचर्या करवायें।।7।।
श्रीमति रानी संग वन जायें, श्रमण युगल को वे पड़गायें।
मुनियों को आहार करायें, मनुज चार पशु अति हर्षायें।।8।।
उत्तम भोग भूमि में जायें, उत्तम सम्यक्दर्शन पायें।
श्रीधर देव आप बन जायें, उसी स्वर्ग में पशु नर जायें।।9।।
सुविधि राजा व्रत अपनाये, अंत समय में महाव्रत पायें।
स्वर्ग सोलवें में मुनि जायें, अच्युतेन्द्र बन पुण्य कमायें।।10।।

वज्रनाभि चक्री बन जायें, तीर्थंकर के सुत कहलायें।
उनसे ही मुनि दीक्षा पायें, दिव्य भावना मुनिवर भायें॥11॥
करें समाधि दिव सुख पायें, मुनि सर्वार्थसिद्धि में जायें।
तैंतीस सागर आयु पाये, भक्ति में नित समय बितायें॥12॥
अंतिम जन्म नाथ जब धारें, माता के उर प्रभु पधारें।
नाभिराय सुत ऋषभ जिनेशा, पूजें मरुदेवी तीर्थेशा॥13॥
मध्य लोक को स्वर्ग बनाया, स्वर्ग लोक धरती पे आया।
मात-पिता सुर जन्म मनायें, इस युग में जिन प्रथम कहाये॥14॥
पंचकल्याणक धारी स्वामी, केवलज्ञानी अन्तर्यामी।
सांसारिक सुख वैभव छोड़ें, मुनि बन कर्म श्रृंखला तोड़ें॥15॥
जिस तिथि को कल्याणक आये, वो तिथि भी मंगल कहलाये।
जिस दिन प्रथम आहार हुआ है, वो दिन आखातीज हुआ है॥16॥
श्री कैलाश शैल प्रभु आये, केवलज्ञान सूर्य प्रगटायें।
वहीं मोक्ष कल्याणक पायें, प्रभु सम हम भी जिनपद पायें॥17॥
हर दिन हम चालीसा गायें, रोग शोक से मुक्ति पायें।
संकट में ना हम घबरायें, प्रभु के नाम वचन नित गायें॥18॥
सर्दी खाँसी ज्वर नश जायें, आदि प्रभु के गुण हम गायें।
इच्छापूरक नाथ कहाये, सबकी इच्छा पूर्ण करायें॥19॥
'गुप्तिनंदी' गुरु तुम्हें बिठायें, धर्मतीर्थ की शान बढ़ाये।
आदिनाथ को शीश झुकायें, नाम मंत्र प्रभु पाप नशायें॥20॥

दोहा- चालीसा जिन ऋषभ का, चालीस दिन कर पाठ।
करो-कराओ भक्ति से, दीप-धूप के साथ॥
सर्व रोग दुःख दूर हो, नष्ट होय सब पाप।
'आस्था' से निशदिन करें, आदिनाथ का जाप॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं इच्छापूरक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

श्री अजितनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	राजा जितशत्रु
माता	–	विजयादेवी
आयू	–	72 लाख पूर्व
शरीर ऊँचाई	–	450 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या
जन्म	–	माघ शुक्ल 10
जन्म स्थान	–	अयोध्या
दीक्षा	–	माघ शुक्ल दशमी
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	राजा ब्रह्मदत्त
प्रथम आहार	–	खीर
गणधर	–	90 सिंहसेन आदि
समोशरण में कुल मुनि	–	1 लाख
गणिनी	–	आत्मगुप्ता
आर्यिका	–	प्रकुब्जा आदि, 3,20,000
श्रावक	–	तीन लाख
श्राविका	–	पाँच लाख
कैवल्य ज्ञान	–	पौष शुक्ल पक्ष एकादशी
मोक्ष	–	चैत्र शु. 5
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	स्वर्ण
चिह्न	–	हाथी
चैत्यवृक्ष	–	सप्तपर्ण

शासक देव

यक्ष	–	महायक्ष
यक्षिणी	–	रोहिणी
क्षेत्रपाल	–	(1) क्षेमभद्र (2) क्षांतिभद्र (3) श्रीभद्र (4) शांतिभद्र

जिनगुण रहस्य श्री अजितनाथ विधान

स्थापना (कुसुमलता छंद)

भरत क्षेत्र के वर्तमान के, चौबीस तीर्थंकर भगवान।
उनमें चौथे युग में जन्मे, पहले अजितनाथ भगवान।।
अजितनाथ दूजे तीर्थंकर, जिनने जीता मोह महान्।
उन सम कर्म विजय करने हम, पुष्प लिये करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

अजितनाथ के पाद में, जल की दे त्रय धार।
जन्मादिक् त्रय रोग का, करने हम परिहार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के चरण सरोज में, चर्चें सुरभित गंध।
भव संताप विनाश का, यह है श्रेष्ठ प्रबंध।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत मोती रत्न से, पूजें हम जिन पाद।
अक्षय पद जिससे मिले, मिटें सभी अवसाद[1]।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केवड़ा मोगरा, बहुविध पुष्प सजाय।
चढ़ा प्रभु के पाद में, हम निज काम नशाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन शुचि मनभावने, अर्पें भर–भर थाल।
अजितनाथ की अर्चना, करती अवश निहाल।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. दुःख।

अजितनाथ भगवान को, जलते दीप चढ़ाय।
करें दीप से आरती, मोह तिमिर विघटाय।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ के द्वार में, चढ़ा सुगंधित धूप।
आठों कर्म विनाश हम, पायें रूप अनूप।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्ऋतु के सब फल लिये, दाड़िम आदि अपार।
अर्चें अजित जिनेश को, पाने शिवपुर द्वार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ बना वसु द्रव्य से, पूजें हम जिनराज।
अजित अर्चना से मिले, शिव अनर्घ साम्राज्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- अजितनाथ भगवान का, करते भव्य विधान।
पुष्पांजलि अर्पण करें, करने निज उत्थान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

जिनपूजा मुनि सेवा करके, भव-भव पुण्य कमाया।
उसी पुण्य से अतिशय सुन्दर, रूप आपने पाया।।
अजितनाथ सम जिनगुण सम्पत्, पाने हम नित ध्यायें।
अजितनाथ सम कर्म जीतने, उनको अर्घ्य चढ़ायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशय सुन्दर रूप सहजातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर मुनिवर के पद युग में, पहले गंध लगाया।
उसी पुण्य से हे जिन ! तुमने, देह सुगंधित पाया।। अजितनाथ..।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशय सुगंधित देह सहजातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि पर शीतोपचार क्रिया से, पहले पुण्य कमाया।
इससे स्वेद रहित सुरभित तन, हे जिन ! तुमने पाया॥
अजितनाथ सम जिनगुण सम्पत्, पाने हम नित ध्यायें।
अजितनाथ सम कर्म जीतने, उनको अर्घ्य चढ़ायें॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वेद रहित तन सहजातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने बल का कण–कण क्षण–क्षण, लाभ लिया जो तुमने।
इससे अनिहारी उत्तम तन, प्राप्त किया जिन ! तुमने॥ अजितनाथ..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं निहार रहित तन सहजातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव–भव में प्रभु मौन रहे शुभ, वचन योग अपनाया।
इससे हित–मित–प्रिय वचधारी, तीर्थंकर पद पाया॥ अजितनाथ..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं हित–मित–प्रिय वचन सहजातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आदिक चउविध संघों की, तुमने की जो सेवा।
इससे दिव्य अतुल बलधारी, बने आप जिनदेवा !॥ अजितनाथ..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतुल्य बल सहजातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! आपका सब जीवों से, है वात्सल्य अपारा।
इससे तुम तन में बहती है, श्वेत रुधिर की धारा॥ अजितनाथ..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्वेत रुधिर सहजातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व भवों में आप विलक्षण, करते थे गुरु सेवा।
इससे सहस अठोत्तर लक्षण, पाये तुमने देवा !॥ अजितनाथ..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टोत्तर सहस्र लक्षण सहजातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक व मुनिधर्म समुचित, तुमने पहले पाला।
सम चौरस संस्थान इसी से, प्राप्त किया जिन ! आला॥
अजितनाथ सम जिनगुण सम्पत्, पाने हम नित ध्यायें।
अजितनाथ सम कर्म जीतने, उनको अर्घ्य चढ़ायें॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम चतुरस्र संस्थान सहजातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु सेवा व्रत तप साधन में, पूरा योग लगाया।
इससे स्वामिन् ! इस भव में भी, उत्तम संहनन पाया॥ अजितनाथ.. ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रवृषभ नाराच संहनन सहजातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरे-भरे फल-फूल प्रचुरतम, तुमने पूर्व चढ़ाये।
इससे जिनपद में शत योजन, खुद सुभिक्ष हो जाये॥ अजितनाथ.. ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं शत योजन सुभिक्ष केवलज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण आदि चउविध संघों संग, गमन किया करवाया।
इससे गगन गमन का अतिशय, तीर्थंकर बन पाया॥ अजितनाथ.. ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं गगन गमन केवलज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश धर्म मुनि चार संघ को, चहुँ मुख खूब बढ़ाया।
इससे ही चहुँदिश आनन का, अतिशय प्रभु ने पाया॥ अजितनाथ.. ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुख आनन केवलज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दया अहिंसा धर्म श्रेष्ठतम, तुमने नित अपनाया।
इससे जगभर में प्रभु तुमने, अदया भाव मिटाया॥ अजितनाथ.. ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं अदयाभाव निवारक केवलज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व भवों में मुनि संघों का, प्रभु उपसर्ग मिटाया।
इससे अर्हत् बन इस भव में, सब उपसर्ग हटाया॥
अजितनाथ सम जिनगुण सम्पत्, पाने हम नित ध्यायें।
अजितनाथ सम कर्म जीतने, उनको अर्घ्य चढ़ायें॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं उपसर्गाभाव केवलज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार दान अनशन आदिक का, फल इस भव में पाया।
केवली कवलाहार न करते, ऐसा अतिशय पाया॥ अजितनाथ..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं कवलाहाराभाव केवलज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यावान महामुनियों की, सेवा करी करायी।
इससे सब विद्या के ईश्वर, बने आप जिनरायी ॥ अजितनाथ..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्या ईश्वरत्व केवलज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के नखकेश बढ़े ना, इसका भी है साधन।
पहले मन-वच-तन शुद्धी से, किया धर्म आराधन॥ अजितनाथ..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं नखकेश वृद्धि रहित्व केवलज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग जिनमुद्रा को प्रभु, नित अनिमेष निहारा।
इससे जिन ! अनिमेष नयन का, अतिशय पाया न्यारा॥ अजितनाथ..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनिमेष नयन केवलज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकट की काली छाया से, सबको खूब बचाया।
इससे छायारहित दिव्य तन, हे जिन ! तुमने पाया॥ अजितनाथ..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं छायारहित तन केवलज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अहिंसा के प्रचार में, जीवन पूर्ण लगाया।
उससे अर्द्ध मागधी भाषा, अतिशय प्रभु ने पाया॥
अजितनाथ सम जिनगुण सम्पत्, पाने हम नित ध्यायें।
अजितनाथ सम कर्म जीतने, उनको अर्घ्य चढ़ायें॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्द्धमागधी भाषा अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व मैत्री का भाव नाथ ने, कुछ ऐसा विकसाया।
शेर गाय संग सर्प मोर के, गले बैठकर आया॥ अजितनाथ..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं परस्पर मैत्री भाव अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! आपके ही प्रभाव से, निर्मल हुई दिशायें।
भक्त जनों में प्रभु दर्शन की, जगी तीव्र आशायें॥ अजितनाथ..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मल दिशा अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! आप की निर्मलता से, हुआ गगन भी निर्मल।
प्राकृतिक उपसर्ग मिटें सब, भक्त बनें सब निर्मल॥ अजितनाथ..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मल आकाश अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पहले धरती पर हरियाली, प्रभु ने खूब बढ़ायी।
इससे जिन सन्मुख अब युगपत्, छ्ह ऋतुएँ खिल आयीं॥ अजितनाथ..॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगपत् षट्ऋतु पुष्प फल अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण सम आदर्श स्वयं को, प्रभु ने पूर्व बनाया।
इससे देवों ने धरती को, काँच समान बनाया॥ अजितनाथ..॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं दर्पण सम धरातल अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने जिनपूजा विधान में, पहले कमल चढ़ायें
इससे प्रभु के श्री विहार में, स्वर्ण कमल सुर लायें॥
अजितनाथ सम जिनगुण सम्पत्, पाने हम नित ध्यायें।
अजितनाथ सम कर्म जीतने, उनको अर्घ्य चढ़ायें॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ण कमल रचना अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचगुरु का भव-भव में प्रभु, जय-जय घोष लगाया।
इससे अब देवों ने नभ में, जय-जय घोष लगाया॥ अजितनाथ..॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं जयघोष ध्वनि अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पहले श्रीजी के विहार में, सुरभित हवा चलायी।
इससे वैसा अतिशय करने, सुर सेना जिन आयी॥ अजितनाथ..॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंद सुगंधित पवन अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पहले जिन अभिषेक किया वा, गंधोदक बरसाया।
इससे गंधोदक वर्षा का, अतिशय प्रभु ने पाया॥ अजितनाथ..॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं गंधोदक वृष्टि अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में विष संकट वा कांटे, तुमने नाथ हटाये।
इससे धरती के विष कंटक, अब सुर आन हटाये॥ अजितनाथ..॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं विषकंटक रहित धरती अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पहले सब दुःख शोक मिटाया, जग में हर्ष बढ़ाया।
इससे समवशरण में प्रभु ने, सबका हर्ष बढ़ाया॥ अजितनाथ..॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं हर्षमयी सृष्टि अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र ले प्रभु ने पहले, पाप कुचक्र मिटाया।
इससे अब तीर्थंकर बनकर, धर्मचक्र प्रगटाया।।
अजितनाथ सम जिनगुण सम्पत्, पाने हम नित ध्यायें।
अजितनाथ सम कर्म जीतने, उनको अर्घ्य चढ़ायें।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं यक्षेन्द्र शीश धर्मचक्र अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मन्दिर तीर्थों का वैभव, प्रभुवर पूर्व बढ़ाये।
इससे वसु मंगल द्रव्यों को, सुरपति आन चढ़ाये।। अजितनाथ.. ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं वसुमंगलद्रव्य अतिशय प्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व शोक हर वृक्ष लगा कर, ऐसा पुण्य कमाये।
जिन बनते सुर प्रभु के पीछे, वृक्ष अशोक लगायें।। अजितनाथ.. ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोक तरु प्रातिहार्य मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच गुरु पूजा उत्सव में, पूर्व सुमन बरसाये।
इससे प्रभु पर पुष्पवृष्टि कर, सुरगण नित हर्षायें।। अजितनाथ.. ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पूजा आहारदान में, पहले वाद्य बजाये।
इससे दुंदुभि वाद्य असंख्यों, सुरगण आन बजायें।। अजितनाथ.. ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं देव दुन्दुभि प्रातिहार्य मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुओं को उच्चासन देकर, पहले पुण्य कमाया।
इससे आसन प्रातिहार्य अब, तीर्थंकर बन पाया।। अजितनाथ.. ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन प्रातिहार्य मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवाणी श्रद्धा से सुनकर, घंटा वाद्य चढ़ाये।
इससे दिव्य ध्वनि का वैभव, अब तीर्थंकर पायें।।
अजितनाथ सम जिनगुण सम्पत्, पाने हम नित ध्यायें।
अजितनाथ सम कर्म जीतने, उनको अर्घ्य चढ़ायें।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनि प्रातिहार्य मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्र लगा गुरु की सेवा कर, प्रभु पर छत्र लगाया।
इसविध तीर्थंकर का वैभव, त्रय छत्रादिक पाया।। अजितनाथ..।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रय प्रातिहार्य मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचगुरु पर भक्ति भाव से, पहले चंवर ढुराये।
इससे बत्तीस यक्ष युगल ने, प्रभु पर चंवर ढुराये।। अजितनाथ..।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुषष्ठि चामर प्रातिहार्य मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–ध्यान–वैराग्य भाव से, चमक रहा मुखमंडल।
धर्म सभा में रवि छवि हरता, जिनवर का भामंडल।। अजितनाथ..।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं भामंडल प्रातिहार्य मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव–भव में प्रभु ज्ञान दान कर, ऐसा पुण्य कमाया।
इससे ज्ञानावरण नाशकर, ज्ञान अनंत जगाया।। अजितनाथ..।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतज्ञान गुणमंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर वा मुनिवर के दर्शन, स्वयं करे करवायें।
कर्म दर्शनावरणी क्षयकर, दर्श अनंत जगायें।। अजितनाथ..।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदर्शन गुण मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम धर संयम धारी की, सेवा का फल पाया।
मोह कर्म का क्षयकर भगवन्, सुख अनंत को पाया॥
अजितनाथ सम जिनगुण सम्पत्, पाने हम नित ध्यायें।
अजितनाथ सम कर्म जीतने, उनको अर्घ्य चढ़ायें॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतसुख गुण मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार प्रकार दान दे प्रभुवर, महापुण्य फल पाया।
अंतराय कर्मों का क्षयकर, वीर्य अनंत जगाया॥ अजितनाथ.. ॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतवीर्य गुण मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधपुरी में नाथ तुम्हारे, हुए चार कल्याणक।
तीर्थराज सम्मेद शिखर में, हुआ मोक्षकल्याणक॥ अजितनाथ.. ॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक तीर्थ पूजित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ जिनदेव ! तुम्हारी, जहाँ-जहाँ प्रतिमायें।
धर्मतीर्थ में अजितनाथ को, पूजें अर्घ चढ़ायें॥ अजितनाथ.. ॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वतीर्थ क्षेत्र, सिद्धक्षेत्र, ग्राम, नगर, प्रांत, देश धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

ढाई द्वीप में इक सौ सत्तर, होते कुल तीर्थंकर।
अजितनाथ प्रभु के शासन में, हुए सभी तीर्थंकर॥
अजितनाथ तीर्थंकर के संग, सब जिनवर को ध्यायें।
ध्वज श्रीफल वसु द्रव्य सजाकर, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं षट्चत्वारिंशत गुण विभूषिताय सुख-शांति-सन्मार्ग उपदेशकाय सर्वरोग-शोक-दुःख-संकट-आधि-व्याधि-पीड़ा, कोरोना रोग निवारकाय, आरोग्य-धन-धान्य-ऐश्वर्य-ऋद्धि-सिद्धि प्रदायकाय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अखिल विश्व की शान्ति का, मार्ग दिखाओ नाथ।
शांतिधारा हम करें, दिव्य कुंभ ले हाथ।।
शांतये शांतिधारा...।

दोहा- पुष्पाञ्जलि हम कर रहे, अजितनाथ पर नित्य।
आस्था से हमको मिले, जिन ! तुम जैसा मित्र।।
दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- अजितनाथ भगवान में, गुण हैं अपरम्पार।
उनकी जयमाला पढ़ें, पाने सुख का द्वार।।

चौपाई

जय-जय अजितनाथ तीर्थंकर, भव्य जीव के आप हिंतकर।
जितशत्रु नृप के सुत प्यारे, माँ विजया के राजदुलारे।।1।।
नगर अयोध्या जन्म लिया था, इक्ष्वाकु कुल धन्य किया था।
अधिक चार सौ धनुष ऊँचाई, पूर्व बहत्तर लख वय पायी।।2।।
स्वर्ण वर्ण की चम-चम काया, कोटि सूर्य का तेज समाया।
चौवन लाख पूर्व तक राजा, हर दिन देव बजाते बाजा।।3।।
इक लख पूरब तक मुनिराजा, करी साधना बन ऋषिराजा।
चार घातिया कर्म नशायें, तत्क्षण श्री अरिहंत कहाये।।4।।
समोशरण की महिमा भारी, जहाँ असंख्यों सुर नर-नारी।
सिंहसेन आदिक गणधारी, नब्बे गणधर आज्ञाकारी।।5।।

एक लाख मुनि तुम गुण गायें, सब तुमसे दीक्षित कहलायें।
प्रकुब्जा आदि आर्यायें, सवा तीन लख आगम गाये ॥6॥
तीन लाख श्रावक गुण गायें, श्राविकायें पण लक्ष बताये।
कोटि पशु-पक्षी व्रत पाये, देवी-देव असंख्यों आयें ॥7॥
क्षेमभद्र जी क्षान्तिभद्र जी, श्रीभद्रं व शान्तिभद्र जी।
क्षेत्रपाल प्रभु चार तुम्हारे, भक्तों के सब कष्ट निवारें ॥8॥
रोहिणी यक्षी प्रभु गुण गाये, महायक्ष महिमा फैलायें।
आर्यखण्ड में गमन किया था, सबने प्रभु का दर्श किया था ॥9॥
ढाई द्वीप का स्वर्ण काल वो, तीर्थंकर जिन से निहाल वो।
तब इक सौ सत्तर तीर्थंकर, साथ हुए सब कर्मभूमि पर ॥10॥
सुरपति भी अति पुण्य कमायें, सबके पंचकल्याण मनाये।
हम भी अजितनाथ को ध्यायें, वैसा अनुपम पुण्य जगायें ॥11॥
धर्मतीर्थ में प्रभु की महिमा, अजितनाथ की सुन्दर प्रतिमा।
भक्त यहाँ जिनवर को ध्यायें, अजितनाथ का अतिशय पायें ॥12॥
सर्व रोग दुःख-शोक हरे वो, विद्या बुद्धि सिद्धी वरे वो।
अक्षय धनसुख वैभव पाये, जो नित अजित विधान रचाये ॥13॥
जिनवर की जयमाला गायें, ध्वजा माल संघ अर्घ्य चढ़ायें।
''गुप्तिनंदी'' जिन भक्ति रचाये, कर्मजीत सब दुःख विनशाये ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुःख, संकट, पीड़ा, मानसिक तनाव आदि सर्व कोरोना रोग विनाशकाय अजेय गुण जिनगुण रहस्य प्रदायकाय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सर्व शत्रु को जीतकर, बनें अजित भगवान।
जितशत्रु बन जायँ हम, करके अजित विधान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

आरती

(तर्ज - माईन-माईन...)

कर्म जीतने अजितनाथ जी, इस धरती पर आये।
हम भी अपने कर्म जीतने, उनकी आरती गायें॥

बोलो अजितनाथ की जय-जय...

1. नगर अयोध्या में प्रभु जन्में, माँ विजया के प्यारे।
जितशत्रु के सूरज तुम हो, पूजें चाँद-सितारें॥
चौथेकाल के प्रथम जिनेश्वर-2, अजितनाथ कहलाये॥ हम भी..

2. बने मुनिवर करी तपस्या, अपने कर्म नशाने।
कर्मजयी हम बनने भगवन्, आये जिन गुण गाने॥
श्री सम्मेद शिखर से जिनवर-2, प्रथम मोक्ष पद पायें॥ हम भी..

3. हम विधान प्रभुवर का करते, दीपक अर्घ चढ़ायें।
मोह तिमिर अपना विनशाकर, ज्ञान अकेला पायें॥
'आस्था' से हम करें आरती-2, ढ़ोल मृदंग बजायें॥ हम भी..

***

श्री अजितनाथ चालीसा

दोहा- अजितनाथ को है नमन, मंगलमय भगवान।
प्रभुवर के गुणगान से, हो जाता कल्याण।।
अजितनाथ भगवान का, चालीसा सुखकार।
मन-वच-तन से आपको, वंदन बारम्बार।।

चौपाई

अजितनाथ को शीश झुकायें, चालीसा हम प्रभु का गायें।
कर्मों पे हम भी जय पायें, अजितनाथ को हृदय बसायें।।1।।
काल चतुर्थे प्रथम जिनेश्वर, चौबीसी के द्वितीय जिनेश्वर।
साकेता में जन्में स्वामी, जन्मत तीन ज्ञान गुण नामी।।2।।
जितशत्रु के नयन सितारे, विजया माँ के आप दुलारे।
इन्द्र प्रभु का नाम बताता, न्हवन करा नगरी जब लाता।।3।।
पूर्व भवों की सुखद कहानी, जिनवाणी से हमने जानी।
जंबूद्वीप में नगर सुसीमा, नगरी की सुन्दर थी सीमा।।4।।
भूप विमलवाहन अति प्यारे, प्रजाहितैषी जनक दुलारे।
त्रयशक्ति युत थे वे राजा, नित उत्साहित रहते राजा।।5।।
चारों पुरुषार्थों को साधें, धर्म भाव से पाप विराधें।
षट् कर्त्तव्य सदा वे पालें, प्रभु चरणों के भक्त निराले।।6।।
पुण्य उदय भूप का आया, दर्श अरिन्दम गुरु का पाया।
कई राजा संग दीक्षा धारी, करें तपस्या मुनिवर भारी।।7।।
ज्ञान हुआ ग्यारह अंगों का, स्याद्वाद नय सब भंगों का।
दर्श विशुयाद्धि मुनि भाये, तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये।।8।।
अन्त समय गुरुवर का आये, मुनि समाधि व्रत अपनायें।
पाँचों परमेष्ठी को ध्यायें, देह त्याग मुनि सुर तन पायें।।9।।
विजय अनुत्तर में गुरु जायें, तैंतीस सागर आयु पायें।
शुभ लेश्या उत्तम तन पाये, अति सुन्दर तन दिव्य उपाये।।10।।

अवधिज्ञान था त्रस नाड़ी का, विशद ज्ञान लोकनाड़ी का।
प्रवीचार ना इनके होता, दुःख तज्जन्य रंच न होता॥11॥
अर्द्धवर्ष वय शेष रहे जब, विचलित होती स्वर्ग धरा तब।
धनपति आये नगर रचाये, रत्नवृष्टि कर पुण्य कमाये॥12॥
पुनः अयोध्या जगमग होती, जन्मेगी त्रिभुवन की ज्योति।
विजय अनुत्तर तजकर आये, माता के उर प्रभुवर आये॥13॥
जन्म समय त्रिभुवन हर्षाये, सुर नर जन्म कल्याण मनायें।
आयू लाख बहत्तर पूरब, तन सुवर्ण सम पीत अपूरब ॥14॥
उल्का लख वैराग्य जगाये, कर्म जीतने जिनवर जायें।
सायंकाल में दीक्षा धारें, नृप हजार संग दीक्षा धारें॥15॥
प्रथम अहार अयोध्या होवे, ब्रह्मराज जग पूजित होवे।
मुनि छदमस्थ वर्ष रह बारा, सायंकाल को किया उजारा॥16॥
श्री अर्हत् जिन केवलज्ञानी, भव्यों ने पाई जिनवाणी।
श्री सम्मेद शिखर प्रभु आये, कर्मनाश मुक्ति को पायें॥17॥
सगर चक्री प्रभु को नित ध्याये, मुनि बन कर्म काट शिव पायें।
रोग शोक से मुक्ति दिलाये, हर दिन हम चालीसा गायें॥18॥
पापी भी पावन बन जाये, जो प्रभु के चरणों में आये।
ऋद्धि-सिद्धि सुख-शांति दिलाये, गुप्ति समिति धर शिव सुख पाये॥
जहाँ-जहाँ प्रभु अजितनाथ हो, चरणों में उनके प्रणाम हो।
'आस्था' से हम प्रभु गुण गाये, मंत्र जाप से कष्ट मिटाये॥20॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ते चालीस बार।
दीप धूप संग जाप कर, खेय सुगंध अपार॥
अजितनाथ जिन कर्मजयी, करो प्रभु उद्धार।
'आस्था' से हम नित नमें, होने भवदधि पार॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री सम्भवनाथ भगवान परिचय

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	राजा जितारि
माता	–	सुसेना
आयू	–	60 लाख पूर्व
ऊँचाई	–	400 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	फाल्गुन शुक्ल अष्टमी
जन्म	–	कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा
जन्म स्थान	–	श्रावस्ती
दीक्षा	–	मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा
प्रथम दाता	–	सुरेन्द्र दत्त
सहदीक्षित मुनि	–	1000
कैवल्य ज्ञान	–	कार्तिक कृष्ण चतुर्थी
गणधर	–	चारुदत्त आदि 105
कुल मुनि	–	2 लाख
गणिनी	–	धर्मश्री
कुल आर्यिका	–	3,20,000
मोक्ष	–	चैत्र शुक्ल षष्ठी
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	स्वर्ण
चिह्न	–	घोड़ा
चैत्य वृक्ष	–	शाल

शासक देव

यक्ष	–	त्रिमुख
यक्षिणी	–	प्रज्ञप्ति
क्षेत्रपाल	–	(1) वीरभद्र (2) बलिभद्र (3) गुणभद्र (4) चन्द्रभद्र

जिन वैभव श्री संभवनाथ विधान

स्थापना (नरेन्द्र छंद)

संभवनाथ जिनेश्वर सबके, कार्य करें सब संभव।
भक्ति करें जो संभव प्रभु की, होय असंभव संभव॥
करते हम आह्वान तुम्हारा, पुष्प हाथ में लाये।
आओ भगवन् हृदय विराजो, चरणन् शीश झुकायें॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छंद)

शुचि सलिल कूप का लाये, हम प्रभु का न्हवन करायें।
संभव प्रभु को हम ध्यायें, प्रभुवर की भक्ति रचायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हल्दी केशर कुमकुम से, अभिषेक करें चंदन से।
चंदन प्रभु चरण लगायें, अपना भवताप नशायें॥2॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गज मुक्ता मोती लाये, हम प्रभु को भजने आये।
अक्षत रंगीन चढ़ायें, अक्षय अखंड पद पायें॥3॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गेंदा गुलाब कमलादि, लाये हम बहु पुष्पादि।
पुष्पों की माला लायें, प्रभुवर के चरण चढ़ायें॥4॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन जो नित्य चढ़ाये, वो चिर सौभाग्य जगाये।
नैवेद्य चढ़ा हम ध्यायें, पूजा कर क्षुदा मिटायें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को घृत दीप चढ़ायें, हम अपना ज्ञान बढ़ायें।
हम आरती प्रभु की गायें, संभव प्रभु के दर आये॥6॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप दशांगी लायें, प्रभु सन्मुख धूप जलायें।
कर्मों की काली घटायें, प्रभु पूजा अवश नशाये॥7॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला चीकु सीताफल, तरबूज जाम जामुन फल।
श्रीफल पुंगीफल लायें, हम प्रभु को आम चढ़ायें॥8॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत लाये, सुन्दर थाली भर लाये।
हम द्रव्य सजाकर लायें, उत्साहित अर्घ चढ़ायें॥9॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- संभव प्रभु का हम करें, मंगल श्रेष्ठ विधान।
मंगल हो इस विश्व में, इस हित करें विधान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्

(तर्ज - आठ दरबमय अर्घ बनाय...)

संभव प्रभु जी गर्भ में आय, श्रावस्ती में खुशियाँ छाय।
करें गुणगान, जय-जय हो संभव भगवान॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्में श्री संभव भगवान, सब जग का करने कल्याण॥ करें..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आया जब प्रभु को वैराग, छोड़ चले वो जग का राग।
करें गुणगान, जय-जय हो संभव भगवान॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं तपकल्याणक प्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ नाथ को केवलज्ञान, इन्द्रों से पूजित भगवान॥ करें.. ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव बनें सिद्ध भगवान, देव मनायें मोक्षकल्याण॥ करें.. ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशें नाथ अठारह दोष, देव करें प्रभु का जयघोष॥ करें.. ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादश दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म दोष से मुक्ति पाय, अंतिम जन्म यही कहलाय॥ करें.. ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्म दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा दोष को नाथ नशाय, वृद्ध अवस्था कभी न आय॥ करें.. ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं जरादोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा दोष का करते नाश, करो हमारी तृषा विनाश॥ करें.. ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं तृषादोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा दोष विनशायें नाथ, हम नैवेद्य चढ़ायें नाथ॥ करें.. ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षुधादोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विस्मय दोष नशें भगवान, तव समान हम बनें महान्॥ करें.. ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं विस्मयदोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति दोष रहित भगवान, हरते सब पीड़ा भगवान॥ करें.. ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं अरतिदोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व दुःखों का करके नाश, पाया प्रभु ने दिव्य प्रकाश॥ करें.. ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुःख दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके पास नहीं है रोग, उनके पास मिटें सब रोग॥ करें.. ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं रोग दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोक दोष का करते नाश, शोक मिटेगा जिन के पास।
करें गुणगान, जय-जय हो संभव भगवान॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं शोक दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह दोष का किया विनाश, पूर्ण ज्ञान का दिव्य विकास॥ करें.. ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं मोह दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय नहीं प्रभु में भय दोष, प्रभु सन्निध में बढ़ता जोश॥ करें.. ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं भय दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा दोष रहित जिन आप, निद्रा में ना होवे पाप॥ करें.. ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं निद्रा दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता दोष किया परिहार, चिंता हरते सर्व प्रकार॥ करें.. ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं चिंता दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वेद रहित है सुन्दर काय, प्रभु भक्ति ही स्वेद मिटाय॥ करें.. ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वेद दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग दोष हर बने विराग, करते हम प्रभु से अनुराग॥ करें.. ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं राग दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वेष दोष ना प्रभु के पास, द्वेष हरो करते अरदास॥ करें.. ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वेष दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरण दोष से रहित जिनेश, पूजें प्रभु को भक्त विशेष॥ करें.. ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं मरण दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्व दोष को नाशें नाथ, तुम्हें नमावें हम सब माथ॥ करें.. ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं गर्व दोष रहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

तरु अशोक अर्पण जिन तुमको, हम सबका शोक मिटाता है।
केवलज्ञानी तीर्थंकर का, सुन्दर वैभव कहलाता है॥

वसु प्रातिहार्य अर्पण करते, वसु कर्म नशाने हम अपने।
वंदन पूजन कीर्त्तन करते, हम भी प्रभुवर के सम बनने ॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशोक प्रातिहार्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवरत्न जड़ित सिंहासन ये, सब भक्तों का मन मोह रहा।
इस रत्नमयी सिंहासन पर, जिनबिम्ब प्रभु का शोभ रहा॥ वसु.. ॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन प्रातिहार्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये प्रातिहार्य हे भामंडल, प्रभु के पीछे लगता सुन्दर।
ये भामंडल प्रभु को अर्पण, जो कोटि रवि शशि से सुन्दर॥ वसु.. ॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं भामंडल प्रातिहार्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवरंगी नग युत स्वर्ण छत्र, अर्पण है त्रिभुवन स्वामी को।
हम छत्र चढ़ाने आये हैं, श्री जिनवर संभव स्वामी को॥ वसु.. ॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रय प्रातिहार्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चौंसठ चँवर चढ़ाते हैं और चँवर ढुरा हर्षाते हैं।
हो ऊर्ध्व गति में गमन सदा, ये चँवर हमें बतलाते हैं॥ वसु.. ॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुःषष्ठि चँवर प्रातिहार्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री समवशरण में भगवन् पर, पुष्पों की वृष्टि होती है।
अभिषेक में प्रभु की प्रतिमा पर, पुष्पों की वृष्टि होती है॥ वसु.. ॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों द्वारा दुंदुभि वादन, जब समवशरण में होता है।
प्रभु की वाणी सुन भवि प्राणी, अपने कर्मों को धोता है॥ वसु.. ॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुंदुभि प्रातिहार्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये दिव्य ध्वनि जिन प्रातिहार्य, प्रभु की वाणी देने वाली।
प्रभु की वाणी है सुखदानी, कर्मों का क्षय करने वाली॥
वसु प्रातिहार्य अर्पण करते, वसु कर्म नशाने हम अपने।
वंदन पूजन कीर्त्तन करते, हम भी प्रभुवर के सम बनने॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनि प्रातिहार्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

स्वर्ण झारी हम जिनवर को अर्पण करें।
संभव प्रभु के मंदिर की महिमा बढ़े॥
श्री मंडल पे मंगल द्रव्य चढ़ा रहे।
हम विधान कर भारी पुण्य कमा रहे॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं झारी मंगल द्रव्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को पंखा स्वर्ण रजत का भेंट कर।
प्रभु चरणों में जायें पुण्य विशेष कर॥ श्री...॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं बीजणा मंगल द्रव्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोना चाँदी ताम्र कलश हम ला रहे।
कलश चढ़ाके पुण्य कलश हम पा रहे॥ श्री...॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं कलश मंगल द्रव्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलकारी दर्पण मंगल रूप है।
दर्श कराये हमको आत्म स्वरूप के॥ श्री...॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं दर्पण मंगल द्रव्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माणिक मोती वाले चामर ला रहे।
रत्न जड़ित हम प्रभु को चंवर चढ़ा रहे ॥
श्री मंडल पे मंगल द्रव्य चढ़ा रहे।
हम विधान कर भारी पुण्य कमा रहे॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं चामर मंगल द्रव्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व क्षेत्र में स्वस्तिक मंगल रूप है।
स्वस्तिक चौबीस जिनवर का ही रूप है॥ श्री... ॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्तिक मंगल द्रव्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रंगों की होती है जिन ध्वजा।
यश कीर्ति सम्मान बढ़ाये जिन ध्वजा॥ श्री... ॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं ध्वजा मंगल द्रव्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन वंदित तीन छत्र बतला रहे।
हम भी प्रभु को छत्र चढ़ा गुण गा रहे॥ श्री... ॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं छत्र मंगल द्रव्य पूजिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

सर्व दोष को नशने हम सब, निशदिन प्रभु गुण गायें।
वीतराग जिनदेव हमारे, हमको मार्ग बतायें॥
तुम हो स्वामी हम हैं सेवक, दया भाव दिखलाओ।
श्री विधान हम करने आये, हमको पार लगाओ॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदोष हराय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्य असंभव जिनके सन्मुख, आ संभव हो जाये।
जो ध्याये संभव प्रभुवर को, सौख्य संपदा पाये॥
तुम हो स्वामी हम हैं सेवक, दया भाव दिखलाओ।
श्री विधान हम करने आये, हमको पार लगाओ॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं असंभव कार्य संभव करणाय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश लिये जो प्रभु दर आये, खाली हाथ न जाये।
आज नहीं तो कल निश्चित ही, आश पूर्ण हो जाये॥ तुम हो..॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं इच्छापूर्ण कराय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रात दिवस चिंता तनाव में, जीवन बीता जाये।
जाप करें जो प्रभु का हर दिन, सब चिंता मिट जाये॥ तुम हो..॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं चिंतामुक्त कराय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन दौलत के लोभी प्राणी, नित नव व्यूह रचायें।
हम प्रभुवर की फेरी लगायें, सर्व चक्र मिट जायें॥ तुम हो..॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं संसारचक्र हराय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानी चाहे धन परिजन, भूल प्रभु को जाये।
नाम प्रभु का जपते ज्ञानी, वे ही साथ निभायें॥ तुम हो..॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनमंत्र हृदय धारकाय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें प्रभु की निशदिन अर्चा, ऐसी शक्ति जगायें।
आर्ष मार्ग के राही बन हम, सच्चे भक्त कहायें॥ तुम हो..॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं आर्षमार्ग भक्ति प्रदायकाय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ पर संभव जिन का, हम नित दर्शन पायें।
संभव जिन का हम विधान कर, मनवांछित फल पायें॥ तुम हो..॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अवतार छंद)

श्रावस्ती किया निहाल, संभवनाथ प्रभु।
श्री पिता जितारी बाल, संभवनाथ विभू।।
हे मात ! सुषेणा लाल, संभवनाथ प्रभु।
हम चढ़ा रहे वसु थाल, संभवनाथ विभू।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, शोक, क्लेश, अशांति, अपयश, अज्ञान, अपकीर्ति, अशुभ भाव निवारकाय सुख–शांति–समृद्धि–यश–कीर्ति प्रदायकाय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– इस जग में प्रभु आपने, दिया शांति संदेश।
पुष्पाञ्जलिं ले हम भजें, पाने वह संदेश।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– जयमाला हम सब पढ़ें, लिये अर्घ की थाल।
संभव प्रभु के चरण में, चढ़ा रहे श्री माल।।

(अडिल्ल छंद)

संभव प्रभु की जयमाला हम गा रहे।
सर्व गुणों के धारी जिन को ध्या रहे।।
सुख शांति देती प्रभु की आराधना।
दुःख अशांति हरती प्रभु आराधना।।1।।

सर्व पाप विनशाती प्रभु आराधना।
उत्तम पद दिलवाती प्रभु आराधना।।

दुर्गति नष्ट कराती प्रभु आराधना।
सद्गति गमन कराती प्रभु आराधना।।2।।

हरती सर्व विषमता प्रभु आराधना।
हमें सिखाती समता प्रभु आराधना।।
पुण्य विशेष दिलाती प्रभु आराधना।
मिथ्या तिमिर नशाती प्रभु आराधना।।3।।

धन यश कीर्ति देती प्रभु आराधना।
रोग शोक विनशाती प्रभु आराधना।।
कर्म काटने करते प्रभु आराधना।
मोक्ष महल दिलवाती प्रभु आराधना।।4।।

नित्य करें हम प्रभुवर की आराधना।
त्रय संध्या में करते प्रभु आराधना।।
प्रभु भक्ति से करते पाप विराधना।
समिति गुप्ति पाने करते आराधना।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग संकट पीड़ा निवारणाय सुख–शांति, वात्सल्य, मैत्री, सद्बुद्धि प्रदायकाय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– संभवनाथ जिनेश को, 'आस्था' करे प्रणाम।
आस्था रखते नाथ पे, पायें मोक्ष मुकाम।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

आरती

(तर्ज–घुंघरु छम छमा छम छन नन...)

घुंघरु छम छमाछमा छम छन नन नन बाजे रे–2
संभव प्रभु की आरती में मारो मनवा नाचे रे...

1. संभवनाथ जिनेश्वर की हम, आरती करने आये।
   दीपों की थाली ले कर हम, झूमें नाचें गायें।। घुंघरु..

2. श्रावस्ती में जन्में स्वामी, त्रिभुवन मंगल गाये।
   इन्द्राणी भी प्रथम दर्श पा, मोह तिमिर विनशाये।। घुंघरु..

3. महा पुण्य है मात–पिता का, तीर्थंकर सुत पाये।
   प्रभु के कारण मात–पिता भी, जग में पूजें जाये।। घुंघरु..

4. संभवनाथ विधान पूर्ण कर, प्रभु की आरती गायें।
   घंटा मंगल वाद्य बजाकर, भक्ति में रंग जायें।। घुंघरु..

5. प्रभु की आरती साँझ–सवेरे, हर दिन हम सब गायें।
   'आस्था' से हम संभव प्रभु की, मंगल आरती गायें।। घुंघरु..

***

श्री संभवनाथ चालीसा

दोहा- श्रावस्ती जन्में प्रभु, श्री संभव भगवान।
कार्य असंभव हो जहाँ, लो संभव का नाम॥
संभव प्रभु सब भय हरें, करें भवोदधि पार।
चालीसा इनका पढ़ें, आकर प्रभु के द्वार॥

चौपाई

जय-जय श्रावस्ती के स्वामी, संभव स्वामी सबके स्वामी।
मन मंदिर में आप विराजे, नित मंदिर में बजते बाजे॥1॥
चालीसा हम प्रभु का गायें, संभव प्रभु को शीश झुकायें।
जाने प्रभु के पूर्व भवों को, पूजें सुर किन्नर नित जिनको॥2॥
नगर क्षेमपुर के थे राजा, विमलवाह नगरी के राजा।
प्रजाहितैषी नृप थे प्यारे, सब पे अपना प्रेम पसारें॥3॥
धन्य हुये नर-नारी सारे, मधुर वचन से भूप पुकारे।
सब पर अति वात्सल्य दिखाये, षट् कर्त्तव्य सदैव निभायें॥4॥
प्रभु पूजा गुरु सेवा करते, मुनिराजों की अर्चा करते।
चार भावना निशदिन भायें, सबसे मैत्री भाव जगायें॥5॥
यह संसार क्षणिक वो माने, निकले सार वस्तु को पाने।
स्वयंप्रभु से दीक्षा पायें, मुनि बन उत्तम भाव जगायें॥6॥
सोलहकारण मुनिवर भायें, तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये।
व्रत अनशन कर तन कृष करते, सर्व कषाय नाथ वश करते॥7॥
अंत समय मुनि करें समाधि, निश्चित नशने कर्मन् व्याधि।
प्रथम ग्रैवेयक में मुनि जायें, उत्तम इन्द्र महापद पायें॥8॥
तैईस सागर आयु पायें, प्रभु भक्ति में समय बितायें।
वैक्रियिक सुन्दर तन पायें, नित परिणाम विशुद्ध बनायें॥9॥
पुण्योदय धरती का आये, श्रावस्ती में खुशियाँ छाये।
दृढ़रथ राजा की नगरी में, हुई रत्न वृष्टि नगरी में॥10॥

स्वप्न दिखा माँ के उर आये, मात सुषेणा पूजी जाये।
स्वर्गों की सुर बाला आये, माता का आनंद बढ़ाये॥11॥
देवी असंख्य करती सेवा, पाती श्रेष्ठ सुखों का मेवा।
हर कल्याणक इन्द्र मनायें, निश्चित वो भी मुक्ति पायें॥12॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान कल्याणक, अंतिम होता मोक्ष कल्याणक।
पंचकल्याणक जो भवि पाये, तीर्थंकर जग में कहलाये॥13॥
हम प्रभु के कल्याण मनायें, इक दिन मोक्ष कल्याणक पायें।
साठ लाख पूरब थी आयु, प्रभुवर सोचे बीती आयु॥14॥
मेघ विलय वैराग्य जगाये, वैभव तज मुनि दीक्षा पायें।
नृप सुरेन्द्र प्रभु को पड़गाये, प्रथमाहार वही करवाये॥15॥
श्रावस्ती का भाग्य जगाये, पंचाश्चर्य निधि नृप पाये।
दाता प्रथम वही कहलाये, प्रभु के संग वो मुक्ति पाये॥16॥
चार घातिया कर्म नशाये, केवलज्ञान जिनेश्वर पायें।
समवशरण में सुरगण आये, प्रभु वाणी सब भविजन पायें॥17॥
प्रभु सम्मेदशिखर पे आये, पंचम गति मुक्ति श्री पायें।
पंच पाप नशने हम आये, हर दिन ये चालीसा गायें॥18॥
सर्व कार्य प्रभु सिद्ध करायें, भव-भव के संताप मिटायें।
कोई कार्य न रहे असंभव, कार्य पूर्ण करते प्रभु संभव॥19॥
सर्व कर्म से मुक्त करायें, राग द्वेष दुःख शोक मिटायें।
'आस्था' से चालीसा गायें, समिति गुप्ति व्रत तप अपनायें॥20॥

दोहा- संभवनाथ जिनेश का, चालीसा सुखकार।
पढ़ें-सुने नित भाव से, मिटते कष्ट हजार॥
सुख-संपत्ति सिद्धि दे, मिलती शांति अपार।
संभव प्रभु को है नमन, वंदन बारम्बार॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री अभिनन्दननाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	राजा सन्वर (सम्वर या संवर राज)
माता	–	सिद्धार्था देवी
आयू	–	50 लाख पूर्व
ऊँचाई	–	350 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	वैशाख शुक्ल षष्ठी
जन्म	–	माघ शुक्ल 12
जन्म स्थान	–	अयोध्या
दीक्षा	–	माघ शुक्ल बारस
प्रथम दाता	–	राजा इन्द्रदत्त
सहदीक्षित मुनि	–	1000
कैवल्य ज्ञान	–	पौष शुक्ल चतुर्दशी
गणधर	–	वज्रादि – 103
कुल मुनि	–	3 लाख
गणिनी	–	मेरुषेणा
कुल आर्यिका	–	3,30,600
श्रावक	–	3 लाख
श्राविका	–	5 लाख
मोक्ष	–	वैशाख शुक्ल 6
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	स्वर्ण
चिह्न	–	बन्दर
चैत्यवृक्ष	–	सरल

शासक देव

यक्ष	–	यक्षेश्वर
यक्षिणी	–	वज्रश्रृंखला
क्षेत्रपाल	–	(1) महाभद्र (2) भद्रभद्र (3) शतभद्र (4) दानभद्र

श्री अभिनंदननाथ विधान

स्थापना (दोहा)

अभिनंदन भगवान का, करते हम आह्वान।
आओ प्रभु मन में बसो, करते भव्य विधान॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

जल लाये हम कुंभ में, करने जिन अभिषेक।
सहस अठोत्तर कुंभ ले, करते हम अभिषेक॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर में कर्पूर संग, अर्चें प्रभु के चर्ण।
भव संताप हरो प्रभु, आये हम तव शर्ण॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको अक्षय सुख मिला, वो हैं त्रिभुवन नाथ।
अक्षत तुम्हें चढ़ा रहे, हे अभिनंदन नाथ !॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अभिनंदन कर रहे, अभिनंदन भगवान।
पुष्प माल अर्पण करें, हरो काम का मान॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा हमें व्याकुल करे, होते ना उपवास।
व्यंजन थाल चढ़ा रहे, करने क्षुधा विनाश॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर दिन हो दीपावली, घर हो या प्रभु द्वार।
दीप जला पूजा करें, आकर प्रभु के द्वार॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप चढ़ायें अग्नि में, खुश्बू दश दिश जाय।
अष्ट कर्म को नाशने, हम प्रभु भक्ति रचाय॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम जाम श्रीफल सरस, मधुर सुगंधित लाय।
मुक्ति प्रदाता नाथ को, फल के गुच्छ चढ़ाय॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा के पति, श्रीपति श्री भगवान।
अष्ट द्रव्य हम ला रहे, कर दो प्रभु कल्याण॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- अभिनंदन भगवान का, करते नित्य विधान।
कष्ट हरो सुख शांति दो, इस हित करें विधान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(सखी छंद)

कल्याणक पाँच मनायें, पाँचों में सुरगण आयें।
हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें, पापों से मुक्ति पायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक पूजिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर कल्याणक सुखकारी, होती है पूजा भारी।
सुर भक्ति करें मनहारी, पूजा करते नर-नारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवन पूजिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा लेने प्रभु जाते, द्वादश अनुप्रेक्षा भाते।
हम भी अनुप्रेक्षा भायें, प्रभुवर को अर्घ चढ़ायें॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादश अनुप्रेक्षा बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु प्रथम भावना भाये, सब वस्तु अथिर कहाये।
भावना अनित्य वे भायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनित्य भावना बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में ना कोई शरणा, निज आतम ही इक शरणा।
अशरण अनुप्रेक्षा भायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशरण भावना बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार में सुख ना मिलता, निज में ही निज सुख मिलता।
संसार भावना भायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं संसार भावना बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये जीव अकेला आता, फल कर्म अकेला पाता।
एकत्व भाव प्रभु भायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं एकत्व भावना बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरा यह तन भी नहीं है, मम परिजन मित्र नहीं है।
अन्यत्व भाव प्रभु भायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं अन्यत्व भावना बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है काय अशुद्ध हमारी, नित सजा रहे संसारी।
जिन अशुचि भावना भायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशुचि भावना बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का आना आश्रव, शुभ अशुभ रूप हो आश्रव।
आस्रव अनुप्रेक्षा भायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं आस्रव भावना बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों को रोके प्राणी, कहती संवर माँ वाणी।
प्रभु संवर भावना भायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं संवर भावना बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जप तप संयम अपनायें, निर्जरा अकाम करायें।
प्रभु भाव निर्जरा भायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्जरा भावना बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस लोक का अंत न आदि, कहलाये लोक अनादि।
जिन लोक भावना भायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोक भावना बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति दुर्लभ मनु गति पाना, भोगों में नहीं गमाना।
बोधि दुर्लभ प्रभु भायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं बोधि दुर्लभ भावना बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन धर्म पुण्य से पाया, यह धर्म ही वस्तु कहाया।
प्रभु धर्म भावना भायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म भावना बोधक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सर्व भावना भायें, दीक्षा ले ध्यान लगायें।
मनःपर्ययज्ञान वो पायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्ययज्ञान प्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब केवलज्ञानी होते, तब प्रभुवर मुखरित होते।
सब सुनते प्रभु की वाणी, गणधर गूँथें जिनवाणी॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे समवशरण के स्वामी, हम शरणा आये स्वामी।
हम करें विधान तुम्हारा, बदलो प्रभु भाग्य हमारा॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं समवशरण विराजित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु केवल ज्ञान उपायें, चऊ घातिकर्म नशायें।
हम समवशरण में आये, दर्शन कर अर्घ चढ़ायें॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं शतेन्द्र वंदित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघुभाषा महाभाषा में, खिरती है कई भाषा में।
अपनी-अपनी भाषा में, समझे हम श्रुत भाषा में॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं लघुभाषा महाभाषा प्ररूपण कराय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर असुर मनुज पशु ध्यायें, नारकी भी प्रभु को ध्यायें।
प्रभु वाणी पार लगाये, सम्यक्दर्शन भवि पायें॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं चऊगति पूजित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों के पुण्य उदय से, होता विहार जब नभ से।
सब दिश में पद्म रचाते, सुरगण अति पुण्य कमाते॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दिशायाम् स्वर्ण कमल शोभिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है चिन्ह नाथ का बंदर, रहते मधुवन में बंदर।
चरणों में रहते बंदर, लगते वो मस्त कलन्दर॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं कपि चिन्ह शोभिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे श्रावक बन आयें, श्रद्धा विवेक से ध्यायें।
आगमयुत क्रिया रचायें, जिनपूजा पुण्य बढ़ायें॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावक वृत्ति उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामग्री शुद्ध चढ़ायें, जब भी हम मंदिर जायें।
हर कार्य करें शुद्धि से, श्रद्धा विवेक बुद्धि से॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रद्धा विवेक उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रभु की शरणा आये, उसके दुःख सब मिट जायें
अभिनंदन प्रभु को ध्यायें, सब रोग-शोक विनशायें॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण प्रदायकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की पूजा सुखकारी, जन-जन को मंगलकारी।
प्रभु पूजा पूज्य बनाये, निशदिन जो पूजा गाये॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूज्य पद प्रदायकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक करे हर दिन जो, अतिभारी पुण्य वरे वो।
अभिषेक योग्य पद पावे, सुरपति मेरु ले जावें॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्र सम पद प्रदायकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर भव में प्रभु संग पायें, श्रद्धा से प्रभु को ध्यायें।
जब तक हम मुक्ति न पाये, जिनदर्शन भक्ति रचायें॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं भव-भव भक्ति प्रदायकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम करते प्रभु अभिनंदन, ये जिनवर श्री अभिनंदन।
हम बने आपके नंदन, इसलिये करें नित वंदन॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभिनंदनाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर सम गुणनिधि पाने, हम आय विधान रचाने।
कर्मों से मुक्ति पायें, हम शाश्वत पदवी पायें॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनगुणसंपत्ति प्रदायकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्मेद शिखर प्रभु जायें, चऊँ कर्म अघाति नशायें।
मुक्ति श्री जिनवर पायें, हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छंद)

पूजा में हो कपड़े सुन्दर, बनकर आओ सर्व पुरन्दर।
कपड़े ना हो फटे पुराने, पहनों श्रावक वस्त्र सुहाने ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं अखंड वस्त्रेण जिनपूजा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवि श्रृंगार करो तुम ऐसा, भक्ति भाव प्रगटाने जैसा।
भक्ति से निज आत्म सजाओ, पूजा में त्रय योग लगाओ ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रियोगेन भक्ति उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आज्ञा को नित जो पाले, वो हैं प्रभु के भक्त निराले।
वो ही भक्त बढ़े मतवाले, भक्ति शक्ति से खोले ताले ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं भक्ति मुक्ति प्रदायकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते जो आगम युत पूजा, आगे होती उनकी पूजा।
जिनवर सम गुण हम भी पायें, अभिनंदन प्रभुवर को ध्यायें ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं आगमयुत अर्चा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ के अभिनन्दन को, हम सब आयें प्रभु दर्शन को।
हम भी बनें नाथ तुम नन्दन, नश जायें कर्मों के बन्धन ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

उत्तम श्रावक वो कहलाता, जो है प्रतिमा धारी।
दर्शन प्रतिमा पालन करता, प्रभु दर्शन व्रत धारी।।

श्रावक व मुनिधर्म बताया, श्री जिनवर ने हमको।
अणुव्रत या जो महाव्रत पाले, पूजेगा जग उनको॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शन प्रतिमा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत प्रतिमा के पालन विधि में, द्वादश व्रत आ जाते।
अव्रत छूटे व्रती बने जब, निश्चय नियम निभाते॥ श्रावक..॥ 39॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्रत प्रतिमा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय प्रतिमा सामायिक है, सामायिक नित करना।
समता भाव सदा हो मन में, देव वन्दना करना॥ श्रावक..॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं सामायिक प्रतिमा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम चौदस प्रोषध करते, प्रौषध प्रतिमा धारी।
हर महीने चउ अनशन करते, चौथी प्रतिमाधारी॥ श्रावक..॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रौषधोपवास प्रतिमा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सचित्त त्याग प्रतिमा के धारी, प्रासुक भोजन करते।
खाने लायक फल सब्जी जल, सबको प्रासुक करते॥ श्रावक..॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं सचित्त त्याग प्रतिमा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रात्रि भोजन करे कभी ना, और नहीं करवाये।
छट्ठी प्रतिमा धारी श्रावक, उत्तम सुख को पाये॥ श्रावक..॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं रात्रि भुक्ति त्याग प्रतिमा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य प्रतिमा को, धारे श्रावक प्राणी।
ब्रह्मचर्य व्रत पूज्य बनायें, कहती माँ जिनवाणी॥ श्रावक..॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्य प्रतिमा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिमा आरंभ त्याग कहे अब, आरंभ सारम्भ त्यागो।
कोई पाप न हो अपने से, श्रावक बंधू जागो।।
श्रावक व मुनिधर्म बताया, श्री जिनवर ने हमको।
अणुव्रत या जो महाव्रत पाले, पूजेगा जग उनको।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं आरंभ त्याग प्रतिमा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह त्याग नवम प्रतिमा धर, मूर्छा भाव हटाये।
बाह्याभ्यंतर रूप परिग्रह, इनसे मोह घटाये।। श्रावक.. ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं परिग्रह त्याग प्रतिमा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिमा अनुमति त्याग कहे अब, अनुमति कुछ ना देना।
सांसारिक कुछ काम न करना, प्रभु की शरणा लेना।। श्रावक.. ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमति त्याग प्रतिमा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारहवीं उद्दिष्ट त्याग को, गृह त्यागी अपनाये।
क्षुल्लक व क्षुल्लिका इसमें, श्रावक श्रेष्ठ कहाये।। श्रावक.. ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा उपदेशकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

ये विधान हम निशदिन प्रभुवर का करें।
अभिनंदन का हम नित अभिनंदन करें।।
दीपक ध्वज संग हम पूर्णार्घ चढ़ा रहें।
अभिनंदन को वंदन करने आ रहे।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुःख, अशांति, उपद्रव, विपदा, कोरोना रोग, शोक, संकट, पीड़ा निवारणाय सुख-शांति, यश-कीर्ति, समृद्धि, त्रैलोक्य पूज्यपद प्रदायकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अभिनंदन के चरण में, छोड़ें हम जल धार।
पुष्पों की माला चढ़ा, पायें सौख्य अपार।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- अभिनंदन भगवान की, गाते अब जयमाल।
अभिनंदन हम कर रहे, लेकर अर्घ विशाल।।

(शंभु छंद)

हम प्रभु की जयमाला पढ़ते, शिव वधु की माला वरने को।
जिन भगवन् से सब कुछ मिलता, हम नमन करें उन प्रभुवर को।।
जो सुन्दर रूप तुम्हारा है, उसको उपमायें क्या दे हम।
उपमायें छोटी पड़ जाती, जब प्रभु का दर्शन करते हम।।1।।

घुंघराले केश जिनेश्वर के, द्वय कान प्रभु के पुस्मिताल।
आँखें हैं नील कमल जैसी, माथा उन्नत है शुभ ललाट।।
है गोल कपोल प्रभुवर के, नासा है प्रभुवर की प्यारी।
प्रभुवर के होंठ लगे ऐसे, बोलेंगे प्रभु वाणी प्यारी।।2।।

त्रय वली कंठ में बनी हुई, शुभ दीर्घ भुजायें प्रभुवर की।
श्री वत्स चिन्ह सुख का प्रतीक, मेरु सम नाभि जिनवर की।।
जंघायें दृढ़ता की प्रतीक, जिन पैर लगे गंगा सिन्धु।
प्रभुवर के गुण तो हैं अनंत, उसका प्रतीक होता बिन्दू।।3।।

हे नाथ ! आपकी नित पूजा, हर मंदिर में होती रहती।
पद्मासन खड्गासन प्रतिमा, हर मंदिर में जिनकी रहती।।

विद्यासिद्धि हो जाती है, प्रभुवर की पूजा करने से।
सुख-शांति बुद्धि बढ़ती है, जिनवर की अर्चा करने से।।4।।

कल्याण हमारा होता है, भगवन् का कीर्तन करने से।
सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं, प्रभु का विधान नित करने से।।
हम निशदिन पूजा भक्ति करें, प्रभुवर हम ऐसा बल पायें।
व्रत समितिगुप्ति तप व्रत पाले, 'आस्था' से जिनगुण पा जायें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं (सर्वकार्य सिद्धीदायक, कल्याणकारक, विद्याबुद्धि केवलज्ञान प्रदायक सर्वरोग, शोक, पीड़ा, दुःख, संकट, कोरोना रोग विनाशक) श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **अभिनंदन भगवान को, वंदन करें त्रिकाल।**
त्रय संध्या पूजन करें, प्रभु को नत मम भाल।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज-भाया कई जमानों....)

घुंघुरु छम छमा छम छन नन नन बाजे रे,
अभिनंदन की आरती में मारों मनवा नाचे रे..

1. **नगर अयोध्या में प्रभु जन्में, संवर राजदुलारे।**
   सिद्धार्था माता के नंदन, सुर आये तुम द्वारे।। घुंघरु..
2. **जब वैराग्य जगा प्रभुवर को, दीक्षा लेने जायें।**
   हम भी ज्ञानी बनें आप सम, आरती करने आये।। घुंघरु..
3. **यक्ष-यक्षिणी नाथ आपकी, हर दिन भक्ति करते।**
   नर-नारी तिर्यंच सुरासुर, नृत्य द्वार पे करते।। घुंघरु..
4. **ढ़ोल नगाड़ा वाद्य बजाकर, कीर्त्तन प्रभु का गायें।**
   'आस्था' से हम अभिनंदन की, आरती हर दिन गायें।। घुंघरु..

श्री अभिनंदननाथ चालीसा

दोहा- श्री अभिनंदन नाथ का, अभिनंदन है आज।
अभिनंदन हम कर रहे, पाने शिवसुख राज।।
अभिनंदन भगवान का, चालीसा सुखकार।
भक्ति से हम नित पढ़ें, आकर प्रभु के द्वार।।

चौपाई

अभिनंदन आनंद प्रदायक, सुख-शांति सौभाग्य प्रदायक।
चालीसा इनका सुख दायक, हमें बना दो तुम सम लायक।।1।।
नगर अयोध्या धन्य कहाये, प्रभु की जन्म भूमि कहलाये।
चतुर्थ काल चौथे प्रभु आये, चहुँगति दुःख से मुक्त करायें।।2।।
इक्ष्वाकु कुल को चमकायें, पिता स्वयंवर खुशी मनायें।
माँ को सोलह स्वप्न दिखाये, गज प्रवेश मुख से उर आये।।3।।
सिद्धार्था माँ स्वप्न सुनाये, स्वप्नों का फल पिता बताये।
जनता सुन सारी हर्षाये, सुरपति गर्भ कल्याण मनाये।।4।।
ताथइ थैया नाचे गाये, मात-पिता की भक्ति रचायें।
जन्मोत्सव त्रय लोक मनाये, प्रभु को मेरु पे नहलाये।।5।।
सुरपति सहस्र नाम से ध्याये, अद्भुत ताण्डव नाट्य दिखाये।
बहुत भुजा सौधर्म बनाये, सहस्र नयन से दर्शन पाये।।6।।
भव अनेक प्रभु के दिखलाये, अभिनय लख सुर आनंद पाये।
नगर रत्नसंचय के राजा, महाबल अति बलशालि राजा।।7।।
सत्यनिष्ठ वह न्याय प्रिय था, प्रजाहितैषी प्रजा प्रिय था।
भव भोगों से हुई विरक्ति, छोड़ चले जग की आसक्ति।।8।।
गुरु विमलवाहन मिल जाये, उनसे मुनिव्रत दीक्षा पाये।
द्वादशांग ज्ञाता बन जाये, सोलहकारण भावन भाये।।9।।
तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये, पढ़ें-पढ़ायें ध्यान लगायें।
अंत समय प्रभुवर को ध्यायें, करें समाधि स्वर्ग सिधायें।।10।।

विजय अनुत्तर में मुनि जाये, आयु तैंतीस सागर पाये।
प्रभु भक्ति अहमिन्द्र रचाये, भगवंतों का ध्यान लगाये॥11॥
लेश्या उनकी शुक्ल कहाये, सुन्दर तन छोटा शुभ पाये।
तन वैक्रियक उत्तम पाये, अवधिज्ञान भव दर्श कराये॥12॥
चर्चा नित तत्त्वों की करते, अर्हतों की पूजा करते।
अर्हत भक्ति उन्हें सुहाये, सिद्धों का नित ध्यान लगायें॥13॥
छह महीने आयु रह जाये, धनपति सुन्दर नगर बनाये।
गर्भ पूर्व से जन्म समय तक, होती रत्नवृष्टि महीनों तक॥14॥
प्रभु के पंच कल्याण मनाये, पापों से छुटकारा पाये।
तीन ज्ञान संग माँ उर आये, मति श्रुत अवधि नेत्र कहाये॥15॥
स्वर्णिम देह जिनेश्वर पायें, जग को स्वर्ण समान बनायें।
मेघ विलय वैराग्य जगाये, अर्चा सुर ब्रह्मर्षि रचायें॥16॥
दीक्षा ले प्रभु कर्म नशायें, गिरि सम्मेद से मुक्ति पायें।
कपि चिह्न प्रभु का कहलाये, हम भी प्रभु चरणों में आये॥17॥
आदिप्रभु के वंशज स्वामी, इक्ष्वाकु कुल त्रिभुवन नामी।
हम अभिनन्दन प्रभु को ध्यायें, प्रभु पद चन्दन नित्य लगाये॥18॥
जिनगुण संपत्त प्रभु से पायें, यश कीर्ति आनंद बढ़ायें।
रोग कष्ट पीड़ा मिट जाये, श्रद्धा से चालीसा गाये॥19॥
हे प्रभु ! हमें बनालो नंदन, गुप्तिनंदी भी करते वंदन।
तीन जगत् पूजित अभिनंदन, शत-2 वंदन, शत-2 वंदन॥20॥

दोहा- अभिनंदन यह नाम ही, वंदन योग्य बनाय।
अभिनंदन को हम भजें, भव क्रंदन मिट जाय॥
अभिनंदन जिनदेव की, हरदिन भक्ति रचाय।
अभिनंदन भगवान को, 'आस्था' से नित ध्याय॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री सुमतिनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	मेघरथ
माता	–	सुमंगला
आयू	–	40 लाख पूर्व
ऊँचाई	–	300 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	श्रावण शुक्ल द्वितीया
जन्म	–	चैत्र शुक्ल 11
जन्म स्थान	–	काम्पिल (साकेतपुरी, अयोध्या)
दीक्षा	–	चैत्र शुक्ल नवमी
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	राजा पद्मदत्त
कैवल्य ज्ञान	–	चैत्र शुक्ल एकादशी
गणधर	–	चमर आदि (116)
कुल मुनि	–	3 लाख बीस हजार
गणिनी	–	अनंतमति
कुल आर्यिका	–	3 लाख तीस हजार
श्रावक	–	3 लाख
श्राविका	–	5 लाख
मोक्ष	–	चैत्र शुक्ल 11
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	स्वर्ण
चिह्न	–	चकवा
चैत्यवृक्ष	–	प्रियंगु

शासक देव

यक्ष	–	तुम्बरु
यक्षिणी	–	पुरुषदत्ता
क्षेत्रपाल	–	(1) कल्याणचन्द्र (2) महाचन्द्र (3) पद्मचन्द्र (4) नयचन्द्र

सुमति प्रदाता श्री सुमतिनाथ विधान

स्थापना (अडिल्ल छंद)

सुमतिनाथ से मति पाने हम आ रहे।
सुमति प्रभु की अर्चा कर हर्षा रहे।।
पुष्पों से आह्वान करें जिननाथ का।
जयकारा बोलें हम सुमतिनाथ का।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

निर्मल सलिल कलश भर लाये, प्रभु का न्हवन करायें।
आये हम प्रभु पूजा करने, तीनों रोग नशायें।।
सुमतिनाथ से सुमति जगायें, सुमति मार्ग अपनायें।
अर्चा करते सुमति नाथ की, मोक्ष संपदा पायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन भी शीतल हो जाता, प्रभु पद जो लग जाये।
उसी गंध को शीश लगाने, हम चरणों में आये।। सुमतिनाथ..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल भाव प्रगटाने भगवन्, अक्षत धवल चढ़ायें।
अक्षय पदवी पाने भगवन्, पूजन भक्त रचायें।। सुमतिनाथ..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम अरि को नशने वाले, सुमतिनाथ को ध्यायें।
अपना कामबाण विनशाने, पुष्प मनोहर लाये।। सुमतिनाथ..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा वेदनी हमें सताये, जिनवर उसे नशायें।
क्षुधारोग अपना विनशाने, व्यंजन सरस चढ़ायें।। सुमतिनाथ..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक की ज्योति जगत् में, अंधकार विनशाये।
हम भी प्रभु की करें आरती, मोह-तिमिर हट जाये।।
सुमतिनाथ से सुमति जगाये, सुमति मार्ग अपनाये।
अर्चा करते सुमति नाथ की, मोक्ष संपदा पायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का कष्ट हरो प्रभु, धूप लिये हम आये।
अग्नि पात्र में धूप जलायें, सुमति नमः हम ध्यायें।। सुमतिनाथ..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं नर्वपामीति स्वाहा।

श्री विहार करते प्रभु जग में, हरा जगत् हो जाये।
हरे-भरे रहना है हमको, हरे-भरे फल लायें।। सुमतिनाथ..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम भू के श्री स्वामी की, पूजा मंगलकारी।
अष्ट द्रव्य से अर्चा कर हम, बनें मोक्ष अधिकारी।। सुमतिनाथ..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- श्री पंचम तीर्थेश ये, सुमतिनाथ है नाम।
सुमतिनाथ के नाम का, करते भव्य विधान।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(दोहा)

पंचकल्याणक आपके, मना रहे सुर इन्द्र।
हम भी अर्घ चढ़ा रहे, बनकर श्रावक इन्द्र।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक सहिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि बन करते साधना, सहते परिषह ईश।
सब में समता वे धरें, फिर बनते जगदीश।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व परिषह विजेता श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा परिषह कह रहा, क्षुधा जयी भगवान।
धैर्य सहित सहते क्षुधा, ये मुनि की पहचान॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षुधा परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा परिषह जीतकर, शांति सुधा बरसाय।
प्रभु चरणों के ध्यान से, भूख प्यास भग जाय॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं तृषा परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैसी भी सर्दी पड़े, या पाला हो घोर।
जलाशयों के निकट में, करते मुनि तप घोर॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं शीत परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान करें नित श्री मुनि, रवि के सन्मुख जाय।
उष्ण परिषह दृढ़ सहें, कोई डिगा न पाय॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं उष्ण परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिषह दंशमशक सहे, मच्छर बिच्छु आय।
तिर्यंचकृत उपसर्ग भी, मुनि को डिगा न पाय॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं दंशमशक परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नग्न दिगम्बर रूप ही, तीन लोक में पूज्य।
निर्विकार मुनि नग्न बन, बनते हैं जग पूज्य॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं नग्नत्व परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति परिषह जीतते, कष्ट लगे बस फूल।
ऐसे गुरु के चरण में, सदा चढ़ायें फूल॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं अरति परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारी देवी मानुषी, या तिर्यंची होय।
सबके परिषह वे सहें, शूर वीर मुनि होय॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्त्री परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंगे पैर चलें सदा, कंकड़ पग लग जाय।
चर्या परिषह सह श्रमण, मन में खेद न लाय॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं चर्या परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शैल गुहा तरु तल शिला, उन पर ध्यान लगाय।
निषद्या परिषह सहें, आसन श्रेष्ठ लगाय॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं निषद्या परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शय्या रूखी कांकरी, उसपे रात बिताय।
शय्या परिषह जीतकर, मोक्ष शिला मुनि पाय॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं शय्या परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट वचन कोई कहे, करते ना मुनि क्रोध।
जीते परिषह क्रोध का, बढ़ा स्वयं का बोध॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं आक्रोश परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वध परिषह को वे सहें, करते ना मुनि द्वेष।
खेद रहित आनंद से, पूजें हम परमेश॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं वध परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें नहीं कुछ याचना, ना हो गर आहार।
परिषह यही अयाचना, जीतें सर्व प्रकार॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं याचना परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अलाभ परिषह सहे, होय हानि या लाभ।
हे अलाभ जेता प्रभु, दर्शन का दो लाभ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं अलाभ परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिषह रोग विनाशने, करते मुनिवर योग।
जो प्रभु की अर्चा करे, वो भी बने निरोग॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं रोग परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृण कंटक कंकड़ चुभे, या लग जाये शूल।
तृणस्पर्श परिषह सहे, इनको माने फूल॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं तृणस्पर्श परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल परिषह गुरुवर सहें, करते हैं मुनि ध्यान।
मल से युत इस देह से, करें आत्म कल्याण॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं मल परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई करे सत्कार तो, कोई करे अपकार।
समता से मुनि नित सहें, भक्तों का उपकार॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं सत्कार पुरस्कार परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञा धनी मुनीश का, जब ना हो सम्मान।
प्रज्ञा परिषह है यही, कहते सब भगवान॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञा परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान साधना व्यर्थ तब, जब ना होवे ज्ञान।
ज्ञानावरण विशेष से, हो परिषह अज्ञान॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं अज्ञान परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अदर्शन परिषह मिटे, संशय सर्व नशाय।
सम्यक्दर्शन प्राप्त कर, इक दिन शिवसुख पाय॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं अदर्शन परिषहजय उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत मुनि धरें, समिति पंच प्रकार।
पंचेन्द्रिय को वश करें, आठ बीस गुण धार॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशति गुण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अहिंसा पालते, छोड़ें हिंसा पाप।
सुमतिनाथ के नाम का, करते हम सब जाप॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसा धर्मोपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्बुद्धि कुमति नशे, सद्बुद्धि दो नाथ।
सद्बुद्धिदायक प्रभो, जय हो सुमतिनाथ॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं सद्बुद्धि प्रदायकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

याद रहे हमको सदा, भूलें ना कुछ बात।
अंत समय तक नाथ का, नाम जपें दिन रात॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्मरण शक्ति प्रदायकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमति से शुभमति बने, कुमति कभी न होय।
शुद्धमति दे दो प्रभो, मम मति सन्मति होय॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धमति प्रदायकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति विभ्रम ना हो कभी, सिर में ना हो रोग।
सिर के रोग मिटें सभी, प्रभु सम धारें योग॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिरशूल आदि सर्वरोग हराय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पूजा गुरु वंदना, सदा करें हम भक्त।
सिर पर गुरु का हाथ हो, सदा रहें जिनभक्त॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनभक्त पद प्रदायकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनपूजा सब दुःख हरे, ये है आगम वाक्य।
दुर्गति वा सब दुःख हरें, आचार्यों के वाक्य॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुर्गति आदि सर्वदुःख हराय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

प्रतिपल आयु घटे हमारी, आविचि मरण कहाये।
संसारी जीवों की हर क्षण, आयु निष्फल जाये॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं आवीचिमरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह छोड़ परभव में जाना, तद्भव मरण कहाये।
इसको भी रत्नत्रय धारी, सम्यक् मरण बनाये॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं तद्भवमरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशावधि सर्वावधि द्वय विध, अवधि मरण कहाये।
प्रभु की शरणा जाने वाले, मरण समाधि पायें॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं अवधिमरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि अंतिम मरण जगत् में, विरले प्राणी पायें।
मरण श्रृंखला नशे हमारी, हन जिन भक्ति स्वायें।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं आद्यंतमरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय बिन बिना समाधि, बाल मरण कहलाये।
ऐसा जीव जगत् में भटके, भव-भव कष्ट उठाये।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं बालमरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंडित मरण श्रेष्ठ सुखदाता, उत्तम मुनिवर पायें।
इसके तीन प्रकार शास्त्र में, श्री जिनदेव बतायें।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंडितमरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण संघ से बहिर्भूत व, मरण सातवाँ पाये।
प्रायश्चित्त ले निर्मलमति हो, मृत्यु महोत्सव पाये।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवसन्नमरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाल पंडित मरण जगत् में, देशव्रती ही पायें।
उत्तम स्वर्गादिक् सुख पाकर, क्रम से शिवपुर जायें।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं बाल पंडित मरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शल्य सहित प्राणों को तजना, मरण सशल्य कहाये।
द्रव्य भाव दो शल्य मरण को, अज्ञानी जन पाये।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं सशल्यमरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिचर्या से दूर रहे जो, मरण बलाका पाये।
यही पलायमरण कहलायें, हम इसको ना पायें।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं बलाकामरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्त्त रौद्रवश मरण जीव का, वोसट मरण कहाये।
ऐसे खोटे ध्यान मरण तज, धर्म शुक्ल दो ध्यायें॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं वोसट्टमरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विप्राणस इक मरण समाधि, श्वास रोक मुनि पायें।
आत्म धर्म का रक्षण कर मुनि, उत्तम गति को पायें॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं विप्राणसमरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शस्त्रघात से प्राण छोड़ मुनि, धर्म सुरक्षा करते।
गृद्धपृष्ठ ये मरण समाधि, वीर मुनीश्वर करते॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं गृद्धपृष्ठ मरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त प्रत्याख्यान मरण को, संयमधर कर पायें।
इंगिनी व प्रायोपगमन भी, महाव्रती ही पाये॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं भक्त प्रत्याख्यान इंगिनी प्रायोपगमन मरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयविध पंडित मरण समाधि, भव्य जीव करते हैं।
रत्नत्रय आराधन करके, मुक्ति रमा वरते हैं॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंडितमरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंडित पंडित मरण उच्चतम, केवली जिन के होता।
सिद्ध जिनेश्वर का इस जग में, पुनरागम नहीं होता॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंडित पंडित मरण उपदेशकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

सुमतिनाथ की पूजा करके, शुभमति प्रभु से पायें।
अंत समय तक रहें सुमति नित, विनती करने आयें॥
हे भगवन् ! हम ये विधान कर, अब पूर्णार्घ चढ़ायें।
धर्मतीर्थ पर सुमतिनाथ को, अपना शीश झुकायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पीड़ा, अशांति, क्लेश, दुःख, संकट, कोरोना रोग, पाप कर्म विनाशक, कुमति विनाशक, सद्बुद्धि दायक सर्वसुख प्रदायक, शांतिदायक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्री सुमति प्रभु पाँचवे, पंचम गति दो नाथ।
शांतिधारा हम करें, पुष्पाञ्जलि के साथ॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9,27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता- श्री सुमति जिनंदा, जन मन चंदा, आनंद अतिशय तुम देते।
भव पाप निकंदा, रूप सुनंदा, भक्तों का मन हर लेते॥

अडिल्ल छंद

नमन करें हम मोहजयी भगवान को।
नमन करें हम सुमतिनाथ गुणखान को॥
प्रभु के पंचकल्याण भक्त नित मना रहे।
पापों से मुक्ति पाने गुण गा रहे॥1॥

प्रभु के कल्याणक जग का मंगल करें।
अष्ट देवियाँ माता की रक्षा करें॥

सर्व देवियाँ माता की सेवा करें।
प्रश्न पूछकर माता को प्रमुदित करें।।2।।
प्रभुवर का होता धरती पे जब जनम।
स्वर्गों से सुर करें जिनेश्वर को नमन।।
घंटा भेरी शंखादि युगपत् बजें।
मध्य लोक में आकर प्रभु को सुर भजें।।3।।
जन्म कल्याण मनायें सारे देवगण।
न्हवन देखते बाल प्रभु का भक्तगण।।
जन्म कल्याणक शांति करें त्रय लोक में।
भगवन् पूजें जाते सारे लोक में।।4।।
सहस अट्ठोत्तर कलशों से प्रभु का न्हवन।
इन्द्र युगल युगपत् करते प्रभु का न्हवन।।
नाच बजाकर सुरगण खुशी मना रहे।
ऐरावत पे बिठा प्रभु को ला रहे।।5।।
मात-पिता को नाम बताते सुरमुदा।
पंच कल्याण मनाने आये सर्वदा।।
गुप्ति समिति सद्व्रत का पालन हम करें।
'आस्था' से हम सुमति सम शिवपुर वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग दुःख, अशांति, अपमृत्यु, पाप दोषहारक ऋद्धि-सिद्धी सुख-समृद्धि शांति-यश-कीर्ति प्रदायक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाम मंत्र जिनदेव का, जपते हम त्रयकाल।
ॐ ह्रीं सुमते नमः, बोलें फेरें माल।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज–माईन–माईन....)

सुमतिनाथ की आरती करने, मंगल दीप जलायें।
कुमति नशाने सुमति जगाने, प्रभु की आरती गायें॥
बोलो सुमतिनाथ की जय...2

1. मोह अंधेरे में हम भटके, कर्मों ने है घेरा।
   आप शरण में आकर जिनवर, पायें ज्ञान उजेरा॥
   सत्पथ पाने प्रभुवर तुमसे–2, तव चरणों में आयें॥ कुमति..
2. मेघराज सुत मात सुमंगला, सुमतिनाथ को पायें।
   पंचकल्याणक इंद्र मनायें, घर–घर दीप जलायें।
   नगर अयोध्या में प्रभु जन्में–2, घर–घर खुशियाँ छायें॥ कुमति..
3. सुमतिनाथ प्रभु के विधान की, आरती मंगलकारी।
   प्रज्ञा ज्योति हमको दे दो, विनती सुनों हमारी॥
   'आस्था' से हम करें आरती–2, प्रभु को शीश झुकायें॥ कुमति.

***

श्री सुमतिनाथ चालीसा

दोहा– इष्टदेव पाँचों प्रभो !, चौबीसों भगवान।
जिनवाणी गणधर प्रभो !, कर दो सब कल्याण॥
दो हमको सुमति प्रभो !, सुमतिनाथ भगवान।
चालीसा प्रभु का पढ़ें, नशने मिथ्याज्ञान॥

चौपाई

सुमतिनाथ को शीश झुकायें, उनका हम चालीसा गायें।
जो भी पढ़ें सुने चालीसा, दुःख संकट हर ले चालीसा॥1॥
चालीस बार करो चालीसा, सुख–शांति देता चालीसा।
श्रद्धा से गाते चालीसा, आधि–व्याधि हरता चालीसा॥2॥
भय से मुक्त करे चालीसा, निडर बनाये प्रभु चालीसा।
दुर्बुद्धि हरता चालीसा, सद्बुद्धि देता चालीसा॥3॥
मति विभ्रम हरता चालीसा, शुभमति देता प्रभु चालीसा।
रोग शोक हरता चालीसा, तन निरोग करता चालीसा॥4॥
मनोव्याधि हरता चालीसा, मन प्रसन्न करता चालीसा।
सिरो रोग हरता चालीसा, कर्ण रोग हरता चालीसा॥5॥
नयन रोग हरता चालीसा, घ्राण रोग मेटे चालीसा।
कर्ण रोग हरता चालीसा, हस्त रोग हरता चालीसा॥6॥
कण्ठ रोग हरता चालीसा, दंत रोग हरता चालीसा।
ग्रीवा रोग हरता चालीसा, पृष्ठ रोग हरता चालीसा॥7॥
हृदय रोग हरता चालीसा, उदर रोग हरता चालीसा।
कमर रोग हरता चालीसा, कैंसर रोग हरे चालीसा॥8॥
टी.बी. रोग हरे चालीसा, शुगर रोग हरता चालीसा।
बी पी रोग हरे चालीसा, किडनी रोग हरता चालीसा॥9॥
लीवर रोग हरे चालीसा, ज्वर विकार हरता चालीसा।
मूत्र रोग हरता चालीसा, जंघा रोग हरे चालीसा॥10॥

घुटना दर्द हरे चालीसा, पैर रोग हरता चालीसा।
खुजली रोग हरे चालीसा, कुष्ठ रोग हरता चालीसा॥11॥
सर्दी रोग हरे चालीसा, खाँसी दमा हरे चालीसा।
चक्कर रोग हरे चालीसा, पाण्डु रोग नाशे चालीसा॥12॥
मन निर्मल करता चालीसा, वचन मधुर करता चालीसा।
सब बाधा हरता चालीसा, प्रचुर पाप हरता चालीसा॥13॥
पुण्य किरण देता चालीसा, नई शक्ति देता चालीसा।
परिजन मैत्री दे चालीसा, भक्ति का रस दे चालीसा॥14॥
सुमतिनाथ का ये चालीसा, कुमति हरेगा ये चालीसा।
क्रोध कषाय हरे चालीसा, आर्त्त रौद्र हरता चालीसा॥15॥
राग द्वेष हरता चालीसा, मिथ्या मोह हरे चालीसा।
ज्ञान सु सम्यक् दे चालीसा, भव अनंत हरता चालीसा॥16॥
गुरु की शरणा दे चालीसा, प्रभु शरणा देता चालीसा।
सम्यक् पथ देता चालीसा, मिथ्यामत हरता चालीसा॥17॥
मोक्षमार्ग देता चालीसा, सब दुर्गुण हरता चालीसा।
पुण्यवृद्धि करता चालीसा, पाप ताप हरता चालीसा॥18॥
कर्म समूह हरे चालीसा, उत्तम पद देता चालीसा।
अपमृत्यु हरता चालीसा, साम्य समाधि दे चालीसा॥19॥
हम सब गायें ये चालीसा, निशदिन गायें ये चालीसा।
ऋद्धि सिद्धि दायक चालीसा, समिति गुप्तियाँ दे चालीसा॥20॥

दोहा– वैजयन्त से च्युत हुये, जन्में सुमतिनाथ।
पितु मेघरथ धन्य हुये, भजें मंगला मात॥
कर्म नशाये नाथ ने, सम्मेदाचल जाय।
सुमतिनाथ भगवान को, 'आस्था' शीश झुकाय॥

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री पद्मप्रभु भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	धरण राज
माता	–	सुसीमा देवी
आयू	–	30 लाख पूर्व
ऊँचाई	–	250 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	माघ कृष्णा षष्ठी
जन्म	–	कार्तिक कृष्ण 13
जन्म स्थान	–	कौशाम्बी
दीक्षा	–	कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	सोमदत्त राजा
कैवल्य ज्ञान	–	चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
गणधर	–	वज्रचमर आदि (110)
कुल मुनि	–	3 लाख 30 हजार
गणिनी	–	आ. रतिषेणा (मेरुषेणा)
कुल आर्यिका	–	4 लाख 20 हजार
श्रावक	–	3 लाख
श्राविका	–	5 लाख
मोक्ष	–	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	लाल
चिह्न	–	कमल
चैत्यवृक्ष	–	प्रियंगु

शासक देव

यक्ष	–	कुसुम
यक्षिणी	–	मनोवेगा
क्षेत्रपाल	–	(1) कलाचन्द्र (2) कल्पचन्द्र (3) कुमुतचन्द्र (4) कुमुदचन्द्र

सर्वसौख्य प्रदायक श्री पदमप्रभु विधान

स्थापना (नरेन्द्र छंद)

पद्मनाथ का पद्म चिह्न है, पद्म पद्म पे राजे।
पद्म हाथ में ले आये हम, हर दिन ताजे-ताजे॥
सर्वसौख्य प्रदायक तुम हो, हे जिन ! तुम्हें बुलाये।
भाग्य हमारा जगे आप सम, हम चरणों में आये॥

ॐ ह्रीं सर्वसौख्य प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

पद्म सरोवर का प्रभो !, लाये हम सब नीर।
चढ़ा रहे प्रभु आपको, हरने अपनी पीर॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मनाथ के चरण में, लगा रहे हम गंध।
प्रभु को गंध चढ़ा मिले, हमको धर्म सुगंध॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवलाक्षत जैसे धवल, वैसे हो मम भाव।
अक्षय पद की प्राप्ति का, मन में रहे उछाव॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मासन में राजते, पद्म चिह्न युत नाथ।
लाल पद्म अर्पण करें, पाने हम प्रभु साथ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर शुद्ध मिठाईयाँ, भर-भर व्यंजन थाल।
चढ़ा रहे हम नाथ को, नशें क्षुधा विकराल॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाकर नाथ हम, करें आरती रोज।
प्रभु चरणों में कर्म का, कम हो जाये बोझ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप चढ़ायें अग्नि में, प्रभु के सन्मुख नित्य।
प्रभु चरणों में भक्ति से, लगा रहे यह चित्त॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हरे-भरे रसदार फल, केले दाड़िम जाम।
मुक्ति प्रदाता नाथ को, चढ़ा रहे हम आम॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर तुमने पा लिया, पद अनर्घ अविराम।
हमको भी वो पद मिले, अर्पित अर्घ ललाम॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

सोरठा- पद्मप्रभु भगवान, सर्वसौख्य दायक प्रभो।
करते भक्त विधान, पद्मप्रभु का भक्ति से॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अवतार छंद

(तर्ज- यह अर्घ कियो निज हेत.. नंदीश्वर की चाल..)

जब गर्भ में आये नाथ, धरती स्वर्ग बनी।
दिक्कन्यायें नत माथ, पुलकित जग जननी॥
हम करते भव्य विधान, पद्म जिनेश्वर का।
सब सुखदायक भगवान, श्री परमेश्वर का॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भकल्याणकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपरिम ग्रैवेयक छोड़, माँ के उर आये।
हम भक्ति करें बेजोड़, संस्तुति नित गायें॥ हम..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऊर्ध्व ग्रैवेयक त्यक्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मात सुसीमा धन्य, ऐसा सुत पाकर।
औ धरण पिता भी धन्य, जिनसुत को पाकर।।
हम करते भव्य विधान, पद्म जिनेश्वर का।
सब सुखदायक भगवान, श्री परमेश्वर का।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं धन्यजननी जनकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होता प्रभु का अभिषेक, मेरु पर्वत पे।
देखें मुनिवर अभिषेक, आते पर्वत पे।। हम..।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मेरुशिखरे अभिषेक प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु योजन के वे कुंभ, होते बहुत बढ़े।
ले सहस अठोत्तर कुंभ, देवी देव खड़े।। हम..।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टोत्तर सहस्त्र कुंभेन अभिषिक्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्म युगल ऐशान, दोनों न्हवन करें।
श्री बालप्रभु बलवान, उनपे कलश ढुरें।। हम..।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतुल्य बलधारकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब द्रव्यों से अभिषेक, होता प्रभुवर का।
शची करती प्रभु अभिषेक, बालक जिनवर का।। हम..।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं इंद्राणी कृत अभिषेक प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो जाये क्षीर सम मेरु, प्रभु के आने से।
परिणाम समुज्ज्वल होय, प्रभु को ध्याने से।। हम..।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं उज्ज्वलभाव प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक ले सुरदेव, खुद को धन्य करें।
होली खेलें सब देव, देवी नृत्य करें।। हम..।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं गंधोदकेन पवित्रकराय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गों में भी ले जाय, सुर गंधोदक को।
आपस में सभी लगाय, वे गंधोदक को॥
हम करते भव्य विधान, पद्म जिनेश्वर का।
फिर करें निरन्तर ध्यान, श्री परमेश्वर का॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं गंधोदकेन स्वर्ग धन्यकराय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर करता नयन हजार, प्रभु को फिर देखे।
प्रभु को देखें दो बार, चरणों सिर टेके॥ हम..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्त्र नयनेन सुरेन्द्र अवलोकिताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्राणी गोद बिठाय, काजल तिलक करे।
वस्त्राभूषण पहनाय, सब श्रृंगार करे॥ हम..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वाङ्ग सुन्दर जिनरूपाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्तव करता सुर इन्द्र, शत दश नामों से।
हम पूजें बनकर इंद्र, प्रभु को नामों से॥ हम..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्त्रनाम धारकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के अंगुष्ठ लख चिन्ह, घोषित नाम करें।
इन प्रभु के पद्म सुचिन्ह, संज्ञा पद्म धरें॥ हम..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मचिह्न युक्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय बोलें सर्व सुरेश, पद्म जिनेश्वर की।
शची लेय बलाई विशेष, श्री पद्मेश्वर की॥ हम..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व सुरदेवीगणेन पूज्याय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सन्मुख तांडव नृत्य, सुरपति स्वयं करे।
फिरकी संग करता नृत्य, अतिशय पुण्य वरे।।
हम करते भव्य विधान, पद्म जिनेश्वर का।
फिर करें निरन्तर ध्यान, श्री परमेश्वर का।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रकृत तांडव नृत्येन पूजिताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर मात-पिता के पास, प्रभुवर को देते।
आनंद नाटक कर खास, सुर आनंद लेते।। हम..।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्र कृत आनंद नाट्य शोभिताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नगरी में उत्सव छाय, जन्म कल्याणक का।
नर-नारी दर्शन पाय, मंगल दायक का।। हम..।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजगत् उत्सव प्रदायकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा लेते भगवान, सबको छोड़ चले।
देवर्षि करें गुणगान, प्रभु सन्मार्ग चले।। हम..।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं लौकांतिक देवपूजिताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कर केशों का लोच, सिद्धों को ध्यायें।
प्रभु करते चिंतन रोज, क्या संग में जाये।। हम..।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचमुष्टि लोचनकराय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावें प्रभु केवलज्ञान, छह महिने अन्दर।
हम पूजें श्री भगवान, पाने श्रुत मन्दर।। हम..।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे समवशरण के नाथ, हम शरणा आये।
सब कष्ट मिटाओ नाथ, सुख-शांति पायें।। हम..।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं शरण प्रदायकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्मेद शिखर पे जाय, मुक्ति वधु वरते।
तुम सम पदवी मिल जाय, हम पूजा करते।। हम..।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे मुक्ति प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्द्ध नरेन्द्र छंद)

पंचकल्याणक व्रत इक ऐसा, सर्व पाप विनशाये।
बड़े व छोटे सभी पाप से, हमको मुक्त कराये।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक व्रत प्रबोधकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा, कर जो पाप किया है।
उन सबसे छुटकारा पाने, प्रभु का ध्यान किया है।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व हिंसादि पाप विनाशनाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन-वच-काया कृतकारित से, किया पाप-अनुमोदन।
उनको शुद्ध बनाने भगवन्, करते हम जिन अर्चन।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं मन-वच-काय पवित्रकरणाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार चतुष्टय क्रोधादिमय, और कषायें सारी।
राग-द्वेष मिथ्यात्व हरो जिन !, करते भक्ति तुम्हारी।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं मिथ्यात्वादि सर्वपापहराय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग प्रमाद कषायें मिलकर, नित नव पाप कराये।
आर्त्तरौद्र द्वय अशुभ ध्यान से, जिनवर हमे बचायें।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हंअशुभ ध्यान विनाशन समर्थाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मशुक्ल दो ध्यान प्राप्त हो, मिथ्या मोह नशायें।
रत्नत्रयधारी बनने हम, पूजा नित्य रचायें।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभ ध्यान प्रदायकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आपके इस विधान से, सम्यक् प्रज्ञा पायें।
पद्मप्रभु के चरण कमल में, हर दिन पद्म चढ़ायें।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्ज्ञान प्रदायकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छट्ठे पद्मप्रभु को हम सब, छह अंगों से ध्यायें।
हर दिन पद्मप्रभु को पूजें, आनंद अमृत पायें॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं आनंद अमृत प्रदायकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ के पद्म जिनेश्वर, सबके कष्ट मिटायें।
जो भी पूजें पद्म प्रभु को, सर्व सुखों को पायें॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित सर्वसौख्य प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

मंत्रों की शक्ति बढ़ी, सब जिनवर बतलाय।
ॐ ह्रीं यह मंत्र भी, सब मंत्रों में आय॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्र ऊर्जा शक्ति प्रदायकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामंत्र नवकार से, प्रगट हुए सब मंत्र।
चौरासी लख मंत्र ही, कहलाते जिन मंत्र॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व मंत्र प्रदायकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापों के प्रक्षाल हित, महामंत्र का जाप।
महामंत्र के जाप से, कटते सारे पाप॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामंत्र प्रबोधकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ओंकार इक मंत्र में, परमेष्ठि सब आय।
ॐ मंत्र के जाप से, रिद्धि-सिद्धि मिल जाय॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ मंत्र प्रबोधकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह्रीं मंत्र में समा गये, चौबीस प्रभु के नाम।
सर्व विघ्न संकट हरें, नित उठ जपते नाम॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं ह्रीं बीजाक्षर प्रबोधकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बीजाक्षर मंत्र भी, केवल लक्ष्मी दिलाय।
श्री मंत्र के जाप से, श्रीपति जिन बन जाय॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं बीजाक्षर प्रबोधकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐं बीजाक्षर मंत्र भी, बुद्धि करें प्रदान।
बुद्धि सद्बुद्धि रहे, दो प्रभु यह वरदान॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऐं बीजाक्षर प्रबोधकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीजाक्षर अर्हं हमें, अर्हत् रूप बनाय।
अर्हं का हम जाप कर, राग-द्वेष विनशाय॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हं बीजाक्षर प्रबोधकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्लीं मंत्र का जाप कर, कार्य सिद्ध हो जाय।
पाप रूप सब काम हर, सुरकृत भय विनशाय॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं बीजाक्षर मंत्र प्रबोधकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूल मंत्र नवकार है, इस पर हो श्रद्धान।
मंत्रों का राजा यही, कहते सब भगवान॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलमंत्रराज बीजाक्षर प्रबोधकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब मंत्रों का ध्यान व, विधिवत् जाप रचाय।
पापी भी ये मंत्र जप, सर्व पाप विनशाय॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पापमुक्त करणाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यंत्र मंत्र शाश्वत सभी, रहे अनादि काल।
मंत्र बतायें सब प्रभु, हम पूजें त्रयकाल॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनादि निधन मंत्र-यंत्र प्रबोधकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब मंत्रों में ॐ है, सब पूजा में ओम।
प्रभुवर के सब मंत्र से, पुलकित होते रोम॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं हृदय पुलकित कराय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह्रीं श्रीं संग नमः हो, कर्म नष्ट हो जाय।
मंत्रों का यह जाप ही, हमको सिद्ध बनाय॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व बीजाक्षर मंत्र प्रबोधकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन मंत्रों का जाप कर, पायें शांति अपार।
हर दिन जपते मंत्र हम, होने भवदधि पार॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं जाप्यमंत्र उपदेशकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ-जहाँ है पद्मप्रभु, उनको नित उठ ध्याय।
सर्वक्षेत्र के पद्म को, आठों द्रव्य चढ़ाय॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्षेत्र, नगर, ग्राम जिनालय विराजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शेर छंद)

जल पत्र पुष्प दीप लड्डू, ध्वजा ला रहे।
बहुरंग पुष्प पद्म की, हम माल ला रहें॥
सुन्दर सुसज्जित अर्घ की, हम थाल ला रहे।
पूर्णार्घ पद्मनाथ को, हम सब चढ़ा रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुःख, कर्म, चिंता, क्लेश, तनाव, कोरोना रोग, अशांति हर्त्ता, बोधि, समाधि, रत्नत्रय गुणदाता, जिनगुण प्रदाता श्री धर्मतीर्थ अतिशय विराजित सर्वसौख्य प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पद्मप्रभु के चरण में, करते हम जलधार।
पद्म चढ़ा जिनदेव को, बोलें हम जयकार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं सर्वसौख्य प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– माल चढ़ा प्रभु चरण में, गायें हम जयमाल।
जयमाला गाकर धरें, कंठ वही हम माल॥

(गीता छंद)

हे पद्म जिन ! हम आपकी, जयमाल श्रद्धा से पढ़ें।
प्रभु भक्ति में नित आपकी, शत इन्द्र नित रहते खड़े॥
शुभ पुण्य के शुभ योग से, मानव जनम हमको मिला।
सार्थक तभी होता जनम, प्रभु भक्ति में मन हो खिला॥1॥
जब शीश प्रभु के दर झुके, होता तभी यह धन्य है।
आँखें प्रभु के दर्श कर, होती अति ही धन्य है॥
प्रभु वाणी व गुरुवाणी से, हो जाय कान पवित्र ये।
जिह्वा प्रभु का भजन कर, हो जाय श्रेष्ठ पवित्र है॥2॥
हाथों की शोभा दान से, पूजा व आरती नित करें।
ताली बजा सेवा करें, शुभ कार्य निज कर से करें॥
नित देव दर्शन तीर्थ दर्शन, पैर से चलकर करें।
आठों ही अंगों को झुका, जिनदेव को वंदन करें॥3॥
तन-मन-वचन के साथ में, नित शुद्ध होवे भावना।
इस देह से भक्ति करें, बस एक ही प्रभु कामना॥
हम भक्त से भगवन् बने, ऐसी करें हम साधना।
प्रभु आप सम पद प्राप्ति हित, हम नित करें आराधना॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पाप, कोरोना रोग दुःख, चिंता, दुर्गति, तनाव, अपघात, शारीरिक, मानसिक, पीड़ा निवारणाय, सर्व परिजन मैत्री कराय, आरोग्य प्रदायकाय कर्म बंध निवारकाय उत्तमगति प्रदायकाय श्री धर्मतीर्थ अतिशय विराजित सर्वसौख्य प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– 'आस्था' से करते नमन, पद्मप्रभु को आज।
गुप्ति समिति व्रत से मिले, श्रेष्ठ मोक्ष सुख ताज॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज–धीरे–धीरे बोल...)

पद्मप्रभु मंगलकारी, सर्व सौख्य गुण भंडारी।
हम जगमग दीपक ला रहे, श्री पद्मप्रभु को ध्या रहें।। पद्मप्रभु..

1. कौशांबी में जन्में पद्म जिनेश,
भक्ति करें नर–नारी और सुरेश।
मात सुसीमा धरण पिता के लाल,
पद्मनाथ का पद्म चिह्न है लाल।।
जय–जय प्रभु, छट्ठे प्रभु–2, हम जग...

2. पंचकल्याणक सर्व तिथि सुखकार,
कल्याणक की महिमा अपरम्पार।
देव करें प्रभुवर का जय–जयकार,
पंचकल्याणक बने श्रेष्ठ त्योहार।।
प्रभु को भजें, सुरगण जजें–2, हम जग..

3. दीक्षा लेकर पाया केवलज्ञान,
मोहन कूट से पाया मोक्ष महान्।
जगमग दीप जलायें प्रभु के द्वार,
पद्मप्रभु को वंदन बारम्बार।।
'आस्था' करें, भक्ति करें–2, हम जग..

***

श्री पद्मप्रभ चालीसा

दोहा- चौबीसों भगवान को, वंदन बारम्बार।
चौबीसी त्रयकाल की, उनको नमन हजार॥
मात शारदा श्रीगुरु, इनको हर दिन ध्याय।
पद्म प्रभु भगवान का, चालीसा नित गाय॥

चौपाई

जय-जय पद्म प्रभु स्वामी की, त्रिभुवन के अन्तर्यामी की।
छट्ठे पद्म प्रभु जिन स्वामी, हम सब ध्याते तुमको स्वामी॥1॥
नगर कौशांबी पूज्य कहाये, जन्म नगर प्रभु का कहलाये।
जन्मे श्री जिनपद्म प्रभुवर, जगत् पूज्य छट्ठे तीर्थंकर॥2॥
पाँचों कल्याणक की तिथियाँ, मंगल कहलाती ये तिथियाँ।
अशुभ कार्य भी शुभ हो जाता, जिस तिथि को कल्याणक आता॥3॥
ये तिथियाँ सब पूज्य कहाये, कल्याणक तिथि से जुड़ जाये।
वो तिथि मंगल समय कहाये, हम प्रभु के कल्याण मनाये॥4॥
धरण पिता के राजदुलारे, मात सुसीमा को अति प्यारे।
स्वप्न देख माता हर्षाई, गज प्रवेश करता मुख माई॥5॥
हाथी बैल गज लक्ष्मी देखी, मीन युगल मालायें देखी।
पद्म सरोवर सागर देखा, सूर्य चंद्र रत्नों को देखा॥6॥
भवन विमान अग्नि को देखा, माँ ने नृप सन्मुख उल्लेखा।
सपनों को सुन सब हर्षायें, सपनों का फल पितु बतलाये॥7॥
आसन देवों के कंपाये, गर्भ महोत्सव देव मनायें।
मात-पिता की भक्ति रचाये, रत्नाभूषण भेट चढ़ायें॥8॥
देवी असंख्यों माँ को ध्यायें, सुर कन्यायें भक्ति रचायें।
हरपल माँ को सुख पहुँचायें, सुन्दर व्यंजन भोज खिलाये॥9॥
सर्वकार्य को करें देवियाँ, अति सौभाग्यवान सुर कन्या।
गीत नृत्य संगीत सुनाये, प्रश्न पूछ के मन बहलाये॥10॥

रंगोली से चौक सजायें, माँ को झूला नित्य झुलायें।
हरदिन वस्त्राभूषण लाये, माँ को देवी नित्य सजायें॥11॥
संग में रहती संग-संग चलती, माँ के संग प्रभु भक्ति करती।
स्तुति माँ की देवी गाये, वो जिनवर जननी कहलाये॥12॥
सार्थक नारी जन्म तिहारा, अवश्य मिलेगा लोक किनारा।
तीन लोक तुम को पूजें माँ, धन्य-धन्य तीर्थंकर की माँ॥13॥
उपरिम ग्रैवेयक से प्रभु आये, इकत्तीस सागर आयु कहाये।
नगर सुसीमा के वे राजा, अपराजित बनते मुनिराजा॥14॥
सोलहकारण मुनिवर भाये, तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये।
करें समाधि स्वर्ग सिधाये, इंद्रदेव नित भक्ति रचाये॥15॥
अंत समय जिन भक्ति रचाये, स्वर्ग छोड़ माँ के उर आये।
बदी कार्तिक तेरस को जन्में, जय-जयकार हुआ था नभ में॥16॥
इन्द्र मेरु पे न्हवन कराये, तीर्थंकर ये पद्म कहाये।
चिह्न पद्म है नाम पद्म है, पद्म चढ़ायें नित्य चरण में।
गज बंधन वैराग्य जगाये, छह महिने छद्मस्थ कहाये।
केवलज्ञान सांझ को पाये, समवशरण प्रभु का लग जाये॥18॥
प्रभु की पूजा इन्द्र रचायें, ज्ञान कल्याणक सभी मनाये।
वाणी से प्रभु सबको तारे, हम भी प्रभु वाणी उर धारे॥19॥
श्री सम्मेद शिखर पे आये, सायंकाल में मुक्ति पायें।
मोक्षकल्याणक इन्द्र मनायें, समिति गुप्ति व्रत संयम पायें॥20॥

दोहा- रोग शोक पीड़ा हरे, पद्मप्रभु भगवान।
सब संकट निश्चय हरे, पद्मप्रभु भगवान॥
ऋद्धि-सिद्धि सुख-शांति दे, पद्मप्रभु भगवान।
'आस्था' से वंदन तुम्हें, पद्मप्रभु भगवान॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	सुप्रतिष्ठ
माता	–	पृथ्वीदेवी
आयू	–	20 लाख पूर्व
ऊँचाई	–	200 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	भाद्रपद शुक्ला षष्ठी
जन्म	–	ज्येष्ठ शुक्ल बारस
जन्म स्थान	–	काशी (बनारस)
दीक्षा	–	ज्येष्ठ शुक्ल बारस
सहदीक्षित मुनि	–	1000
कैवल्य ज्ञान	–	फाल्गुन कृष्ण षष्ठी
प्रथम दाता	–	राजा महेन्द्रदत्त
गणधर	–	बलदत्त आदि (95)
कुल मुनि	–	3 लाख
गणिनी	–	मीनार्या
कुल आर्यिका	–	3 लाख 30 हजार
श्रावक	–	3 लाख
श्राविका	–	5 लाख
मोक्ष	–	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	स्वर्ण
चिह्न	–	स्वास्तिक
चैत्यवृक्ष	–	शिरीष

शासक देव

यक्ष	–	विजय
यक्षिणी	–	काली
क्षेत्रपाल	–	(1) विद्याचन्द्र (2) गुणचन्द्र (3) खेमचन्द्र (4) विनयचन्द्र

सम्यक् चारित्र वर्धक श्री सुपार्श्वनाथ विधान

स्थापना (शंभु छंद)

हे नाथ ! सुपारस तीर्थंकर, हम द्वार तुम्हारे आये हैं।
मम कर्म पाश को आप हरो, यह आश लिये हम आये हैं॥
अपने मन मंदिर में भगवन्, हम तेरी मूरत बसा रहें।
पुष्पों से हम आह्वान करें, आ जाओं प्रभु हम बुला रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक् चारित्र वर्धक श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

श्री जिन के अभिषेक से, नश जाते सब रोग।
जन्म–जरा–मृत नाशने, पूज रहे हम लोग॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को गंध चढ़ा रहे, नित्य करें अभिषेक।
हरो हमारा ताप जिन, करते हम अभिषेक॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम धवलाक्षत लिये, दोनों कर भर आज।
अक्षय पद हमको मिले, कृपा करो जिनराज॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत रंग के फूल की, बना रहे हम माल।
पुष्प माल हम भेंटते, पाने जिनगुण माल॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध बना पकवान हम, प्रभु को नित्य चढ़ाय।
गुरुओं को आहार दे, स्वर्ग मोक्ष सुख पाय॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें आरती दीप से, जब-जब मंदिर जाय।
द्रव्य चढ़ायें भाव से, पूजा पार लगाय॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाकर हम करें, पूजा और विधान।
आकुलता में ना नशे, कोई कर्म प्रधान॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम फल यदि चाहिये, मन में हो समभाव।
शांति से पूजा करो, मन में रखो उछाव॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व भगवान को, चढ़ा रहे हम अर्घ।
करके पूजा अर्चना, पायें लाभ अनर्घ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- श्री सुपार्श्व भगवान को, वंदन बारम्बार।
ये विधान हम कर रहे, नशने भव संसार॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

नगर बनारस जन्में स्वामी, तीन लोक पूजित जगनामी।
प्रभु का भव्य विधान रचायें, अर्घ चढ़ा हम शीश झुकायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं बनारस नगरे चतुष्कल्याणक प्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ सुपारस पास बुलायें, भक्तों का मनवा खिल जाये।
प्रभु ने पंचकल्याण मनायें, अर्घ चढ़ा हम शीश झुकायें॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रफुल्लित चित्तकराय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

गर्भ पूर्व माँ देखती, स्वप्नों की शुभ माल।
रत्नवृष्टि से जन्म नगर, होता मालामाल॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वसुधा रत्नगर्भा कराय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वीषेणा मात के, उर में आये नाथ।
भादो शुक्ला षष्ठमी, देव झुकायें माथ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं भाद्रशुक्ला षष्ठी तिथि गर्भकल्याणकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रतिष्ठ भूपेन्द्र श्री, प्रभु के पिता कहाय।
प्रभु जैसा सुत पाय वे, फूले नहीं समाय॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं धन्य जनकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक्ष्वाकु कुल में हुआ, प्रभुवर का अवतार।
जन्म कल्याणक में सभी, देव करें जयकार॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्मकल्याणक महिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस नाम से आपकी, संस्तुति करता इंद्र।
सहस्र नयन से नाथ का, दर्श करे फिर इंद्र॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्त्रनामधारकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरितवर्ण के हैं प्रभु, श्री सुपार्श्व भगवान।
हरे-भरे फल से भजें, करते हम गुणगान॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं हरितवर्णाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म कल्याणक के समय, पिता करें अति दान।
हम भी आये शरण में, हमको दो सद्ज्ञान॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं सद्ज्ञान प्रदायकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात-पिता को सौंपकर, नृत्य करे तब इन्द्र।
हम भी प्रभु के द्वार पे, नृत्य करें बन इन्द्र॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं भक्ति आनंद प्रदायकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बचपन वा यौवन गया, बन गये राजा नाथ।
राज ताज सब काज तज, बन गये अब मुनिनाथ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वपरिग्रह त्याग रूपाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण अवस्था में हुआ, प्रभु तुम पर उपसर्ग।
समभावी प्रभु आप हो, जीत लिया उपसर्ग॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं उपसर्गजयी श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि पद में नौ वर्ष तक, कीन्हा मौन विहार।
तव समान हम भी बने, मुनि बन करें विहार॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं परम शांतरूपाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ तिथि व ज्ञान तिथि, दोनों तिथि शुभ जान।
पूजें कल्याणक तिथि, मंगलकारी मान॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक सम्बन्धी सर्वतिथि पूजिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण प्रभु का रचा, धनपति पुण्य कमाय।
हम भी प्रभु को पूजकर, वो ही पुण्य कमाय॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादश सभा नायकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर भी है समवशरण, इसको भव्य बनाय।
मंदिर के निर्माण में, अपना द्रव्य लगाय॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिन मन्दिर निर्माण प्रतिबोधकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मंदिर निर्माण कर, जो प्रतिमा बैठाय।
निश्चित भवि मुक्ति वरें, जिन आगम बतलाय॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनमंदिर जिनप्रतिमा स्थापना उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घन नन घन घंटा बजे, ॐ ध्वनि फैलाय।
दिव्य ध्वनि का रूप यह, रोग अनेक नशाय॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं ॐकार ध्वनि प्रदायकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जिनवर आप विधान से, मिटते कर्म विधान।
ऐसा बल दे दो हमें, पायें मोक्ष महान्॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मबंधहराय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

तीर्थंकर भी सातवें, सप्तम तिथि निर्वाण।
सप्त परम स्थान में, पहुँच गये भगवान॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छंद)

था समवशरण अति सुन्दर, सुपार्श्व विराजे अंदर।
द्वादश कोठे के प्राणी, सुनते जिनवर की वाणी॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादश सभा मध्ये विराजित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय लाख श्रमण के स्वामी, मुनिवर सब मुक्तिगामी।
करते मुनि प्रभु को वंदन, काटे कर्मों के बंधन॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयलक्ष यति गणेन् वंदिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय लक्ष व तीस हजारी, श्रमणी पूजें त्रय बारी।
भक्ति करती प्रभु थारी, थी श्वेत शाटिका धारी॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयलक्षत्रिंशत् सहस्र आर्यिका वर्गेन् वंदिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक त्रय लाख बताये, वे प्रभु के नित गुण गायें।
दर्शन प्रभुवर के पाते, अपना मिथ्यात्व नशाते॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रय लक्ष श्रावक वर्गेन् पूजिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

थी पंच लक्ष व्रतिकायें, जिनपूजा की रसिकायें।
प्रभु वाणी का रस पाती, सम्यक्त्व ज्ञान वे पाती॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचलक्ष श्राविका वर्गेन् पूजिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगण असंख्य मिल आयें, संस्तुति जिनवर की गायें।
सामग्री प्रचुर चढ़ायें, सातिशय पुण्य कमायें॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं असंख्यात देव कृतेन् वंदिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असंख्य देवियाँ आयें, कीर्त्तन जिनवर का गायें।
वो मंगल वाद्य बजायें, अति सुन्दर नृत्य रचायें॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं असंख्यात देवीकृतेन् वंदिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संख्यात तिर्यंञ्च भी आये, वंदन कर वो सुख पायें।
आपस का वैर मिटायें, प्रभु सन्मुख अणुव्रत पायें॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं संख्यात तिर्यंच प्राणी समूहेन् वंदिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे समवशरण के स्वामी, तुम तो हो अक्षय दानी।
हम पूजा भक्ति रचायें, बिन मांगे सब कुछ पायें॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं समवशरण स्वामिने श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्र सदा ही ध्यायें, सम्यक्त्व आदि गुण पायें।
अपना भव रोग नशायें, वो अजर-अमर पद पायें॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं शतेन्द्र पूजिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायिक व मानसिक व्याधि, हरलो प्रभु आधि–व्याधि।
तन की पीड़ायें सारी, प्रभु पूजा हरे बिमारी॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं शारीरिक मानसिक रोगहराय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो समवशरण में जाये, वो रोग मुक्त हो जाये।
हम भी प्रभु शरणा आये, जिनवर गुण गा हर्षायें॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं शरण प्रदायकाय सर्वरोग निवारकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दूर बहुत हैं हमसे, हम भक्ति करें नित मन से।
तन–मन में नाथ समायें, हम मुख से कीर्त्तन गायें॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं मन–वच–काय पवित्र करणाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्मेद शिखर प्रभु आयें, प्रभु मोक्ष लक्ष्मी पायें।
सुर चरम कल्याण मनायें, लड्डु की थाल चढ़ायें॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धर्मतीर्थ में जायें, हम नित्य विधान रचायें।
प्रभुवर की शरणा आयें, अपना सौभाग्य जगायें॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

प्रथम महाव्रत धर्म अहिंसा, सर्व साधुगण पालें।
त्रस थावर हिंसा के त्यागी, मोक्ष महाफल पालें॥
तेरह विध चारित्र श्रमण के, जिनवर ने बतलाये।
श्री सुपार्श्व प्रभु का विधान कर, प्रभु सम चारित पायें॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसा महाव्रत उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य महाव्रत शिव सुन्दर है, सत्पथ हमें दिखाये।
सत्य चिदानंद रूप हमारा, सत्य मोक्ष पहुँचाये।।
तेरह विध चारित्र श्रमण के, जिनवर ने बतलाये।
श्री सुपार्श्व प्रभु का विधान कर, प्रभु सम चारित पायें।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्य महाव्रत उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर भक्तों के मन को मुनिवर, नित्य चुराते रहते।
फिर भी आप अचौर्य व्रती हो, भक्त भक्ति से कहते।। तेरह..।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचौर्य महाव्रत उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति वधु से ब्याह रचाने, ब्रह्मचर्य अपनाया।
ब्रह्मरूप निज का प्रगटाने, हमने अर्घ चढ़ाया।। तेरह..।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्य महाव्रत उपदेशकायश्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंदर बाहर सर्व परिग्रह, त्याग चले तुम स्वामी।
त्यागी साधक के पीछे ही, आये लक्ष्मी स्वामी।। तेरह..।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं परिग्रहत्याग महाव्रत उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हाथ भूमि अवलोके, कदम बढ़ाये अपना।
ईर्या समिति धारी मुनिवर, रखें मोक्ष का सपना।। तेरह..।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईर्या समिति उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित प्रिय वाणी जो बोले, मुख से अमृत बरसे।
भाषा समिति पालें मुनिवर, वाणी सुन भवि हर्षे।। तेरह..।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं भाषा समिति उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते गुरु आहार जहाँ पर, घर वो स्वर्ग कहाये।
समिति एषणा पालन करते, समता भाव बढ़ायें।।
तेरह विध चारित्र श्रमण के, जिनवर ने बतलाये।
श्री सुपार्श्व प्रभु का विधान कर, प्रभु सम चारित पायें।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऐषणा समिति उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निक्षेपण आदान समिति, उत्साहित मुनि पालें।
पिच्छी कमण्डल शास्त्र गुरुवर, जागृत रखें उठाले।। तेरह.. ।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं आदान निक्षेपण समिति उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक भूमि पर ही ऋषिगण, करें विसर्जन मल का।
अर्घ चढ़ायें थाल सजाकर, समिति प्रतिष्ठापन का।। तेरह.. ।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठापन समिति उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन के खोटे भाव विनाशें, राग-द्वेष विनशायें।
मनोगुप्ति के धारी गुरु को, हम सब अर्घ चढ़ायें।। तेरह.. ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोगुप्ति उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट वचन को त्यागें मुनिवर, वचन गुप्ति अपनायें।
सत्य धर्म संग सत्य महाव्रत, गुरु भाषा मन भाये।। तेरह.. ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचोगुप्ति उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपनी काया वश में करते, काय कुचेष्टा त्यागें।
तीन गुप्ति के धारी ऋषिवर, आत्म खोज में लागे।। तेरह.. ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं कायगुप्ति उपदेशकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

भूपति नंदिषेण मुनि बन, सोलहकारण भाये।
धार समाधि ग्रैवेयक जा, सुर अहमिन्द्र कहाये॥
नगर बनारस में प्रभु जन्में, मोक्ष शिखर से पायें।
श्री सुपार्श्व जिनवर को हम सब, अब पूर्णार्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुःख, पीड़ा, कोरोना रोग, शोक, कष्ट, अशांति, तनाव, राग, द्वेष, क्रोधादि कषाय निवारणाय सर्वकर्म बंध मोचनाय शाश्वत शिवसौख्य प्रदायकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्री जिन पर जलधार कर, पायें शांति अपार।
अभिवादन प्रभु का करें, पुष्प चढ़ा मनहार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- प्रभुवर के इस नाम में, दो भगवन् का नाम।
पार्श्व सुपार्श्व जिनेश का, करते हम गुणगान॥

(नरेन्द्र छंद)

श्री सुपार्श्व की जय-जयबोले, जयमाला हम गायें।
सप्तम तीर्थंकर ने हमको, सप्त तत्त्व बतलाये॥
जीव-अजीव तत्त्व अरु आस्रव, बंध व संवर निर्जर।
मोक्ष तत्त्व हमको है पाना, करें कर्म को जर्जर॥1॥

चेतन गुण से युक्त जीव ही, जीव तत्त्व कहलाये।
चेतन गुण से रहित अचेतन, तत्त्व अजीव कहाये॥
कर्मों का आना है आस्रव, कर्मागमन कराये।
कर्म वर्गणा का बंधना ही, बंध तत्त्व कहलाये॥2॥

कर्मों का रुकना है संवर, एक देश क्षय निर्जर।
सर्वकर्म के क्षय से मिलता, परमातम पद सत्वर॥

सर्वकर्म से रहित अवस्था, मोक्ष तत्त्व कहलाये।
कर्मों से मुक्ति पाने को, भव्य विधान रचायें।।3।।
प्रभु की पूजा मंगलकारी, भव दुःख कष्ट मिटायें।
धर्म अर्थ व काम मोक्ष दे, दुष्ट कर्म विनशाये।।
समिति गुप्ति संयम समता से, व्रत के भाव जगायें।
'आस्था' से हम प्रभु भक्ति कर, मोक्ष शिखर पा जायें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पाप, ताप, दुःख, संकट, कोरोना रोग निवारकाय, तप संयम साधना समता सर्वसौख्य, सुख-शांति, केवलज्ञान प्रदायकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्री सुपार्श्व भगवान को, 'आस्था' करें प्रणाम।
कोटी अनंत प्रणाम से, नश जाये अभिमान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती (तर्ज-मेरा मन डोले..)

जय तीर्थेश्वर, जय परमेश्वर, सप्तम तीर्थंकर नाथ की,
हम करें सभी मिल आरतियाँ।

1. **नगर बनारस में प्रभु जन्में, सुप्रतिष्ठ सुत प्यारे।**
   पृथ्वीषेणा माँ के नंदन, श्री सुपार्श्व मनहारे-2।।
   जन-मन रंजन, भवतम भंजन, हम करें आरती नाथ की... हम करें..
2. **केवलज्ञानी बने प्रभुवर, खिरी प्रभु की वाणी।**
   त्रिभुवनपति की शरणा पाने, आये सारे प्राणी-2।।
   जिनवर स्वामी, अन्तर्यामी, हम करें आरती नाथ की... हम करें..
3. **तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ ने, हमको मार्ग बताया।**
   भक्ति से प्रभु का विधान कर, अतिशय पुण्य कमाया-2।।
   'आस्था' आये, प्रभु को ध्यायें, हम करें आरती नाथ की... हम करें...

***

श्री सुपार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– श्री सुपार्श्व जिनवर प्रभु, हरों पाप मम पाँच।
जिन कल्याणक आपके, होते निश्चय पाँच।।
चौबीस जिन माँ शारदा, तुमको वंदन आज।
चालीसा प्रभु का पढ़ें, पाने शिवसुख राज।।

चौपाई

प्रभु सुपार्श्व को हम सब ध्यायें, उनका हम चालीसा गायें।
धन्य–धन्य ये नगर बनारस, जन्में जिसमें नाथ सुपारस।।1।।
पूर्व जन्म की सुनो कहानी, सब गणधर ने स्वयं बखानी।
पूर्व विदेह सुकच्छ धातकी, नगर क्षेमपुर स्वर्ग मात थी।।2।।
राजा नंदिषेण वहाँ के, होंगें वो तीर्थेश यहाँ के।
धर्म परायण न्यायवान थे, बड़े दयालु पुण्यवान थे।।3।।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ वे करते, मुक्ति पाने तत्पर रहते।
अर्हन्नन्दन मुनिवर आये, उनसे राजा दीक्षा पाये।।4।।
द्वादशांग का अध्यन करते, तीर्थंकर प्रकृति बंध करते।
सोलह कारण मुनिवर भायें, उन मुनिवर को शीश झुकायें।।5।।
जो भी तीर्थंकर प्रभु बनते, इन्हीं भावनाओं से बनते।
अंत समय मुनिवर का आये, श्रेष्ठ समाधि मरण रचाये।।6।।
काय कषायें कृष हो जाये, तपस्तेज नित बढ़ता जाये।
हुई समाधि उत्तम उनकी, पूजा करते सुरपति जिनकी।।7।।
मुनिवर मध्यम ग्रैवेयक जाये, इंद्र प्रथम प्रभु भक्ति रचाये।
आयु थी सत्ताईस सागर, भक्ति पुण्य के वो थे आगर।।8।।
हर दिन करते प्रभु की पूजा, जाप ध्यान ये दूजी पूजा।
चिंतन अर्चन अधिक बढ़ाने, माला गई तुरत मुरझाने।।9।।
अंत समय प्रभु सन्मुख आये, महामंत्र वो जपते जायें।
वो अहमिन्द्र परम सुख पाने, देह तजे मानव तन पाने।।10।।

धनपति सुन्दर नगर सजाये, पन्द्रह माह रत्न बरसाये।
सुप्रतिष्ठ के नयन सितारे, पृथ्वीषेणा राज दुलारे॥11॥
स्वप्न देख माता हर्षाये, स्वप्नों का फल पिता बताये।
उर से तीन ज्ञान के धारी, मतिश्रुत अवधि सुमंगलकारी॥12॥
ज्येष्ठ शुक्ल द्वादश को स्वामी, जन्में नाथ सुपारस स्वामी।
इन्द्र प्रभु को लेकर जाये, मेरु पे अभिषेक कराये॥13॥
असंख्य देव देवी नहलाये, शची प्रभु का श्रृंगार कराये।
स्तुति करके नाम बताये, ये सुपार्श्व जिनवर कहलाये॥14॥
पार्श्व सुपार्श्व नाम दो भाये, दोनों नगर बनारस जाये।
दोनों पे उपसर्ग भी आये, दोनों हरित वर्ण कहलाये॥15॥
ऋतु परिवर्तन देखा प्रभु ने, तब वैराग्य जगा प्रभु मन में।
जन्म तिथि तप तिथि बन जाये, मुनि बन केवल ज्योति जगायें॥16॥
धर्म देशना भविजन पायें, प्रभु सम्मेद शिखर पे आये।
सप्तम तीर्थंकर कहलाये, सप्तम तिथि को मुक्ति पाये॥17॥
हर दिन ये चालीसा गायें, रोग शोक सब पाप नशायें।
सुख-शांति समृद्धि पायें, प्रभु चरणों में दीप जलायें॥18॥
गुरु कृपा प्रभु भक्ति दिलाये, गुरु ग्रह को अनुकूल बनाये।
मन-वच-तन पावन हो जायें, जब हम ये चालीसा गायें॥19॥
प्रभु भक्ति सब पाप नशाये, प्रभु सम जिनगुण लाभ कमायें।
'आस्था' से हम प्रभु को ध्यायें, समिति गुप्ति व्रत संयम पायें॥20॥

दोहा- श्री सुपार्श्व भगवान की, महिमा अपरम्पार।
एक साथ दो प्रभु मिले, प्रभु नाम सुखकार॥
हम चालीसा नित पढ़ें, 'आस्था' मन में धार।
प्रभु नाम के जाप से, मिलती शांति अपार॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री चन्द्रप्रभ भगवान

परिचय

पूर्व नाम – (1) श्रीवर्मा राजा (2) श्रीधर देव (3) अजितसेन चक्रवर्ती (4) सोलहवें स्वर्ग में अच्युतेन्द्र (5) पद्मनाभ राजा (6) वैजयन्त विमान में अहमिन्द्र (7) चंद्रप्रभ।

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	महासेन
माता	–	सुलक्ष्मणा
आयू	–	10 लाख पूर्व
ऊँचाई	–	150 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	चैत्र कृष्णा पंचमी
जन्म	–	पौष कृष्ण ग्यारस
जन्म स्थान	–	चन्द्रपुरी
दीक्षा	–	पौष कृष्ण एकादशी
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	सोमदत्त राजा
कैवल्य ज्ञान	–	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी
गणधर	–	दत्त (93)
कुल मुनि	–	ढाई लाख
गणिनी	–	वरुणा आर्या
कुल आर्यिका	–	3 लाख 80 हजार
श्रावक	–	3 लाख
श्राविका	–	5 लाख
मोक्ष	–	फाल्गुन शुक्ला सप्तमी
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	सफेद
चिह्न	–	अर्द्ध चन्द्रमा
चैत्यवृक्ष	–	नागवृक्ष

शासक देव

यक्ष	–	श्याम
यक्षिणी	–	ज्वालामालिनी
क्षेत्रपाल	–	(1) सोमकान्ति (2) रवि कान्ति (3) शुभ्रकान्ति (4) हेमकान्ति

चन्द्रकान्त चूड़ामणि श्री चन्द्रप्रभ विधान

स्थापना (अडिल्ल छंद)

चंद्रपुरी में जन्में चंद्र जिनेश हैं।
चन्द्र चिन्ह धर चिंताहर परमेश हैं।।
उनका हम आह्वान पुष्प से नित करें।
भक्ति सहित हम भी विधान पूजा करें।।

ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रकांत चूड़ामणि श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

प्रासुक निर्मल नीर कलश में ला रहे।
चंद्रनाथ का न्हवन करा हर्षा रहे।।
दुःखहर्त्ता सुखकर्त्ता तुम अर्चा विभो।
चन्द्रकान्त चूड़ामणि हैं चन्द्रा प्रभो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से भी शीतल हैं चंदा प्रभो।
चंदन चरण लगाते हम तुमको विभो।। दुःखहर्त्ता.. ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पूनम का चंदा दिखता जैसे धवल।
वैसे अक्षत चढ़ा रहें प्रभु को अमल।। दुःखहर्त्ता.. ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केवड़ा पुष्प मोगरा ला रहे।
काम नशाने जिनवर तुम्हें चढ़ा रहे।। दुःखहर्त्ता.. ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गुझियाँ फैनी मालपुवा बरफी पुड़ी।
क्षुधा नशाने हम जोड़ें प्रभु से कड़ी।।
दुःखहर्त्ता सुखकर्त्ता तुम अर्चा विभो।
चन्द्रकान्त चूड़ामणि हैं चन्द्रा प्रभो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते हम दीपक से प्रभु की आरती।
प्रभु आरती देती प्रज्ञा भारती।। दुःखहर्त्ता.. ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में जले महकती सब दिशा।
प्रभु अर्चा से क्षय हो कर्मों की निशा।। दुःखहर्त्ता.. ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम जाम जामुन पूंगीफल ला रहे।
महा मोक्षफल पाने भक्ति रचा रहे।। दुःखहर्त्ता.. ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्पादिक ला रहे।
दीप धूप फल आदिक अर्घ चढ़ा रहे।। दुःखहर्त्ता.. ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा– चन्द्रकान्त चूड़ामणि, चन्दा प्रभु भगवान।
जग सुख देकर मोक्ष दे, प्रभु का श्रेष्ठ विधान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(अर्द्ध नरेन्द्र छंद)

श्रीवर्मा राजा दीक्षा ले, श्रीधर देव कहाये।
चार स्वप्न देखे माता ने, पुण्यवान सुत पाये।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं संयम पद धारकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितसेन चक्री भव तीजा, मुनि बन स्वर्ग सिधायें।
आठ स्वप्न देखे माता ने, स्वर्ग सोलहवाँ पायें॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रत प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मनाभ राजा की माँ को, द्वादश सपने आये।
सोलहकारण दिव्य भावना, पद्मनाभ मुनि भायें॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हं सोलहकारण दिव्य भावना तीर्थंकर पद प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मनाभ मुनि करें समाधि, वैजयन्त दिव पायें।
माँ लक्ष्मणा को श्री जिनवर, सोलह स्वप्न दिखायें॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं सोलह दिव्य स्वप्नमाल दृश्याय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत बदी पंचम शुभ तिथि को, प्रभु माँ के उर आये।
माँ सुलक्षणा स्वप्न सुनाये, महासेन बतलाये॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र कृष्णा पंचम्यां गर्भमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण ग्यारस को जन्में, त्रिभुवन हर्ष मनाये।
चंद्रपुरी में चंद्रप्रभु का, उत्सव भव्य मनायें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौष कृष्णा एकादश्यां जन्ममंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी को जिन, दीक्षा लेने जायें।
नृप हजार दीक्षा ले प्रभु संग, उत्तम तप अपनायें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौष कृष्णा एकादश्यां तपोमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन कृष्णा सप्तम के दिन, कर्मन् होली जलायें।
चार घातिया नाश करें जिन, चार चतुष्टय पायें॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन कृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञान मंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त परम स्थान उपाया, फागुन सुदी सप्तम को।
श्री सम्मेदशिखर में जाकर, पूजें प्रभु अष्टम को।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन शुक्ला सप्तम्यां मोक्षमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम चंद्र है चिह्न चंद्र है, चंद्रपुरी के स्वामी।
चंद क्षणों में ज्ञान रश्मियाँ, देते हमको स्वामी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं चंद्र चिह्न सुशोभिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण सहस्र आठ प्रभु तन में, शुभ सूचक कहलाये।
श्वेत वर्ण के धारी जिनवर, अति वात्सल्य दिखायें।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टोत्तर सहस्त्रलक्षणधारी श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मत तीन ज्ञान के धारी, अतिशय दश जिन पायें।
अतिशयकारी चंद्रप्रभु को, भर-भर अर्घ चढ़ायें।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रय ज्ञान दश अतिशय प्राप्ताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश अतिशय केवल जिनवर के, चौदह देवों द्वारा।
जहाँ विराजे केवलज्ञानी, हो सुभिक्ष जग सारा।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनेक अतिशय प्राप्ताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौ इन्द्रों के द्वारा भगवन्, जग में पूजें जायें।
चालिस बत्तीस चौबीस रवि शशि, चक्री नरसिंह ध्यायें।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं शतेन्द्र पूजिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शासन रक्षक श्याम यक्ष भी, नित प्रभु के गुण गायें।
क्षेत्रपाल चऊ नवग्रह आदि, भक्ति विशेष रचायें।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्याम यक्ष चतुः क्षेत्रपाल नवग्रह वंदिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शासन यक्षी ज्वालामालिनी, समवशरण में जाये।
सम्यक्दृष्टि यक्षी देवी, प्रभु की कीर्ति बढ़ाये॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्वालामालिनी यक्षी पूजिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्द्ध नरेन्द्र छंद)

चंद्रपुरी में जन्में स्वामी, श्री चंदाप्रभु देवा।
पंचकल्याण मनाने प्रभु के, आये पशु नर देवा॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक पूजित श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भारत भर में तीर्थ प्रभु के, सब हैं अतिशय वाले।
सर्वक्षेत्र के चंद्रप्रभु को, अर्घ चढ़ा गुण गालें॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्षेत्र विराजित श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्मेद शिखर से प्रभु ने, मोक्षपुरी को पाया।
ललितकूट पे चंद्रप्रभु को, हमने अर्घ चढ़ाया॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र विराजित श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण श्री चंद्रप्रभु का, सोनागिर में आया।
सोनागिर के चंद्रप्रभु को, हमने अर्घ चढ़ाया॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं सोनागिर सिद्धक्षेत्र विराजित श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मांडल में चंदा प्रभु भगवन्, सांवरिया मनहारे।
दर्शन करने चंद्रप्रभु के, आते भविजन सारे॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं मांडल अतिशय क्षेत्र विराजित श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्र तिजारा में भी प्रगटे, अतिशयकारी चंदा।
हम सब प्रभु की पूजा करते, संकट हरो जिनंदा॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं देहरा तिजारा अतिशय क्षेत्र विराजित श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाराबंकी में प्रभु तुमने, महिमा श्रेष्ठ दिखायी।
भरत सिंधु गुरुवर की वाणी, प्रभु तुम दर पर आयी॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं बाराबंकी अतिशय क्षेत्र विराजित श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ के चंद्रप्रभु को, सूरज-चंदा ध्यायें।
चन्द्रकान्त चूड़ामणि जिनवर, सबकी व्यथा मिटायें॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित चन्द्रकांत चूड़ामणि श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

गुण सम्पत्ति दो हमें, चंद्रनाथ भगवान।
सर्वकाल में आपको, हम पूजें धर ध्यान॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनगुणसंपत्ति प्रदाता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रप्रभु की भक्ति से, सिद्ध होय सब काम।
हम प्रभु को मन से भजें, पायें जिन गुणधाम॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिकर्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृद्धि हो उसकी सदा, जो प्रभुवर को ध्याय।
चंद्रप्रभु की अर्चना, नित नव वृद्धि कराय॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृद्धिकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुष्टि हो उसकी अवश, जो प्रभु के गुण गाय।
चंद्रप्रभु को पूजकर, गुण संतोष बढ़ाय॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं तुष्टिकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चा से मन पुष्ट हो, आत्म पुष्ट हो जाय।
चंद्रप्रभु के जाप से, सर्व पुष्टि हो जाय॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टिकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति में आनंद है, शांति में जिनधर्म।
चंद्रप्रभु की भक्ति से, मिले शांति शिवशर्म॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिप्रदाता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप संयम की कांति ही, तन-मन को चमकाय।
प्रभु गुण कीर्त्तन से अवश, पुण्य कांति बढ़ जाय॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं कांति प्रदाता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याणों के नाथ हैं, करते नित कल्याण।
हम आये शरणा प्रभु, करो सर्व कल्याण॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभमय मन-वच-तन रहे, अशुभ रहे नित दूर।
शुभयोगी ही शुद्ध हो, कर्म करे चकचूर॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुभकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव ही सुख शिव सत्य है, शिव ही सुन्दर जान।
शिव को पाने हम सदा, पूजें नित भगवान॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिवकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति करो हे चंद्रजिन ! स्वस्ति सौख्य सोपान।
स्वस्ति रूप हो भक्त मन, हम पूजें धर ध्यान॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्तिकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलकारी हो प्रभो, मंगलमय जिनदेव।
हम मंगल अर्चा करें, मंगल रहे सदैव॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेम सुभिक्ष सुकाल हो, सर्व दिशा सब क्षेत्र।
जहाँ होय प्रभु अर्चना, क्षेम रहे उस क्षेत्र॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की कृपा जहाँ रहे, वहाँ कुशल हो भक्त।
कुशल करें जिनअर्चना, भक्तों की हर वक्त॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं कुशलकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव समृद्धि के लिये, करें प्रार्थना आज।
धर्म समद्धि नित करो, चंद्रनाथ जिनराज॥39॥
ॐ ह्रीं अर्हं समृद्धिकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समाधान मन में रहे, हो निर्मल परिणाम।
अंत समय तक नाथ का, मुख में हो प्रभु नाम॥40॥
ॐ ह्रीं अर्हं मनःसमाधिकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट संपदा मोक्ष सुख, दो अभीष्ट भगवान।
इष्ट देव की अर्चना, करती जग कल्याण॥41॥
ॐ ह्रीं अर्हं इष्टसम्पद प्रदाता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेय सुखों की वृद्धि हो, दुःख संकट हों दूर।
जिनवर अर्चा से मिले, श्रेय पुण्य भरपूर॥42॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयोवृद्धि प्रदाता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शास्त्र समृद्धि भक्ति से, होता सम्यक् ज्ञान।
चन्द्रनाथ के ध्यान से, मिले शास्त्र का ज्ञान॥43॥
ॐ ह्रीं अर्हं शास्त्र समृद्धिकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न हरें प्रभु चंद्र जिन, अविघ्नमय हो काल।
विघ्न हरण को हम भजें, जिनवर को त्रयकाल॥44॥
ॐ ह्रीं अर्हं अविघ्नकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व अरिष्ट विनाश हो, नित्य भजें हम देव।
अरिष्ट निरसन हो प्रभो, अर्ज सुनों जिनदेव॥45॥
ॐ ह्रीं अर्हं अरिष्ट निरसनकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्कार्यों की सिद्धी हो, सत्पथ प्रभु दिखलाय।
चंद्रप्रभु को पूज हम, श्रद्धा उर प्रगटाय॥46॥
ॐ ह्रीं अर्हं सत्कार्य सिद्धिकर्त्ता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-शांति ऐश्वर्य सब, इष्ट वस्तु मिल जाय।
चन्द्रप्रभु की अर्चना, चंद्रकिरण बरसाय॥47॥
ॐ ह्रीं अर्हं ऐश्वर्यप्रदाता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग मुक्त करते प्रभो, होवे तन आरोग्य।
रोग रहित इस काय से, धारें हम सद्योग॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं आरोग्यप्रदाता श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

चंद्रप्रभु की चंद्र रश्मियाँ, चंद पलों में पायें।
जहाँ-जहाँ जिन चंद्र विराजें, उनको हम सब ध्यायें॥
श्वेत वर्ण है चंद्रप्रभु का, चंद्र चिन्ह कहलाये।
चन्द्रकान्त चूड़ामणि प्रभु को, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसंकट कोरोना रोग विनाशनाय अपमृत्यु रोगादि उपद्रव निवारणाय सुख-शांति-समृद्धि-सौभाग्य, धन-धान्य प्रदायकाय श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री चन्द्रकांत चुड़ामणि चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांति पथ जिनसे मिले, करें उन्हीं पे धार।
पुष्पहार प्रभु पद चढ़ा, नमन करें शतबार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- अष्टम तीर्थंकर प्रभु, चंद्रनाथ भगवान।
जयमाला हम गा रहे, करो नाथ कल्याण॥

(चौपाई)

चंद्रप्रभु की भक्ति रचायें, जयमाला प्रभुवर की गायें।
चन्द्रनाथ के दर्शन पायें, विनय सहित हम शीश झुकायें॥1॥
हम मंदिर में निशदिन जायें, प्रभु प्रतिमा की महिमा गायें।
उनके दर्शन कर हर्षायें, भव-भव का मिथ्यात्व नशायें॥2॥

खड्गासन पद्मासन प्रतिमा, मन भावन प्रभुवर की प्रतिमा।
प्रातिहार्य से युक्त जिनेश्वर, अष्ट कर्म हरते परमेश्वर॥3॥
चन्द्रप्रभु की सुन्दर प्रतिमा, हरे भक्त की कर्म कालिमा।
श्वेत श्याम कई वर्णों वाली, जिन प्रतिमा दुःख हरने वाली॥4॥
बिन माँगे प्रभु सब कुछ देते, पूजक के संकट हर लेते।
नाम मंत्र जो निशदिन जपता, चंद्र-चंद्र जो निशदिन जपता॥5॥
हर इक अंग बने अति सुन्दर, प्रभु सम जग में कोई न सुन्दर।
सुन्दरता प्रभुवर के तन की, कोटि जिह्वा भी कह ना सकती॥6॥
उपमातीत सभी प्रतिमायें, जिनकी महिमा आगम गाये।
उठे बैठकर शीश झुकायें, संस्तुति पढ़कर फेरी लगाये॥7॥
आरती गायें कीर्त्तन गायें, ताली बजायें नृत्य रचायें।
जब तक ना हो मुक्ति हमारी, सदा रहे हम नाथ पुजारी॥8॥
चंद्रप्रभु को हम सब ध्यायें, प्रभु का जय-जयकार लगायें।
प्रभुवर को 'आस्था' सिर नाये, तीन गुप्ति धर शिवपुर पाये॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मकष्ट, कोरोना रोग विनाशनाय अशुभ ध्यान, राग, द्वेष, संक्लेश, ईर्ष्या, कलह, संकल्प, विकल्प, पापादि निवारकाय जिनभक्ति रूप पुण्यवृद्धि प्रदायकाय श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री चन्द्रकांत चुड़ामणि चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चंद्रप्रभु भगवान को, जोड़ें दोनों हाथ।
करें नाथ हम प्रार्थना, भव-भव पायें साथ॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज–झीनी–झीनी उड़ी रे...)

झीनी–2 उड़ी रे गुलाल चालो रे मंदरियाँ में।
करें प्रभु का गुणगान चालो रे मंदरियाँ में॥

1. जगमग घृत के दीप जलायें, चंद्रप्रभु की आरती गायें।
   आरती करें सुबह शाम... चालो...
2. जहाँ–जहाँ प्रभु चंद्र विराजें, ढ़ोल नगाड़ा हर दिन बाजे।
   आरती करें नर–नार... चालो...
3. हम नित प्रभु की भक्ति रचायें, ये विधान हम सदा रचायें।
   पायें शांति अपार... चालो...
4. हे प्रभु ! हम सब आरती गायें, दीप सजाकर नृत्य रचायें।
   वाद्यों की हो झंकार... चालो...
5. जब भी हम मंदिर में जाये, दीप जलाकर आरती गायें।
   ''आस्था'' से बोले जयकार...चालो...

***

श्री चंद्रप्रभ चालीसा

दोहा– नाम चन्द्रप्रभ नाथ का, दुःख से मुक्ति दिलाय।
प्रभुवर के गुणगान से, पाप ताप नश जाय।।
श्रद्धा से जब नमन हो, चमत्कार हो जाय।
चालीसा प्रभु का पढ़ें, हृदय शुद्ध हो जाय।।

चौपाई

चंद्रप्रभु को नमन हमारा, नभ में गूँजे जय–जयकारा।
चालीसा प्रभुवर का गायें, चंद्रप्रभु को शीश झुकायें।।1।।
चंद्र बिम्ब शीतलता देता, सबका मन शीतल कर देता।
चंद्रप्रभु संकट हर लेते, जो प्रभुवर की शरणा लेते।।2।।
चंद्रप्रभु की पूर्व कहानी, कहते ऋषि मुनि गणधर ज्ञानी।
यह संसार अनादि अनंता, सुख–दुःख भोगे जीव अनंता।।3।।
जो प्राणी गुरु शरणा आये, अपना सम्यक् दीप जलाये।
निश्चित ही शिवरानी पाये, ऐसा उत्तम पुण्य बढ़ाये।।4।।
श्रीषेण श्रीपुर के राजा, श्रीकांता के वे महाराजा।
पुत्र प्राप्ति हित बिम्ब बनायें, पंच स्वर्ण जिनवर बैठायें।।5।।
भव्य प्रतिष्ठा भूप कराये, जिन अभिषेक विशाल कराये।
गंधोदक में न्हवन करें वो, अतिशय उत्तम पुण्य वरें वो।।6।।
चार स्वप्न रानी को आये, चंद्र सिंह गज लक्ष्मी आये।
राजमहल में खुशियाँ छाये, जन्मोत्सव अति भव्य मनाये।।7।।
श्रीवर्मा राजा बन जाये, दीक्षा ले सुर पदवी पाये।
श्रीधर देव बना अब राजा, दो सागर सुख भोगे ताजा।।8।।
पूर्व धातकी खंड मनोहर, नगर अयोध्या उसमें सुंदर।
अजितंजय राजा व रानी, अष्ट स्वप्न देखें महारानी।।9।।
पिता स्वप्न का फल बतलाते, अजितसेन धरती पे आते।
अजितसेन चक्री पद पाये, षट्खंडों पर जय वो पाये।।10।।

सुनकर पूर्व भवों की बाते, अजितसेन मुनि दीक्षा पाते।
करें समाधि सुर तन पायें, अच्युतेन्द्र मुनिवर बन जायें॥11॥
स्वर्ग तजा धरती पे आये, पद्मनाथ राजा बन जाये।
श्रीधर मुनि से दीक्षा पायें, सोलह दिव्य भावना भायें॥12॥
करें समाधि सुर पद पायें, तैंतीस सागर आयु पायें।
जिनपूजा वे नित्य रचायें, जिनचर्चा में समय बितायें॥13॥
छह महीने आयु रह जाये, धनपति सुन्दर नगर सजाये।
पन्द्रह मास रत्न बरसाये, घर-घर में अति आनंद छाये॥14॥
माँत लक्ष्मणा स्वप्न सुनाये, महासेन नृप फल बतलाये।
जन्म कल्याणक सभी मनाये, नाचें-गायें पुण्य कमायें॥15॥
चंद्रपुरी के राजा चंदा, चिह्न नाथ का देखो चंदा।
सुन्दर काया धवल तुम्हारी, प्राणी मात्र को लगती प्यारी॥16॥
कभी बजाते स्वामी वीणा, गाते नित संगीत नवीना।
ढोल मृदंग व वाद्य बजाते, सबको अपने पास बुलाते॥17॥
इक दिन दर्पण देखे स्वामी, दीक्षा लेकर बनते ज्ञानी।
मिली सभी को प्रभु की वाणी, प्रभु को पूजें सुर नर ज्ञानी॥18॥
तिरानवें गणधर नित ध्यायें, सर्व सभा नित संस्तुति गायें।
प्रभु सम्मेद शिखर पे आये, कर्म नाश सिद्धालय जायें॥19॥
हम निशदिन चालीसा गायें, सर्व दु:खों से मुक्ति पायें।
'आस्था' से प्रभु के गुण गायें, चंद्रप्रभु को हृदय बसायें॥20॥

दोहा- चालीसा हम चंद्र का, करते चालीस बार।
रोग शोक दु:ख मेटने, आये प्रभु के द्वार॥
ऋद्धि सिद्धि सुख संपदा, पायें पद निर्वाण।
गुप्ति समिति व्रत धारकर, करते निज कल्याण॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री पुष्पदंत भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	सुग्रीव राजा
माता	–	जयरामा रानी
आयू	–	2 लाख पूर्व
ऊँचाई	–	100 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	फाल्गुन कृष्णा नवमी
जन्म	–	मार्गशीर्ष शुक्ला प्रतिपदा
जन्म स्थान	–	काकंदी
दीक्षा	–	मार्गशीर्ष शुक्ला प्रतिपदा
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	पुष्यमित्र राजा
कैवल्य ज्ञान	–	कार्तिक शुक्ला द्वितीया
गणधर	–	विदर्भ आदि (88)
कुल मुनि	–	2 लाख
गणिनी	–	घोषार्या
कुल आर्यिकायें	–	3 लाख 80 हजार
श्रावक	–	2 लाख
श्राविकायें	–	5 लाख
मोक्ष	–	भाद्र शुक्ल अष्टमी
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	सफेद
चिह्न	–	मगर
चैत्यवृक्ष	–	अक्ष (बहेड़ा)

शासक देव

यक्ष	–	अजित
यक्षिणी	–	महाकाली
क्षेत्रपाल	–	(1) वज्रकांति (2) वीरकांति (3) विष्णुकांति (4) चंद्रकांति

त्रैलोक्य तिलक श्री पुष्पदंत विधान

स्थापना (गीता छन्द)

श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र की, सुर-नर सभी पूजा करें।
वसुधा पे प्रभुवर पुष्प का, श्री नाम नित गूँजा करें॥
है नाम पावन आपका, उस नाम में भी पुष्प है।
हम जिन छवि मन में बिठा, आह्वान करते पुष्प से॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्य तिलक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

सोना चाँदी वा मिट्टी के, कलशे भर हम लाये।
सहस अठोत्तर नाम मंत्र ले, प्रभु का न्हवन करायें॥
पुष्पदंत के चरण कमल में, निशदिन पुष्प चढ़ायें।
श्री त्रैलोक्य तिलक को पूजें, प्रभु सम हम बन जायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चंदन हल्दी कुमकुम, कलशें भर-भर लाये।
करें सदा अभिषेक नाथ का, चरणन् गंध लगायें॥ पुष्पदंत.. ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद के दाता को हम, मुक्ता शालि चढ़ायें।
कभी न क्षय होने वाला पद, हे प्रभु तुम सम पायें॥ पुष्पदंत.. ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग-बिरंगे पुष्पों की हम, माल बनाकर लाये।
पुष्पदंत को पुष्प चढ़ाकर, काम रोग विनशायें॥ पुष्पदंत.. ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडु बाटी पूड़ी रबड़ी, सेव कचौड़ी लाये।
चढ़ा रहे हम प्रभु को व्यंजन, क्षुधा रोग विनशायें॥ पुष्पदंत.. ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाकर करें आरती, नाथ सदैव तुम्हारी।
दीपों से जिन सदन सजायें, नाचें सब नर-नारी।।
पुष्पदंत के चरण कमल में, निशदिन पुष्प चढ़ायें।
श्री त्रैलोक्य तिलक को पूजें, प्रभु सम हम बन जायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि पात्र में धूप खिरायें, कहें मंत्र संग स्वाहा।
प्रभु अर्चा से सुख हम पायें, कर्म करें सब स्वाहा।। पुष्पदंत.. ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल और फलों की माला, कदली गुच्छे लाये।
मोक्षमहल की माला वरने, प्रभु के चरण चढ़ायें।। पुष्पदंत.. ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा के स्वामी को, अष्ट द्रव्य से पूजें।
पुष्पदंत को सर्व सुरासुर, नर-नारी गण पूजें।। पुष्पदंत.. ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- पुष्पदंत जिनदेव को, वंदन बारम्बार।
करते आज विधान हम, पाने शिवसुख द्वार।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

शेर छंद (तर्ज - हे दीन बंधु...)

प्रभु आपने करी तपस्या भव अनेक में।
उस पुण्य से बने हैं नाथ भरत क्षेत्र में।।
त्रैलोक्य तिलक पुष्पदंत को भजें सदा।
जिन भक्ति से मिले सदा आनंद संपदा।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्व पुण्य साधकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक दशा में नाथ तुमने दान नित दिया।
उस दान ने ही आपको जिनराज पद दिया।।
त्रैलोक्य तिलक पुष्पदंत को भजें सदा।
जिन भक्ति से मिले सदा आनंद संपदा।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं दानधर्म साधकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवा परोपकार दान तीर्थ में दिया।
कर्तव्य छहों धार के उत्थान कर लिया।। त्रैलोक्य..।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं षट् कर्त्तव्य दानतीर्थ प्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य प्रेम आपने सब जीव से किया।
उस गुण को पाने हमने तव विधान कर लिया।। त्रैलोक्य..।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रेम वात्सल्य भाव प्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनियों के प्रति आपकी प्रगाढ़ भावना।
चारों प्रकार दान दे के की प्रभावना।। त्रैलोक्य..।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विध दान बुद्धिप्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व के आठों ही अंग आप में भरें।
शंकादि दोष छोड़ हम सम्यक्त्व को वरें।। त्रैलोक्य..।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्त्वादि अष्टगुण प्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण आप में अनेक थे प्रभु पूर्व काल से।
करते हैं जिन आराधना हम तीन काल में।। त्रैलोक्य..।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गुण त्रिकाल पूजा उपदेशकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निंदा गर्हा आलोचना करते थे तुम प्रभो।
संग में प्रतिक्रमण व ध्यान नित करें विभो।। त्रैलोक्य..।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वपापहराय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन था घर में आपका वैराग्य से सजा।
समता से सामायिक में लेते आत्म का मजा॥
त्रैलोक्य तिलक पुष्पदंत को भजें सदा।
जिन भक्ति से मिले सदा आनंद संपदा॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं गृहस्थे वैराग्यसाधकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार देह भोग ये तो नाशवान हैं।
निज आत्मा की खोज में जिज्ञासावान थे॥ त्रैलोक्य..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं संसार शरीर भोग विरक्ति साधकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि बनके आपने करी है घोर साधना।
वो शक्ति पाने आपकी करते उपासना॥ त्रैलोक्य..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मशक्ति बल प्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य भावना से ओत-प्रोत जिन रहे।
शुभ भावनायें भाने को उद्योत जिन रहे॥ त्रैलोक्य..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं वात्सल्य भावना साधकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाई थी सोलह भावना गुरु पाद मूल में।
आठों ही कर्म काटने प्रभु ब्याज मूल से॥ त्रैलोक्य..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं सोलहकारण भावना साधकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करके समाधि आप प्रभु स्वर्ग में गये।
तत्त्वों की चर्चा में ही आप लीन हो गये॥ त्रैलोक्य..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्वार्थसार साधकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर के पुण्य से नगर की रचना सुर करें।
बहुमूल्य रत्न से सजा वो पुण्य नित वरें॥
त्रैलोक्य तिलक पुष्पदंत को भजें सदा।
जिन भक्ति से मिले सदा आनंद संपदा॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्म नगर पूजिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आते हैं गर्भ में प्रभु जब स्वर्ग लोक से।
होती हैं रत्न वृष्टियाँ तब मध्य लोक में॥ त्रैलोक्य..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नवृष्टि पूजिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर की मात स्वप्न देखे गर्भ पूर्व में।
माता को पूजें देवियाँ छह माह पूर्व से॥ त्रैलोक्य..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं षोडश स्वप्न पूजिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन्द्रह महिने प्रभु व पितु-मात को भजें।
हे सुविधिनाथ ! आप सम बनने को हम जजें॥ त्रैलोक्य..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयलोक पूजिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होते हैं गर्भ से प्रभु त्रय ज्ञान के धनी।
जो आपको भजें बने वो ज्ञान गुण धनी॥ त्रैलोक्य..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भस्थ त्रयज्ञानधारी श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्में हैं पुष्पदंत जी कांकदी नगर में।
छाई थी खुशी जन्म की हर एक नगर में॥ त्रैलोक्य..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्षेत्रे आनंदप्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! जन्म आपका कहलाये आखिरी।
हम आपके चरणों की करें नित्य चाकरी॥ त्रैलोक्य..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्मकल्याण पूजिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होता है जन्म नाथ का जब मध्य लोक में।
सुख-शांति होती उस समय तीनों ही लोक में॥ त्रैलोक्य..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयलोक शांतिप्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! रूप आपका हम सबको लुभाये।
जिन जन्म से अतिशय जिनेश आप ही पायें॥
त्रैलोक्य तिलक पुष्पदंत को भजें सदा।
जिन भक्ति से मिले सदा आनंद संपदा॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशय सुन्दर रूप धारकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज की अर्चा विशेष की है आपने।
उस भक्ति से पाया मनोज्ञ रूप आपने॥ त्रैलोक्य.. ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञ रूप धारकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन चढ़ाया पूर्व में प्रभुवर को आपने।
उससे सुगंध देह पाया नाथ आपने॥ त्रैलोक्य.. ॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगंधित शरीर प्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतोपचार नित किया गुरुओं का आपने।
उस पुण्य से पसीना नहीं आये नाथ में॥ त्रैलोक्य.. ॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वेद (पसीना) रहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी में मधुरता रही बचपन से आप में।
गुरुओं से पूर्व वचन कला सीखी आपने॥ त्रैलोक्य.. ॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं मधुर वचन सहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवा करी गुरुओं की प्रभु पूर्व जन्म में।
इससे अतुल्य बल मिला है नाथ जन्म से॥ त्रैलोक्य.. ॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतुल्य बल अतिशय सहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक प्राणी मात्र से वात्सल्य आपका।
उससे ही रक्त श्वेत हुआ नाथ आपका।।
त्रैलोक्य तिलक पुष्पदंत को भजें सदा।
जिन भक्ति से मिले सदा आनंद संपदा।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्वेत रुधिर अतिशय सहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण भी तन में आपके अठ इक हजार हैं।
शुभ अंगधारी आपको वंदन हजार है।। त्रैलोक्य..।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्र अष्टोत्तर लक्षण धारकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुओं की सेवा वैयावृत्ति की जो आपने।
पाया है पूर्व भक्ति से संहनन ये आपने।। त्रैलोक्य..।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम संहनन अतिशय धारकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहार तो करते प्रभु निहार ना होवे।
ये जन्म से अतिशय प्रभुवर आप में होवे।। त्रैलोक्य..।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं निहाररहित अतिशय धारकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बेडोल रूप देख ग्लानि भाव ना आया।
उससे ही तन विशेष एक रूप सा पाया।। त्रैलोक्य..।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम चौरस संस्थान अतिशय धारकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार देह राज्य से उदास हो गये।
परमेष्ठी पद के धारी मुनिनाथ हो गये।। त्रैलोक्य..।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठी पद धारकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब ऋद्धि-सिद्धि ज्ञान चौथा आपको हुआ।
तप साधना से केवलज्ञान आपको हुआ।।
त्रैलोक्य तिलक पुष्पदंत को भजें सदा।
जिन भक्ति से मिले सदा आनंद संपदा।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुषष्टि ऋद्धि-सिद्धि सर्वज्ञान धारकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश सभा के स्वामी आप ईश बन गये।
करके प्रचार धर्म का जगदीश बन गये।। त्रैलोक्य..।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसभा नायक पद प्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के समवसरण में सर्व जीव आ रहे।
प्रभुवर से ज्ञान पाके वो सम्यक्त्व पा रहे।। त्रैलोक्य..।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व जीव शरण प्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटी असंख्य भव्य जीव भक्ति कर रहे।
हे नाथ ! हम भी आपका विधान कर रहे।। त्रैलोक्य..।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं शत इंद्र पूज्याय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन में अनंत ज्ञान के अतिशय विशेष हैं।
करते हैं हम भी आपकी भक्ति विशेष है।। त्रैलोक्य..।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरकृत चतुर्दश अतिशय धारकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फिर अंत में जिनदेव सर्व कर्म नशायें।
सम्मेद शिखर जी से नाथ मोक्ष को पायें।। त्रैलोक्य..।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाण लक्ष्मी प्राप्ताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के क्षय से आपको अनंत गुण मिले।
ऐसे प्रभु की अर्चना सौभाग्य से मिले।।
त्रैलोक्य तिलक पुष्पदंत को भजें सदा।
जिन भक्ति से मिले सदा आनंद संपदा।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंत गुणधारकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन हम विधान कर रहे सब पाप नशाने।
अविकार काय पाने और पुण्य कमाने।। त्रैलोक्य.. ।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पापरोग विनाशकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस तन से ही मुक्ति मिले जिनराज सब कहे।
श्री मुक्ति का सोपान पाने भक्ति हम करें।। त्रैलोक्य.. ।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम मनुष्य भवप्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये धर्म का साधन शरीर त्याग मय रहे।
जिनभक्ति में हम भक्त सारे मस्त नित रहे।। त्रैलोक्य.. ।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसाधना प्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी से हम भगवान का गुणगान नित करें।
कीर्त्तन करें भक्ति करें सद्ज्ञान को वरें।। त्रैलोक्य.. ।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचन बल प्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से करें हम ध्यान नाथ आपका सदा।
हे नाथ ! आप ही करायें कर्म से जुदा।। त्रैलोक्य.. ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध मनोबल प्रदायकाय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदंत सर्व क्षेत्र-सर्व नगर में।
प्रभुवर को पूज हम भी जायें मोक्ष नगर में।। त्रैलोक्य.. ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वतीर्थ क्षेत्र जिनालय स्थित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा व अर्चना व नमस्कार हम करें।
जिनराज वंदना समस्त पाप तम हरें।।
त्रैलोक्य तिलक पुष्पदंत को भजें सदा।
जिन भक्ति से मिले सदा आनंद संपदा।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयकाल पूजित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

धर्मतीर्थ पे नाथ आपकी, प्रतिमा है अति सुन्दर।
जो भी पूजा वन्दन करता, वो भी हो अति सुन्दर।।
शुक्र दोष के कष्ट मिटाने, हम प्रभु कीर्त्तन गायें।
चालीसा व मंत्र जापकर, ध्वज पूर्णार्घ चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकर्म कोरोना रोग निवारकाय, दुःख, संकट, पीड़ा, अशांति हराय, अनंतगुणधारकाय बोधिसमाधि प्रदायकाय श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री त्रैलोक्य तिलक पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जो प्रभु की पूजा करे, पाये शांति अपार।
भक्त कहे भगवान से, सुखी रहे संसार।।

शांतये शांतिधारा

दोहा– पुष्पदंत के चरण में, सर्व पुष्प की माल।
सुविधिनाथ को विधि सहित, सदा नमावें भाल।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता– श्री जिनवर स्वामी, अंतर्यामी, सुविधि प्रभु हमको भाये।
जयमाला गायें, भक्ति रचायें, पुष्पदंत को हम ध्यायें।।

नरेन्द्र छंद

पुष्पदंत की श्री जयमाला, मालामाल बनाये।
गाते हम प्रभु की जयमाला, झूमें नाचें गायें॥
काकंदी में जन्म लिया जिन, स्वर्गों से सुर आये।
प्रभु के पंचकल्याण मनाने, तीन लोक मिल आये॥1॥

पूज्य पिता सुग्रीव राज के, तुम हो राज दुलारे।
जग जननी माँ जयरामा के, तुम हो नयन सितारे॥
गर्भ पूर्व प्रभुवर की माता, सोलह स्वप्न देखे।
प्राणत स्वर्ग तजे प्रभु आये, आगम ये उल्लेखे॥2॥

जन्म लिया जब पुष्पदंत ने, तीन लोक हर्षाये।
सुरपति प्रभु का न्हवन कराके, प्रभु का नाम बताये॥
इन्द्राणी प्रभु को भक्ति से, गोदी में बैठाये।
वस्त्राभूषण बाल प्रभु को, इन्द्राणी पहनाये॥3॥

इन्द्र प्रभु का रूप निरखने, नयन हजार बनाये।
प्रभु को मात-पिता को सौंपे, आनंद नृत्य रचाये॥
बचपन बीता यौवन आया, बनते प्रभुवर राजा।
प्रभुवर के उस राजमहल में, बजते नौबत बाजा॥4॥

इक दिन उल्कापात देखकर, हुये नाथ वैरागी।
वन में जाते दीक्षा लेते, बन गये जिनवर त्यागी॥
ध्यान लगायें कर्म नशायें, केवल रवि प्रगटायें।
समवशरण में तीन लोक के, प्राणी भक्ति रचायें॥5॥

श्री सम्मेद शिखर से भगवन्, मोक्ष लक्ष्मी पाये।
प्रभु चरणों में जाकर हम भी, लड्डु ध्वजा चढ़ायें॥
धर्मतीर्थ पर हे जिन !, तुमको गुप्ति गुरु बिठाये।
यहाँ विराजी सुन्दर प्रतिमा, सबका चित्त लुभाये॥6॥

सर्दी खाँसी कंठ रोग को, ये विधान विनशाये।
रक्त चाप मधुमेह जलोदर, कैंसर आदि मिटाये॥
तन–मन के सब रोग मिटाये, सुख–समृद्धि दिलाये।
यश–कीर्ति धन–धान्य बढ़ाये, अपमृत्यु विनशाये॥7॥

भव–भव में जो पाप हुये हम, उन्हें नशाने आयें।
हर भव में जिनभक्ति प्राप्त हो, जैनधर्म नित पायें॥
हे भगवन् ! ऐसी बुद्धि दो, समिति गुप्ति हम पायें।
'आस्था' से प्रभु की पूजा कर, महामोक्ष फल पायें॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, दुःख संकट पीड़ा रोग व्याधि क्लेश अशांति निवारणाय, सुख–शांति, धन–धान्य विद्या बुद्धि ऋद्धि सिद्धि प्रदायकाय श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री त्रैलोक्य तिलक पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पुष्पदंत सुविधिप्रभु, धर्मतीर्थ पे आप।
त्रिभुवनपति जगनाथ तुम, हरो जगत् का पाप॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

आरती

(तर्ज – एके लाल दरवाजे...)

जगमग दीप जलाकर, प्रभु की आरती करें।
पुष्पदंत प्रभु की, हम आरती करें॥

सुग्रीव दुलारे, जयरामा के प्यारे–2
घृत के दीप जलाकर, भक्ति नृत्य करे॥ पुष्प..॥1॥
छम–छम करते भविजन, शुभ नृत्य रचाये–2
कर ताल बजाकर, गुणगान करें ॥ पुष्प..॥2॥
आरतियाँ प्रभुवर की, सब आर्त्त मिटाये–2
अपने पाप नशाने, प्रभु का ध्यान करे॥ पुष्प..॥3॥
हम सांझ–सवेरे, जिन मंदिर में आये–2
'आस्था' से प्रभुवर, तेरी आरती करे॥ पुष्प..॥4॥

श्री पुष्पदंत चालीसा

दोहा- पुष्पदंत के चरण में, पुष्प चढ़ायें आज।
दीप धूप के साथ हो, चालीसा का पाठ॥
श्री जिनवर परमेष्ठि जिन, देव शास्त्र गुरु तीन।
इनके पावन चरण में, हो जायें तल्लीन॥

चौपाई

जय-जय पुष्पदंत जिनदेवा, करते हम चरणों की सेवा।
बढ़े पुण्य से जिनको पाया, हमने ये चालीसा गाया॥1॥
सुविधि पुष्प दो नाम तुम्हारे, नमन सहित हम तुम्हें पुकारे।
विधिपूर्वक हम धर्म निभायें, विधि का उत्तम फल हम पायें॥2॥
आये पुष्पदंत को ध्याने, उनके पूर्वभवों को जानें।
पुष्कर द्वीप पुष्प सम प्यारा, पुष्कलवती नगर इक न्यारा॥3॥
पुण्डरीकिणि नगर के राजा, महापद्म थे उसके राजा।
सबसे प्रेम करें वो राजा, दे आशीष सदा मुनिराजा॥4॥
मुनियों की नितभक्ति करते, अर्चा नित प्रभुवर की करते।
करें महोत्सव हर दिन राजा, प्रजा बजाती ताली बाजा॥5॥
भूतहित जिनराज पधारे, दल बल संग नृप वहाँ पधारे।
करें प्रदक्षिणा राजा प्रभु की, पूजा वंदन करें प्रभु की॥6॥
गुरुवर जिन उपदेश सुनायें, महापद्म वैराग्य जगाये।
दीक्षा लेकर ज्ञान बढ़ाये, सोलह दिव्य भावना भाये॥7॥
काया कृष मुनि की हो जाये, सर्व कषायें कृष हो जाये।
समता से मुनि तन को त्यागे, मुनि सम भाग्य हमारा जागे॥8 में
प्राणत दिव में इन्द्र बने वो, पूजा भक्ति नित्य करे जो।
प्रभु के पंच कल्याण मनाये, अतिशय भारी पुण्य कमाये॥9॥
आयु छह महीने रह जाये, धनपति रत्न स्वर्ण बरसाये।
काकंदी में उत्सव छाये, धनपति सुन्दर महल बनाये॥10॥

मात-पिता भी पूजें जाये, जब जिनवर माँ के उर आये।
श्री सुग्रीव जनक जिन प्यारे, जयरामा के राजदुलारे॥11॥
पूर्व युग्म लख आयु पाई, कुंद पुष्प सम देह कहाई।
शतक धनुष ऊँचा तन पाया, न्याय नीति का पाठ पढ़ाया॥12॥
सर्व प्रजा को लगते प्यारे, तीन लोक के नाथ हमारे।
उल्कापात प्रभु ने देखा, जग का सुख नश्वर जल रेखा॥13॥
ब्रह्मर्षि लौकांतिक आये, अष्ट द्रव्य ले भक्ति रचायें।
देवों के आसन कम्पायें, सूर्यप्रभा शिविका ले आये॥14॥
पुष्पक वन में प्रभुवर जायें, दीक्षा ले प्रभु ध्यान लगायें।
चौथा ज्ञान प्रगट हो जाये, पुष्पमित्र आहार कराये॥15॥
चार वर्ष छद्मस्थ कहाये, चार घातिया कर्म नशायें।
समवशरण लक्ष्मी के स्वामी, केवलज्ञानी अन्तर्यामी॥16॥
अट्ठासी गणधर नित ध्यायें, मुनि अनेकों भक्ति रचायें।
श्री सम्मेद शिखर प्रभु आये, कर्म नाश शिव लक्ष्मी पायें॥17॥
चिह्न आपका मगर कहाये, शुक्र आदि ग्रह रिष्ट मिटायें।
सहस्रनाम से सुरपति ध्याये, हम प्रभु के दर दीप जलाये॥18॥
पुष्पदंत को हृदय बसाये, चित की चंचलता मिट जाये।
सर्वकर्म से मुक्ति पाये, ऐसा पुण्य जगाने आये॥19॥
पाप ताप दुःख शोक नशाओ, हे प्रभु ! सच्चा मार्ग दिखाओ।
समिति गुप्तियाँ हमें दिलाओ, हे प्रभु ! हमको पार लगाओ॥20॥

दोहा- मन मंदिर में आपको, बिठा रहे भगवान।
हृदय पुष्प पुलकित हुआ, करो नाथ कल्याण॥
चालीसा निशदिन पढ़ें, मन में रख उत्साह।
'आस्था' से हम जाप कर, पाये सम्यक् राह॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री शीतलनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	दृढ़रथ राज
माता	–	सुनन्दा रानी
आयू	–	1 लाख पूर्व
ऊँचाई	–	90 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	चैत्र कृष्ण अष्टमी
जन्म	–	माघ कृष्ण पक्ष की द्वादशी
जन्म स्थान	–	भद्रिकापुरी
दीक्षा	–	माघ कृष्ण द्वादशी
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	पुनर्वसु राजा
कैवल्य ज्ञान	–	पौष कृष्ण चतुर्दशी
गणधर	–	अनगार आदि 81
कुल मुनि	–	1 लाख
गणिनी	–	धारणा आर्या
कुल आर्यिका	–	3 लाख 80 हजार
श्रावक	–	2 लाख
श्राविका	–	3 लाख
मोक्ष	–	आश्विन शुक्ल अष्टमी
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	सुनहरा
चिह्न	–	कल्पवृक्ष
चैत्यवृक्ष	–	धूलि (मालिवृक्ष)

शासक देव

यक्ष	–	ब्रह्म
यक्षिणी	–	मानवी
क्षेत्रपाल	–	(1) शतवीर्य (2) महावीर्य (3) बलवीर्य (4) कीर्तिवीर्य।

श्री शीतलनाथ विधान (सुगंध दशमी व्रत विधान)

स्थापना (काव्य छंद)

जय-जय शीतलनाथ, जय हो प्रभु तुम्हारी।
स्वयं बुद्ध जगनाथ, सर्वश्रेष्ठ अविकारी।।
आये हम जिन द्वार, बनकर भक्त पुजारी।
पुष्पों से आह्वान, करते सब नर-नारी।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

शीतल प्रभु के चरण में, शीतलता मिल जाय।
हम प्रभु की पूजा करें, जल के कलश चढ़ाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल हैं प्रभु के चरण, चंदन शीतल लाय।
प्रभु सम शीतल हम बनें, चरणन् गंध लगाय।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद की आश में, लाये अक्षत पुंज।
अक्षत प्रभु को भेंट कर, पायें सौख्य निकुंज।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हार चढ़ायें पुष्प संग, प्रभुवर के पादाग्र।
काम रिपू हम नाशकर, पहुँच जाय लोकाग्र।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर लड्डू रसभरी, मैसूरपाक बनाय।
शुद्ध बना नमकीन सब, प्रभु को नित्य चढ़ाय।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चमचम करते दीप संग, आरति प्रभु की गाय।
मोह तिमिर को नाशकर, प्रभु सम प्रज्ञा पाय॥6॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेते अग्नि पात्र में, सर्व सुगंधित धूप।
हम विधान ये कर रहे, पाने प्रभु सम रूप॥7॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल चीकू जाम वा, केला सेव अनार।
आमादिक अर्पण करें, अति मनोज्ञ रसदार॥8॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षत चरु, पुष्प दीप फल धूप।
शीतल जिन को अर्घ दे, पायें सिद्ध स्वरूप॥9॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- प्रभु का पावन नाम ही, सबको सुखी बनाय।
प्रभु की भक्ति प्रणाम भी, सर्वसिद्धि दिलवाय॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

जय-जय हो श्री शीतल स्वामी, शीतलता दायक जिन स्वामी।
शीतलता पाने हम आये, प्रभु चरणों में अर्घ चढ़ायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं शीतलतादायक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात सुनंदा के तुम तारे, दृढ़रथ राजा के सुत प्यारे।
गर्भकल्याणक इन्द्र मनाये, हम भी प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भमंगल मंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण द्वादश को जन्में, न्हवन हुआ था पांडुकवन में।
सुर-नर मुनिगण शरणा आये, शीतल प्रभु को हम सब ध्यायें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं जन्ममंगल मंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल प्रभु जब मुनि पद पायें, नृप हजार भी दीक्षा पायें।
जन्म तिथि को तप अपनायें, हम भी तप कल्याण मनायें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं तपोमंगलमंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौषकृष्ण चौदश को स्वामी, बने सर्व विद्या के स्वामी।
द्वादश धर्म सभा रच जाये, धर्मतीर्थ प्रभु पुनः चलायें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञान मंगलमंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन शुक्ला अष्टम तिथि को, पहुँचे स्वामी मोक्षगति को।
सायंकाल में कर्म नशायें, मोक्षकल्याणक इन्द्र मनायें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षमंगल मंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस धर्मों का पाठ पढ़ाया, जैनधर्म का दीप जलाया।
जन-जन को जिनधर्म बताया, हमने प्रभु को अर्घ चढ़ाया।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनधर्म प्रवर्तकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त भंग प्रभु ने बतलायें, स्याद्वाद नय से समझायें।
अनेकांतमय धर्म कहाये, उनको हम सब अर्घ चढ़ायें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनेकांतमय धर्म प्ररूपणाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक व मुनि धर्म बताये, प्रभु सबको जिनधर्म सिखायें।
कोई श्रावक मुनि बन जाये, कोई श्रावक धर्म निभायें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावक व मुनिधर्म उपदेशकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ बीस गुण जो अपनाये, वो श्रावक से मुनि पद पाये।
जो केवल अणुव्रत अपनाये, वो सच्चा श्रावक कहलाये॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं उभय जिन धर्म प्ररूपकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागों सप्त व्यसन को प्राणी, कहती है प्रभुवर की वाणी।
अष्ट मूलगुण प्रभु सिखलायें, त्यागमयी जिनधर्म कहाये॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तव्यसन अष्टमूलगुण प्ररूपकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच उदम्बर फल को त्यागें, मद्य मांस मधु भी सब त्यागें।
रात्रि भोजन आदिक त्यागें, प्रभु दर्शन को अति अनुरागें॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टमूलगुण व्रत उपदेशकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह व्रत कोई अपनाये, या एकादश प्रतिमा पाये।
संकल्पी हिंसा को छोड़े, सर्व पाप से मुखड़ा मोड़े॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं बारह व्रत एकादश प्रतिमा उपदेशकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् कर्त्तव्य सदा ही पाले, भक्ति गुरु की करने वाले।
आर्ष मार्ग को हम अपनायें, प्रभु पूजा से आनंद पायें॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं षट्कर्त्तव्य उपदेशकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार दान हम करते जायें, मुनियों को आहार करायें।
ज्ञान अभय औषध आहारा, इनसे पायें दुःख निस्तारा॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुःप्रकार दानधर्म उपदेशकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने सबको मार्ग दिखाया, सत्य अहिंसा पाठ पढ़ाया।
शीतल प्रभु ने धर्म सिखाया, हम भी पायें शीतल छाया॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं सत्य–अहिंसा–धर्म उपदेशकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्मेद शिखर प्रभु जायें, वहीं मोक्ष शीतल जिन पायें।
मोक्ष कल्याणक इन्द्र मनायें, हम लड्डू के थाल चढ़ायें॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्ति प्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर धरती पर आयें, पुनः धर्म का चक्र चलायें।
कर्मचक्र को नशने आये, हम जिनवर की भक्ति रचायें॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मचक्र नाशन समर्थाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जैन धर्म को पाया, कुल में उत्तम जिन कुल पाया।
देव–शास्त्र–गुरुवर को पाया, अर्चा का शुभ अवसर पाया॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनधर्म जिनकुल प्रदायकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग जिनदेव हमारे, रहे दिगम्बर गुरु हमारे।
शास्त्र अहिंसा धर्म सिखायें, इनकी पूजा कर सुख पायें॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं देव–शास्त्र–गुरु भक्ति प्ररूपकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ही गुरु हैं प्रभु जिनवाणी, गुरु वाणी पढ़ बनते स्वामी।
तीनों को श्रद्धा से ध्यायें, भव–भव का मिथ्यात्व नशायें॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं मिथ्यात्व तिमिर हराय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् रत्नत्रय हम पायें, ये ही मोक्ष महल पहुँचाये।
सर्वकर्म से मुक्ति दिलायें, सच्चा सुख शाश्वत दिलवाये॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रय प्रदायकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल प्रभु शीतलतादायक, हम बनने आये प्रभु लायक।
प्रभु सम मम आतम है ज्ञायक, संयम धर बन जायें ज्ञायक॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञायक स्वरूप प्रदायकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

श्री जिन सुगंध दशमी व्रत में, पूजा शीतल प्रभु की करते।
तन की दुर्गन्ध मिटाने को, विधिपूर्वक व्रत पालन करते॥
श्री शीतलनाथ जिनेश्वर का, हम श्री विधान करने आये।
सब रोग-शोक संकट हरलो, हे नाथ ! शरण में हम आये॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं तनव्याधि दुर्गन्ध विनाशन समर्थाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन के द्वारा जो पाप किये,उन सब पापों को आप हरो।
मन से हम प्रभु को पूज रहे, मन में शांति का स्रोत भरो॥ श्री.. ॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं मानसिक पापहराय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से पाप किये जो-जो, अपशब्द कहे मुनिराजों को।
निंदा गर्हा अपनी करते, हे नाथ ! क्षमा कर दो हमको॥ श्री.. ॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं वाचनिक पापहराय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया से पाप किये जितने, ना सेवा की ना प्रभु पूजा।
जो पाप किये सुन्दर तन से, उसका प्रायश्चित्त प्रभु पूजा॥ श्री.. ॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं कायिक पापहराय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राजा रानी ने व्रत करके, स्वर्गादिक मुक्ति सुख पाया।
पापों का प्रायश्चित्त करने, यह व्रत जिनवर ने बतलाया॥ श्री.. ॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पापहराय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह व्रत सुगन्धदशमी सबके, सर्वात्म सुगंधित करता है।
दस वर्षों तक व्रत जो पाले, उसको आनंदित करता है॥ श्री.. ॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं तन-मन पवित्र करणाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादो शुक्ला दशमी के दिन, उपवास करे जो नर–नारी।
दशमुख वाले घट में खेते, वो धूप हरे पीड़ा सारी।।
श्री शीतलनाथ जिनेश्वर का, हम श्री विधान करने आये।
सब रोग–शोक संकट हरलो, हे नाथ ! शरण में हम आये।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पीड़ा पापहराय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक सहित व्रत हम करते, पूजा करके हम जाप करें।
गुरुओं को देकर के आहार, शुद्धिपूर्वक हम भक्ति करें।। श्री.. ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभिषेक–पूजा–दान–भक्ति उपदेशकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल छाया शीतल प्रभु की, श्री धर्मतीर्थ पर मिलती है।
हम प्रभु का पूजन भजन करें, मुरझाई कलियाँ खिलती हैं।। श्री.. ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

इष्ट वस्तु का जब वियोग हो, मन को होती पीड़ा।
स्थिर हो प्रभु चित्त हमारा, हरो हमारी पीड़ा।।
श्री शीतल प्रभुवर ने हमको, ध्यान चार बतलाये।
आर्त्त रौद्र दो अशुभ तजे हम, धर्मशुक्ल दो पायें।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं इष्ट वियोगज आर्त्तध्यान निवारणाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसको हम ना चाहे भगवन्, वो ही हमको मिलता।
ना अनिष्ट संयोग हमें हो, इस हित तुमको भजता।। श्री... ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिष्ट संयोगज आर्त्तध्यान निवारणाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महारोग होने पर तन की, पीड़ा हमें सताये।
अति वेदना आर्त्तध्यान से, हमको प्रभु बचाये।। श्री... ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेदना आर्त्तध्यान निवारणाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगामी भोगों की इच्छा, सम्यक् मार्ग छुड़ाये।
आर्त्तध्यान निदान जीव का, निश्चित पतन कराये॥
श्री शीतल प्रभुवर ने हमको, ध्यान चार बतलाये।
आर्त्त रौद्र दो अशुभ तजे हम, धर्मशुक्ल दो पायें॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं निदान आर्त्तध्यान निवारणाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसा करें कराने में जो, अति आनंद मनाये।
हिंसानंदी रौद्र ध्यान से, जिनवर हमें बचायें॥ श्री... ॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं हिंसानंद रौद्रध्यान निवारणाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बोले झूठ सदा जो प्राणी, वसु जैसे दुःख पाये।
सत्य वचन ही मोक्ष मार्ग है, प्रभुवर हमें बतायें॥ श्री... ॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं मृषानंद रौद्रध्यान निवारणाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौर्यानंदी रौद्र रूप है, चोरी पाप कराये।
चोरी कर जो आनंद पाये, वो नरकों में जाये॥ श्री... ॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं चौर्यानंद रौद्रध्यान निवारणाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रहानंद विषय संरक्षण, विषय वस्तुयें लाये।
बहु आरंभ परिग्रह अघ भी, नरकों में ले जाये॥ श्री... ॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं विषय संरक्षणानंद रौद्रध्यान निवारणाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

धर्मध्यान का प्रथम भेद आज्ञा विचय।
प्रभु आज्ञा का पालन है आज्ञा विचय॥
धर्मध्यान के सब ध्यानों को ध्या रहे।
शीतल प्रभु का भव्य विधान रचा रहे॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं आज्ञाविचय धर्मध्यान प्रदायकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजा ध्यान अपाय विचय बतला रहा।
पाप मार्ग से भव्यों को छुड़वा रहा।।
धर्मध्यान के सब ध्यानों को ध्या रहे।
शीतल प्रभु का भव्य विधान रचा रहे।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपायविचय धर्मध्यान प्रदायकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का फल सुख-दुःखमय हम पा रहे।
ध्यान विपाक विचय से पुण्य बढ़ा रहे।। धर्म... ।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपाकविचय धर्मध्यान प्रदायकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ शिवथान है।
हम संस्थान विचय का करते ध्यान हैं।। धर्म... ।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं संस्थानविचय धर्मध्यान प्रदायकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम शुक्ल पृथकत्व वितर्क वीचार है।
कर्म शत्रु पर करता प्रथम प्रहार है।।
शुक्ल ध्यान के सब ध्यानों को ध्या रहे।
शीतल प्रभु का भव्य विधान रचा रहे।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं पृथकत्व वितर्क वीचार शुक्लध्यान प्रदायकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय ध्यान एकत्व वितर्क अविचार है।
योग अर्थ संक्रांति बिन अविचार है।। शुक्ल... ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकत्व वितर्क अवीचार शुक्लध्यान प्रदायकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति तीजा ध्यान है।
इसके ध्याता वीतराग भगवान हैं॥
शुक्ल ध्यान के सब ध्यानों को ध्या रहे।
शीतल प्रभु का भव्य विधान रचा रहे॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति शुक्लध्यान प्रदायकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अयोग केवलि करते चौथा ध्यान हैं।
अर्घ चढ़ायें तन्मय हो हम ध्यान में॥ शुक्ल... ॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्युपरत क्रिया निवृत्ति शुक्लध्यान प्रदायकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

शीतलनाथ जिनेश हमारे, कर्म दोष विनशायें।
जो शीतल प्रभु का व्रत करते, रोग मुक्त हो जायें॥
नाम है शीतल करते शीतल, शीतलता हम पायें।
नाना द्रव्यों की थाली ले, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पाप, ताप, रोग, शोक, कोरोना रोग, सर्व ज्वरादि, कुष्ठ रोग हराय, शीतलता प्रदायकाय सर्व ऋद्धि-सिद्धी प्रदायकाय सुगंध दशमी व्रताधिपति श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शीतल प्रभु के चरण में, शीतल जल की धार।
पुष्पहार पुष्पाञ्जलि, करते बारम्बार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- वीतराग सर्वज्ञ जिन, हित उपदेशी नाथ।
जयमाला हम पढ़ रहे, जय-जय शीतलनाथ॥

(नरेन्द्र छंद)

तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, शीतल प्रभु मन भायें।
इनकी गुणगाथा को गा हम, अपने पाप नशायें॥
श्री सुगन्ध दशमी के व्रत में, प्रभु की पूजा होती।
श्रद्धा से जो यह व्रत पालें, पाते सम्यक् ज्योति॥1॥

पद्मराज की रानी श्रीमति, राजा को अति प्यारी।
राजा रानी वन में जाये, प्रजा चले संग सारी॥
राजा ने मुनि की चर्या हित, रानी को घर भेजा।
क्रोधित रानी घर लौटी पर, बिगड़ा उसका भेजा॥2॥

वह सोचे नंगे के कारण, सुख में बाधा आई।
पापिन रानी ने मुनिवर को, कड़वी तुम्बी खिलाई॥
चर्या करके जायें मुनि पर, रस्ते में गिर जायें।
हुई समाधि उन मुनिवर की, उत्तम गति वो पायें॥3॥

रानी को सब जन धिक्कारें, राजा उसे भगाये।
रानी मरकर बनी भैंस पर, माँ उसकी मर जाये॥
देखे भैंस मुनि को इक दिन, उन्हें मारने आये।
गड्ढे में फंस मरी भैंस अब, पंगु गधी बन जाये॥4॥

गधी मारने मुनि को दौड़ी, मर शुकरी बन जाये।
जन्म लिया चांडाल सुता बन, मात-पिता मर जाये॥
दुर्गंधा के तन की बदबू, इक योजन तक जाये।
योजन दुर्गंधा को मुनि तब, दशमी व्रत दे जायें॥5॥

ब्राह्मण सुता बनी वो कन्या, मात-पिता मर जाये।
पुनः करे वो दशमी का व्रत, तिलकमति बन जाये॥

दुःखी करें सौतेली माता, कुल्टा उसे बताये।
तिलकमति की सौतेली माँ, उसका ब्याह रचाये॥6॥

तिलकमति ने गोप पति से, दो झाड़ू मंगवाये।
गोप रत्न आभूषण के संग, झाड़ू दो दे जाये॥
सर्व वस्तु को देख कुमाता, त्रिया चरित्र रचायें।
चोर पति है इस पापिन का, सबको बात बताये॥7॥

सेठ गया राजा के सन्मुख, सब सामान दिखाये।
करी परीक्षा तिलकमति की, पट्टी आँख बंधाये॥
राजा के पैरों को छू वह,अपना पति बताये।
राजा कहते यही सत्य है, रानी उसे बनाये॥8॥

राजा रानी फिर व्रत धारे, हम भी व्रत अपनायें।
सुगन्ध दशमी व्रत करके हम, सर्व सुखों को पायें॥
दस वर्षों तक करें वास हम, छह अंगों संग पूजा।
व्रत संयम अनशन से बढ़कर, और नहीं सुख दूजा॥9॥

प्रभु सम उत्तम तन को पाने, इनकी भक्ति रचायें।
सर्व दुःखों से मुक्ति पाने, प्रभु की संस्तुति गायें॥
सुख-समृद्धि पुण्य बढ़ाने, अर्चा नित्य रचायें।
शीतल प्रभु का ये विधान कर, 'आस्था' कर्म नशाये॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वरोग कोरोना रोग, गुल्म, जलोदर, कैंसर श्वेत कुष्ट रोग, संकट व्याधि विनाशनाय आरोग्य धन-धान्य ऐश्वर्य उत्तम गति प्रदायकाय श्री सुगंध दशमी व्रताधिपति शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शीतल प्रभु के चरण में, समितिगुप्ति व्रत धार।
'आस्था' से पूजा करें, करें आत्म उद्धार॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज–प्यारा लागे छे जिनराज...)

प्रभुवर शीतलनाथ, आज थारी आरती उतारूँ–2
दशवें शीतलनाथ, आज थारी...

1. भद्रिलपुर में जन्में स्वामी, गर्भ से ही थे जिनवर ज्ञानी।
   नाम था शीतलनाथ, आज थारी....
2. मात सुनंदा राजदुलारे, दृढ़रथ राजा के सुत प्यारे।
   तीन लोक के नाथ, आज थारी....
3. राज छोड़ प्रभु वन में जाये, मुनि बन केवल ज्योति जगायें।
   समवशरण के नाथ, आज थारी....
4. ऋषियति मुनि गणधर ध्यायें, नर–नारी सुर तव गुण गायें।
   तुम हो सबके नाथ, आज थारी....
5. श्री सम्मेद शिखर पे जायें, मुक्ति वधु से ब्याह रचायें।
   'आस्था' झुकायें माथ, आज थारी....

***

श्री शीतलनाथ चालीसा

दोहा– शीतल जिन का नाम ही, शीतलता पहुँचाय।
शीतल प्रभु के चरण में, शीतलता मिल जाय॥
चालीसा प्रभु नाम का, सबके कष्ट मिटाय।
प्रभु के चरण सरोज में, निशदिन दीप जलाय॥

चौपाई

श्री शीतल दसवें तीर्थंकर, तीन लोक के हो परमेश्वर।
तीन लोक के प्राणी ध्यायें, प्रभु का नाम सुमर हर्षायें॥1॥
शीतल की छाया मन भाये, तन–मन को शीतल कर जाये।
शीतल प्रभु की शरणा आयें, चालीसा श्रद्धा से गायें॥2॥
प्रभु ने भारी पुण्य कमाया, जगत् पूज्य जिनवर पद पाया।
बनते तीर्थंकर जो प्राणी, उनकी होती सुखद कहानी॥3॥
द्वीप पुष्कला नगर सुसीमा, आर पार थी जिसकी सीमा।
पद्मगुल्म थे जिसके राजा, सर्वकला पारंगत राजा॥4॥
मेघ विलय राजा ने देखा, क्षणभंगुर है जीवन रेखा।
मानव जीवन यू नश जाये, कुछ भी मेरे साथ न जाये॥5॥
आनंद मुनि के दर्शन पाये, दीक्षा लेकर ज्ञान बढ़ायें।
द्वादशांग बोधि मुनि पायें, बहु प्रकार मुनि तप अपनायें॥6॥
चउ आराधन मुनि आराधें, उत्तम मरण समाधि साधें।
आगे आरण इंद्र बने वो, आयु बाईस जलधि धरे वो॥7॥
प्रतिदिन पूजा भक्ति रचायें, प्रभु के पंच कल्याण मनायें।
छह महीने आयु रह जाये, पुष्पमाल उनकी मुरझाये॥8॥
जन्म नगर भद्रिलपुर प्यारा, चमके जिसमें धर्म सितारा।
धनपति सुन्दर नगर बनाये, पन्द्रह मास रत्न बरसाये॥9॥
जन्म पूर्व प्रभु स्वप्न दिखाये, फिर माता के उर में आये।
पिता स्वप्न का फल बतलाये, सर्व प्रजा सुन खुशी मनाये॥10॥

जिनकी जननी मात सुनंदा, जिनको पूजें सूरज चंदा।
दृढ़रथ श्री जिन जनक कहायें, दृढ़ता से वो धर्म निभायें॥11॥
जय-जय हो प्रभु शीतल देवा, जगत्पूज्य तीर्थेश्वर देवा।
संस्तुति करता इन्द्र तुम्हारी, भक्ति करें सब भक्त तुम्हारी॥12॥
माघ कृष्ण द्वादश को जन्में, वाद्य बजे तब सारे जग में।
हर्षे धरती स्वर्ग भी हर्षा, नरकों में शांति की वर्षा॥13॥
इंद्राणी प्रभुवर को लाये, वो अपना मिथ्यात्व नशाये।
सुरपति प्रभु लख तृप्त न होवे, सहस्र नयन कर पुलिकत होवे॥14॥
सुरपति नयन हजार बनाये, प्रभु दर्शन कर आनंद पाये।
वो आनंद कहा ना जाये, सबसे भारी पुण्य कमाये॥15॥
महाअभिषेक हुआ प्रभुवर का, शीतल नाम रखा जिनवर का।
कल्पवृक्ष तुम चिह्न कहाया, देता वो भी शीतल छाया॥16॥
स्वर्णिम अति सुन्दर तन पाया, भव्यों को जिनधर्म बताया।
दीक्षा ले प्रभु कर्म नशायें, जग का मिथ्या मोह हटायें॥17॥
धर्मतीर्थ का क्रिया प्रवर्तन, जीता वसु कर्मों का वर्तन।
श्री सम्मेद शिखर प्रभु आये, सायंकाल में मुक्ति पायें॥18॥
कर्म हमें नित दुःखी बनाये, चारों गति में भ्रमण कराये।
हे प्रभु ! शरण तुम्हारी आये, सम्यक् रत्नत्रय हम पायें॥19॥
सर्व दुःखों से नाथ बचाओ, सम्यक् बोधि ज्ञान दिलाओ।
'आस्था' से जिनवर को ध्याये, शीतल मम आतम बन जाये॥20॥

दोहा- तन मन को शीतल करे, शीतल प्रभु का नाम।
वचनों से प्रभु नाम जप, सिद्ध होय सब काम॥
चालीसा प्रभु का पढ़ें, समिति गुप्ति मन धार।
शीतल प्रभु के चरण में, वंदन बारम्बार॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री श्रेयांसनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	विष्णुराज
माता	–	वेणुदेवी
आयू	–	84 लाख वर्ष
ऊँचाई	–	80 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी
जन्म	–	फाल्गुन कृष्ण 11
जन्म स्थान	–	सिंहपुरी (सारनाथ)
दीक्षा	–	फाल्गुन कृष्ण 11
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	नन्द राजा
कैवल्य ज्ञान	–	माघ कृष्ण अमावस्या
गणधर	–	कुन्थु आदि (77)
कुल मुनि	–	84000
गणिनी	–	धारणा आर्या
कुल आर्यिका	–	1 लाख 20 हजार
श्रावक	–	2 लाख
श्राविका	–	4 लाख
मोक्ष	–	श्रावण शुक्ल पूर्णिमा
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	स्वर्ण
चिह्न	–	गैंडा
चैत्यवृक्ष	–	पलाश

शासक देव

यक्ष	–	ईश्वर (2)
यक्षिणी	–	गौरी
क्षेत्रपाल	–	(1) तीर्थरुचि (2) भावरुचि (3) भव्यरुचि (4) शांतिरुचि

श्रेयस्कर श्री श्रेयांसनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

श्रेयनाथ श्रेयस प्रभु, श्री श्रेयांस जिनेश।
करें नाथ आह्वान हम, पूजें भक्त विशेष।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अवतार छंद (चाल–नंदीश्वर पूजा..)

हम करें नाथ अभिषेक, जल के कलशों से।
हे नाथ ! हरो त्रय क्लेश, प्रभु जिन भक्तों के।।
श्रेयांसनाथ की आज, पूजा करते हैं।
करते विधान हम आज, प्रभु दुःख हरते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कर्पूर मिलाय, प्रभु पद में चर्चें।
संसार ताप नश जाय, हम प्रभु को अर्चें।। श्रेयांसनाथ..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु देते अक्षयदान, तुम सच्चे दाता।
अक्षय पद का दो दान, माँगें सुख साता।। श्रेयांसनाथ..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्पों की माल, हे प्रभु ! हम लाये।
प्रभु हरों काम के जाल, हम चरणन् आये।। श्रेयांसनाथ..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर गुजिया मिष्ठान्न, शुद्ध बना व्यंजन।
हम चढ़ा रहे पकवान, प्रभु को नित व्यंजन।। श्रेयांसनाथ..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माना शुभ घृत का दीप, जब तक जलता है।
जो नहीं चढ़ाये दीप, खुद को छलता है।।
श्रेयांसनाथ की आज, पूजा करते हैं।
करते विधान हम आज, प्रभु दुःख हरते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में चढ़ायें धूप, प्रभुवर के सन्मुख।
हम पा जायें जिनरूप, वो है सच्चा सुख।। श्रेयांसनाथ..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मौसंबी दाड़िम जाम, केलादिक् लाये।
अंगूर संतरा आम, फल ले हम ध्यायें।। श्रेयांसनाथ..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! हरो सब कष्ट, अर्घ चढ़ाते हैं।
मम कर्म करो सब नष्ट, तव गुण गाते हैं।। श्रेयांसनाथ..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा– जिनवर श्री श्रेयांस का, करते पूर्ण विधान।
इस विधान से हम प्रभो !, पायें मोक्ष निधान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(चाल–आठ दरब मय...पंचमेरु पूजा)

सर्व सुखों का देते दान, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।
जपें हम नाम, जय श्रेयांसनाथ भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसुखदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहपुरी में जन्में नाथ, उन्हें झुकायें, हम सब माथ।। जपें..।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहपुरी जन्मकल्याणकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विष्णुराज के पुत्र महान्, करने आये जग कल्याण।
जपें हम नाम, जय श्रेयांसनाथ भगवान॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पूज्य श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात सुनंदा के हो लाल, तुमको भजें बाल गोपाल॥ जपें..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुनंदासुत श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जगत् में जय-जयकार, लिया प्रभु ने जब अवतार॥ जपें..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगत् वंदिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान व मोक्ष, प्रभु की पूजा देती मोक्ष॥ जपें..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक पूजिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होते प्रभु के पंच कल्याण, जन-जन का करते कल्याण॥ जपें..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकल्याणकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस तिथि में आये कल्याण, प्रभु के कारण बनें महान्॥ जपें..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याण तिथि मंगल करणाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म नगर भी पूजा जाय, जब प्रभु माँ के उर में आय॥ जपें..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्म नगर पूज्यकराय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात-पिता को धन्य बनाय, वो भी निश्चित मुक्ति पाय॥ जपें..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं जनक जननी पूजिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम दर्श इन्द्राणी पाय, अगले भव वो जिनपद पाय॥ जपें..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं शच्येन सौभाग्यदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाग्यवान सौधर्म कहाय, प्रभु के पंचकल्याण मनाय॥ जपें..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं उच्चपद प्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐरावत प्रभु को बैठाय, इसी पुण्य से कर्म नशाय।
जपें हम नाम, जय श्रेयांसनाथ भगवान॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवृद्धि प्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विशिष्ट सेवा कर पाय, वे सब देव मोक्ष निधि पाय॥ जपें..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं सेवाभक्ति प्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रभु को दे प्रथमाहार, वो प्रभु संग बने अविकार॥ जपें..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथम आहार दातारस्य सिद्धपद प्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण जिस दिश में जाय, भक्त जनों से पूजा जाय॥ जपें..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं समवशरण लक्ष्मी प्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वाणी सुन सब हर्षाय, प्रभु की भारी भक्ति रचाय॥ जपें..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वभक्त पूजिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण विघटायें नाथ, श्री सम्मेद शिखर के माथ॥ जपें..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं योगनिरोध प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकल कूट सिद्धपद पाय, इन्द्र वहीं पर चरण बनाय॥ जपें..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कर्मबंध हराय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नख और केश वहाँ रह जाय, सुर अंतिम संस्कार कराय॥ जपें..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं संस्कार शक्ति प्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का मोक्ष कल्याण मनाय, लड्डू भेंट करें सुख पाय॥ जपें..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपद प्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ श्रेयांस करें कल्याण, सब संकट हरते भगवान॥ जपें..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व संकट हराय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गाये प्रभु का गुणगान, उसका भी होता गुणगान॥ जपें..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुणगान शक्तिप्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्रेयस सुख की है आश, हम करते प्रभु से अरदास॥ जपें..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं निश्रेयस सुख प्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

धर्मतीर्थ के श्री श्रेयांस जिन को भजें।
प्रभुवाणी को सुनकर पापी अघ तजें।।
धर्मतीर्थ का पुनः प्रवर्तन कर दिया।
हमने भक्ति से विधान प्रभु का किया।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके जीवों ने पायी सम्यक् दिशा।
ज्ञान दीप से मिटी मोह मिथ्या निशा।। धर्मतीर्थ.. ।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानदीप प्रकाशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वाणी सुन कई भव्य मुनिगण बने।
सच्चे श्रावक बनकर सम्यक्त्वी बने।। धर्मतीर्थ.. ।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य ध्वनि उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत् पूज्य नारी गण आर्यिका बनी।
सम्यक्त्वी कुछ नारी व्रतिकायें बनी।। धर्मतीर्थ.. ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्त्व चारित्रगुण प्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम अहिंसाणु व्रत का पालन करे।
संकल्पी हिंसा त्यागे अणुव्रत धरे।। धर्मतीर्थ.. ।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसाणु व्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजा व्रत श्री सत्याणुव्रत जानिये।
अल्प झूठ तज सत्य धर्म पहचानिये।। धर्मतीर्थ.. ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्याणुव्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किसी रूप में चोरी करना पाप है।
अचौर्य व्रतधारी त्यागे सब पाप हैं।। धर्मतीर्थ.. ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचौर्याणुव्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य व्रत अणुव्रतों में श्रेष्ठ है।
सर्व कषायें तजता वो नर श्रेष्ठ है।।
धर्मतीर्थ का पुनः प्रवर्तन कर दिया।
हमने भक्ति से विधान प्रभु का किया।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्याणुव्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्च्छा मोह ममत्व परिग्रह भाव है।
परिग्रह का परिमाण पंचव्रत भाव है।। धर्मतीर्थ.. ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं परिग्रह परिमाणाणुव्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशों दिशा में जाने आने का नियम।
व्रती श्राविका पालन करते नित नियम।। द्वादश... ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्व्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नगर ग्राम गली आदिक् की सीमा करे।
देशव्रती श्रावक गुणव्रत पालन करे।। द्वादश... ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं देशव्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिना प्रयोजन पाप कार्य हम ना करें।
त्रस स्थावर जीवों कर करुणा करें।। धर्मतीर्थ.. ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनर्थदण्ड त्यागव्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय संध्या में ध्यान मनन चिंतन करे।
मंत्र जाप से तन-मन को पावन करे।। धर्मतीर्थ.. ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं सामायिक शिक्षाव्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मध्यम जघन रूप प्रोषध करे।
धर्मध्यान युत व्रती पुरुष अनशन करे।। धर्मतीर्थ.. ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रोषधोपवास शिक्षाव्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगोपभोग परिमाण रूप व्रत पालते।
व्रत पालन से रोग-शोक दुःख टालते॥
धर्मतीर्थ का पुनः प्रवर्तन कर दिया।
हमने भक्ति से विधान प्रभु का किया॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं भोगोपभोग परिमाण शिक्षाव्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिथि होते श्रमण आर्यिका चार संघ।
गुरु भक्ति की सदा रहे मन में उमंग॥ धर्मतीर्थ..॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिथि संविभाग शिक्षाव्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो श्रावक ये द्वादश व्रत पालन करें।
आगे क्रम से वे मुनिव्रत धारण करें॥ धर्मतीर्थ..॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादश व्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणव्रत शिक्षाव्रत अणुव्रत प्रभु ने कहे।
व्रतपालन में श्रावक बंधु दृढ़ रहे॥ धर्मतीर्थ..॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वव्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु चरणों में आकर व्रत धारण करें।
श्रद्धा पूर्वक श्रावक व्रत पालन करें॥ धर्मतीर्थ..॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावक व्रत उपदेशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत पालन से वसु कर्मों का ह्रास हो।
मुनि बन कर्म विनाशें मोक्ष निवास हो॥ धर्मतीर्थ..॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम सुख प्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्मेद शिखर से प्रभु मुक्ति वरें।
चरणों में हम अर्घ चढ़ा पूजा करें॥ धर्मतीर्थ..॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षलक्ष्मी प्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ-जहाँ भी क्षेत्र बने प्रभु नाम के।
हम सब अर्घ चढ़ायें प्रभु गुण धाम के।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्षेत्र विराजित श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहपुरी में प्रतिमा भव्य विशाल है।
अर्घ चढ़ायें प्रभु को भर-भर थाल में।। धर्मतीर्थ.. ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहपुरी क्षेत्र विराजित श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीपुर वाले बाबा अतिशयवान हैं।
काले-काले श्री श्रेयांस भगवान हैं।। धर्मतीर्थ.. ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपुर अतिशय क्षेत्र विराजित अतिशयकारी श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शेर छंद)

श्रेयांसनाथ का विधान भक्ति से करें।
जिनभक्ति ही जिनभक्त के सम्पूर्ण दुःख हरे।।
पूर्णार्घ हम चढ़ा रहे हे नाथ ! आपको।
हे नाथ ! भूल-चूक सर्व दोष माफ हो।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, सर्व ज्वरादि, अपमृत्यु, दुःख-संकट दुर्गति निवारणाय जिनगुण संपत्ति प्रदायकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्रेयनाथ के चरण में, करते शांतिधार।
ॐ ह्रीं श्रेयांस जिन, चढ़ा रहे हम हार।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता- श्रेयांस जिनेश्वर, हे परमेश्वर, श्रेयस श्री के तुम दाता।
जयमाला गायें, माल चढ़ायें, नाथ आपको जग ध्याता।।

(नरेन्द्र छंद)

श्री श्रेयांसनाथ जिनवर की, जयमाला हम गायें।
गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष हम, पंच कल्याण मनायें॥
सिंहपुरी में जन्म लिया है, विष्णु राज दुलारे।
जयमाता विष्णुदेवी के, तुम हो नैन सितारे॥1॥

मध्य लोक की कर्मभूमि को, सुरपति शीश झुकाये।
कितनी पावन है ये भूमि, स्वर्गों से सुर आयें॥
मोक्षगामी सब पूज्य पुरुष गण, जन्म यहाँ पर लेते।
मुनि बनकर वे कर्म नशाते, मुक्तिवधु वर लेते॥2॥

सुन्दर है ये वसुधा कितनी, सुरगण को नित भाये।
महापुरुष की पूजा करने, नर तिर्यक् सुर आयें॥
कर्मभूमि में कर्म करे जो, जैसा जितना प्राणी।
उसको वैसा फल मिलता है, कहती माँ जिनवाणी॥3॥

चारों गति में किसी द्वीप या, जीव सिंधु में जाये।
ढाई द्वीप की कर्म भूमि ही, मोक्ष महल पहुँचाये॥
किन्तु मोक्षमहल की चाबी, कर्मभूमि से पायें।
कर्म काटकर सारे प्रभुवर, मोक्ष यहीं से पायें॥4॥

इस भूमि का कण-कण पावन, ऋषिगण ध्यान लगायें।
व्रत उपवास महापूजा कर, श्रावक पुण्य कमायें॥
समिति गुप्ति का पालन करके, मानव श्रमण बनेगा।
जैनधर्म जिन गुरु हैं जब तक, सूरज चाँद रहेगा॥5॥

श्री श्रेयांस प्रभुवर की भक्ति, सुख निश्रेय दिलाये।
जीवन की दुःख बाधाओं से, हमको मुक्त करायें॥

करों नाथ कल्याण हमारा, हम सब शरणा आये।
'आस्थाश्री' श्रद्धा भक्ति से, प्रभुवर के गुण गाये॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, दुःख, अशांति, रक्ताल्पता, अपघात, उपद्रव, कर्म कष्टहराय, निश्रेयस सुख प्रदायकाय समिति गुप्ति व्रतदायकाय, सर्व पाप विनाशकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्री श्रेयांस जिनेश को, 'आस्था' करें प्रणाम।
सच्चा सुख हमको मिले, जपते प्रभु का नाम॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्

आरती

(तर्ज-मैं तो आरती...)

मैं तो आरती उतारूँ रे, श्रेयांस जिनवर की।
जय-जय श्रेयांस प्रभु, जय-जय हो-2।

1. श्रेयांसनाथ जिनदेव, सिंहपुरी जन्में-2
आये थे स्वर्ग से देव, जब प्रभुवर जन्में-2
हाथी पे ले गये, मेरु पे वे गये-2
जन्म मनाये रे, हो प्रभु का जन्म मनाये रे... मैं...

2. श्री विष्णुराज के लाल, विष्णु माँ प्यारे-2
शत इंद्र नमे नत भाल, प्रभुवर के द्वारे-2
दीप जला, नृत्य करें, घूम-घूम भक्ति करें-2,
शीश झुकाये रे, हो प्रभु का... मैं....

3. तेरे चरणों में आये नाथ, आरती करने को-2
हम खाली आये नाथ, झोली भरने को-2
'आस्था' से नमन करें, मुक्ति में गमन करें-2
श्रेय दिलाये रे, हो प्रभु का... मैं....

***

श्री श्रेयांसनाथ चालीसा

दोहा– श्री श्रेयांस भगवान का, नाम जपों दिन–रात।
इतना पुण्य विशेष हो, मिले धर्म सौगात॥
चालीसा इनका पढ़ें, पायें सुख अनिवार्य।
आस्था से भक्ति करें, मिले मोक्ष अनिवार्य॥

चौपाई

जय–जय हो जिननाथ तुम्हारी, श्री श्रेयांस नाथ दुःखहारी।
सुनों प्रार्थना नाथ हमारी, तुम स्वामी दाता उपकारी॥1॥
हम दुःखियारे आये द्वारें, इन कर्मों से हम सब हारे।
पतितों को तुम पावन करते, शरणार्थी की रक्षा करते॥2॥
हमने उत्तम कुल तन पाया, नाथ आपका दर्शन पाया।
भक्ति से चालीसा गायें, नाथ आपको हृदय बसायें॥3॥
जीव जगत् में भ्रमण रचाये, पुण्यवान जिनवर पद पाये।
नगर क्षेमपुर के तुम राजा, नाम नलिनप्रभ नृप महाराजा॥4॥
सर्व प्रजा को धर्म सिखाया, सर्व प्रजा से प्रेम निभाया।
षट् आवश्यक आप निभायें, भक्ति पूजा नित्य रचायें॥5॥
इक दिन श्री अनंत जिन आये, राजा प्रभु दर्शन को जाये।
प्रभु की पूजा संस्तुति गाये, धर्म श्रवण कर मोह नशाये॥6॥
विषय भोग राजा अब छोड़े, दीक्षा ले जग से मुख मोड़े।
संयम ही संसार नशाये, संयम ही तीर्थेश बनाये॥7॥
तप संयम आभूषण जिनका, समता से तन सजता उनका।
क्षमा करें श्रृंगार सदा ही, हम भी भजते उन्हें सदा ही॥8॥
ग्यारह अंग पढ़ें मुनिराजा, ज्ञान ध्यान तल्लीन जिहाजा।
तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये, त्याग तपस्या बढ़ती जाये॥9॥
सर्व कषायें कृष हो जाये, तप उनका अति बढ़ता जाये।
करें समाधि सुरपद पायें, स्वर्ग सोलहवें में मुनि जायें॥10॥

बाईस सागर आयु पाये, अर्चा जिन अभिषेक रचायें।
प्रभु के पंच कल्याण मनायें, नंदीश्वर द्वीपों में जायें॥11॥
आयु छह महिने रह जाये, महामंत्र नित जपते जाये।
देह त्याग धरती पे आये, माँ विष्णुश्री के उर आये॥12॥
नगर सिंहपुरी जन्म कहाये, विष्णुराज प्रभु पिता कहाये।
मात-पिता भी पूजें जायें, हम भी गर्भ कल्याण मनायें॥13॥
कल्याणक कुल पाँच कहाये, विश्व कल्याण भाव प्रभु भायें।
पापाचार अवश मिट जाये, जब जिनवर धरती पे आये॥14॥
मानव में मानवता आये, प्रभु सबको सन्मार्ग दिखायें।
दया अहिंसा धर्म सिखायें, धर्म सूर्य बनकर प्रभु आये॥15॥
स्वर्ण समान कांति प्रभु पायें, चौरासी लख आयु पायें।
ऋतु परिवर्तन मुनि बनाये, कर्मनाश केवली बन जायें॥16॥
धर्मतीर्थ प्रभु पुनः चलायें, भटके जग को राह दिखायें।
प्रभु सम्मेद शिखर में आये, कर्मनाश सिद्धालय जायें॥17॥
श्रावण शुक्ला पूनम आये, प्रभु व गुरु का पर्व मनायें।
रक्षाबंधन पर्व मनाये, लाडू संग जिन गुरु को ध्यायें॥18॥
सर्व सुखों को देने वाले, दुःख समूह को हरने वाले।
श्री श्रेयांसनाथ को ध्यायें, प्रभु नाम सब कष्ट मिटाये॥19॥
सर्व अशांति हरो जिनेशा, नमन करें हम भक्त हमेशा।
समिति गुप्ति धर शांति पाये, 'आस्था' से हम तुमको ध्यायें॥20॥

दोहा- श्री श्रेयांस जिनेश को, पूजें दीप जलाय।
धूप संग हम जाप कर, सर्व विघ्न नश जाय॥
चालीसा श्रेयांस का, पढ़ते चालीस बार।
आप चरण मम उर बसे, विनती बारम्बार॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री वासुपूज्य भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	वासुपूज्य
माता	–	जयादेवी
आयू	–	72 लाख वर्ष
ऊँचाई	–	77 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	आषाढ़ कृष्णा षष्ठी
जन्म	–	फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी
जन्म स्थान	–	चम्पापुरी
दीक्षा	–	फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी
सहदीक्षित मुनि	–	676
प्रथम दाता	–	सुन्दर राजा
कैवल्य ज्ञान	–	माघ शुक्ल द्वितीया
गणधर	–	धर्मार्य आदि 66
कुल मुनि	–	72000 मुनि
गणिनी	–	सेनार्या
कुल आर्यिका	–	1 लाख 6 हजार
श्रावक	–	2 लाख
श्राविका	–	4 लाख
मोक्ष	–	भादो शुक्ल चतुर्दशी
मोक्ष स्थान	–	चम्पापुरी

लक्षण

रंग	–	लाल
चिह्न	–	भैसा
चैत्यवृक्ष	–	तेंदू

शासक देव

यक्ष	–	कुमार
यक्षिणी	–	गांधारी
क्षेत्रपाल	–	(1) लब्धिरुचि (2) तत्त्व रुचि (3) सम्यक् रुचि (4) वाद्यरुचि।

सर्वमंगलकर्त्ता श्री वासुपूज्य विधान

(श्री रोहिणी व्रत उद्यापन विधान)

स्थापना (गीता छंद)

श्री वासुपूज्य जिनेश पहले, बालयति तीर्थेश हैं।
करते महामंगल प्रभो, हरते अमंगल क्लेश हैं।।
उनका हृदय की वेदी पर, आह्वान हम करते सदा।
पुष्पांजलि ले हाथ में, अर्चा करें शिव सौख्यदा।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलकर्त्ता श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

हम स्वर्ण कुम्भ में पवित्र नीर ला रहे।
प्रभु का करें अभिषेक रोग त्रय नशा रहे।।
श्री वासुपूज्य नाथ की हम अर्चना करें।
पूजा प्रभु की कर्म विघ्न व्याधियाँ हरें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर गंध चन्दनादि शुद्ध ले।
प्रभु के चरण लगाय पाप ताप सब गले।। श्री वासुपूज्य..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती अखंड अक्षतों के पुञ्ज हाथ ले।
प्रभु को चढ़ायें भक्ति भावना के साथ में।। श्री वासुपूज्य..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम लाल कमल वा गुलाब आदि पुष्प लें।
प्रभु को चढ़ायें भक्ति से बस काम जय मिले।। श्री वासुपूज्य..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नमकीन व मिठाई शुद्ध श्रेष्ठ बनाई।
जिनदेव को चढ़ाके भूख प्यास नशाई॥
श्री वासुपूज्य नाथ की हम अर्चना करें।
पूजा प्रभु की कर्म विघ्न व्याधियाँ हरें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत रत्न के अनेक आकृति के दीप लें।
प्रभु को चढ़ायें मोह महादैत्य जीत लें॥ श्री वासुपूज्य..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित व श्रेष्ठ धूप अग्नि कुण्ड में चढ़ा।
हम भक्ति अर्चना से फोड़ें कर्म का घड़ा॥ श्री वासुपूज्य..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम छह ऋतु के फल व फल की माल चढ़ायें।
पूजा रचा प्रभु की आत्म सिद्धियाँ पायें॥ श्री वासुपूज्य..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट द्रव्य को मिला के अर्घ्य बनायें।
पाने अनर्घ आत्म सौख्य आज चढ़ायें॥ श्री वासुपूज्य..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा– पंच बालयति में प्रथम, वासुपूज्य भगवान।
उन्हें चढ़ा पुष्पांजलि, करते भव्य विधान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(मोतियादाम छंद)

नाथ के पंचकल्याण महान्, हुए चम्पापुर तीर्थ प्रधान।
भजें हम वासुपूज्य भगवान, उन्हीं का करते आज विधान॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं चम्पापुर तीर्थ पंचकल्याणक प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव ! तुम पंच चरण दुःखहार, बने सम्मेद शिखर सुखकार।
भजें हम वासुपूज्य भगवान, उन्हीं का करते आज विधान॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्मेदशिखर तीर्थ क्षेत्रे पंचचरण शोभिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बालयतियों में प्रथम जिनेश, जयो-जय वासुपूज्य तीर्थेश॥ भजें. ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथम बालयतीश्वर श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनार्चा के इक्कीस प्रकार, बतायें प्रभु ने विविध प्रकार॥ भजें. ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं एकविंशति प्रकार जिनार्चा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ का प्रथम जिनाभिषेक, करें हम पूजा में प्रत्येक॥ भजें. ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनाभिषेक विधि उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे जो प्रभु पर चन्दन लेप, मिटें उसके सारे आक्षेप॥ भजें. ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं चन्दन लेप पूजा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुशोभित करे जिनालय भव्य, बने वो जग का भूषण भव्य॥ भजें. ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनालय सुशोभिकरण उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ायें प्रभु को पुष्प अपार, बने वो तीर्थंकर अवतार॥ भजें. ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पेण पूजा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ायें द्रव्य सुगंधित श्रेष्ठ, बने वो अरिहंतों में श्रेष्ठ॥ भजें. ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुंगधित द्रव्येण जिनपूजा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप से पूजा करें अनूप, बनें हम इक दिन सिद्ध स्वरूप।
भजें हम वासुपूज्य भगवान, उन्हीं का करते आज विधान॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं धूप पूजा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेंटते जो प्रभु को नित दीप, बने वो तीर्थंकर कुलदीप॥ भजें.॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं दीप पूजा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें जो फल से विविध विधान, बने वो सफल सिद्ध भगवान॥ भजें.॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं फल पूजा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाये जो-जो अक्षत पुँज, पायें वो इक दिन मोक्ष निकुंज॥ भजें.॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षत पूजा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्र ताम्बुल से भजे जिनेश, बने वो भी आगे तीर्थेश॥ भजें.॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं पत्र ताम्बुल पूजा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाये जो उत्तम नैवेद्य, बने वो रोग विनाशक वैद्य॥ भजें.॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं नैवेद्य पूजा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे जो श्री जिनवर पर धार, अवश हो उसका भी उद्धार॥ भजें.॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं जल पूजा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे जो श्रुत पर वस्त्र प्रदान, वरे अक्षय सुख केवलज्ञान॥ भजें.॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुत वस्त्र पूजा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढुराये चंवर या करता दान, बने चक्री तीर्थेश महान्॥ भजें.॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं चंवर दान उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें जो उत्तम छत्र प्रदान, बने वो छत्राधिप भगवान॥ भजें.॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रदान उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बजाये जो भक्ति से वाद्य, बने वो खुद इक दिन आराध्य॥ भजें.॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनोत्सवे वाद्य उदघोष उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति वश गाये गवाये गीत, बने तीर्थेश पायें संगीत।
भजें हम वासुपूज्य भगवान, उन्हीं का करते आज विधान ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनाचर्या गीत गायन उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नृत्य नाटक से जिनगुण गान, करे जो वो बनता भगवान ॥ भजें. ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं धार्मिक नृत्य नाटक उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाये स्वस्तिक नंद्यावर्त, मिटाये वो जगदुःख आवर्त्त ॥ भजें. ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्तिक रचना दान उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरें जो मंदिर के भंडार, भरें उस घर के भी भंडार ॥ भजें. ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनालये भंडार दान उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रचे जो प्रभु चरित्र के चित्र, वरे वो यथाख्यात चारित्र ॥ भजें. ॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनालये चित्रदान उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे मंदिर में घंटा दान, वरें वो दिव्यध्वनि महान् ॥ भजें. ॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं घंटा दान उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदेवा जो करता है दान, बने वो चक्री भूप महान् ॥ भजें. ॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं चंदेवा दान उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो करता ध्वजा स्वर्ण ध्वज दान, वो पाये यश पद नाम महान् ॥ भजें. ॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं ध्वजादान उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाये जो मुनियों के कक्ष, बने आगे चक्री प्रत्यक्ष ॥ भजें. ॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रमण कक्ष निर्माण उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बना रंगोली मंडल श्रेष्ठ, बने वो सुखी गणाधिप ज्येष्ठ।
भजें हम वासुपूज्य भगवान, उन्हीं का करते आज विधान॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं रंगोली मंडल विधान सृजन उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थ मंदिर में कर भूदान, बने चक्री तीर्थेश प्रधान॥ भजें. ॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनतीर्थे भूदान उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे जो जल से जिन अभिषेक, पाये वो जग के सुख प्रत्येक॥ भजें. ॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं जल अभिषेक उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे जो इक्षुरस की धार, वरे वो सब जग सुख अविकार॥ भजें. ॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं इक्षुरस अभिषेक उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारियल के जल का अभिषेक, हरे जीवन के दुःख प्रत्येक॥ भजें. ॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं नारियल जल अभिषेक उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आम्र फल रस की स्वर्णिम धार, दिलाये सुख आनंद अपार॥ भजें. ॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं आम्रफल रस अभिषेक उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे जो जिनवर पर घृत धार, पाये वो सर्व सुखों का सार॥ भजें. ॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं घृत अभिषेक उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर से जो करता अभिषेक, वरे वो क्षीरोदधि अभिषेक॥ भजें. ॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुग्ध अभिषेक उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दही से कर जिनवर पर धार, पायें हम दही सम धवल विचार॥ भजें. ॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं दही अभिषेक उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें हम सर्वौषधि अभिषेक, भक्ति से रोग नशें प्रत्येक॥ भजें. ॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वौषधि अभिषेक उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार कलशों से प्रभु पर धार, मिटाये चहुँगति दुःख अपार।
भजें हम वासुपूज्य भगवान, उन्हीं का करते आज विधान ॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुष्कोण कलश अभिषेक उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध केशर चन्दन की धार, हरे जीवन संताप अपार॥ भजें. ॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं विविध चन्दन अभिषेक उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ को फूल फूल की माल, चढ़ायें जो हो मालामाल॥ भजें. ॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पवृष्टि उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे जो आरती विविध प्रकार, दूर हो उसके आर्त्त अपार॥ भजें. ॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंगल आरती उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर पर कर शांतीधार, मिले जीवन में शांति अपार॥ भजें. ॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाशांतिधारा उपदेशक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमंगलहर्त्ता मंगलकार, जिनेश्वर वासुपूज्य सुखकार॥ भजें. ॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलकारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरें सारे जिन वास्तु दोष, जिनेश्वर वासुपूज्य निर्दोष॥ भजें. ॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं वास्तुदोष निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोहिणी रानी भूप अशोक, रोहिणी व्रत से बने अशोक॥ भजें. ॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं रोहिणीव्रत नायक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदय नक्षत्र रोहिणी जान, करे भवि व्रत उपवास विधान॥ भजें. ॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं रोहिणी व्रताधिपति श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

कचनेर तीर्थ के निकट क्षेत्र, श्री धर्मतीर्थ मनभावन है।
जिसमें शोभें श्री वासुपूज्य, तीर्थंकर अतिशय पावन हैं॥
दुःखहर सुखकर अतिशयकारी, श्री वासुपूज्य को हम ध्यायें।
उनके विधान में ध्वजा सहित, पूर्णार्घ्य थाल भर ले आये॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथम बालयति, सर्व ग्राम, नगर, तीर्थक्षेत्र, श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित, सर्व कोरोना रोग, अशांति, पीड़ा, दुःख संकट, पीड़ा अमंगल हराय, मंगलमूर्ति, द्वादशोत्तम तीर्थंकर सर्व मंगलकारी श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– निज पर जग की शांति हित, करें त्रि शांतिधार।
करते जिनपद पद्म में, पुष्पांजलि मनहार।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 जाप करें।)

जयमाला

दोहा– वासुपूज्य जिनवर करें, सबके मन में वास।
उनकी हम जयमाल पढ़, पायें मोक्ष निवास।।

(शेर छंद)

तीर्थेश वासुपूज्य की जयमाल गायें हम।
पूजा में अष्ट द्रव्य फूलमाल लायें हम।।
वसुधा प्रदाता वासुपूज्य नाथ श्रेष्ठ हैं।
वे बालयति जिनवरों में आदि ज्येष्ठ हैं।।1।।

चम्पापुरी के भूप वसुपूज्य तुम पिता।
श्री आदि सौख्यदायिनी जयावती माता।।
आषाढ़ कृष्ण षष्ठी को गर्भागमन हुआ।
फाल्गुन वदी चतुर्दशी को अवतरण हुआ।।2।।

प्रभु जन्म दिवस को तुम्हें वैराग्य हो गया।
इक वर्ष में ही पूर्ण एक ज्ञान हो गया।।
प्रभु माघ शुक्ल दूज को सर्वज्ञ हो गये।
भादो सुदी चतुर्दशी को सिद्ध हो गये।।3।।

प्रभु पंच कल्याणक सभी चम्पापुरी हुए।
जिसमें समूचे भरत में कई भव्य जिन हुए॥
सत्तार अधिक हजार साधु आप सभा में।
इक लाख छह हजार आर्यिकायें सभा में॥4॥

दो लाख श्रावकों से आप शोभते प्रभो।
चउ लाख श्राविकाओं से तुम पूज्य थे विभो॥
दिन-रात पूजते असंख्य देव-देवियाँ।
संख्यात जीव जंतुओं ने जिन शरण लिया॥5॥

सत्तार धनुष ऊँचाई स्वर्ण वर्णकाय थी।
आयु बहत्तार लाख दिव्य भव्य काय थी॥
जिसमें असंख्य भव्य प्राणियों को उबारा।
हे नाथ ! हमें भी मिले बस आप सहारा॥6॥

श्रीवर कुमार यक्ष धर्म तीर्थ बढ़ाये।
गांधारी यक्षी भक्ति से जिन कीर्ति बढ़ाये॥
श्री लब्धि रुचि तत्त्व रुचि वाद्य रुचि जी।
चउ क्षेत्रपाल अंत में सम्यक्त्व रुचि जी॥7॥

जब रोहिणी नक्षत्र एक मास में आये।
तब रोहिणी व्रत को विधी से भक्त रचाये॥
राजा अशोक रोहिणी रानी ने व्रत किया।
उससे अतुल्य रूप चिदानंद पा लिया॥8॥

श्री धर्मतीर्थ क्षेत्र में मन्दिर बना विशाल।
जिसमें जिनेन्द्र वासुपूज्य नाथ बेमिसाल॥
जो भक्त आपका यहाँ विधान रचाये।
वो सर्वक्षेत्र में अजेय सिद्धियाँ पायें॥9॥

जो नाम जपे आपका व अर्चना करें।
वो कर्मशत्रु जीत मुक्ति अंगना वरे।।
हे नाथ ! मेरे सर्व कर्म शीघ्र नशाओ।
सूरीश 'गुप्तिनंदी' को भी सिद्ध बनाओ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, शोक, दुःख संकट हराय, प्रथम बालयति, द्वादश तीर्थंकर, अष्टादश दोष रहिताय, पंचमहाकल्याण पूजिताय, सर्वकार्य सिद्धीकरण समर्थाय, सर्वग्रह दोष निवारकाय सुख-शांति, मुक्ति प्रदायकाय श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित सर्व मंगलकारी श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नगर ग्राम व तीर्थ में, जहाँ विराजे नाथ।
उन्हें नमन नव कोटि से, बनने त्रिभुवन नाथ।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती 3

(तर्ज- मेरे सर पे रख दो...)

श्री वासुपूज्य तीर्थंकर, हम लाये दीपक थाल।
आरती करने आ रहे, बजा रहे करताल।।

1. चंपापुर नगरी में जन्में, वसुपूज्य नृप के नंदन।
जयावती माँ के सुत प्यारे, प्रथम बालयति को वंदन।।
हम ढोल मृदंग बजायें-2, लेकर दीपों की माल।। आरती...

2. जहाँ-जहाँ भी नाथ विराजे, उनकी आरती हम गायें।
सर्वक्षेत्र के वासुपूज्य की, आरती करने हम आये।।
शत सहस्र लक्ष दीपों से-2, नित सजा रहे प्रभु द्वार।। आरती...

3. घूमर गरबा नृत्य रचाकर, कीर्त्तन प्रभु का गायेंगे।
हाथों में दीपों को लेकर, प्रभु की फेरी लगायेंगे।।
'आस्था' से पुकारें तुमको-2, चरणों में झुकायें भाल।। आरती...

***

श्री वासुपूज्य चालीसा

दोहा– श्री जिनशासन जिन प्रभु, परमेष्ठी नवदेव।
जिनवाणी गणधर विभु, इनको नमन सदैव।।
वासुपूज्य भगवान को, वंदन बारम्बार।
चालीसा प्रभु आप का, देगा शांति अपार।।

चौपाई

जय–जय प्रथम बालयति स्वामी, वासुपूज्य तुम हो जगनामी।
चंपापुर नगरी में जन्में, बाज रहे थे बाजे नभ में।।1।।
पञ्च कल्याण हुये चंपापुर, चरण चिह्न मिलते चंपापुर।
नर–नारी आते चंपापुर, प्रभु से धन्य हुआ चंपापुर।।2।।
प्रभु के पंच कल्याण मनायें, सर्व पाप जिनदेव नशायें।
जब जिनवर माँ के उर आये, धरती स्वर्णमयी बन जाये।।3।।
हर कल्याणक देव मनाये, स्वर्ग छोड़ धरती पे आये।
कल्याणक तिथि पूज्य कहाये, मंगल काल वही बन जाये।।4।।
जन्म कल्याणक कितना प्यारा, तीन लोक हर्षाता सारा।
गूँजे प्रभु का जय–जयकारा, झूम उठे उस दिन जग सारा।।5।।
जब वैराग्य प्रभु को आये, देव पालकी लेकर आये।
ब्रह्मर्षि अनुमोदन करते, अर्घ चढ़ाते पूजा करते।।6।।
सुर प्रभु का अभिषेक रचाये, राज्य छोड़ प्रभु वन में जायें।
प्रथम पालकी मनुज उठाये, देव पालकी वन में लाये।।7।।
वसुपूज्य सुत आप कहाये, जयावती जगमात कहाये।
मात–पिता आगे शिव पाये, दाता प्रथम मोक्ष में जाये।।8।।
समवशरण के तुम हो स्वामी, घट–घट के हो अन्तर्यामी।
सर्व जीव प्रभु शरणा आये, वाणी सुन सम्यक् निधि पाये।।9।।
छ्यासठ गणधर संस्तुति गायें, केवलज्ञानी प्रभु को ध्यायें।
पूर्वधारी प्रभु के गुण गायें, अवधिज्ञानी ध्यान लगायें।।10।।

ऋद्धियुत मनःपर्ययज्ञानी, वादी प्रतिवादी मुनि ध्यानी।
सहस्र बहत्तर मुनि बताये, सब मुनि प्रभु को शीश झुकायें॥11॥
आर्यायें प्रभु शरणा आईं, लक्षाधिक संख्या बतलाई।
श्रावक भवि दो लाख बताये, श्राविकायें चऊ लाख कहाये॥12॥
देवी देव असंख्य बताये, पूजा संस्तुति कीर्त्तन गाये।
असंख्यात पशु शरणा आये, वैर भाव अपना विनशायें॥13॥
आर्य क्षेत्र में जिनवर आये, दिव्य ध्वनि जिन धर्म बताये।
पुनः प्रभु चंपापुर आये, योग निरोधें ध्यान लगायें॥14॥
सायंकाल प्रभु कर्म नशाये, मोक्ष कल्याणक इन्द्र मनाये।
हम भी पंचकल्याण मनायें, कर्मों से छुटकारा पायें॥15॥
पूर्व जन्म की अद्भुत गाथा, सदा झुकायें प्रभु को माथा।
नगर रत्नपुर के थे राजा, पद्मोत्तर शुभ नामक राजा॥16॥
प्रभो युगन्धर वहाँ पधारे, राजा आये उनके द्वारे।
उनसे मुनिदीक्षा व्रत पाये, द्वादशांग प्रज्ञा वो पाये॥17॥
सोलह दिव्य भावना भायें, तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये।
करें समाधि स्वर्ग सिधायें, महाशुक्र सुरपति पद पाये।
नंदीश्वर द्वीपों में जाये, दिव्य भव्य जिन भक्ति रचाये।
पंच कल्याणक बहुत मनाये, जिनपूजा में समय बिताये॥19॥
अन्तिम जन्म जिनेश्वर पाये, कर्मनाश प्रभु मुक्ति पाये।
भक्ति से चालीसा गाये, सर्व रोग दुःख कष्ट मिटाये॥20॥
आधि-व्याधि विपदा मिट जाये, प्रभु चरणों में दीप चढ़ाये।
'आस्था' से प्रभु को हम ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें॥21॥

दोहा- वासुपूज्य भगवान का, चालीसा सुखकार।
जिनगुण संपत् लाभ हित, गुप्ति समिति व्रतधार॥
दीप धूप के साथ में, पाठ करें मन लाय।
प्रभु जाप सुख शांति दे, निश्चित मुक्ति दिलाय॥

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री विमलनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	कृतवर्मन
माता	–	श्यामा देवी (सुरम्य)
आयू	–	60 लाख वर्ष
ऊँचाई	–	60 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	ज्येष्ठ कृष्ण दशमी
जन्म	–	माघ शुक्ल चतुर्थी
जन्म स्थान	–	काम्पिल (कपिलपुर)
दीक्षा	–	माघ शुक्ल चतुर्थी
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	कनकप्रभ राजा
कैवल्य ज्ञान	–	माघ शुक्ल षष्ठी
गणधर	–	मन्दर आदि 55
कुल मुनि	–	68 हजार
गणिनी	–	पद्मा आर्या
कुल आर्यिका	–	1 लाख 30 हजार
श्रावक	–	2 लाख
श्राविका	–	4 लाख
मोक्ष	–	आषाढ़ कृष्ण अष्टमी
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	स्वर्ण
चिह्न	–	सुअर
चैत्यवृक्ष	–	पाटल

शासक देव

यक्ष	–	षण्मुख
यक्षिणी	–	वैरोटी
क्षेत्रपाल	–	(1) विमल भक्ति (2) आराध्य रुचि (3) वैद्य रुचि (4) वाद्य रुचि।

सम्यक्त्व चूड़ामणि श्री विमलनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

आह्वानम् स्थापना, करें भक्ति के साथ।
विमलनाथ को हम भजें, पुष्पाञ्जलि ले हाथ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

कंचन घट में नीर ले, प्रभु पे करते धार।
मन को विमल करें प्रभु, करें हमें भव पार॥1॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमकुम केशर गंध से, करें भक्त अभिषेक।
प्रभु पद में चंदन लगा, करें नित्य अभिषेक॥2॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत शालि तंदुल भरें, द्वय मुष्ठि में आज।
विमलनाथ प्रभु दो हमें, अक्षय सुख साम्राज्य॥3॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग–बिरंगे फूल की, बना रहे हम माल।
कामबाण को नाशने, अर्पित प्रभु को माल॥4॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली वा पुड़ी, लड्डू पेड़ा सेव।
क्षुधा विजय हित हम सदा, पूजें नित जिनदेव॥5॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चम–चम करते दीप से, करें आरती नित्य।
ज्ञान ज्योति प्रभु से मिले, हम भी पूज्यें नित्य॥6॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पूजा से कर्म हर, पायें सौख्य अपार।
धूप अग्नि में जब जले, आती महक अपार॥7॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल में उत्तम मोक्ष फल, पाने का है भाव।
फल से प्रभु को अर्चते, करने कर्म अभाव॥8॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमको विमल करो प्रभु, विमलनाथ भगवान।
मन-वच-तन मम विमल हो, करो प्रभु कल्याण॥9॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- विमलनाथ भगवान का, करते पूर्ण विधान।
विमलनाथ का नाम ही, हरता कर्म विधान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(अर्द्ध कुसुमलता छंद)

पंचकल्याणक धारी भगवन्, करते तुमको देव प्रणाम।
अर्घ चढ़ाकर शीश झुकायें, पाने हम सब मुक्ति धाम॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक पूजित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल से रहित विमल सम बनने, करते प्रभु का हम गुणगान।
अष्ट कर्म से रहित जिनेश्वर, पाया तुमने मोक्ष महान्॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टकर्म हारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत के धारी जिनवर, दे दो हमें विमल सद्ज्ञान।
गुण अंनत पाने हम करते, विमलेश्वर का पूर्ण विधान॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंत गुणधारी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ की जय-जय बोलें, हरलो प्रभुवर मिथ्याज्ञान।
प्रभु के चरणों में आकर हम, पायेंगे इक सम्यक्ज्ञान॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व मिथ्याज्ञान हारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भी पूजा करते प्रभु की, जिनवर पर करते श्रद्धान।
सर्व सुरासुर इनको पूजें, मुनिवर करते प्रभु का ध्यान॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व सुरासुर पूजित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म नाशने प्रभु आपने, जहाँ लगाया चौथा ध्यान।
जहाँ विराजें विमल जिनेश्वर, वो है प्रभु का अविचल थान ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं अविचल स्थान विराजित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति के हैं रूप अनेकों, होगा भक्ति से कल्याण।
प्रभु भक्ति से हम भी पायें, सम्यक् दर्शन सम्यक् ज्ञान॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित त्रय, मोक्ष महल की हे पहचान।
सम्यक् रत्नत्रय हम पायें, ये तीनों मुक्ति सोपान॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रय प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरपल प्रभु को जपते रहना, कहते हैं हमको भगवान्।
कर्म हमें जब खूब सताते, तब हम लेते प्रभु का नाम ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्म कष्टहारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम की घुट्टी पीलो, होगा निश्चित ही कल्याण।
विमलनाथ प्रभु हमसे कहते, भक्ति से होगा उत्थान॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं भक्ति उत्थान कारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

बड़े पुण्य से हे प्रभो ! मिले आपका द्वार।
हम विधान ये कर रहे, पाने शिवसुख द्वार॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवृद्धि कारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य बढ़े सत्कर्म से, पाप सिमटता जाय।
प्रभु भक्ति के योग से, अर्हत् पद मिल जाय॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद्पद प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य बिना कुछ ना मिले, प्रभु व गुरु का साथ।
देव-शास्त्र-गुरु नित मिले, सुनों अरज हे नाथ!॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं देव-शास्त्र-गुरु शरण प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भक्ति की कुंजी से, खुलता मुक्ति कपाट।
हर दिन हम पूजा करें, और करें नित पाठ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं भक्तिकुंजी प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दर्शन अभिषेक व, जिन पूजा णवकार।
पूजन ध्यान विधान से, कम होता संसार॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभु भक्ति गुरु दर्श प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक नित पले, यही करें हम भाव।
कर्त्तव्यों को पालकर, मिले मोक्ष का गाँव॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं षट् कर्त्तव्य बुद्धि प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन-वच-काया हो विमल, विमल रूप परिणाम।
विमलनाथ को हम भजें, करो नाथ कल्याण॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रययोग शुद्धिकारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का दिव्य विधान जो, हर दिन करता जाय।
सब दुःख संकट जिन हरें, वो सुख-शांति पाय॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुख-शांति प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपमृत्यु पीड़ा हरे, राज रोग मिट जाय।
प्रभु मंत्र के जाप से, काय स्वस्थ हो जाय॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं अपमृत्यु आदि सर्वराजरोग परिहारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता क्लेश कुबुद्धि ही, करने ना दे धर्म।
काय निरोगी नित रहे, कभी ना छूटे धर्म॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं चिंतादि सर्वक्लेश हारक धर्मबुद्धि प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता रोग तनाव से, आयु घटती जाय।
जीवन चिंता मुक्त हो, दो शक्ति जिनराय॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं चिन्तादि सर्वरोग हारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप दुःखों की खान है, पुण्य स्वर्ग सोपान।
सर्व पाप को नाशने, प्रभु का करें विधान॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वपाप हारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयसंध्या में हम करें, प्रभु का जाप विधान।
संस्तव पूजा पाठ से, मेटें कर्म विधान॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिसंध्या भक्ति प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ ! हम आपकी, शरणा आये आज।
भव से पार करो हमें, पायें शिव सुख ताज॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं शरण प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम मंत्र प्रभु आपका, मन को विमल बनाय।
श्रद्धा से जो भी जपे, कार्य सिद्ध हो जाय॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्र उपदेशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सव्वे शुद्धा शुद्धणया, जिनवाणी बतलाय।
चिन्ह आपका है शूकर, वह भी सुरपद पाय॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध बुद्धि प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ अंग प्रभु ने कहें, दृढ़ सम्यक्त्व बनाय।
प्रशमादि गुण धारकर, जीव सिद्ध बन जाये॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमादि गुण उपदेशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम निशंकित अंग है, शंका बिन श्रद्धान।
देव-शास्त्र-गुरुदेव पर, हो सच्चा श्रद्धान॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथम निशंकित अंग उपदेशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति हो निष्काम जब, देती मोक्ष महान्।
अंग निकांक्षित कह रहा, तजो स्वार्थ अभिमान॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वितीय निकांक्षित अंग उपदेशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्लानि भाव को जीतना, सम्यक् की पहचान।
निर्विचिकित्सा अंग का, हम करते गुणगान॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं तृतीय निर्विचिकित्सा अंग उपदेशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूढ़ मति हम ना बने, तजे मूढ़ता सर्व।
बन अमूढ़ दृष्टि सभी, पूजें सम्यक् पर्व॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्थ अमूढ़दृष्टि अंग उपदेशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणवानों के गुण भजें, निज के दोष नशाय।
उपगूहन इक अंग ये, उच्चगोत्र ले जाय॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचम उपगूहन अंग उपदेशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

डिगे धर्म से जो भविक, छोड़े या जिन धर्म।
उनका कर स्थितिकरण, नष्ट करें हम कर्म॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं षष्टम स्थितिकरण अंग उपदेशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य अंग धरें सदा, राग-द्वेष विनशाय।
प्राणीमात्र से प्रेम हो, वात्सल्य अंग सिखाय॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तम वात्सल्य अंग उपदेशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु धर्म का, करते नव्य प्रचार।
करें सदैव प्रभावना, हो सबकी जयकार॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टम प्रभावना अंग उपदेशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग आठ सम्यक्त्व के, सम्यग्दृष्टि बनाय।
एक-एक यह अंग भी, जग में पूज्य बनाय॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पूज्य अष्टांग सम्यक्दर्शन उपदेशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्दर्शन का प्रथम, आज्ञा समकित नाम।
देव-शास्त्र-गुरु रत्न की, आज्ञा मुक्ति धाम॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं आज्ञा सम्यक्त्व उपदेशकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि मार्ग को देखकर, श्रद्धा धारे जीव।
वो ही मार्ग सम्यक्त्व है, कहते आगम दीव॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्ग सम्यक्त्व उपदेशकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर के उपदेश पर, श्रद्धा धारे भव्य।
सम्यक् रुचि उपदेश पा, तिर जाते वो भव्य॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं उपदेश सम्यक्त्व उपदेशकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचारांगादि सूत्र सुन, होता सम्यकदर्श।
सूत्र रुचि सम्यक्त्व से, नाशे मिथ्यादर्श॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूत्र सम्यक्त्व उपदेशकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीज पदों के ग्रहण से, नाशें मोह महान।
बीज रूप सम्यक्त्व से, करें भव्य कल्याण॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं बीज सम्यक्त्व उपदेशकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य जीव नव तत्व का, कथन करें संक्षेप।
तत्त्वों का श्रद्धान ही, रुचि सम्यक् संक्षेप॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं संक्षेप सम्यक्त्व उपदेशकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कथन करें विस्तार से, नय प्रमाण के साथ।
अंगपूर्व के विषय को, कहते त्रिभुवन नाथ॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं विस्तार सम्यक्त्व उपदेशकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्थ ग्रहण से प्राप्त हो, उत्तम सम्यकदर्श।
पूजें हम इस अर्थ को, पाने सम्यक्दर्श॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्थ सम्यक्त्व उपदेशकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलि वा श्रुत केवली, इनका रुचि अवगाढ़।
ये सम्यक् हमको मिले, भक्ति करें अगाढ़॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं अवगाढ़ सम्यक्त्व उपदेशकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् परमावगाढ़ भी, अर्हंत् सिद्ध के होय।
परम प्रीति प्रभु से करें, जिनभक्ति में खोय॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमावगाढ़ सम्यक्त्व उपदेशकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश विध सम्यकदर्श को, अर्घ चढ़ायें आज।
एक-एक सम्यक्त्व भी, देता मोक्ष स्वराज॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं दशविध सम्यक्त्व उपदेशकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपशम क्षय व क्षयोपशम, सम्यक् त्रय विध जान।
सम्यक्दर्शन ही हमें, बनवाता भगवान॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयविध सम्यक्दर्शन उपदेशकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

विमलनाथ को विमल भाव से वंदना।
अर्घ ध्वजादि लेकर करते अर्चना॥
हम पूर्णार्घ चढ़ायें प्रभुवर आपको।
धर्मतीर्थ पर विमलनाथ भगवान को॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व आधि-व्याधि अपमृत्यु कोरोना रोग संकट पीड़ा निवारणाय स्वस्थ सुखी समृद्ध जीवन प्रदायकाय श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- विमलनाथ सब मल हरे, करते हम जल धार।
पुलकित मन से हम करें, प्रभु पद अर्पित हार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- कंपिलपुर में जन्म ले, किया जगत् कल्याण।
जयमाला में हम भजें, विमलनाथ भगवान॥

(अडिल्ल छंद)

नमन करें हम विमलनाथ भगवान को।
नमन करें हम श्री जिनवर गुणखान को।।
पंच कल्याणक तीर्थंकर प्रभु के कहें।
मोक्षगामी जिनराज अनेकों हो रहे।।1।।

गर्भ पूर्व माता शुभ सपने देखती।
अष्ट कुमारी माता को नित सेवती।।
गर्भ कल्याणक प्रथम प्रभु का जानिये।
होती मात-पिता की पूजा मानिये।।2।।

जन्म कल्याणक की देखो महिमा महा।
कुछ पल नरकों में शांति मिलती अहा।
जन्म समय में होता मेरु पे न्हवन।।
इन्द्र-इन्द्राणी सब करते प्रभु का न्हवन।।3।।

वैरागी बन दीक्षा धारी आपने।
श्रावक से आहार लिया तब आपने।।
होते हैं आश्चर्य सभी कल्याण में।
होते पंचाश्चर्य आहार के दान में।।4।।

घाति कर्म विनशायें केवली बन गये।
पाँच हजार धनुष प्रभुवर ऊपर गये।।
नर-नारी सुर समवशरण में आ रहे।
पशु-पक्षी भी ज्ञानकल्याण मना रहे।।5।।

कर्म अघाति नाश मोक्ष प्रभुवर वरें।
लड्डू चढ़ाकर हम प्रभु की पूजा करें।।

प्रभु की पूजा पूज्य बनायेगी हमें।
सर्व कर्म से मुक्ति दिलायेगी हमें ।।6 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुःख, संकट, पीड़ा, किडनी, पथरी, लिविर व्याधि, कोरोना रोग, अपमृत्यु, अपघात, तनाव, चिंता, अशांति, हराय, पंच पापादि, कर्म कष्टहराय, मन–वच–काय पवित्र करणाय पंच महोत्सव मंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– विमलनाथ भगवान को, 'आस्था' करें प्रणाम।
गुप्ति समिति व्रत धारकर, पायें मोक्ष मुकाम।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज – अंबे जगदंबे माता...)

लाये हम थाल सजाकर, दीपों की माल जलाकर।
प्रभुवर की करते सब हम आरती–2.... हो जिनवर, प्रभुवर...

1. नगर कम्पिला में जिन जन्में, विमलनाथ जिनदेवा।–2
कृतवर्मा जयश्यामा नंदन, भक्ति करें नर देवा।–2
पंचकल्याण मनायें, सारे सुर भू पे आये–2 प्रभुवर...

2. विमलनाथ मन विमल बना दो, हम चरणों में आये।–2
कर्म मलों की होली जलाने, मन–वच–तन से ध्यायें।–2
मन में इक आश जगी है, भक्ति की ज्योत जली है–2 प्रभुवर...

3. विमलनाथ वसु कर्म नाशकर, मोक्ष लक्ष्मी पायें।–2
जहाँ–जहाँ प्रभु विमल विराजें, उनकी आरती गायें।–2
'आस्था' से प्रभु को ध्यायें, घृत के हम दीप जलायें।–2 प्रभुवर...

***

श्री विमलनाथ चालीसा

दोहा– विमलनाथ भगवान की, बोलें हम जयकार।
चौबीसों जिनराज संग, सबको नमन हजार॥
चालीसा प्रभु का पढ़ें, दीपक धूप चढ़ाय।
मन को विमल करें प्रभु, उनके गुण हम गाय॥

चौपाई

नमन करें हम प्रभु गुण गायें, विमलनाथ को शीश झुकायें।
विमल मलों को हरने वाले, मन को निर्मल करने वाले॥1॥
चालीसा प्रभुवर का गायें, सर्व पाप मल धोने आये।
प्रभु के पूर्व भवों की गाथा, जिसको सुन मन आनंद पाता॥2॥
पश्चिम धातकी खंड द्वीप में, रम्यक् देश महानगरी में।
पद्मसेन राजा कहलाये, जनता पे अति प्रेम लुटाये॥3॥
स्वर्गगुप्त जिनवर जब आये, राजा दर्शन करने जाये।
सबको समकित राह बताये, प्रभु वाणी वैराग्य जगाये॥4॥
मुनिवर भव दो शेष बताये, गुरुवाणी उनके मन भाये।
तत्क्षण मन वैराग्य समाये, गुरु चरणों में दीक्षा पायें॥5॥
द्वादशांग के मुनिवर ज्ञानी, स्वात्म ध्यान चिन्तन रत ध्यानी।
सोलहकारण को मुनि भायें, तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये॥6॥
चउ अराधना हर दिन भायें, करें समाधि सुर तन पायें।
स्वर्ग बारवाँ मुनिवर पायें, स्वागत करने सुरगण आयें॥7॥
अष्टादश सागर वय पायें, प्रभु भक्ति कर पुण्य कमायें।
प्रभु के पंच कल्याण मनायें, चिन्तन कर शुभ ध्यान लगायें॥8॥
नंदीश्वर द्वीपों में जायें, धर्मक्रिया नित करते जायें।
आयु छह महीने रह जाये, सुरपति का आसन कम्पाये॥9॥
नगर कंपिला धनद सजाये, अतिसुन्दर वो महल बनाये।
जिसके उर में प्रभुवर आये, जयश्यामा जननी सुख पाये॥10॥

कृतवर्मा जिन जनक कहाये, मात-पिता को सुरगण ध्यायें।
प्रथम गर्भकल्याण मनाये, धरती पर अति आनंद छाये॥11॥
गर्भ तिथि भी पूजी जाये, ज्येष्ठ कृष्ण दशमी कहलाये।
जिस तिथि को कल्याणक आये, वो तिथि मंगलकाल कहाये॥12॥
मतिश्रुत अवधि ज्ञान त्रय पायें, तीन ज्ञान उर से प्रभु पायें।
जन्मत दश अतिशय जिन पायें, सुर मेरु पे न्हवन कराये॥13॥
जय बोले सब विमलनाथ की, त्रय लोकों से पूज्य नाथ की।
साठ लाख आयु प्रभु पायें, साठ धनुष ऊँचा तन पायें॥14॥
तन सुवर्ण कांति प्रभु पाये, प्रभु की आभा हमें लुभायें।
राज्यलक्ष्मी जिनको न भाये, हेम ऋतू वैराग्य जगाये॥15॥
करें पंचमुष्ठि से लोचन, सर्व पाप का करें विमोचन।
कनकराज आहार कराये, प्रभु के संग मुनि मुक्ति पायें॥16।
केवलज्ञान जिनेश्वर पाये, धर्मतीर्थ प्रभु पुनः चलाये।
पचपन गणधर प्रभु को ध्यायें, मुनि हजार नित संस्तुति गाये॥17॥
प्रभु सम्मेद शिखर जी आये, सर्व अघाति कर्म नशायें।
हम भी प्रभु को शीश झुकायें, विमल प्रभु मन विमल बनायें॥18॥
दुर्बुद्धि अपनी विनशाये, सद्‌बुद्धि हम पाने आये।
प्रभु के सन्मुख दीप जलायें, मोह तिमिर अज्ञान नशायें॥19॥
प्रभु कीर्त्तन कर कीर्ति पाये, रोग शोक जिनदेव मिटाये।
'आस्था' से चालीसा गाये, तीन गुप्ति धर शिवसुख पाये॥20॥

दोहा– विमलनाथ जय विमल प्रभु, विमल करो मम भाव।
विमल विमल मल रहित हो, होवे कर्म अभाव॥
दीप धूप के साथ में, करें प्रभु का जाप।
चालीसा जिननाथ का, हरता दुःख संताप॥

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री अनन्तनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	सिंहसेन
माता	–	सुयशा (सर्वयशा)
आयू	–	30 लाख वर्ष
ऊँचाई	–	50 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा
जन्म	–	ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी
जन्म स्थान	–	अयोध्या
दीक्षा	–	ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	राजा विशाख
कैवल्य ज्ञान	–	चैत्र कृष्ण अमावस्या
गणधर	–	जय आदि 50
कुल मुनि	–	66 हजार
गणिनी	–	सर्वश्री आर्या
कुल आर्यिका	–	1 लाख 8 हजार
श्रावक	–	2 लाख
श्राविका	–	4 लाख
मोक्ष	–	चैत्र कृष्ण अमावस्या
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	स्वर्ण
चिह्न	–	सेही
चैत्यवृक्ष	–	पीपल

शासक देव

यक्ष	–	पाताल
यक्षिणी	–	अनन्तमती
क्षेत्रपाल	–	(1) स्वभाव (2) परभाव (3) अनुपम्य (4) सहजानन्द

श्री अनंतनाथ विधान

(श्री अनंतव्रत उद्यापन विधान)

स्थापना (अडिल्ल छंद)

नाथ अनंत अनंत गुणों को पा गये।
सबको मार्ग दिखाकर शिवसुख पा गये।।
नगर अयोध्या में जन्में भगवान हैं।
करते हम पुष्पों से नित आव्हान हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

निर्मल नीर कलश में लाये, नित्य नियम अभिषेक रचायें।
जन्म जरा मृत रोग नशाये, हम अनंत जिनवर को ध्यायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन चूर्ण गंध हम लाये, सर्वौषधि से न्हवन करायें।
श्री अनंत पद गंध लगायें, हम अनंत भवताप नशायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत तंदुल पुंज चढ़ायें, शाश्वत अक्षय पद हम पायें।
प्रभु पूजा है मंगलकारी, प्रभु पद पावन जग उपकारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल गुलाब मोगरा लायें, सेवंती कचनार चढ़ायें।
काम नशाने हम सब आयें, निशदिन प्रभु को पुष्प चढ़ायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन थाल सजायें, शुद्ध बनाकर हर दिन लायें।
प्रभु को हम नैवेद्य चढ़ायें, प्रभु की पूजा क्षुधा मिटाये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर दिन दीपावली मनायें, दीपों से जिन भवन सजायें।
प्रभु का हम मंदिर चमकायें, प्रभु पूजा किस्मत चमकाये॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित नित्य चढ़ायें, हम भी आठों कर्म नशायें।
कर्मों की दुर्गंध मिटाने, आये हम प्रभुवर को ध्याने॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हरे-भरे फल हम ले आये, हरा-भरा जीवन बन जाये।
आम जाम केलादि चढ़ायें, प्रभु पूजा से शिवसुख पायें॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्पादि, दीप धूप नैवेद्य फलादि।
अष्टम वसुधा देने वाली, थाल चढ़ायें अर्घों वाली॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- गुण अनंत हैं आप में, हे अनंत भगवान।
गुण अनंत हमको मिले, इस हित करें विधान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

जब-जब हम मंदिर में आये, चैत्यालय को शीश झुकायें।
प्रभु अनंत गुण कथा अनंता, भवि तुमको पूजें भगवंता॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिन दर्शन उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय-जय कह जिन मंदिर जाते, घंटा आठों याम बजाते॥ प्रभु..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनचैत्य वंदना उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निसहि-निसहि कहते जायें, णमोकार हम रटते जायें।
प्रभु अनंत गुण कथा अनंता, भवि तुमको पूजें भगवंता॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामंत्र जाप उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन दर्शन के भाव बनायें, सहस वास का फल हम पायें॥ प्रभु..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनदर्शन भाव प्रदायकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन दर्शन को कदम बढ़ायें, लाखों अनशन का फल पायें॥ प्रभु..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनदर्शनार्थ गमन देशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब जिनवर के दर्शन पायें, कोटि अनंत वास फल पायें॥ प्रभु..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं साक्षात् जिनदर्शन महिमा देशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर समवशरण कहलाता, सबको अपने पास बुलाता॥ प्रभु..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिन मंदिर महिमा देशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम प्रभु की फेरी लगायें, अपने भव का फेर मिटायें॥ प्रभु..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं परिक्रमा देशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन संस्तुति पाठ करें हम, प्रभुवर का गुणगान करें हम॥ प्रभु..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूजा संस्तुति देशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ चढ़ायें शीश झुकायें, उठें-बैठ कर हम सिर नायें॥ प्रभु..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविधि देशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल उत्तम शरण तुम्हीं हो, तारण तरण जहाज तुम्हीं हो॥ प्रभु..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलोत्तम शरण प्रदायकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु ! तुम अर्हत सिद्ध हो, सूरि पाठक श्रमण तुम्हीं हो।
प्रभु अनंत गुण कथा अनंता, भवि तुमको पूजें भगवंता॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंच परमेष्ठी रूपाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह अंगों से पूजा करते, पूजा का शुभ फल हम वरते॥ प्रभु..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं षड़ांग पूजा बोधकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम अंग अभिषेक कहाये, हम प्रभु का अभिषेक रचायें॥ प्रभु..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभिषेक विधि बोधकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचामृत अभिषेक करें हम, पापों का प्रक्षाल करें हम ॥ प्रभु..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचामृत अभिषेक बोधकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर–नारी श्रावक जन सारे, प्रभु का न्हवन करायें सारे॥ प्रभु..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभिषेक बोधकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजा अंग आह्वान बताया, पुष्प हाथ ले जिन्हें बुलाया॥ प्रभु..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वितीय आह्वानक्रिया बोधकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्थापन तीजा अंग होता, जिनगुण का संस्थापन होता॥ प्रभु..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं तृतीय स्थापन विधि बोधकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्निधिकरण अंग चौथा है, प्रभु सन्निधि का पद चौखा ये॥ प्रभु..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्थ सन्निधिकरण बोधकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पंचम अंग कहाये, प्रभु के गुण गा मन हर्षाये॥ प्रभु..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचम अंग पूजनविधि बोधकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छट्ठा अंग विसर्जन आये, कर्म विसर्जन सिद्ध कराये।
प्रभु अनंत गुण कथा अनंता, भवि तुमको पूजें भगवंता॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं षष्टांग विसर्जनविधि बोधकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्द्ध नरेन्द्र छंद)

प्रभु की पूजा सब सुख देती, जैनागम बतलाये।
निशदिन जो प्रभुवर को पूजे, सुख-समृद्धि पाये॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं नित्य पूजा उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् कर्त्तव्य बताये प्रभु ने, प्रथम करें जिन पूजा।
पूज्य पुरुष के गुण गायन ही, कहलाती है पूजा॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं देवपूजा उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजा है कर्त्तव्य हमारा, करें सदा गुरु सेवा।
गुरुओं की पूजा भक्ति से, पायें शिवसुख मेवा॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुरुपास्ति उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों ही अनुयोग पढ़ें हम, भक्ति करें आगम की।
जिनवाणी जिनग्रंथ छपायें, अर्चा कर आगम की॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वाध्याय उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन इन्द्रिय को वश में करना, संयम हमें सिखाता।
जो संयम धारण करता है, मोक्ष महल को पाता॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं संयम उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छाओं को वश में करना, तप कर्त्तव्य सिखाता।
व्रत उपवास व तन कृश करना, उत्तम तप कहलाता॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं तप उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार प्रकार दान नित करना, चार संघ को भैया।
ये कर्त्तव्य सदा तुम पालों, कहती वाणी मैया॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं दान कर्त्तव्य उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की पूजा बहु प्रकार से, स्वयं करें करवायें।
तीन समय मंदिर में जाकर, पूजा कर हर्षायें॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं बहुविध जिन अर्चा उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत अनेक उपवासों के संग, हम नित करते जाये।
विधि पूर्वक व्रत पालन करके, उत्तम सुख हम पायें॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनेक व्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण व्रत हम पालें, तीर्थंकर पद पायें।
एक वर्ष में तीन बार हम, इस व्रत को अपनायें॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं सोलहकारण व्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्व अठाई एक वर्ष में, तीन बार ही आता।
आठ वर्ष जो करे अठाई, आठों कर्म नशाता॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाह्निका व्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पाञ्जलि व्रत पाँच वर्ष कर, अनशन आदि करते।
विधि पूर्वक उद्यापन करके, व्रत का फल हम वरते॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पाञ्जलि व्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय व्रत तीन वर्ष कर, मोक्ष लक्ष्मी पायें।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण ये, रत्नत्रय कहलाये॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रय व्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविव्रत नो वर्षों तक करके, पार्श्व प्रभु को ध्यायें।
एकाशन उपवास करें हम, भारी पुण्य कमायें।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं रविव्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोटतीज व्रत में हम प्रभु को, रोट अवश्य चढ़ायें।
उत्तम व्रत त्रिकाल चौबीसी, विधिपूर्वक अपनायें।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं रोटतीज व्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदनषष्ठी व्रत चंदन सम, छह वर्षों तक करना।
मन-वच-काया शुद्धि पूर्वक, व्रत का पालन करना।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं चंदनषष्ठी व्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वदोष प्रायश्चित व्रत कर, व्रत उपवास करें हम।
सब दोषों की शुद्धि हेतु, इस व्रत को धारें हम।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदोष प्रायश्चित व्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होता है अपराध जघनतम, तप से पाप नशायें।
पंचकल्याणक व्रत करके हम, सर्व पाप विनशायें।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक व्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार पैंतीसी व्रत को, श्रद्धा से अपनायें।
जो करते उपवास मंत्र के, मन मंत्रित हो जाये।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमोकार व्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहनिष्क्रीड़ित कर्म निर्जरा, श्रुत पच्चीसी धारें।
जिनगुण-संपत् आदिक् व्रत कर, बिगड़े काम सम्हारें।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहनिष्क्रीड़ित कर्म निर्जरा जिनगुण सम्पत्ति आदि व्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण में प्रभु नाम का, व्रत अनंत इक आये।
चौदह वर्षों तक व्रत करके, जिन सम वैभव पायें।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतव्रत उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह तीर्थंकर की पूजा, इस व्रत में होती है।
करें उपवास जाप व पूजा, मुक्ति अवश होती है।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्रत उपवास उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अर्चा सुविधान करें हम, अपना पुण्य बढ़ायें।
पंचामृत अभिषेक प्रभु का, सर्व पाप विनशाये।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूजा अभिषेक उपदेशकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक सब जिनवर के, मध्यलोक में होते।
तीन लोक के सारे प्राणी, भक्त प्रभु के होते।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयलोक भक्त पूजिताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ उत्तम पद धारी, बनते जिन पूजा से।
इन्द्र नरेन्द्र चक्री का वैभव, पाते जिन पूजा से।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमपद प्रदायकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आर्यिका व्रती श्राविका, बनते जिन पूजा से।
गणधर ऋषि यति केवलज्ञानी, बनते जिन पूजा से।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पूज्य पद प्रदायकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर उत्सव में जिन प्रभुवर के, देव धरा पर आये।
धर्म तीर्थ पर अनंत जिन को, गुप्ति गुरु बिठाये।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

गुण अनंत हैं जिन प्रभुवर में, ऐसे प्रभु को ध्यायें।
श्री अनंत का व्रत अपनाकर, भव अनंत विनशायें।।
नाथ अयोध्या में तुम जन्में, मधुवन मोक्ष उपाये।
अष्ट द्रव्य संग दीप ध्वजा ले, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, दुःख, संताप, अशांति, क्लेश, दारिद्रय, विपत्ति, रोग, शोक, संकट, विपदा हराय, अनंतव्रताधिपति धन–धान्य, ऐश्वर्य, कीर्ति, ऋद्धि–सिद्धि प्रदायकाय सर्वगुण सम्पन्न अनंतगुण धारकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– श्री अनंत भगवान को, करते कोटि प्रणाम।
शांतिधार पुष्पाञ्जलि, करके जपते नाम।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– जयकारा हम बोलते, प्रभुवर का हर रोज।
जयमाला प्रभु आपकी, देती उत्तम खोज।।

(अडिल्ल छंद)

श्री अनंत जिनवर को करते हम नमन।
नवदेवों के देवालय को है नमन।।
जयमाला हम श्री जिनवर की गा रहे।
प्रभुवर के चरणों में शीश झुका रहे।।1।।

नाथ आपका मंदिर हम चमका रहे।
स्वर्ण रजत रत्नों से भवि दमका रहे।।

प्रभु मंदिर में चित्र बनायें नाथ के।
चित्र चरित्र बतायें हमको नाथ के ।।2 ।।
चित्र बताते समता जो प्राणी धरे।
इक दिन वो भी निश्चय से मुक्ति वरे।।
जग का वैभव छोड़ मुनीश्वर जो बने।
निज का वैभव पाकर वो जिनवर बने।।3 ।।
धन्य-धन्य है महामुनि सुकमाल को।
सहन किया उपसर्ग गये सर्वार्थ[1] को।।
धन्य सुकौशल-पांडव-गज मुनिराज को।
धन्य-धन्य है श्री चाणक मुनिराज को।।4 ।।
धन्य-धन्य श्री संजयंत मुनिराज को।
धन्य यशोधर वादिराज मुनिराज को।।
समताधारी पार्श्व प्रभु की वन्दना।
श्री महति महावीर प्रभु की वन्दना।।5 ।।
कई सतियों श्रमणों के भी आलेख हैं।
जिनवाणी में इन सबका उल्लेख हैं।।
चित्र देख हम गुरुओं सम समता धरें।
जयमाला 'आस्था' से पढ़ वंदन करें।।6 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुःख-संकट-कोरोना रोग अमपृत्यु-उपद्रव-विषमता-ईर्ष्या-द्वेष-कलह-क्लेश-रागादि-कषाय निवारणाय सर्व सुख-शांति, धन-धान्य ऋद्धि-सिद्धी प्रदायकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- समितिगुप्ति व्रत प्राप्त हो, पायें सुख सोपान।
'आस्था' से हम नमन कर, पायें शिव सोपान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

1. सवार्थसिद्धि।

आरती

(तर्ज–इह विधि मंगल आरती कीजे...)

मंगल दीप जलाकर लाये, प्रभु अनंत की आरती गायें।

1. नगर अयोध्या प्रभुवर जन्में, सर्व सुरासुर भवि जन हर्षे।
   मंगल....
2. सर्वयशा माँ के सुत प्यारे, सिंहसेन नृप के सुत न्यारे।
   मंगल....
3. प्रभु अनंत को जो जन ध्यायें, उनके प्रभुवर कर्म नशाये।
   मंगल....
4. भव अंनत हम नशने आये, कर्म कालिमा नशने आये।
   मंगल....
5. 'आस्था' से हम आरती गायें, भावों से प्रभु को सिर नाये।
   मंगल....

***

श्री अनंतनाथ चालीसा

दोहा– कोटि अनंत प्रणाम हो, श्री अनंत भगवान।
श्री अनंत भगवान का, करते हम गुणगान।।
चालीसा प्रभु का पढ़ें, हरने कष्ट अनंत।
प्रभु भक्ति से अवश ही, होय कर्म का अंत।।

चौपाई

जय अनंत गुण बल के धारी, नाम अनंत महासुखकारी।
कर्मों का ये अंत कराते, श्री अनंत जिनवर कहलाते।।1।।
खंड धातकी द्वीप मनोहर, एक अरिष्ट नगर था सुन्दर।
वहाँ पद्मरथ भूप कहाये, सर्व सुखों का आनंद पाये।।2।।
स्वयंप्रभु के दर्शन पाये, धर्म देशना सुन हर्षायें।
धन वैभव तज राजा जाये, प्रभु से मुनि दीक्षा वो पायें।।3।।
द्वादशांग ज्ञाता बन जाये, तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये।
पंच पदों का ध्यान लगायें, करें समाधि सुर तन पायें।।4।।
अच्युतेन्द्र का पद वे पायें, बाईस सागर आयु पायें।
जिन कल्याणक में नित जायें, आनंद से प्रभु भक्ति रचायें।।5।।
मेरु के दर्शन को जायें, नंदीश्वर जा भक्ति रचायें।
निशदिन भारी पुण्य कमाये, परमेष्ठी का ध्यान लगायें।।6।।
आयु छह महीने रह जाये, अधिक धर्म में समय बिताये।
इन्द्रों के आसन कम्पायें, धनद अयोध्या नगर सजाये।।7।।
इक्ष्वाकु कुल के महाराजा, सिंहसेन नगरी के राजा।
सर्वयशा थी उनकी रानी, सबको स्वप्न सुनाये रानी।।8।।
पिता स्वप्न का फल बतलायें, गर्भ कल्याणक देव मनायें।
माँ का आनंद बढ़ता जाये, सर्व देवियाँ उन्हें सजायें।।9।।
ज्येष्ठ कृष्ण बारस की बेला, साकेता में हुआ उजेला।
जन्म लिया धरती पे प्रभु ने, शांति हुई सारे कण–कण में।।10।।

घंटा शंख भेरी बज जाये, नरकों में शांति छा जाये।
सर्वदेव धरती पर आये, वे प्रभु का अभिषेक रचायें॥11॥
सर्व देवियाँ नृत्य रचायें, प्रभु की संस्तुति कीर्तन गायें।
प्रथम इन्द्र जिन नाम बताये, ये अनंत जिनवर कहलाये॥12॥
आयु तीस लाख प्रभु पाये, तन सुवर्ण सम पीत कहाये।
वस्त्राभूषण शची पहनाये, काजल से नयना चमकाये॥13॥
प्रभु ललाट पे तिलक लगाये, नजर प्रभु से हटा ना पाये।
शची इन्द्राणी पुण्य कमाये, कर्म काट वो मुक्ति पाये॥14॥
राज्य करें कहलायें राजा, शीश झुकातें सब महाराजा।
उल्कापात प्रभु ने देखा, सुख वैभव से तोड़ी रेखा॥15॥
ब्रह्मर्षि लौकांतिक आये, सुरगण प्रभु की भक्ति रचाये।
शिविका में प्रभु को ले जाये, दीक्षा ले प्रभु ध्यान लगायें॥16॥
चार घातिया कर्म नशायें, केवलज्ञान जिनेश्वर पायें।
समवशरण में सुरगण आयें, मुनि हजारों संस्तव गायें॥17॥
मात सर्वश्री प्रभु को ध्याये, नर–नारी प्रभु के गुण गायें।
पशुगण प्रभु की वाणी पाये, बार–बार वो शीश झुकाये॥18॥
प्रभु सम्मेद शिखर जी आये, कर्मनाश प्रभु शिव श्री पाये।
सुख अनंत हम पाने आये, हम भी तव चरणों में आये॥19॥
हम प्रभु का चालीसा गायें, सर्व दु:खों से छुट्टी पाये।
गुण अनंत क्षायिक सुख पाये, 'आस्था' धर शिव मगरी पाये॥20॥

दोहा– प्रभु अनंत भगवान तुम, गुण अनंत की खान।
गुप्ति समिति हम धरें, करो नाथ कल्याण॥
दीप धूप पुष्पादि ले, करें प्रभु का जाप।
चालीसा हम नित पढ़ें, हरों हमारे पाप॥

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री धर्मनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	राजा भानु
माता	–	सुव्रता रानी
आयू	–	10 लाख वर्ष
ऊँचाई	–	180 हाथ

पंचकल्याणक

गर्भ	–	वैशाख शुक्ला अष्टमी
जन्म	–	माघ शुक्ल त्रयोदशी
जन्म स्थान	–	श्रावस्ती
दीक्षा	–	माघ शुक्ल त्रयोदशी
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	राजा धन्येषण
कैवल्य ज्ञान	–	पौष शुक्ल पूर्णिमा
गणधर	–	अरिष्टसेन आदि (43)
कुल मुनि	–	64000
गणिनी	–	सुव्रता आर्या
कुल आर्यिका	–	62400
श्रावक	–	2 लाख
श्राविका	–	4 लाख
मोक्ष	–	ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्थी
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	स्वर्ण
चिह्न	–	वज्र
चैत्यवृक्ष	–	दधिपर्ण

शासक देव

यक्ष	–	किन्नर
यक्षिणी	–	मानसी
क्षेत्रपाल	–	(1) धर्मकर (2) धर्मकरी (3) शांतिकर्म (4) विनयकर्म

स्वप्न पूरक श्री धर्मनाथ विधान

स्थापना (नरेन्द्र छंद)

रत्नपुरी में जन्में जिनवर, इन्द्र सुरासुर आये।
पंच कल्याणक नाथ आपका, तीनों लोक मनायें।।
हम भी पूजा भक्ति करते, पुष्प सजाकर लायें।
धर्मनाथ की धर्म ध्वजा को, चहुँ दिश में फहरायें।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

जैन धर्म की शान हैं, धर्मनाथ भगवान।
जल से पूजा हम करें, कर दो प्रभु कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हल्दी कुमकुम गंध से, करते हम अभिषेक।
पाप ताप भव नाशने, करें नित्य अभिषेक।।2।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल भाव के साथ में, धवलाक्षत हम लाय।
प्रभु की पूजा अर्चना, अक्षय सौख्य दिलाय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हर दिन प्रभु के चरण में, हार व फूल चढ़ाय।
मदन विजेता श्रीप्रभु, सबको विजय दिलाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुड़ी कचौड़ी रसभरी, बरफी पेड़ा सेव।
धर्मनाथ तीर्थेश को, अर्पण करें सदैव।।5।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें आरती दीप से, अंधकार विनशाय।
हे प्रभु! हमको ज्ञान दो, मोह तिमिर नश जाय॥6॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व सुगंधित धूप ले, चढ़ा रहे हम आज।
अष्ट कर्म को नाशकर, पायें मोक्ष स्वराज॥7॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व फलों की माल ले, पूजें हम परमेश।
मुक्ति की माला मिले, ये ही भाव जिनेश॥8॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिला पुनः संसार को, धर्मनाथ से धर्म।
हम भी अर्घ चढ़ा रहे, पाने प्रभु शिव शर्म॥9॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा– धर्मनाथ भगवान का, करते पूर्ण विधान।
धर्म हृदय में नित रहे, करते भव्य विधान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(अर्द्ध नरेन्द्र छंद)

पंचकल्याणक धारी भगवन्, धर्मनाथ को ध्यायें।
ये विधान हम करें सदा ही, अतिशय पुण्य कमायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक पूजिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब प्रभुवर माँ के उर आते, नित नव मंगल होते।
देव देवियाँ आते भू पर, भविजन हर्षित होते॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजन पूजिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गों में देवों की आयु, छह महीने रह जाती।
देवों की माला मुरझाती, प्रभु भक्ति बढ़ जाती॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं अपवर्ग सुख प्रदायकाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ पूर्व नगरी की रचना, धनद स्वयं आ करता।
अष्ट कुमारी देवी गण की, शक्र नियुक्ति करता॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं धनद देव पूजिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के कारण मात-पिता की, सुरपति करते पूजा।
मात-पिता संग और प्रभु को, हमने भी अब पूजा॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुरपति पूजिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की माता चरम प्रहर में, सोलह सपने देखें।
उन स्वप्नों का फल क्या होता, राजा खुद उल्लेखें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं षोडश स्वप्न फल महिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम स्वप्न में गज को देखा, सुन्दर सज्जित प्यारा।
तीर्थंकर सा पुत्र जने तू, पूजेगा जग सारा॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं गजेन्द्र स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजें स्वप्न में श्रेष्ठ वृषभ को, देखा प्रभु की माँ ने।
तीन लोक का स्वामी होगा, कहते राजन माँ से॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषभ स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय स्वप्न में देखा सिंह को, सिंह गर्जना करता।
बल अनंत का धारी होगा, सिंह स्वप्न यह कहता॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं केशरीसिंह स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गज लक्ष्मी को देखा माँ ने, गज श्री को नहलाये।
मेरु पे अभिषेक प्रभु का, फल ये स्वप्न बताये॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं गजलक्ष्मी स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मीन युगल को देखा माँ ने, मीन युगल फलदायी।
सुखी रहे सुत सुखी करेगा, प्रभु पूजा फलदायी॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं मीनयुगल स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो माला सुन्दर फूलों की, सपने में माँ देखी।
श्रावक व मुनिधर्म चलाये, स्वप्न माल यह कहती॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगल पुष्पमाला स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रबिम्ब को देखा माँ ने, पूर्ण चमकता चंदा।
तीन लोक का चंद्र बने सुत, पूजें सूरज चंदा॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं चंद्रबिंब स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ ने देखा सूर्य स्वप्न में, माता स्वप्न सुनाये।
सूर्य समान बढ़ा तेजस्वी, तीन लोक चमकाये॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूर्य बिम्ब स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ ने कलश युगल को देखा, रत्नमयी मनहारा।
निधियों का स्वामी ये होगा, कहता स्वप्न तुम्हारा॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंगल कलश स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल राशि संग दिखा सरोवर, माता स्वप्न सुनाये।
सब लक्षण से युत होगा सुत, प्रभु के पिता बतायें॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं सरोवर स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सपने में माता ने देखा, सुन्दर बड़ा समुन्दर।
पुत्र बने सर्वज्ञ अवश ही, होगा ज्ञान समुन्दर॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं समुद्र स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नजड़ित सिंहासन देखा, पूजित जग के द्वारा।
तीन लोक जिसको पूजेगा, गूँजेगा जयकारा॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव विमान मात ने देखा, स्वर्ग छोड़ प्रभु आयें।
स्वप्नों का फल सुने प्रजाजन, जय-जयकार लगाये॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं देवविमान स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये नागेन्द्र भवन कहता है, तीन ज्ञान के धारी।
उर से ही त्रय ज्ञान रहेंगे, भजते सुर नर-नारी॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं नागेन्द्र भवन स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न राशि कहती प्रभु होंगे, सर्व गुणों के धारी।
हम भी प्रभु सम गुण निधि पाने, पूजा करते भारी॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नराशि स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब निर्धूम अग्नि को देखा, चरम स्वप्न में माँ ने।
सर्व कर्म को नष्ट करेगा, कहे पिता फल माँ से॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्धूम अग्नि स्वप्न फल दर्शिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष, सब पंचकल्याण मनायें।
पंच परावर्तन को हरने, हर दिन भक्ति रचायें॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणकधारी श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ और अशुभ स्वप्न दो होते, वैसे ही फल वाले।
जिनका पुण्य विशेष जगत् में, उनके हो सच वाले॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुभ अशुभ स्वप्न उपदेशकाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ सपनों को देखे, श्री जिनवर की माता।
अद्भुत रहस्य छिपा स्वप्नों में, जन्में त्रिभुवन दाता॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठ स्वप्न उपदेशकाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ स्वप्नों का फल शुभ होता, श्री जिनदेव बतायें।
अशुभ स्वप्न आने पर उनकी, शांति अवश करायें॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशुभ स्वप्न फल निवारणाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात-पित्त-कफ-प्रेरक-भावित, दैविक स्वप्न बताये।
इन स्वप्नों का फल क्या होता, तीर्थंकर बतलायें॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं नानाविध स्वप्न उपदेशकाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरुओं के दर्शन, आदि जो भवि देखे।
प्रमुदित मन से प्रातः उठकर, सबको माथा टेके॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुभ स्वप्न फल प्रदायकाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्थ व्यक्ति देखे दुस्वप्ना, कुछ ना कुछ फल पाये।
अशुभ स्वप्न परिहार करें हम, महामंत्र को ध्यायें॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशुभ स्वप्न परिहाराय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई स्वप्न शीघ्र फल देते, कोई कुछ ना देते।
प्रभु भक्ति का फल वो पाते, हर दिन नाम जो लेते॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्र नाम स्मरणाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई स्वप्न हमें ना आये, आये तो शुभ आये।
सोते उठते प्रभु को भजते, स्वप्न प्रभु सम आये॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुभ स्वप्न प्रदायकाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तों के स्वप्नों में आई, जिनवर की प्रतिमायें।
सपने देकर जिनवर प्रगटें, उनको हम सब ध्यायें॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिन प्रतिमा स्वप्न दृष्टाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई स्वप्न जाग कर देखे, कोई देखे सोकर।
हम भी स्वप्न देखते भगवन्, तव भक्ति में खोकर॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्र भक्ति स्वप्न पूर्णकराय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म ध्वजा ले भव्य हाथ में, धर्मनाथ को ध्यायें।
गर्भ समय से मति युत भगवन्, जिनके हम गुण गायें॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुमति ज्ञान धारकाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोत्तम श्रुत होता प्रभु को, माँ के उर जब रहते।
बढ़े हमारा तीव्र क्षयोपशम, प्रभु की पूजन करते॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतज्ञान धारकाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान के धारी होते, गर्भ समय से भगवन्।
ऐसे प्रभु की भक्ति करते, बनने को हम भगवन्॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुअवधि ज्ञान धारकाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन ज्ञान प्रभु पायें गर्भ से, जन्मत् दश अतिशय हों।
अतिशयकारी सब जिनवर के, भक्ति में हम रत हों॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयज्ञान दश अतिशय युक्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय सुन्दर रूप प्रभु का, देव संस्तुति गायें।
तीन लोक में सबसे सुन्दर, सब जिनवर कहलाये॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशय सुन्दर रूप प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सुगंधमय तन प्रभुवर का, सबके रोग मिटाये।
ऐसी उत्तम काया पाने, हम जिनपूजा गायें॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगंधित शरीर प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को स्वेद कभी नहीं आता, अतिशय सहज कहाये।
स्वेद रहित प्रभु को हम पूजें, स्वेद रहित तन पायें॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वेद रहित तन प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का तन निहार रहित है, उत्तम शक्ति वाला।
पाचन शक्ति प्रभु सम पाने, हम भी फेरें माला॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं निहार रहित तन प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित प्रिय वाणी उच्चारें, मधुर लगे कानों को।
मीठे शब्द सदा प्रभु बोलें, तृप्ति मिले कानों को॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं हित-मित-प्रिय वचन प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सम शक्ति नहीं किसी में, प्रभु अतुल्य बल पायें।
सर्वश्रेष्ठ बल पौरुष तन का, तीर्थंकर ही पायें॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतुल्य बल प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्तम वात्सल्य भावना, प्रभु के मन-वच-तन में।
श्वेत रुधिर करुणा दर्शाता, बहता प्रभु के तन में॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्वेत रुधिर प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण सहस्त्र आठ है तन में, शुभ लक्षण दर्शाये।
स्वस्तिक कमल शंख तरु शक्ति, शुभ लक्षण कहलाये।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टोत्तर सहस्त्र लक्षण प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम चौरस संस्थान नाथ का, सुन्दर आकृति वाला।
ऊँचे-नीचे और मध्य में, मन को हरने वाला।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं समचतुस्त्र संथान प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन की हड्डी जोड़ कील सब, वज्रमयी जिन पायें।
वज्रवृषभनाराच संहनन, उत्तम तप करवाये।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रवृषभनाराय संहनन प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ में आकर हम सब, धर्मनाथ को ध्यायें।
रत्नमयी श्री धर्मनाथ को, हम सब अर्घ चढ़ायें।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

धर्मनाथ की धर्म ध्वजा को, धर्मीजन फहरायें।
धर्म हमारा चिरसाथी है, धर्मनाथ समझायें।।
धर्मनाथ ने धर्मतीर्थ का, फिर से किया प्रवर्तन।
हम पूर्णार्घ चढ़ाते प्रभु को, हरने भव का वर्तन।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्पूर्ण कर्म, चिंता, तनाव, कलह, क्लेश, दुर्बुद्धि, कोरोना रोग, शोक, दुःख, संकट, विपदा, अपमृत्यु, क्रोधादि कषाय निवारणाय अधर्म विनाशकाय सर्व पापादिरोग हराय धर्मवृद्धि प्रदायकाय सुख, शांति, समृद्धि, बुद्धि, सम्यक्ज्ञान प्रदायकाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– धर्मसभा में धर्म जिन, सबको धर्म बताय।
धर्मनाथ भगवान नित, शांतिपुष्टि कराय।।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– प्रभु आपके नाम की, जो नित माला लेय।
आप नाम की शक्ति से, सर्व सौख्य वर लेय।।

(शंभु छंद)

भगवान धर्म की यश गाथा, भक्ति से हम सब गाते हैं।
नाना प्रकार के द्रव्य सजा, प्रभु को हम आज चढ़ाते हैं।।
हे नाथ ! आपका पाठ रचा, हम भी भगवन् बन जायेंगे।
भक्ति व भक्त बिना कोई, भगवान नहीं बन पायेंगे।।1।।

जिनभक्तों ने प्रभु पूजा की, अतिशायी पुण्य कमाया था।
मैना सुन्दरी ने पाठ रचा, निज पति का कुष्ट मिटाया था।।
सोमा ने प्रभु का नाम जपा, तब सर्प फूल का हार बना।
सती मनोवती की भक्ति से, जंगल में प्रभु का चैत्य बना।।2।।

कविराज धनञ्जय ने सुत का, भक्ति से जहर उतार दिया।
भक्ति से सेठ सुदर्शन के, शूली से आसन प्रगट हुआ।।
अंजन भी निरंजन बना प्रभु, श्रद्धा भक्ति का फल पाया।
पिण्डी से चंद्रप्रभु प्रगटे, श्रीभद्र गुरु ने यश पाया।।3।।

मुनि मानतुंङ्ग ने बन्धन में, भक्तामर मंगल स्तोत्र रचा।
मुनि वादिराज ने एकीभाव, नामक सुन्दर सा पाठ रचा।।

जिनभक्ति का अतिशय लखकर, भव्यों ने मुनिव्रत धार लिया।
शिवकोटि भोजराजादि ने, जिन अतिशय लख कल्याण किया॥4॥

मुनि कुमुदचंद्र ने संस्तव से, श्री पार्श्वनाथ को प्रगट किया।
भोले भाले जन मानस को, सम्यक्दर्शन के निकट किया॥
गुरु कुंदकुंद व पूज्यपाद, उनने भी जब प्रभु को ध्याया।
उनने भक्ति के अतिशय से, जिनशासन का ध्वज फहराया॥5॥

जिनभक्ति सदा सब कर सकते, कुल जाति का कोई भेद नहीं।
तिर्यंच असुर नर-नारी सुर, प्रभुवर की अर्चा करे सही॥
जिन समवशरण में युगपत् ही, दर्शन करने सब जाते हैं।
हम भी पूजा संस्तव करने, प्रभुवर की शरणा आते हैं॥6॥

जिनपूजा अति सुखकारी है, दुःख संकट पीड़ा हरती है।
धन वैभव यश ऋद्धि-सिद्धि, इच्छायें पूरी करती हैं॥
बोधि समाधि सुख-शांति मिले, समता व्रत गुप्ति अपनायें।
'आस्था' से जिनवर के गुण गा, हम मोक्षपुरी का सुख पायें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, सर्व ज्वरादि, दुःख-पाप-संकट-पीड़ा-रोग-शोक-अशांति विनाशन समर्थाय सुख-शांति आरोग्य पुण्यवृद्धि प्रदायकाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- धर्मनाथ जिनधर्म दे, मोक्ष गये भगवान।
'आस्था' से हम धर्म कर, बने अवश भगवान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज – दिल जाने जिगर...)

तीर्थेश धर्मनाथ की सब भक्ति करो रे।
आरती करो रे, सभी आरती करो॥–2
श्री धर्मनाथ धर्मनाथ नाम जपो रे...
आरती करो रे सभी... तीर्थेश...

1. रत्नपुरी में जन्म लिया है।
देवों ने आकर उत्सव किया है।
मात–पिता भी, खुशियाँ मनायें–2
प्रभुवर के चरणों में नृत्य करो रे....आरती...

2. सुव्रता माँ के नयन सितारे।
श्री भानुराज के राज दुलारे॥
धर्म सिखायें, राह बतायें–2
धर्म प्रभु का सब ध्यान करो रे...आरती...

3. धर्म ही हमको पार लगाता।
धर्म ही हमको सुखी बनाता॥
धर्म है सूरज, धर्म है चंदा–2
'आस्था' से धर्म स्वीकार करो रे...आरती...

***

श्री धर्मनाथ चालीसा

दोहा– धर्मनाथ भगवान ने, दिया धर्म का ज्ञान।
चौबीसों भगवान से, मिला मोक्ष का ज्ञान।।
परमेष्ठि माँ शारदा, वंदन बारम्बार।
धर्मनाथ जिनराज का, चालीसा अघहार।।

चौपाई

जय–जय धर्मनाथ जिनदेवा, पाने धर्म करें नित सेवा।
धर्मनाथ ने धर्म सिखाया, धर्म मार्ग का ज्ञान बढ़ाया।।1।।
धर्मनाथ को हम सब ध्यायें, भक्ति से चालीसा गायें।
धर्मनाथ है सूरज चंदा, धर्म बिना हर प्राणी अंधा।।2।।
इनकी गुण गाथा हम गायें, सत्य धर्म प्रभुवर से पायें।
खंड धातकी द्वीप कहाये, नगर सुसीमा उसमें आये।।3।।
राजा श्री दशरथ कहलाये, धर्म परायण भूप कहाये।
महा महोत्सव प्रजा मनाये, तत्क्षण चंद्रग्रहण हो जाये।।4।।
ग्रहण देख वैराग्य जगाये, गुरु चरणों में दीक्षा पाये।
आठ बीस उत्तम व्रत पाये, विषयों की आशा विनशाये।।5।।
सर्व परिग्रह मुनिवर त्यागें, द्वादश तप वे करने लागे।
बाइस परिषह मुनिवर जीते, ज्ञान ध्यान समता रस पीते।।6।।
जीवों से वात्सल्य अनोखा, वचनामृत दिलवाते चोखा।
जहाँ मुनीश्वर ध्यान लगाते, गुरु के निकट सभी आ जाते।।7।।
वैरभाव अपना विनशायें, प्रेम भाव अपना दिखलायें।
गुरु को बार–बार शिरनाते, सर्व दु:खों से मुक्ति पाते।।8।।
धर्मप्रेम गुरूवर का प्यारा, हर लेता सब कष्ट हमारा।
गुरुवर द्वादशांग गुणधारी, भाये सोलह भावना सारी।।9।।
तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये, चउ आराधन हर दिन भाये।
करें समाधि सुर तन पायें, दिव का चरमोत्तम सुख पायें।।10।।

इन्द्र बने सर्वार्थसिद्धि के, तैंतीस सागर बीते सुख में।
सतत ध्यान तत्त्वों की चर्चा, जिनवर की करते नित अर्चा॥11॥
पुण्य उदय धरती का आये, जिनपद पाने मनु तन पायें।
रत्नपुरी कुरुवंशज राजा, भानुराज भुपति महाराजा॥12॥
मात सुव्रता है जगदेवी, सेवा में रहती नित देवी।
स्वप्न मात देखे अति सुन्दर, पूजा करने आय पुरन्दर॥13॥
पिता स्वप्न का फल बतलाये, गर्भ कल्याणक भव्य मनाये।
जन्में तीन ज्ञान के धारी, जन्म कल्याणक मंगलकारी॥14॥
प्रभु को मेरुगिरी ले जाये, स्वर्ण कुंभ से न्हवन कराये।
मेरु क्षीरोदधि बन जाये, देव-देवियाँ उसे लगाये॥15॥
दस लक्ष्य की आयु पायी, स्वर्ण समान काय कहलायी।
नृप बन राज्यलक्ष्मी को भोगा, क्षण भंगुर वैभव दे धोखा॥16॥
उल्का लख वैराग्य जगाये, लौकांतिक सुर भक्ति रचायें।
मुनि बन प्रभु आहार को आये, धन्यषेण राजा पड़गाये॥17॥
प्रभु सम्मेद शिखर जी आये, कर्मनाश शिव लक्ष्मी पाये।
मोक्षकल्याणक पर्व मनायें, प्रभु को लड्डू थाल चढ़ायें॥18॥
सर्व शोक संकट नश जाये, हर दिन हम चालीसा गायें।
धर्म ध्यान में समय बितायें, पाप कर्म से मुक्ति पायें॥19॥
बोधि समाधि समता पायें, गुप्ति समिति पाने हम आयें।
'आस्था' से हम प्रभु को ध्याये, धर्मनाथ को शीश झुकायें॥20॥

दोहा- चालीसा प्रभु का किया, दीप धूप के साथ।
धर्म बताया आपने, नमन आपको नाथ॥
धर्मनाथ भगवान का, चालीसा नित गाय।
'आस्थाश्री' नित आपको, ध्याये मन-वच-काय॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

भगवान श्री शांतिनाथ का जीवन-दर्पण

पूर्व भव

1. श्रीषेण राजा
2. उत्तरकुरु भोगभूमि में आर्य (पूर्व धातकी खंड में)
3. सौधर्म स्वर्ग में श्रीप्रभ देव
4. अमिततेज विद्याधर
5. आनत स्वर्ग में रविचूल देव
6. अपराजित बलभद्र
7. अच्युत स्वर्ग में इन्द्र
8. वज्रायुध चक्रवर्ती
9. ऊर्ध्व ग्रैवेयक में अहमिन्द्र
10. मेघरथ राजा
11. सर्वार्थसिद्धी में अहमिन्द्र
12. भगवान शांतिनाथ

दादा	-	महाराज अजितसेन
दादी	-	रानी प्रियदर्शना
पिता	-	महाराज विश्वसेन
माता	-	महारानी ऐरादेवी
वंश	-	कुरु वंश
आयू	-	1 लाख वर्ष
ऊँचाई	-	40 धनुष
गर्भ	-	भादो कृष्ण सप्तमी
जन्म	-	ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी
तप	-	ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी
सहदीक्षित मुनि	-	1000
प्रथम दाता	-	सुमित्र राजा
ज्ञान	-	पौष शुक्ल दशमी

गणधर	-	चक्रायुध आदि 36
कुल मुनि	-	62 हजार
गणिनी	-	हरिषेणा आर्या
कुल आर्यिका	-	60 हजार 300
श्रावक	-	2 लाख
श्राविकायें	-	4 लाख
मोक्ष	-	ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी
गोत्र	-	काश्यप
जन्मभूमि	-	कुरुजांगल देश की राजधानी हस्तिनापुर
तीन पद	-	तीर्थंकर, चक्रवर्ती तथा कामदेव
चिह्न	-	हिरण
शरीर की कांति	-	तप्त सोने जैसी
चार कल्याणक	-	हस्तिनापुर में
मोक्ष भूमि	-	सम्मेदशिखर में कुंदप्रभ टोंक
यक्ष	-	गरुड़
यक्षिणी	-	महामानसी
क्षेत्रपाल	-	(1) सिद्धसेन (2) महासेन (3) लोकसेन (4) विनयकेतु।

धर्मतीर्थ साम्राज्य नायक श्री शांतिनाथ विधान

स्थापना (गीता छन्द)

हे शांति जिन ! हे शांति जिन, शांति करो त्रय लोक में।
त्रय लोक तुमको पूजता, संकट हरो त्रय लोक के॥
तीर्थेश मन्मथ चक्रधर, उनका करें आह्वान हम।
शांति करो मन में सदा, मन में विराजों आज मम॥

ॐ ह्रीं तीर्थेश चक्री कामदेव श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

श्री शांतिनाथ का करें अभिषेक शांति से।
त्रय रोग भक्त के हरो हे नाथ ! शांति से॥
हे धर्मतीर्थ नाथ शांति ! शांति दीजिये।
संसार के दुःखों से हमें पार कीजिये॥1॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शांतिनाथ की करें चंदन से अर्चना।
हमने चढ़ाया गंध हरने कर्म वंचना॥ हे धर्मतीर्थ..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हीरे व मोती अक्षतों के पुंज चढ़ायें।
वरदान शांतिनाथ से हम शांति का पायें॥ हे धर्मतीर्थ..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण विश्व के विशेष पुष्प चुनायें।
षट् खंड जयी नाथ के चरणों में चढ़ायें॥ हे धर्मतीर्थ..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक बनी मिठाईयाँ दिखती मनोज्ञ हैं।
शुद्धि से हम चढ़ायें जो पूजा के योग्य है।।
हे धर्मतीर्थ नाथ शांति ! शांति दीजिये।
संसार के दुःखों से हमें पार कीजिये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ज्ञान पाने नाथ से दीपार्चना करें।
संध्यादि तीन काल में जिनार्चना करें।। हे धर्मतीर्थ..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावक में खे रहे हैं धूप मंत्र बोल के।
श्री ॐ ह्रीं शांतिनाथ नाम बोल के।। हे धर्मतीर्थ..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आम जाम श्रीफलों के थाल ला रहे।
निज मोक्षफल की कामना से फल चढ़ा रहे।। हे धर्मतीर्थ..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश चक्री कामदेव शांतिनाथ जी।
हरभक्त के हृदय में बसे शांतिनाथ जी।। हे धर्मतीर्थ..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- शांति पाने हम करें, शांतिनाथ विधान।
शांतिनाथ प्रभु शांति दो, इस हित करें विधान।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

हस्तिनागपुर में प्रभु जन्मे, तीन लोक हर्षाये।
शांतिनाथ का जन्म मनाने, स्वर्गों से सुर आये।।

शांतिनाथ शांति के दाता, जग को शांति दिलायें।
शांति मिले प्रभु के चरणों में, शांति विधान रचायें॥1॥
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्ध श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्वसेन के नंदन का नित, करे विश्व अभिनंदन।
ऐरा माँ के राजकुँवर को, करता है जग वंदन॥ शांतिनाथ..॥2॥
ॐ ह्रीं अर्हं विश्ववंद्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के बालरूप को, निरख-निरख हर्षाये।
मात-पिता प्रभुवर को पाकर, अतिशय हर्ष मनाये॥ शांतिनाथ..॥3॥
ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञ बालरूप श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक उत्सव से प्रभु के, पंच कल्याण मनाये।
पंच पाप से मुक्ति पाकर, पंचम गति को पाये॥ शांतिनाथ..॥4॥
ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक पूजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप पाँचवें चक्रवर्ती हो, षट् खंडों के स्वामी।
तृण समान सब वैभव छोड़ा, बनने त्रिभुवन स्वामी॥ शांतिनाथ..॥5॥
ॐ ह्रीं अर्हं पंचम चक्रवर्ती श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव प्रभु आप बारहवें, धर्म सभा के स्वामी।
धर्म अखंड चला प्रभु तुमसे, कहती माँ जिनवाणी॥ शांतिनाथ..॥6॥
ॐ ह्रीं अर्हं द्वादश कामदेव श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ परमाणु जग के, प्रभु का तन बन जाये।
तीर्थंकर जैसी सुन्दरता, दूजा कोई न पाये॥ शांतिनाथ..॥7॥
ॐ ह्रीं अर्हं अनुपम रूपवन्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरी सम्मेद शिखर पे भगवन्, कर्म अघाति नशाये।
कूट कुंदप्रभ शांतिनाथ का, सिद्धक्षेत्र कहलाये॥ शांतिनाथ..॥8॥
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध स्वरूपाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

दुःख संकट में शांति प्रभु को ध्याइये।
प्रभु पूजा से अपने कष्ट मिटाइये।।
शांति प्रदाता प्रभु का शांति विधान है।
पूजक का निश्चय करता उत्थान ये।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुःख संकट हरणाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति सुधा हित भव्य प्रभु को ध्या रहे।
शांतिनाथ के गुण गा शांति पा रहे।। शांति..... ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिसुधा प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपस में झगड़ा होता कटु बोल से।
आप बचाते प्रभुवर कड़वे बोल से।। शांति..... ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं मधुरवाणी प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-शांति हित हम जिनायतन में गये।
आप्त ! तुम्हें हम पुण्योदय से पा गये।। शांति..... ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं आप्त रूपाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूल हुई जो भगवन् सारी माफ हो।
सद्बुद्धि दो मेरा शिवपथ साफ हो।। शांति..... ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्बुद्धि प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःख संकट या कैसी भी हो आपदा।
आप शरण हम छोड़ेंगे ना सर्वदा।। शांति..... ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजीव शरण प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भक्ति नित चित्त बसे मम भावना।
जिन पद पाने की हर दम है कामना।। शांति..... ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनभक्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरणों में तन-मन को शांति मिले।
प्रभु भक्ति से मुक्ति की चाबी मिले।। शांति..... ।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वशांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

कितनी भी पूजा करो, और करो उपवास।
समता और शांति बिना, व्यर्थ रहे उपवास॥
शांतिनाथ का हम करे, उत्तम शांति विधान।
प्रभु की पूजा अर्चना, करती शांति प्रदान॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं समता शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढ़ोंग दिखावा व्यर्थ कर, किया पाप का बंध।
किया प्रदर्शन धर्म में, हरो प्रभू मम बंध॥ शांतिनाथ..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वपाप हराय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से भक्ति ना करी, मन से किया न जाप।
वचनों से ना भजन कर, किया स्वयं बहु पाप॥ शांतिनाथ..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रययोग शुद्धि प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष के वश किया, मैंने अति संक्लेश।
क्षमा करो मम पाप सब, नष्ट होय सब क्लेश॥ शांतिनाथ..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षमाप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंधा हो अज्ञान में, किया अकारण क्रोध।
क्रोध शांत कैसे करूँ, दो प्रभु मुझको बोध॥ शांतिनाथ..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधकषाय निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान कषाय किया बहुत, किया सदा अपमान।
देव गुरु नवदेव का, किया नहीं सम्मान॥ शांतिनाथ..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं मानकषाय निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छोटी-छोटी बात में, करके मायाचार।
कपट जाल माया रची, बढ़ा लिया संसार॥ शांतिनाथ..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं मायाकषाय निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ कषायों में प्रबल, सारे पाप कराय।
लोभ तजे संतोष धर, इस हित प्रभु को ध्याय॥
शांतिनाथ का हम करे, उत्तम शांति विधान।
प्रभु की पूजा अर्चना, करती शांति प्रदान॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोभकषाय निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सखी छंद

जब रोग असाध्य सताये, तब धर्म नहीं मन भाये।
कानों का दर्द रुलाये, दाँतों का दर्द सताये॥
सिर दर्द व चक्कर आये, नेनों के रोग रूलाये।
हम शांति विधान रचाये, रोगों से मुक्ति पाये॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्णदन्तादि सर्व असाध्य रोगहराय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्दी खाँसी गर होवे, या बहु प्रकार ज्वर होवे।
या दिल का दौरा आये, या शुगर बी.पी. बढ़ जाये॥
कोमा लकवा हो जाये, या वचन बंद हो जाये ॥ हम.. ॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व विषम व्याधिहराय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःखते जब पीठ व गर्दन, तब काम न आवे सर्जन।
जब दुःखे रीढ़ की हड्डी, या कमर पैर की हड्डी॥
जब पेट दर्द हो जाये, पाचन शक्ति मर जाये ॥ हम.. ॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वरोग पीड़ा निवारणाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किड़नी पथरी की व्याधी, या हो लीवर की व्याधी।
कैंसर जब होता तन में, तब होय मरण भय मन में॥
जोड़ो का दर्द सताये, मंदिर भी जा ना पाये॥ हम.. ॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व प्राणांतक रोगहराय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्घटना जब घट जाये, आकस्मिक दुःख आ जाये।
कभी हाथ पैर कट जाये, रो रोकर समय बिताये॥
धन जन हानि हो जाये, जीते जी तब मर जाये ॥
हम शांति विधान रचाये, रोगों से मुक्ति पाये॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुर्घटना धनहानि निवारणाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःख में जग काम न आवे, सुख में साथी बन जावे।
जब पाप उदय अति आवे, परिजन दुश्मन बन जावे॥
मानसिक तनाव जब आये, चिंताहि चिता बन जाये॥ हम.. ॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वपरिजन मैत्रीकराय मनोव्याधि निवारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्बुद्धि ऐसी पाये, कभी प्रभु से दूर न जाये।
चाहे कुछ भी हो जाये, मन में जिन भक्ति समाये॥
सुख आये या दुःख आये, हम प्रभू को भूल न जाये॥ हम.. ॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकाल मध्यभक्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे शांतिनाथ परमेश्वर !, हो कामदेव तीर्थेश्वर।
हम तुमको हृदय बसाये, संकट में ना घबराये॥
मन वच काया से ध्यायें, प्रभु चरणन् शीश झुकाये॥ हम.. ॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं षोडश तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

कामदेव चक्री जिनस्वामी, तीर्थंकर शांतिश्वर स्वामी।
हम सब शांति विधान रचायें, श्रीफलादि संग अर्घ चढ़ायें॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयपदधारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धक्षेत्र व तीर्थक्षेत्र में, शांतिनाथ हैं सर्व क्षेत्र में।
ऊर्ध्व मध्य व अधोलोक में, शांतिनाथ है तीन लोक में॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व सिद्धक्षेत्र तीर्थक्षेत्र नगर जिनालय स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप बुद्धि अपनी विनशायें, सम्यक् पथ हमको मिल जाये।
शांति विधान कर प्रज्ञा पायें, सद्बुद्धि हम पाने आये॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञा प्रदायकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये विधान धनवृद्धि कराये, अर्थसिद्धि निर्दोष कराये।
मन-वच-तन से भक्ति रचायें, भक्ति भाव ही पुण्य बढ़ायें॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्थ सिद्धी प्रदायकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक व्रत हम सदा निभायें, देव-शास्त्र-गुरुवर को ध्यायें।
धर्म क्षेत्र में द्रव्य लगायें, दान धर्म नित करते जायें॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वलक्ष्मी वृद्धिकारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैकालिक प्रभु भक्ति रचायें, उसका फल अच्छा हम पायें।
द्रव्य भाव नो कर्म नशायें, शांतिनाथ की शरणा आये॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल पूजा भक्तिकरण समर्थाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

हस्तिनागपुर तीर्थ में, हुये चार कल्याण।
प्रभु को अर्घ चढ़ाय हम, करते शांति विधान॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं हस्तिनागपुर तीर्थ क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्मेदाचल तीर्थ से, पाया पद निर्वाण।
शांति सिद्ध जिनदेव का, करते यहाँ विधान॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्मेदाचल तीर्थ क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रामटेक श्री क्षेत्र में, शांतिनाथ भगवान।
पूजें हम प्रभु आपको, करते नित गुणगान॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं रामटेक क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बजरंग गढ श्री क्षेत्र में, सुन्दर शांतिनाथ।
अष्टद्रव्य से हम जजें, सदा झुकावें माथ॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं बजरंग गढ क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झालरापाटन जहाँ, ऊँचे शांतिनाथ।
नमन सदा हो आपको, अष्टद्रव्य के साथ॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं झालरापाटन क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजपुर भोपाल में, शांतिनाथ तीर्थेश।
पूजा कर हम आपकी, पायें सिद्ध प्रदेश॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं भोजपुर भोपाल क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्र संभाजीनगर में, बैठे शांतिनाथ।
पूजें हम प्रभु आपको, झुका चरण में माथ॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं संभाजीनगर क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ में आपकी, प्रतिमा बनी विशाल।
चढ़ा रहे हम आपको, अष्टद्रव्य की थाल॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित धर्मतीर्थ साम्राज्य नायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरी श्री क्षेत्र के, जिनवर शांतिनाथ।
हम सेवक पूजा करें, शांति पाने नाथ॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं अंजनगिरी क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिगरी में शोभते, प्रभुवर शांतिनाथ।
हम प्रभु की पूजा करें, पाने भव-भव साथ॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिगिरी कोथली क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शेर छंद)

श्री शांतिनाथ से अखण्ड धर्म चल रहा।
प्रत्येक प्राणी शांति पाने को मचल रहा॥
श्रीफल में ध्वजादि लगा पूर्णार्घ चढ़ायें।
श्री शांतिनाथ नाम का हम बिगुल बजायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित अखंड धर्मप्रवर्तक सर्व रोग, शोक, संकट, अपमृत्यु, दुर्घटना, अशांति कोरोना रोग निवारक, सुख, शांति, आरोग्य, सद्बुद्धि, धन-धान्य प्रदायक षोडशोत्तम तीर्थंकर चक्री, कामदेव श्री धर्मतीर्थ साम्राज्य नायक शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिनाथ के चरण में, करते शांतिधार।
प्रभु के पावन चरण में, वंदन बारम्बार॥

शांतये शांतिधारा

दोहा- धर्मतीर्थ नायक प्रभु, शांतिनाथ भगवान।
पुष्पों की वृष्टि करें, करो नाथ कल्याण॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव शांतिं कुरु-कुरु ह्रीं नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सोरठा- जय-जय शांतिनाथ, जयमाला प्रभू की पढ़ें।
पायें शांति अपार, सर्व अशांति दूर हो॥

नरेन्द्र छंद

जय-जय शांतिनाथ जिनेश्वर, तुम हो शांतिप्रदाता।
शांतिनाथ ऐसे तीर्थंकर, जिनको जन-जन ध्याता॥

हमें शांति दो हे शांतीश्वर !, निशदिन तुमको ध्यायें।
शांति से शांति विधान कर, अद्भुत शांति पायें॥1॥
पूर्व भवों में शांति प्रभु ने, करी तपस्या भारी।
पूजा करते शांति प्रभु की, सर्व लोक संसारी॥
बने आप श्रीषेण राज तब, दिया दान मुनियों को।
उसी दान के महापुण्य से, पाया भोगभूमि को॥2॥
प्रथम स्वर्ग में बने श्रीप्रभ, स्वर्ग सुखों को पाया।
अमिततेज विद्याधर बनकर, अमित सुखों को पाया॥
करी समाधि अंत समय में, स्वर्ग तेरहवाँ पाया।
अपराजित बलभद्र बने वो, संयम को अपनाया॥3॥
अच्युतेन्द्र मुनिराज बने तब, उत्सव नित्य मनायें।
चक्री से वज्रायुध मुनि बन, अहमिंद्र पद पाये॥
मेघराज मुनि करे तपस्या, सोलहकारण भाये।
तीर्थंकर प्रकृति को बांधे, चरम स्वर्ग अब पाये॥4॥
स्वर्ग तजा माँ के उर आये, ऐरा माँ हर्षाये।
विश्वसेन पितु के आंगन में, धनपति रत्न गिराये॥
नगर हस्तिनापुर के राजा, शांतिनाथ कहलाये।
कामदेव तीर्थंकर चक्री, सबको शांति दिलाये॥5॥
जब से आप धरा पर आये, धर्म अखंड चलाया।
हस्तिनागपुर में प्रभु जन्मे, सारा जग हर्षाया॥
विश्वसेन ऐरा नंदन से, हुई विश्व में शांती।
इसलिये हर प्राणी भगवन्, ढूँढ़े आतम शांती॥6॥
सच्चे मन से जो प्रभुवर का, शांति विधान रचाये।
बिन माँगे ही उसकी इच्छा, पूरण सब हो जाये॥
अनपढ़ भी बहु ज्ञानी बनकर, जग में नाम कमाये।
व्यापारी धनश्री पाकर के, दान धरम करवाये॥7॥

सर्व कार्य में मिले सफलता, क्रम से शिवपद पाये।
धर्म अर्थ व काम मोक्ष का, वो सच्चा फल पाये।।
'आस्था' से जो शांति मंत्र का, जाप सदैव रचाये।
त्रय गुप्तिधर समिति व्रतों से, जिनवर सम बन जाये।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, शोक, अशांति, संकटहराय, सुख, शांति, ऐश्वर्य, आरोग्य श्री प्रदायकाय, ऋद्धि-सिद्धि, व्यापार वृद्धि, कामना पूर्ण करणाय, कल्पतरु, धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री धर्मतीर्थ साम्राज्य नायक, सुज्ञान प्रदायक अखंड शांतिदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिनाथ भगवान को 'आस्था' करे प्रणाम।
आस्था से आस्था वरे, निश्चय मुक्ति धाम।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

आरती

(तर्ज - माईन-माईन...)

शांति विधान रचाकर हम सब, जगमग दीप जलायें।
शांतिनाथ की आरती करके, सुख-शांति पा जायें।।
बोलो शांतिनाथ की जय-2

नगर हस्तिनापुर के राजा, तीन पदों के धारी।
मोक्ष गये सम्मेदशिखर से, वरली शिवपुर नारी।।
धर्म सूर्य ऐसा चमकाया-2, अविरल चलता आये। शांतिनाथ....

दुःख संकट में तुमको स्वामी, भक्त सदा ही ध्यायें।
भव-भव की सारी विपदायें, क्षणभर में मिट जायें।।
शांतिनाथ है नाम तुम्हारा-2, सबको शांति दिलाये। शांतिनाथ....

भक्ति की झंकार बजे यो, जैसे घुँघरु बाजे।
छम-छम नृत्य रचायें भविजन, ढोल ढमाढम बाजे।।
केवल ज्योति जगाने भगवन्-2, 'आस्था' शीश झुकाये। शांतिनाथ....

***

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा- तीर्थंकर चक्री प्रभु, कामदेव तीर्थेश।
शांतिनाथ भगवान को, नमते भव्य हमेश॥
चालीसा प्रभु का पढ़ें, पाने शांति द्वार।
शांतिनाथ के नाम से, मिलती शांति अपार॥

चौपाई

शांतिनाथ को शीश झुकायें, श्रद्धा से चालीसा गायें।
शांति प्रभु की शरणा पायें, हम भी प्रभु से शांति पायें॥1॥
शांतिनाथ को हृदय बसायें, सर्व अशांति नाथ मिटायें।
रागद्वेष का मैल नशायें, कर्म बेल अपनी विनशायें॥2॥
ॐ शांति हम रटते जायें, मंत्र शांति का जपते जायें।
शांती-शांती कहते जायें, जीवन में शांती आ जाये॥3॥
नाम शांति अति मंगलकारी, जय बोलें हम सदा तुम्हारी।
त्रिभुवन तिलक यशस्वी स्वामी, त्रयपद धारी सबके स्वामी॥4॥
प्रभु के पूर्व भवों को जानें, उनकी महिमा को पहिचानें।
नृप श्रीषेण आहार कराये, उत्तम फल उत्तम गति पायें॥5॥
भोगभूमि के आर्य बने वो, उत्तम सुख का भोग करें वो।
भोगभूमि तज देव बने वो, विद्याधर नृप श्रेष्ठ बने वो॥6॥
मुनि बन उत्तम सुर तन पायें, पुनः मनुज भव उत्तम पाये।
प्रभुवर अब बलभद्र कहाये, मुनि बन उत्तम सुरपद पायें॥7॥
वज्रायुध चक्री कहलाये, वैभव तज मुनिवर बन जायें।
देवों के अहमिन्द्र कहाये, ऐसा उत्तम पद प्रभु पायें॥8॥
चक्री अब मुनि दीक्षा पायें, मुनिवर प्रतिमा योग लगायें।
एक वर्ष का ध्यान लगायें, जीव बामियाँ बहुत बनाये॥9॥
सर्प लता मुनि तन चढ़ जाये, वन्य जीव मुनि भक्ति रचायें।
आपस में मिलजुल कर खेले, वैरभाव तजकर सब खेलें॥10॥

मध्यम ग्रैवेयक मुनि पायें, स्वर्ग तजें भूपति पद पायें।
नाम मेघरथ अब कहलाये, श्रावक व्रत वे नित्य निभायें॥11॥
पूज्य पिता तीर्थंकर घनरथ, उनसे दीक्षित हुये मेघरथ।
सोलह दिव्य भावना भायें, तीर्थंकर प्रकृति बंध जायें॥12॥
प्रायोपगमन समाधि करते, अंतिम स्वर्ग मुनीश्वर वरते।
आयु छह महीने रह जाये, धरती पे हलचल मच जाये॥13॥
धनपति सुन्दर नगर सजायें, रत्नवृष्टि कर पुण्य कमाये।
हस्तिनपुर को करें सुसज्जित, देवों द्वारा नगरी वंदित॥14॥
ऐरा माता स्वप्न सुनायें, विश्वसेन शुभफल बतलायें।
सर्व नगर में आनंद छायें, नृत्यगान सुर बाला गायें ॥15॥
स्वर्ग छोड़ माँ के उर आये, गर्भकल्याणक इन्द्र मनायें।
जन्म कल्याणक शांति दिलाये, सर्व लोक में उत्सव छाये॥16॥
तप कल्याणक राग छुड़ाये, मुनि मुद्रा शिवमार्ग दिखाये।
ज्ञान कल्याणक ज्ञान बढ़ाये, सबको प्रभु के पास बुलाये॥17॥
मोक्ष कल्याणक मोह छुड़ाये, मोक्ष मार्ग को सफल बनाये।
कर्म विजय का सूत्र सिखायें, प्रभुवर मोक्ष महल को पायें॥18॥
जिस तिथि में कल्याणक आये, काल भाव मंगल कहलाये।
शुभ फलदायी दिन कहलाये, अशुभ भाव मन से मिट जाये॥19॥
चालीस दिन चालीसा गायें, दीप धूप संग हवन करायें।
सर्व दु:खों से प्रभु बचायें, 'आस्था' से प्रभु के गुण गाये॥20॥

दोहा– शांतिनाथ जिन शांति दो, हरों हमारे क्लेश।
हम आये तव चरण में, पाने शांति विशेष॥
समिति गुप्ति व्रत हम धरें, हरने अघ विकराल।
नमन वंदना नाथ की, करें भव्य त्रयकाल॥

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नम: स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

कल्पतरु श्री कुन्थुनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	राजा शूर (सूर्यसेन)
माता	–	रानी श्रीकांता
आयू	–	95 हजार वर्ष
ऊँचाई	–	35 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	श्रावण कृष्ण दशमी
जन्म	–	वैशाख शुक्ल प्रतिपदा
जन्म स्थान	–	हस्तिनापुर
दीक्षा	–	वैशाख शुक्ल प्रतिपदा
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	धर्ममित्र राजा
कैवल्य ज्ञान	–	चैत्र शुक्ल तृतीया
गणधर	–	स्वयंभू आदि 35
कुल मुनि	–	60 हजार
गणिनी	–	भाविता आर्या
कुल आर्यिकायें	–	60 हजार 350
श्रावक	–	2 लाख
श्राविका	–	3 लाख
मोक्ष	–	वैशाख शुक्ल एकम्
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	स्वर्ण
चिह्न	–	बकरा
चैत्यवृक्ष	–	तिलक

शासक देव

यक्ष	–	गन्धर्व
यक्षिणी	–	जया
क्षेत्रपाल	–	(1) यक्षनाथ (2) भूमिनाथ (3) देशनाथ (4) विनयनाथ।

कल्पतरु श्री कुंथुनाथ विधान

स्थापना (नरेन्द्र छंद)

कामदेव चक्री तीर्थंकर, कुंथुनाथ कहलाते।
तीन पदों के धारी प्रभु को, तीन बार हम ध्याते।।
हस्तिनागपुर में प्रभु जन्में, सुर नर कीर्त्तन गायें।
हम भी पूजा करने प्रभु की, पुष्प हाथ में लाये।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्पतरु श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

निर्मल पवित्र नीर से अभिषेक हम करें।
त्रय रत्न प्राप्ति हेत नाथ प्रार्थना करें।।
रक्षा करें सब जीव की श्री कुंथुनाथ जी।
अर्चा करें पूजा करें हम कुंथुनाथ की।।1।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन लगायें चरण में हम नाथ आपको।
भवतापहारी कुंथुनाथ को प्रणाम हो।। रक्षा..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पाई है नाथ आपने अखंड संपदा।
अक्षत चढ़ाके हम भी पायें वो ही संपदा।। रक्षा..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वागत करें हम आपका पुष्पों के हार से।
हर दिन चढ़ायें आपको पुष्पों का हार ये।। रक्षा..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर मिठाई आपको चढ़ायें हाथ से।
सब रोग हरने विनती करें कुंथुनाथ से।।
रक्षा करें सब जीव की श्री कुंथुनाथ जी।
अर्चा करें पूजा करें हम कुंथुनाथ की।।5।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब भी जायें दर्श को हम दीप जलायें।
घृत दीप ले जिनराज की हम आरती गायें।। रक्षा..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपों के घट में धूप खिरा कर्म जलायें।
हे नाथ ! हम भी कर्म नशा शांति को पायें।। रक्षा..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नारंगी केला द्राक्ष फल के थाल ला रहे।
हे नाथ ! फल की माल बना हम चढ़ा रहे।। रक्षा..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अष्ट द्रव्य की हम थाल चढ़ायें।
हम कुंथुनाथ देव की सद्भक्ति रचायें।। रक्षा..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- कुंथुनाथ भगवान का, करते भव्य विधान।
प्रभु चरणों में भक्ति से, करते नित्य प्रणाम।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अर्द्ध नरेन्द्र छंद)

चरम स्वर्ग से चयकर भगवन्, श्रीकांता उर आये।
काश्यप गोत्री सूरसेन नृप, स्वप्न रहस्य बतायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्गच्युत गर्भवासाय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण कृष्णा दशमी के दिन, गर्भकल्याण मनायें।
मात–पिता का सुर देवीगण, मिल अभिषेक रचायें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावण कृष्णा द्वितीया पूजिताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु प्रकार वे पूजा करते, अतिशय पुण्य कमायें।
प्रभु के कारण मात–पिता भी, जग में पूजें जायें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व देवदेवी पूजिताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी वैशाख तिथि एकम को, जन्म लिया प्रभुवर ने।
वसुधा को भी पूज्य बनाया, आकर श्री जिनवर ने।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकम तिथि पूजिताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के जन्म समय में फैली, सुख–शांति दुःखहारी।
नरकों से स्वर्गों तक फैली, शांति महा सुखकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोक शांतिदायकाय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म लिया जिस नगर प्रभु ने, हस्तिनपुर कहलाये।
हस्तिनपुर में सुरगण आये, ऐरावत संग लाये।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं जन्म तीर्थ पूजिताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हस्तिनपुर में आये सुरगण, फेरी तीन लगायें।
नमन करें वे कुंथुनाथ को, पूजें नृत्य रचायें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरगण फेरीकृत पूजिताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म नगर में जाकर सुरगण, भाव सहित सिर नायें।
शचि माता के सन्मुख जाकर, प्रभु का संस्तव गाये।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं शचिकृत स्तुतीश्वराय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्राणी प्रभु के दर्शन पा, अति प्रसन्न मन होती।
माता की वो भक्ति रचाकर, पाती सम्यक् ज्योती।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं शची इंद्राणी पूजिताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायामयी निद्रा में माँ को, सुला रही इंद्राणी।
प्रभुवर को हाथों में लेकर, खुश होती इंद्राणी॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं शची हस्ते जिनशोभिताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्राणी जिन बालप्रभु को, देवराज को देती।
नयन हजार बनाये सुरपति, शची बलाई लेती॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुरकृत सहस्र नयन विलोकिताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो नयनों से तृप्त न होवे, नयन हजार बनाये।
बालरूप को हृदय बसाये, सुरपति संस्तुति गाये॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्मेन्द्र कृत स्तुतीश्वराय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐरावत गज बाल प्रभु को, मेरु पर ले जाये।
अगले भव ऐरावत गज भी, मुनि बन जिनपद पाये॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऐरावतगज पुण्यवृद्धि कराय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिणेन्द्र प्रभु की भक्ति से, अपने कर्म नशायें।
अष्ट कुमारी मात-पिता शचि, ये सब शिवपुर पायें॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजीव कल्याणकारकाय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव देवियाँ सुर किन्नरियाँ, उत्तम भक्ति रचायें।
करें अप्सरा नृत्य मनोहर, जन्म कल्याण मनाये॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं असंख्य देवदेवी पूजिताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाण्डुक वन के सिंहासन पे, प्रभुवर को बैठाये।
इक हजार अठ कलशों द्वारा, प्रभु का न्हवन कराये॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्र अष्टोत्तर कलशेन अभिषिक्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शचीपति वा इंद्राणी दोनों, मिल अभिषेक रचायें।
बाल प्रभु का न्हवन देखकर, सुर मुनि आनंद पायें॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्र–इन्द्राणी कृत अभिषेक प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाशांति मंत्रों के द्वारा, पाण्डुक मंत्रित होता।
प्रभु पर पड़ती धाराओं से, मेरु क्षीर सम होता॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षीराभिषेक महाशांति मंत्र पूजिताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब होता अभिषेक प्रभु का, श्रमण देखने आते।
अपना दृढ़ सम्यक्त्व करें वो, निश्चित जिनपद पाते॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋद्धिधर ऋषि अभिषेक दृश्याय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र प्रभु का लांछन लखकर, नाम करण शुभ करता।
प्रभु नाम के जयकारों से, सबको हर्षित करता॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्रेण नामकरण प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्त्राभूषण बाल प्रभु को, इंद्राणी पहनाती।
इसी पुण्य से वो इंद्राणी, मुनि बन कर्म नशाती॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्त्री पर्याय छेदकाय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फिर से शचीपति बाल प्रभु को, सहस नयन से देखे।
अगले भव वो सिद्ध बनेंगे, जिन आगम उल्लेखे॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्र नयन अवलोकित सुर पूजिताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नृत्य रचाते प्रभु गुण गाते, प्रभु को वापिस लाये।
मात–पिता को देते प्रभु को, जग में खुशियाँ छायें॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वत्र आनंदवर्धिताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव चक्री तीर्थंकर, कुंथुनाथ कहलाये।
धर्मतीर्थ पर कुंथुनाथ का, भव्य विधान रचाये।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयपद शोभिताय श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भपात जो कभी करें ना, सबसे प्रेम करें जो।
ऐसा ही नरपुंगव आगे, गर्भ कल्याण वरें वो।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरुओं के उत्सव, जो अविराम मनाये।
ऐसे मानव मुनि बन आगे, जन्म कल्याणक पायें।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं जन्म कल्याणक प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आदि चउविध संघों को, जो आहार कराये।
गुरु सेवा से आगे वो ही, तप कल्याणक पाये।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं तपकल्याणक प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान साधना में गुरुओं के, जो सहयोगी बनते।
वो ही आगे केवलज्ञानी, तीर्थंकर जिन बनते।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भव्यात्मा मृत्यु महोत्सव, स्वयं करें करवाये।
उससे आगे तीर्थंकर बन, मोक्षकल्याणक पाये।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणकल्याणक प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आपका ये विधान जो, भव्य करें करवाये।
सर्व आपदा विनशाये वो, सर्व संपदा पाये।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व आपदा विनाशक संपदा प्रदायकाय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुनाथ के इस विधान से, विद्या बुद्धि बढ़ती।
प्रभु जैसा तप अपनाने से, मोक्ष सिद्धि भी मिलती॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं विद्याबुद्धि मोक्षसिद्धि प्रदायकाय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिनवर ! तेरी पूजा से, मिटे रोग बाधायें।
सर्व कर्म दुःख शोक मिटाने, हम तेरे दर आये॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकर्म दुःख, रोग–शोक विनाशकाय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म समय से दश अतिशय के, धारी प्रभु कहलाते।
कुंथुनाथ भगवन् को हम सब, भर–भर द्रव्य चढ़ाते॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्म संबंधी दश अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी बने प्रभु जब, दश अतिशय फिर पायें।
अपने जीवन में अतिशय हो, इस हित प्रभु को ध्यायें॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञान संबंधी दश अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्ध मागधी भाषा प्रभु की, चार कोस तक जाये।
चारों दिश के सारे प्राणी, प्रभु वाणी सुन पाये॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्धमागधी भाषा देवकृत अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के कारण सब जीवों में, मित्र भाव बढ़ जाये।
वैरी प्राणी वैर छोड़कर, प्रभु समीप बस जाये॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं परस्पर मैत्री देवकृत अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी दिशायें निर्मल होती, जहाँ केवली भगवन्।
आँधी वर्षादिक् न होती, स्वच्छ रहे नित तन–मन॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मल दिशा देवकृत अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आसमान भी निर्मल होता, नभ प्रांगण हो निर्मल।
देवों द्वारा अतिशय होते, भक्तों का हो मंगल॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मल आकाश देवकृत अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह ऋतुओं के पुष्प फलादि, एक साथ में खिलते।
जहाँ विराजे केवलज्ञानी, अतिशय सुरगण करते॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वऋतु पुष्प फलादि अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक योजन तक पृथ्वी दर्पण, देव बना हर्षायें।
तृण कंटक से रहित धरा ये, सुन्दर स्वच्छ कहाये॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वी दर्पणवत अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो विहार प्रभु का जिस दिश में, सुरगण कमल बिछाये।
पैर धरे ना प्रभु कमलों पर, अधर गमन कर जाये॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ण कमल अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय-जयकार करें प्रभुवर की, देव-देवियाँ नभ में।
जय-जयकार प्रभु की सुनकर, श्रद्धा जागी सब में॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं जय-जयकार ध्वनि प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु स्पर्शित मंद हवायें, रोग असाध्य मिटायें।
देव चलाये मंद हवा को, सबको सुख पहुँचाये॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंद सुगंध बयार देवकृत अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि होती, होय सुगंधित वर्षा।
खुशहाली होती धरती पर, भक्तों का मन हर्षा॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं गंधोदक वृष्टि देवकृत अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि पर कांटे नहीं रहते, निष्कंटक हो धरती।
साफ करे भूमि को सुरगण, दर्पण सम शुभ लगती।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूमि कंटक रहित देवकृत अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्षमयी होती जगसृष्टि, हर्षें दशों दिशायें।
सब प्राणी आनंद मनाते, भवि जन आनंद पायें।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं हर्षमयी सब सृष्टि देवकृत अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र प्रभु के विहार में, यक्ष चले प्रभु आगें।
चम-चम करता धर्मचक्र ये, दर्शन से अघ भागें।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्र देवकृत अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्र चमर घंटा ध्वज झारी, पंखा स्वस्तिक दर्पण।
मंगल द्रव्य अनेकों सुन्दर, करते देव समर्पण।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्ट मंगल द्रव्य देवकृत अतिशय प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

कुंथुनाथ की पूजा अर्चा हम करें।
श्री सम्मेद शिखर से प्रभु शिवपुर वरें।।
श्रीफल ध्वज पूर्णार्घ सजा कर ला रहे।
हम विधान कर प्रभु को शीश झुका रहे।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, शोक, अशांति, अहम् क्रोधादि कषाय निवारकाय, ऋद्धि-सिद्धी, सुख-संपत्ति, यश कीर्ति, बुद्धि ऐश्वर्य समृद्धि, धन-धान्य, शांति प्रदायकाय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- त्रयपद धारी नाथ तुम, दो रत्नत्रय दान।
करो शांति त्रय लोक में, कुंथुनाथ भगवान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- सर्व सुगंधित फूल की, चढ़ा रहे हम माल।
पुष्प चढ़ायें जाप कर, पाने सुख की माल।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- कुंथुनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।
अर्घ सजा फेरी करें, कटे कर्म विकराल।।

(नरेन्द्र छंद)

जय-जय कुंथुनाथ जिनस्वामी, जय-जय हो जिनदेवा।
बड़े पुण्य से हमें मिली है, चरण कमल की सेवा।।
मात-पिता भी धन्य हुये हैं, तीर्थंकर प्रभु पाकर।
करते मात-पिता भी अर्चा, तव चरणों में आकर।।1।।
चक्री का पद पाया प्रभु ने, उसे छोड़ वन जायें।
पंचमुष्टि से लोचन करके, मुनि मुद्रा अपनायें।।
केवलज्ञानी बने प्रभुवर, सबको मार्ग बतायें।
श्रावक या मुनिव्रत जो पाले, निश्चित वो सुख पाये।।2।।
व्रत उपवास बताये प्रभु ने, भवि सुन व्रत अपनाये।
जो कोई इक व्रत भी पाले, आगे जिनपुर पाये।।
व्रत का फल अच्छा ही होता, दुःख से हमें बचाये।
नित्य नियम जप-तप करने से, राग-द्वेष नश जाये।।3।।
करें सदा हम प्रभु की पूजा, पूजा पुण्य बढ़ाये।
इस विधान से नाथ हमारी, कर्म विधी नश जाये।।
सब जिनवर ने यही बताया, पूजा भक्ति रचाये।
अपने कर्त्तव्यों को पालें, कर्म सभी विनशायें।।4।।

दृढ़ता से जो व्रत को पाले, मोक्ष अवश ही पाये।
व्रत टूटे ना कभी हमारा, यही भावना भायें।।
अव्रत छोड़े व्रत हम पाले, समिति गुप्ति तप धारें।
'आस्था' से हम प्रभु को ध्याकर, अपना भाग्य सवारें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, दुःख, अशांति, पीड़ा, संकट, कष्ट, सर्व आपत्ति हराय ऋद्धि-सिद्धी, व्रत संयम, समिति गुप्ति, सुख-शांति प्रदायकाय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कामदेव चक्री प्रभु, कुंथुनाथ भगवान।
'आस्था' से प्रभु आपका, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज - झुम-झुम...छन- न न बाजे...)

मंगल दीप जलायें, हम आरती गायें।
आरती गायें, हम भक्ति रचायें।। मंगल दीप...

1. **हस्तिनपुर में जन्में स्वामी, अन्तर्यामी केवलज्ञानी।**
   जन्म कल्याण मनायें...हम....
2. **सुरसेन के राजदुलारे, श्रीकांता सुत नयन सितारे।**
   प्रभु मूरत मन भाये...हम....
3. **त्रयपद धारी कुंथु जिनेशा, भक्ति करते मनुज हमेशा।**
   भक्ति नृत्य रचायें...हम....
4. **सब दुःख संकट हरते स्वामी, सबकी अरजी सुनते स्वामी।**
   'आस्था' से हम ध्यायें...हम....

***

श्री कुंथुनाथ चालीसा

दोहा- कुंथुनाथ भगवान को, मन मंदिर में धार।
जहाँ-जहाँ जिनदेव हैं, उनको नमन हजार।।
परमेष्ठी जिन शास्त्र को, वंदन बारम्बार।
चालीसा प्रभु का पढ़ें, आकर प्रभु के द्वार।।

चौपाई

कुंथु प्रभु की जय-जय बोलें, कुंथु नाम का अमृत घोलें।
प्रभु बतायें धर्म विवक्षा, सर्व जीव की करते रक्षा।।1।।
प्रभुवर का चालीसा गायें, चालीस दिन तक पाठ रचायें।
शुद्धि पूर्वक प्रभु को ध्यायें, शुद्धि हमको सिद्धि दिलाये।।2।।
नगर हस्तिनापुर में जन्में, पूजें प्रभु को रात दिवस में।
सूरसेन के राजदुलारे, श्रीकांता माता के प्यारे।।3।।
पंचकल्याणक जिस दिन आये, अतिशयकारी भक्ति रचायें।
पंच पाप से मुक्ति पायें, श्रद्धा से प्रभु के गुण गायें।।4।।
हर भव में प्रभु करें तपस्या, प्रभु बताये वही तपस्या।
नगर सुसीमा राजा सिंहरथ, चढ़ गये राजा संयम के रथ।।5।।
यतीवृषभ की शरणा आयें, इन गुरु से मुनि दीक्षा पायें।
ज्ञानार्जन वे करते जायें, द्वादशांग पाठी बन जायें।।6।।
सोलह दिव्य भावना भाये, तीर्थंकर पदवी बंध जाये।
मरण समाधि को अपनायें, चरम स्वर्ग में मुनिवर जायें।।7।।
तैंतीस सागर आयु पायें, जैनागम अभ्यास बढ़ायें।
जब आयु कुछ पल रह जाये, प्रभु सन्मुख आ ध्यान लगायें।।8।।
हस्तिनपुर के भाग्य जगायें, मात-पिता को सुर-नर ध्यायें।
जन्म हुआ जब कुंथुनाथ का, धर्म सूर्य का सुप्रभात था।।9।।
मेरु पे अभिषेक करायें, कुंथुनाथ का नाम बतायें।
सुरपति बकरा चिह्न बताये, सहसनाम संस्तव तब गाये।।10।।

अभिनय सुन्दर इन्द्र रचाये, पूर्व भवों का चरित बतायें।
इंद्राणी श्रृंगारित करती, अपना तन-मन पावन करती॥11॥
तन कांति सोने सम पायें, सहस्र पंचानव आयु पायें।
कामदेव चक्री पद पाये, छट्टे चक्रवर्ती मन भायें॥12॥
सत्रहवें तीर्थेश कहायें, तेरहवें मन्मथ कहलाये।
षट् खण्डों को जय कर आये, वन विहार प्रभु करके आये॥13॥
जन्म तिथि को दीक्षा धारें, तप कल्याण मनायें सारे।
चौथा ज्ञान जिनेश्वर पाये, आगे वो आहार को जाये॥14॥
जिस चौके में जिनवर आयें, उस घर को प्रभु स्वर्ग बनायें।
दाता प्रभु संग मुक्ति पाये, जो प्रभु को आहार कराये॥15॥
पंचाश्चर्य दान में होते, भाग्यवान वे दाता होते।
दुर्गति में वो कभी न जाये, दान धर्म का फल वो पाये॥16॥
चार कल्याणक हुये जहाँ पर, पूजें भू को सुरगण आकर।
तीर्थ हस्तिनापुर हम जायें, प्रभु चरणों का दर्शन पायें॥17॥
समवशरण प्रभु का रच जाये, प्रभु वाणी सुनने सब आये।
भूख प्यास संकट मिट जाये, रोग शोक से मुक्ति पाये॥18॥
प्रभु चरणों में मिटे बीमारी, स्वस्थ रहे सारे संसारी।
प्रज्ञावान सभी बन जायें, गुप्ति रत्नत्रय गुण पायें॥19॥
श्री सम्मेदशिखर प्रभु आये, कर्म नाश प्रभु शिवपुर जायें।
प्रथम दर्श प्रभुवर के पायें, अर्घ चढ़ायें शीश झुकायें॥20॥

दोहा- कामदेव कुंथु प्रभु, चक्रवर्ती भगवान।
षट् खण्डों को छोड़कर, करें जगत् कल्याण॥
'आस्था' से करते नमन, दो मुक्ति सोपान।
चालीसा हम पढ़ रहे, करने निज कल्याण॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री अरहनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	सुदर्शन
माता	–	सुमित्रा रानी
आयू	–	84 हजार वर्ष
ऊँचाई	–	30 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	फाल्गुन शुक्ल तृतीया
जन्म	–	मार्ग शीर्ष चतुर्दशी
जन्म स्थान	–	हस्तिनापुर
दीक्षा	–	मार्ग शीष शुक्ल ग्यारस
सहदीक्षित	–	1000
प्रथम दाता	–	अपराजित राजा
कैवल्य ज्ञान	–	कार्तिक शुक्ल पक्ष 12
गणधर	–	कुम्भार्य आदि 30
कुल मुनि	–	50 हजार
गणिनी	–	यक्षिला आर्या
कुल आर्यिकायें	–	60 हजार
श्रावक	–	1 लाख 60 हजार
श्राविका	–	3 लाख
मोक्ष	–	चैत्र कृष्ण अमावस्या
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	सुनहरा
चिह्न	–	मछली
चैत्यवृक्ष	–	आम्र

शासक देव

यक्ष	–	महेन्द्र
यक्षिणी	–	विजया
क्षेत्रपाल	–	(1) गिरीनाथ (2) गव्हरनाथ (3) वरुणनाथ (4) मैत्रनाथ।

कर्म नाशक श्री अरहनाथ विधान

स्थापना (नरेन्द्र छंद)

अरहनाथ हस्तिनपुर जन्में, तीन पदों के धारी।
तीन रत्न हम पाने आये, दाता तुम त्रिपुरारी।।
करें नाथ आह्वान भाव से, पुष्प हाथ में लाये।
अरहनाथ का कर विधान हम, कर्म शत्रु विनशायें।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

अरहनाथ जिनदेव की, अर्चा कर्म नशाय।
जल से हम पूजा करें, तीन रोग मिट जाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से पूजा करें, जय चक्री जिननाथ।
गंध प्रभु के चरण की, लगा रहे हम माथ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत की थाली लिये, आये प्रभु के द्वार।
अक्षत से पूजा करें, पाने शिवपुर द्वार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रंगों के सुमन, बना पुष्प के हार।
मन्मथ मनभू नाथ की, भक्ति करें सुखकार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन से करें, प्रभु की पूजा भव्य।
क्षुधा रोग हम नाशने, चढ़ा रहे शुचि द्रव्य।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घोर अंधेरा जगत् का, घृत का दीप मिटाय।
मोह अंधेरा नाशने, प्रभु को दीप चढ़ाय॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व सुगंधित शुद्ध ले, चढ़ा रहे हम धूप।
अष्ट कर्म को नाशकर, पायें प्रभु सम रूप॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में श्रेष्ठ फल, वो है मोक्ष मुकाम।
हरे-भरे फल से भजें, प्रभु को आठों याम॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ की अर्चना, अष्ट द्रव्य के साथ।
हम नमते प्रभु आपको, सदा झुकाके माथ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- मीन चिन्ह प्रभु आपका, शुभ सूचक कहलाय।
भवि जन भव्य विधान कर, सुख-समृद्धि बढ़ाय॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

ज्ञानावरणी कर्म नशाया आपने।
ज्ञान अनंत जगाया प्रभुवर आपने॥
अरहनाथ प्रभु का विधान हम कर रहे।
अष्ट कर्म को नशने हम सब भज रहे॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक अनंतज्ञान प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण नशाया आपने।
दर्शन गुण को पाया प्रभुवर आपने॥ अरहनाथ..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनावरणी कर्म विनाशक दर्शन गुण प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का राजा विनशाया मोहनी।
सुख अनंत प्रगटाया प्रभु छवि सोहनी।।
अरहनाथ प्रभु का विधान हम कर रहे।
अष्ट कर्म को नशने हम सब भज रहे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोहनीय कर्म विनाशक अनंतसुख प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय विनशाया निज के ध्यान से।
पाया वीर्य अनंत अरह भगवान ने।। अरहनाथ..।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अंतराय कर्म विनाशक अनंत वीर्य गुण प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म वेदनीय विलय किया प्रभु आपने।
अव्याबाध परम गुण पाया आप ने।। अरहनाथ..।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेदनीय कर्म विनाशक अव्याबाध गुण प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म को नष्ट किया भगवान ने।
गुण सूक्ष्मत्व जगाया श्री भगवान ने।। अरहनाथ..।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं नामकर्म विनाशक सूक्ष्मत्व गुण प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म को नाश किया जिनराज ने।
अगुरुलघुगुण प्रगट किया जिनराज ने।। अरहनाथ..।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं गोत्र कर्म विनाशक अगुरुलघु गुण प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म विनशाया श्री भगवान ने।
अवगाहन गुण पाया जिन भगवान ने।। अरहनाथ..।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं आयु कर्म विनाशक अवगाहन गुण प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घातिकर्म को नाश केवली बन गये।
सर्व अघाति नाश प्रभु शिवपुर गये।।
अरहनाथ प्रभु का विधान हम कर रहे।
अष्ट कर्म को नशने हम सब भज रहे।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं घाति अघाति कर्म विनाशक अनंत गुण प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद हैं ज्ञानावरणी कर्म के।
हम भी इन्हें नशायें सच्चे धर्म से।। अरहनाथ..।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचविध ज्ञानावरणादि कर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी जिन नौ विध कहें।
इन्हें नशाने हम प्रभु की शरणा लहें।। अरहनाथ..।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं नवविध दर्शनावरणी कर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साता और असाता जिसके भेद हैं।
वेदनीय के कहलाये उपभेद ये।। अरहनाथ..।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वयविध वेदनीय कर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय के भेद अट्ठाईस दुःख करें।
मोहनाश प्रभु भक्ति करें मुक्ति वरें।। अरहनाथ..।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशति मोहनीय कर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार भेद बतलाये आयु कर्म के।
उन्हें नशाने लीन रहे जिन धर्म में।।
अरहनाथ प्रभु का विधान हम कर रहे।
अष्ट कर्म को नशने हम सब भज रहे।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विध आयुकर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म के भेद त्रिनवति[1] जानिये।
पुण्य-पाप द्वय नाम शुभाशुभ मानिये।। अरहनाथ..।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनवति नामकर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म के उच्च-नीच दो भेद हैं।
जिनवर के नश जाते दोनों भेद ये।। अरहनाथ..।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वयविध गोत्रकर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय के भेद बतायें पाँच हैं।
अंतराय विनशायें पूजा दान से।। अरहनाथ..।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचविध अंतरायकर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय पदधारी अरहनाथ को है नमन।
कामदेव चक्री तीर्थंकर को नमन।। अरहनाथ..।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयपदधारी श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप प्रकृति नाशी त्रेसठ आपने।
हम भी पूजें प्रभु को कर्म विनाशने।। अरहनाथ..।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं पापरूप त्रिषष्टि कर्म प्रकृति विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. 93

शेष नशाई पुण्य प्रकृति आपने।
हमने प्रभु को ध्याया पुण्य प्रकाशने।।
अरहनाथ प्रभु का विधान हम कर रहे।
अष्ट कर्म को नशने हम सब भज रहे।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्य प्रकृति विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूल कर्म का भेद बताया एक ही।
द्रव्य कर्म और भाव कर्म द्वय विध सही।। अरहनाथ..।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यकर्म भावकर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार भेद भी इन कर्मों के जानिये।
प्रकृति आदिक चार भेद पहचानिये।। अरहनाथ..।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विध कर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणादिक कर्मों के भेद हैं।
जो भी कर्म नशायें बने अभेद हैं।। अरहनाथ..।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानावरणादि वसुविध कर्म प्रकृति विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक शतक अड़तालीस उत्तर भेद हैं।
कर्म असंख्य अनंत अनादि अनेक हैं।। अरहनाथ..।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंख्यात अनंत कर्म बंध विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितने भी हैं जीव कर्म उतने प्रभो !
कर्म नशाने हम अर्चा करते विभो।। अरहनाथ..।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव स्वयं ही कर्मों को नित बाँधता।
सुख-दुःख मय कर्मों का फल भी भोगता।। अरहनाथ..।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंकृत कर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्य जीव से सुख-दुःख हमको ना मिले।
कर्म बिना तो इक पत्ता भी ना हिले।।
अरहनाथ प्रभु का विधान हम कर रहे।
अष्ट कर्म को नशने हम सब भज रहे।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदुःख विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु ! हम तो कर्मों से घबरा रहे।
कर्म नशाने तव चरणों में आ रहे।। अरहनाथ.. ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं अखिल कर्म विनाशक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बंधे नित बुरे व अच्छे भाव से।
करें सदा हम प्रभु भक्ति शुभ भाव से।। अरहनाथ.. ।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभाशुभ कर्म हारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन-वच-काया, कृतकारित अनुमोदना।
प्रभु के गुण कीर्त्तन से निज को शोधना।। अरहनाथ.. ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रययोग शुभकारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बढ़े पुण्य से प्रभु आपका दर मिला।
सोया भाग्य हमारा प्रभुवर से खिला।। अरहनाथ.. ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौभाग्यवृद्धि प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ से विनती हम इतनी करें।
हे प्रभु ! हम भी मुक्तिवधु निश्चित वरें।। अरहनाथ.. ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षलक्ष्मी प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ कल्याणक जहाँ मनाया नाथ का।
हस्तिनागपुर नगरी में भगवान का।। अरहनाथ.. ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म कल्याणक तीनों लोक मना रहे।
कोटि असंख्यों वाद्य विशेष बजा रहे।।
अरहनाथ प्रभु का विधान हम कर रहे।
अष्ट कर्म को नशने हम सब भज रहे।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याण की महिमा बड़ी विशाल है।
प्रभु संग मुनि बन मानव करे कमाल है।। अरहनाथ.. ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं तपकल्याणक प्राप्ताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानकल्याणक में प्रभु की वाणी खिरें।
प्रभु वाणी सुन भव्य जीव जग से तिरें।। अरहनाथ.. ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष कल्याण मनायें हम भगवान का।
हर भव में बस दर्श मिले भगवान का।। अरहनाथ.. ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष कल्याण ये।
प्रभु भक्ति से पायें हम कल्याण ये।। अरहनाथ.. ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक प्राप्ताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा किया जिनने प्रभुवर का ध्यान है।
कर्म काटकर बने वही भगवान है।। अरहनाथ.. ।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमात्म ध्यान उपदेशकाय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण पाने ध्यान करें भगवान का।
वीतरागी सर्वज्ञ सुखी भगवान का॥ अरहनाथ..॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञ परमात्म ध्यान उपदेशकाय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्द्ध नरेन्द्र छंद)

तीर्थंकर जिन के शासन में, केवली सात प्रकारा।
उन सबको हम अर्घ चढ़ायें, मिले मोक्ष अघहारा॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं सप्त केवली पूज्य उपदेशकाय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम केवली तीर्थंकर हैं, पंचकल्याणक धारी।
समवशरण लक्ष्मी के स्वामी, जन-जन के उपकारी॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथम तीर्थंकर केवली उपदेशकाय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजें है सामान्य केवली, घाति कर्म नशायें।
जन सामान्य बने संयमधर, आठों कर्म नशायें॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं सामान्य केवली उपदेशकाय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीजे केवली अंतःकृत हैं, ऐसा ध्यान लगायें।
दीक्षा ले अन्तर्मुहूर्त में, केवलज्ञान उपायें॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं अंतकृत केवली उपदेशकाय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुनिवर उपसर्ग सहन कर, केवलज्ञान उपाये।
वो उपसर्ग केवली हमको, समता मार्ग दिखायें॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं उपसर्ग केवली उपदेशकाय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम मूक केवली भगवन्, वाणी नहीं सुनायें।
चार घातिया नाश करें ये, केवलज्ञान जगायें ॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूक केवली उपदेशकाय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम् केवली समुद्घात है, आत्म प्रदेश फैलाये।
करते कर्म समान स्थिति, आगे मुक्ति पायें ॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं समुद्घात केवली उपदेशकाय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतिम है अनुबद्ध केवली, कहती माँ जिनवाणी।
एक केवली मुक्ति पाये, दूजे केवलज्ञानी ॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनुबद्ध केवली उपदेशकाय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

चार कल्याणक हस्तिनपुर में, जिनके देव मनायें।
पंचकल्याणक धारी प्रभु का, हम सब कीर्त्तन गायें॥
सर्व कर्म को क्षय करने का, प्रभुवर मार्ग दिखायें।
अरहनाथ को धर्मतीर्थ पर, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानावरणादि सर्व कर्म विनाशक कोरोना रोग, शारीरिक, मानसिक पीड़ा, आधि–व्याधि निवारक अष्ट गुण प्रदायक अनंतगुण धारक श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अरहनाथ भगवान पे, करते हम जल धार।
पुष्पहार कुसुमांजलि, चढ़ा रहे हम हार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– कर्म चक्र को नाशकर, धर्मचक्री तीर्थेश।
जयमाला हम गा रहे, पाने पुण्य विशेष॥

(चौपाई)

अरहनाथ जिनवर जिन स्वामी, त्रिभुवन पूजित अन्तर्यामी।
जयमाला श्री जिनकी गायें, अरहनाथ अरि कर्म नशायें॥1॥

मात नाथ की सुमित्रसेना, पिता सुदर्शन जिनके नैना।
नगर हस्तिनपुर हर्षायें, जब जिनवर धरती पे आये॥2॥

इक्ष्वाकु कुल को चमकाया, जैन धर्म का दीपक आया।
सर्वश्रेष्ठ बनते प्रभु राजा, षट्खंडों के वे अधिराजा॥3॥

सप्तम चक्री आप कहाये, अठारहवें तीर्थेश कहाये।
चौदहवें मन्मथ कहलाये, त्रयपद धारी नाथ कहाये॥4॥

तन का वर्ण सुवर्ण समाना, चिन्ह आपका मीन बखाना।
आयुस सहस्र चौरासी पाई, देवों ने नित भक्ति रचायी॥5॥

इक दिन देखे बादल स्वामी, निज को खोजें अन्तर्यामी।
अब वैराग्य प्रभु को आया, देवों का आसन कम्पाया॥6॥

सुर लौकांतिक तत्क्षण आये, धन्य हुये जिन दर्शन पायें।
कर अनुमोदन पुण्य कमायें, अगले भव मुक्ति वो पाये॥7॥

चले जिनेश्वर दीक्षा लेने, जन-जन को संदेशा देने।
पंचमुष्ठि में केश उखाड़े, सिद्ध प्रभु का नाम उचारे॥8॥

मुनि बन प्रभु त्रय वर्ष बिताये, फिर से प्रभु हस्तिनपुर आये।
ध्यान लगायें कर्म नशायें, केवलज्ञान यहाँ पे पायें॥9॥

चार कल्याणक हुए जहाँ पे, चरण बने हैं आज वहाँ पे।
नगर हस्तिनापुर है प्यारा, उस तीरथ को नमन हमारा॥10॥

आर्यक्षेत्र में प्रभुवर जायें, भव्य देशना प्रभु की पायें।
श्री सम्मेद शिखर प्रभु आये, सर्व अघाति कर्म विनशायें॥11॥

मोक्ष कल्याणक देव मनायें, हम विधान कर पुण्य कमायें।
पाप कर्म अपना नश जाये, ये विधान जो करता जाये॥12॥

कर्मों के बंधन कट जाये, परम्परा से शिवश्री पाये।
दुःख संकट पीड़ा मिट जाये, प्रभु के दर जो दीप जलाये॥13॥

सुख-शांति वैभव बढ़ जाये, भक्ति से जो जिनगुण गाये।
भय आकुलता रोग मिटाये, सप्त भयों से नाथ बचायें॥14॥

संयम समिति गुप्ति हम धारें, धर्म साम्य ही हमें उबारें।
'आस्था से हम प्रभु को ध्यायें, कर्म काट प्रभु सम बन जायें॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, अपघात, तनाव, चिंता, ज्वरादि, अपमृत्यु निवारक, ज्ञानावरणादि कर्म-दुःख-संकट-पाप-हिंसादि निवारक सुख-शांति अनंत गुण प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीर्थंकर चक्री मदन, अरहनाथ भगवान।
गुण अनंत धारी प्रभु, 'आस्था' करें प्रणाम॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज-चला चला रे ड्राईवर गाड़ी...)

चालो चालो रे हस्तिनापुर होले-होले।
अरहनाथ की आरती में मारो मन डोले॥ चालो-2....

1. नगर हस्तिनापुर में जन्में, अरहनाथ परमेश्वर।
देव देवियाँ प्रभु के दर आ, भक्ति करें जिनेश्वर॥ चालो-2....
2. सुदर्शन के राजकुँवर हो, माता मित्रसेना।
हम भक्ति से तुम्हें पुकारें, हमको शरणा देना॥ चालो-2....
3. कामदेव चक्री तीर्थंकर, तीन पदों के धारी।
त्रय गुण हमको दे दो भगवन्, जायें हम बलिहारी॥ चालो-2....
4. श्री सम्मेद शिखर से भगवन्, मोक्ष लक्ष्मी पायें।
'आस्था' श्री शिव शांति पाने, प्रभु को शीश झुकायें॥ चालो-2....

***

श्री अरहनाथ चालीसा

दोहा– शीश झुकायें नाथ को, नमन सर्व जिनराज।
परमेष्ठी माँ शारदा, श्री गणधर जिनराज।।
पढ़ें सुनें जिनदेव का, चालीसा सुखकार।
अरहनाथ भगवान को, वंदन बारम्बार।।

चौपाई

अरहनाथ अरि कर्म नशायें, अरहनाथ को हम सब ध्यायें।
हम चालीसा प्रभु का गायें, अरहनाथ को शीश झुकायें।।1।।
जानें प्रभु के पूर्व भवों को, जानें उनके सर्व गुणों को।
नगर क्षेमपुर कच्छ देश में, भक्त सभी थे जैन वेष में।।2।।
राजा धनपति भक्त प्रभू के, भक्तिरंग में रंगे विभू के।
षट् कर्त्तव्य सदा वो पालें, प्राणिमात्र के वो रखवाले।।3।।
समवशरण में राजा जाये, अर्हन्नंदन प्रभु को ध्यायें।
प्रभु वाणी सुन अति हर्षाये, भोग छोड़ मुनि दीक्षा पायें।।4।।
द्वादशांग पाठी बन जायें, सोलह दिव्य भावना भायें।
प्रायोपगमन समाधि धारें, उत्तम अनशन मुनिवर धारें।।5।।
पंच अनुत्तर को मुनि पायें, दिव जयंत के इन्द्र कहाये।
तैंतीस सागर आयु पायें, अर्चें आगम सूत्र सुनायें।।6।।
आयु छह महीने रह जाये, प्रभु के सन्मुख ध्यान लगायें।
अब आयेंगे प्रभु धरती पे, खुशियाँ छाये तब अवनी पे।।7।।
जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में, उत्सव होता भरत क्षेत्र में।
धनपति सुन्दर नगर सजायें, नूतन सुन्दर महल बनायें।।8।।
इक दिन माँ शुभ स्वप्ने देखे. पिता स्वप्न का फल उल्लेखें।
मात मित्रसेना हर्षायें, जब जिनवर माँ के उर आये।।9।।
पिता सुदर्शन के जिन तारे, सब प्राणी के आप सहारे।
देव देवियाँ संस्तुति गायें, जन्म कल्याणक सभी मनायें।।10।।

सोलह स्वर्ग धरा पे आये, प्रभु को मेरु पर ले जाये।
देव-देवियाँ नाचे गायें, इन्द्र-इन्द्राणी कलश सजायें॥11॥
एक साथ कलशा वो डालें, बाल जिनेश्वर हैं बलवाले।
बल अतुल्य जिनवर ही पायें, जिन सम बनने भक्ति रचायें॥12॥
इन्द्राणी शुचि सम्यक् पायें, नारी जन्म सफल हो जाये।
वसन हार माला पहनाये, पायल दिव्य किरीट लगाये॥13॥
बाजुबंद मुद्रा पहनाये, सुन्दर काजल तिलक लगाये।
इन्द्र प्रभु का नाम बताये, अरहनाथ ये प्रभु कहलाये॥14॥
ताण्डव आनन्द नृत्य दिखाये, सुरपति प्रभु की संस्तुति गाये।
हस्तिनागपुर आनन्द छाये, जन्म कल्याणक सभी मनाये॥15॥
अरहनाथ प्रभु बनते राजा, छह खण्डों के ये अधिराजा।
मन्मथ चौदहवें कहलाये, अरहनाथ जिन धर्म बतायें॥16॥
स्वर्ण समान देह प्रभु पाये, सहस्र चौरासी आयु पायें।
मेघ विलय वैराग्य दिलाये, मुनि बन उत्तम तप अपनाये॥17॥
नगर चक्रपुर जिनवर आये, अपराजित आहार कराये।
कर्मनाश केवली पद पाये, प्रभु वाणी सुन भवि हर्षाये॥18॥
प्रभु सम्मेद शिखर पे आये, कर्म नशा मुक्ति को पाये।
इन्द्र स्वयं शुभ चरण बनाये, हम सब मोक्ष कल्याण मनायें॥19॥
जगत् पूज्य जगदीश्वर स्वामी, त्रिभुवन नायक शिवसुख दानी।
'आस्था' से हम प्रभु गुण गायें, हमको गुप्ति मुक्ति दिलाये॥20॥

दोहा- जिनवर सब संकट हरे, सुख-शांति मिल जाय।
भक्ति से हम नित पढ़ें, चालीसा मन लाय॥
धूप जले ज्यों अग्नि में, सर्व कर्म जल जाय।
अरहनाथ भगवान को, 'आस्था' शीश झुकाय॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री मल्लिनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	कुम्भराज
माता	–	प्रभावती
आयू	–	55 हजार वर्ष
ऊँचाई	–	15 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
जन्म	–	मार्गशीर्ष शुक्ल ग्यारस
जन्म स्थान	–	मिथिलापुरी
सहदीक्षित मुनि	–	300
प्रथम दाता	–	नन्दिषेण राजा
दीक्षा	–	मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी
कैवल्य ज्ञान	–	पौष कृष्ण द्वितीया
गणधर	–	विशाख आदि 28
कुल मुनि	–	40 हजार
गणिनी	–	बन्धुषेणा
कुल आर्यिका	–	55 हजार
श्रावक	–	1 लाख
श्राविका	–	3 लाख
मोक्ष	–	फाल्गुन शुक्ल पंचमी
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	नीला
चिह्न	–	कलश
चैत्यवृक्ष	–	कंकेली (अशोक)

शासक देव

यक्ष	–	कुबेर
यक्षिणी	–	अपराजिता
क्षेत्रपाल	–	(1) क्षितिप (2) भवप (3) क्षांतिप (4) क्षेत्रप

धर्म प्रवर्तक श्री मल्लिनाथ विधान

स्थापना (शंभु छंद)

जो बालयति दूजे जिनवर, उन मल्लिनाथ को हम ध्यायें।
जीता है काम अरि जिनने, उन जिनवर के हम गुण गायें।
मन के मैलों को साफ करें, श्री मल्लिनाथ की ये पूजा।
आह्वान करें छह अंग सहित, करते हम प्रभुवर की पूजा।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

प्रासुक जल भरकर लायें हम, प्रभुवर की पूजा करने को।
हे नाथ ! हमारे रोग हरो, हम आये गुणनिधि वरने को।।
हे मल्लिनाथ ! तीर्थंकर जिन, हम मन से तुमको ध्यातें हैं।
पूजा विधान करके तेरा, सुख समता आनंद पाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ के चरणों में, हम चंदन घिसकर लाते हैं।
हर दिन प्रभुवर के चरणों में, हम गंध लगा हर्षाते हैं।। हे मल्लिनाथ..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को उज्ज्वल करने वाले, अक्षत मोती हम ले आये।
हम मल्लि जिनेश्वर को पूजें, अक्षयपद प्रभु सम पा जायें।। हेमल्लिनाथ..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! आप हो कामजयी, हम भी वैसा ही पद पायें।
पुष्पों के हार चढ़ा तुमको, हम कामबाण को विनशायें।। हे मल्लिनाथ..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नमकीन मिठाई शुद्ध बना, मन इन्द्रिय को जो रुचिकर हो।
ऐसे व्यंजन हम चढ़ा रहे, जिन भक्ति हमेशा रुचिकर हो॥
हे मल्लिनाथ ! तीर्थंकर जिन, हम मन से तुमको ध्यातें हैं।
पूजा विधान करके तेरा, सुख समता आनंद पाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत तेल रत्न का दीप जला, प्रभुवर की आरती हम गायें।
मिथ्यात्व अंधेरा शीघ्र हरे, वह ज्ञान दीप हम पा जायें॥ हे मल्लिनाथ..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुरभित श्रेष्ठ सुहानी हो, जो सर्व दिशा को महकाये।
वह धूप जला प्रभु के सन्मुख, हम पूजा से चिर सुख पायें॥ हे मल्लिनाथ..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मधुर सुगंधित रस वाले, थाली में भरकर फल लाये।
हम आम जाम केलादिक से, प्रभु की अर्चा करने आये॥ हे मल्लिनाथ..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम द्रव्यों से प्रभुवर की, पूजा हम हर दिन करते हैं।
श्रावक से साधु बनते जो, निश्चित ही जिनपद वरते हैं॥ हे मल्लिनाथ..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- मल्लिनाथ भगवान का, करते भव्य विधान।
मोहमल्ल को नाशने, करते नित्य प्रणाम॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

दूजें बालयति मल्लीश्वर, उन्निसवें जिन प्यारे।
पंचकल्याणक नाथ आपके, इन्द्र मनायें सारे॥

मोहमल्ल को जीते हम भी, ऐसी शक्ति जगायें।
मल्लिनाथ प्रभु का विधान कर, पाप कर्म विनशायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वितीय बालयतीश्वर श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाणिग्रहण की तैयारी लख, वैरागी बन जायें।
सर्व परिग्रह त्यागें भगवन्, मुनि मुद्रा अपनायें॥ मोह..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मुनिव्रत धारकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथा ज्ञान प्रगट हो जाता, सर्व ऋद्धियाँ पायें।
छह दिन में ही मल्लिनाथ जिन, केवलज्ञान उपायें॥ मोह..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानप्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण सुन्दर भगवन् का, धनपति स्वयं बनाये।
आठ भूमियाँ इसमें होती, सब में श्रीजी आये॥ मोह..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं समवशरण पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के श्री जिनवर की, भक्ति सभी रचायें।
चित्र पुराण कथा नाटक से, प्रभु का चरित बतायें॥ मोह..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुराण पुरुषोत्तमाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह सभा मध्य जो बैठे, भक्त विशेष कहायें।
दर्शन करते श्री जिनवर के, प्रभु की वाणी पायें॥ मोह..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वभक्तेन पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अट्ठाईस गणधर प्रभुवर की, हर दिन भक्ति रचायें।
ऋद्धि सिद्धि के दाता प्रभु को, हम भी अर्घ चढ़ायें॥ मोह..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशति[1] गणधर वृन्देन पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच शतक से अधिक पूर्वधर, प्रभु की संस्तुति गायें।
हम भी प्रभु की संस्तुति गाते, सुन्दर द्रव्य चढ़ायें॥ मोह..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचाशत अधिक पंच[2] शतक पूर्वधारी मुनि वृन्देन पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. 28 गणधर, 2. 550,

शिक्षक मुनि उन्तिस हजार भी, प्रभु के नित गुण गायें।
हम भी शिक्षा पाने भगवन्, शरण आपकी आये ।।
मोहमल्ल को जीते हम भी, ऐसी शक्ति जगायें।
मल्लिनाथ प्रभु का विधान कर, पाप कर्म विनशायें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं [1]एकोन्त्रिंशत सहस्र शिक्षक वर्गेन आराधिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो हजार दो सौ मुनि भजते, वे सब अवधिज्ञानी।
इतने ही मुनि गंधकुटी में, वो थे केवलज्ञानी।। मोह..।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं चऊशत अधिक [2]चतुसहस्र ज्ञानी मुनिगणेन पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार चार सौ मुनिवर, कहलाये गुरुवादी।
सब भावों से संस्तुति करते, हरने अपनी व्याधी।। मोह..।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दश[3] शतक वादी मुनि वृन्देन पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो हजार नो सौ ऋषिवर थे, ऋद्धि विक्रियाधारी।
प्रभु का ध्यान सतत वे करते, जय हो नाथ तुम्हारी।। मोह..।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं नव शत अधिक [4]द्विसहस्र विक्रिया ऋद्धिधारी यति गणेन पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े सत्रह सौ ऋषि उत्तम, मुनि मनःपर्ययज्ञानी।
नित्यकाल वे करें वंदना, पाते शिव रज धानी।। मोह..।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचाशत अधिक [5]सप्तदश शतक मनःपर्ययज्ञानी ऋषि वृन्देन पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर श्री चालीस हजार सब, हरपल प्रभु को ध्यायें।
कर्म नाशकर सर्व मुनीश्वर, निश्चित जिनपद पायें।। मोह..।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं चत्वारिंशत[6] सहस्र मुनिराज समूहेन पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. 29 हजार, 2. 4400, 3. 1400, 4. 2900, 5. 1750, 6. 40 हजार मुनि।

आर्यिकायें पचपन हजार थी, गणिनी बंधुषेणा।
करें प्रार्थना जाप करें नित, हमको निजपद देना।।
मोहमल्ल को जीते हम भी, ऐसी शक्ति जगायें।
मल्लिनाथ प्रभु का विधान कर, पाप कर्म विनशायें।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचपंचाशत[1] सहस्र आर्यिका वृन्देन पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक बंधु एक लाख सब, पूजा नित्य रचायें।
सम्यक्दर्शन के धारी वे, उत्तम गति में जायें।। मोह..।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकलक्ष[2] श्रावक समूहेन पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लाख श्राविकायें भी, प्रभु को शीश झुकायें।
श्रद्धा से प्रभु की वाणी सुन, रत्नत्रय को पायें।। मोह..।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयलाख[3] श्राविका वृन्देन अर्चिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व देव देवी अनगिन थे, सुन्दर नृत्य रचायें।
पंचकल्याणक सभी मनायें, भवसागर तिर जायें।। मोह..।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंख्यात देव देवी समूहेन पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की वाणी सुनने, पशु-पक्षी सब आयें।
संख्यातों तिर्यंच शरण आ, अणु व्रत को अपनायें।। मोह..।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं संख्यात तिर्यंच वर्गेण पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश सभा मध्य में शोभें, मल्लिनाथ तीर्थंकर।
हाथ जोड़ सब भक्त पुकारें, जय-जय हो परमेश्वर।। मोह..।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादश सभा पूजिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. 55000 आर्यिका, 2. एक लाख श्रावक, 3. 3 लाख श्राविका।

पूर्व जन्म में नाथ आपने, रत्नत्रय व्रतधारा।
रत्नत्रय जो पालन करते, वो पाते शिव द्वारा।।
मोहमल्ल को जीते हम भी, ऐसी शक्ति जगायें।
मल्लिनाथ प्रभु का विधान कर, पाप कर्म विनशायें।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रय व्रत साधकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण में रत्नत्रय व्रत, तीन बार ही आये।
केवलज्ञानी सब पर्वों को, शाश्वत पर्व बतायें।। मोह..।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशलक्षण रत्नत्रय शाश्वत पर्व बोधकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– उत्तम क्षमा जहाँ रहे, क्रोध रहे ना पास।
धर्म धरें जिनवर गुरु, अर्घ चढ़ायें खास।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम क्षमा धर्म उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

उत्तम मार्दव धर्म विनय सिखला रहा।
अहं भाव को हमसे दूर भगा रहा।।
मार्दव धारी प्रभु की हम पूजा करें।
मल्लिनाथ का विनय सदा मन से करें।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम मार्दव धर्म उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

उत्तम आर्जव धारों प्राणी, मायाचारी छोड़ों प्राणी।
सरल बनों ऋजुता अपनाओं, मल्लिनाथ को अर्घ चढ़ाओ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम आर्जव धर्म उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

उत्तम धरम यह शौच है, तन-मन-वचन पावन करें।
इस धर्म को जो धारते, उनका यहाँ अर्चन करें॥
जो पाप का भी बाप हैं, उस लोभ को हम छोड़ते।
जिनधर्म उत्तम शौच से, अपने हृदय को जोड़ते॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम शौच धर्म उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छंद)

हम सत्य धर्म अपनायें, शिवरूप सत्य दिलवाये।
श्री मल्लिनाथ को ध्यायें, प्रभुवर को अर्घ चढ़ायें॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम सत्य धर्म उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

उत्तम संयमधारी प्रभु को, हम उत्तम अर्घ चढ़ाते हैं।
संयमधारी सब गुरुओं को, हम अपना शीश झुकाते हैं॥
संयम ही रक्षा करता है, दुर्गति से हमें बचाता है।
संयम ही धर्म अहिंसा का, इस जग को पाठ पढ़ाता है॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम संयम धर्म उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

उत्तम तप आधार, इन्द्रिय मन सब वश करो।
दो प्रभु ! तप संस्कार, विनती हम इतनी करें॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम तप धर्म उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभंगी (तर्ज–वसु द्रव्य संवारी..)

जो त्याग करेगा, मोक्ष वरेगा, सब दुःख से मुक्ति पाये।
सुख शांति वरेगा, श्रेष्ठ बनेगा, निशदिन आनंद रस पाये॥
हे मल्लि जिनेश्वर, हे परमेश्वर, मोहजयी हम बन जायें।
हम प्रभु को ध्यायें, अर्घ चढ़ायें, प्रभु सम गुण निधियाँ पायें॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम त्याग धर्म उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(धत्ता)

उत्तम आकिंचन, हरे प्रपंचन, मूर्च्छाभाव मिटाता है।
जिनधर्म हमारा, हमको प्यारा, जिनपुर हमें दिलाता है॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम आंकिचन्य धर्म उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अवतार छंद)

श्री ब्रह्मचर्य व्रत श्रेष्ठ, जग में उत्तम है।
धारण कर बनते श्रेष्ठ, जिन सर्वोत्तम हैं॥
श्री बालयतिश्वर नाथ, मल्लिनाथ प्रभो।
हम अर्घ चढ़ा द्वय हाथ, जय तीर्थेश विभो॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्द्ध नरेन्द्र छंद)

द्वादश तप में प्रथम महातप, अनशन तप कहलाये।
चतुःप्रकार आहार त्याग ही, अनशन तप कहलाये॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनशन तप उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप ऊनोदर कहता हमसे, कम भोजन नित करना।
तन के साथ कषाय करें कृष, मन से सुदृढ़ रहना॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं अवमोदर्य तप उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विधियों को लेकर के, मुनि चर्या को जायें।
विधि मिले तो चर्या करते, वैसे ही आ जायें॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृत्ति परिसंख्यान तप उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रस परित्याग करें तप मुनिवर, व्रत नित करते जाये।
तप संयम में भोजन साधन, गो वृत्ति अपनाये॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं रस परित्याग तप उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप विविक्त शय्यासन कहता, तन से मोह हटाये।
मुनि एकांत वास में रहकर, सुदृढ़ हृदय बनाये॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनशन तप उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते कायक्लेश तप मुनिवर, वन में ध्यान लगायें।
बाहुबली सम कायक्लेश कर, अंत मोक्ष में जायें॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं कायोत्सर्ग तप उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत में दोष लगे जब हमसे, गुरु को दोष बतायें।
गुरुवर हमको प्रायश्चित दे, उसको हम अपनायें॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रायश्चित्त तप उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु नवदेवों की, विनय करें हम मन से।
अंतः तप में विनय महातप, पूजें मन-वच-तन से॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं विनय तप उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैयावृत्ति करें गुरु की, करें भक्ति से सेवा।
सर्वश्रमण जिन तीर्थ रूप हैं, बने वहीं जिनदेवा॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैय्यावृत्ति तप उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व का अध्ययन करें निरन्तर, तप स्वाध्याय बतायें।
पर से मुक्ति स्व में युक्ति, समता भाव बढ़ायें॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वाध्याय तप उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर से मुर्छा भाव परिग्रह, राग-द्वेष नश जाये।
यह शरीर भी नहीं हमारा, निज से निज को पायें॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्युतसर्ग तप उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्त्त रौद्र द्वय अशुभ ध्यान तज, धर्म ध्यान अपनाये।
धर्मध्यान से शुक्ल ध्यान पा, केवली जिन बन जाये॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं ध्यान तप उपदेशकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

गमन किया वसुधा पे मल्लिनाथ ने।
सर्व सभा भी रहती हरपल साथ में॥
मन-वच-तन से पूजें मल्लिनाथ को।
सुख-शांति-समृद्धि हमको प्राप्त हो॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं वसुधा पवित्र करणाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चऊ कल्याणक मिथिला नगरी में हुये।
मात-पिता भी धन्य जिनेश्वर से हुये॥

पूजा करते नर-नारी भगवान की।
प्रभु की पूजा सर्व दुःखों से तारती॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं मिथिला भू चतुकल्याणक प्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्मेद शिखर पे मल्लि प्रभु गये।
कर्म अघाति नाश नाथ मुक्ति गये॥
मोक्षकल्याण मनायें सारे देवगण।
सुरपति स्वयं बनाये प्रभुवर के चरण॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे मोक्षमंगल मंडिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग शोक संकट पीड़ा हरते प्रभो।
आधि व्याधि उपसर्ग हरें मल्लि प्रभो॥
धर्मतीर्थ के मल्लिनाथ की अर्चना।
जिनवर हरते सर्वग्रहों की वंचना॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व संकट हराय श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

पूजा करें मल्लीश की, अर्चा करें ऋषिगण यति।
भक्ति करें नर-नारियाँ, सुर देवियाँ संग अधिपति॥
श्रीफल ध्वजा फल गुच्छ संग, पूर्णार्घ अर्पण हम करें।
पूर्णाहुति दे श्रेष्ठतम, दीपार्चना नित हम करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, भीम, भगन्दर, गुल्म, वात्त-पित्त-कफ जनित त्रय रोग हराय, शतेन्द्र पूजिताय द्वादश सभा नायक सुख-शांति प्रदायकाय द्वितीय बालयतीश्वर श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

मल्लिनाथ भगवान पे, करते हम जलधार।
प्रभु को पुष्प चढ़ा रहे, करके नमन हजार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– बाल ब्रह्मचारी विभो, मल्लिनाथ जिनराज।
जयमाला हम गा रहे, बजा–बजा कर साज॥

(नरेन्द्र छंद)

मल्लिनाथ जय मल्लिनाथ, ये नाम अति मन भाये।
नाथ आपके नाम गुणों की, जयमाला हम गायें॥
पूर्व जन्म में राजा थे प्रभु, नाम वैश्रवण प्यारा।
न्यायप्रिय वैश्रवण भूप भी, सब को लगता प्यारा॥1॥

बुद्धिमान वैश्रवण नराधिप, वन विहार को जायें।
जड़ से वटतरु नष्ट देखकर, उन्हें विरक्ति आये॥
श्री मुनिवर श्रीनाग गुरु से, मुनिदीक्षा व्रत पाये।
सोलहकारण का चिंतन कर, समता उर में लाये॥2॥

तीर्थंकर प्रकृति को बाँधें, स्वर्ग अनुत्तर पायें।
तैंतीस सागर करते चर्चा, सुख में समय बितायें॥
छह महीने आयु रहने पर, हलचल पुण्य मचाये।
धनद देव मिथिला नगरी आ, सुन्दर महल बनाये॥3॥

भाग्यवान वो प्रभावती माँ, जिसके उर प्रभु आये।
चैत्र सुदी एकम को प्रभु का, गर्भकल्याण मनाये।।
मगसिर सुदी एकादशी के दिन, जन्म कल्याण मनायें।
मल्लिनाथ यह नाम रखा है, इन्द्र स्वयं बतलाये।।4।।

पचपन सहस्त्र वर्ष की आयु, मल्लिनाथ जिन पायें।
देव कुमारों के संग खेलें, प्रभु का यौवन आये।।
शुभ विवाह के निमित्त मनोहर, मिथिला नगर सजा था।
नगर सजावट देख नाथ को, जाति स्मरण हुआ था।।5।।

ये विवाह मैं नहीं करूँगा, घर को तज वन जायें।
मुनि बनते ही छठवें दिन में, केवल रवि प्रगटायें।।
श्री सम्मेद शिखर से भगवन्, शिव रमणी वर पायें।
बालयति श्री मल्लिनाथ को, श्रद्धा से हम ध्यायें।।6।।

व्रत अखंड हम पालें भगवन्, ऐसी शक्ति जगायें।
राग-द्वेष क्रोधादि कषायें, यह विधान विनशाये।।
मन-वच-तन को निर्मल करने, संयम समता धारें।
समितिगुप्ति ही मोक्ष दिलाये, 'आस्था' उर में धारें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, कर्ण, नेत्र, दंतादि रोग निवारकाय, आरोग्य, विद्या, सिद्धी प्रदायकाय, व्रत संयम तपस्या समितिगुप्ति महाव्रत प्रदायकाय सर्वकर्महराय मोक्षलक्ष्मी प्रदायकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चंचलता मन की मिटे, मन का मेटो मैल।
'आस्था' से प्रभु को भजें, पाने मुक्ति गैल।।

इत्याशीर्वादः, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

आरती

(तर्ज–तेरा साथ है कितना...)

मल्लिनाथ की आरती गायें, अपना मोह मल्ल विनशायें।
मंगल आरती गायें, हे नाथ ! तुम्हारी, हम आरती गायें॥

1. मिथला में जन्में प्रभु, श्री मल्लि भगवान।
पंचकल्याणक नाथ के, करते हैं कल्याण॥
मात–पिता भी, प्रभु को ध्यायें–2 करते भक्ति तुम्हारी॥
हम आरती... हे नाथ !..

2. जननी है पद्मावती !, जिनके तुम हो बाल।
कुंभराज के लाड़ले, मुनि बन हुए निहाल॥
ध्यान लगायें, कर्म नशायें–2, मोक्ष मिले अघहारी॥
हम आरती... हे नाथ !..

3. करें आरती नाथ की, निश्चित पाने ज्ञान।
दीप जलायें द्वार पे, मिटता है अज्ञान॥
'आस्था' आये, प्रभु गुण गायें–2, पाने शरण तुम्हारी।
हम आरती... हे नाथ !..

***

श्री मल्लिनाथ चालीसा

दोहा- दूजे बालयति प्रभो, मल्लिनाथ तीर्थेश।
मन इन्द्रिय को वश किया, भजते सर्व सुरेश॥
मल्लिनाथ भगवान को, झुका रहे हम शीश।
चालीसा हम पढ़ रहे, पाने शुभ आशीष॥

चौपाई

जय-जय मल्लिनाथ जिनदेवा, करते सुर नर भक्ति सेवा।
चालीसा हम प्रभु का गायें, सर्व शांति समृद्धि पायें॥1॥
सर्व लोक जिनको नित ध्यायें, जब जिनवर धरती पे आये।
आयु पूर्णकर जिनपद पाये, उनको हम सब शीश झुकायें॥2॥
वैश्रवण थे जंबूद्वीप के, वन विहार करते समीप में।
वज्रपात वटवृक्ष जलाये, वैश्रवण राज मुनि बन जाये॥3॥
मुनि श्रीनाग से दीक्षा पाये, सोलहकारण भावना भाये।
करे समाधि सुर तन पाये, अपराजित अहमिन्द्र कहायें॥4॥
सर्व अरिष्ट नशाने आये, प्रभु चालीसा हम सब गायें।
स्वर्ग समान धरा बन जाये, रत्नवृष्टि जब इन्द्र कराये॥5॥
धनपति सुन्दर महल बनायें, रत्नजड़ित तोरण लगवाये।
स्वर्णरत्न बहुविध जड़वाये, स्वयं करें सबसे करवाये॥6॥
मिथिला नगरी बहुत सजाये, घर-घर से मंगल ध्वनि आये।
नंद्यावर्त महल अतिप्यारा, सबके मन को हरने वाला॥7॥
रंगावलि रांगोलि बनाये, फानुस बंधनमाल लगाये।
पन्द्रह महिने उत्सव छाये, हर दिन सब त्यौहार मनायें॥8॥
कुंभराज की प्रिय पटरानी, प्रभावती माता थी रानी।
स्वप्न माल माता ने देखी, राजा से उत्तर पूछेगी॥9॥
अष्ट देवियाँ माँ संग जाये. माता का आनंद बढ़ायें।
लज्जा धैर्य व कांति बढ़ाये, प्रज्ञा सुख-यश आदि बढ़ायें॥10॥

स्वप्न माल फल पिता बताये, सर्व प्रजा सुन आनंद पाये।
त्रिभुवनपति के पिता कहाये, जगजननी ! को शीश झुकाये॥11॥
गर्भ कल्याणक इन्द्र मनाये, मात-पिता की भक्ति रचाये।
वस्त्राभूषण भेंट चढ़ाये, रत्नों से पूजा कर जायें॥12॥
इन्द्राणी भी करती सेवा, पाती प्रथम दर्श का मेवा।
इंद्राणी मिथ्यात्व नशायें, सम्यक्दर्शन उत्तम पाये॥13॥
सुरपति को जिन बालक देती, नारी जन्म सफल कर लेती।
सुर सौधर्म मुदित हो देखे, नयन हजार बनाके देखे॥14॥
दक्षिणेन्द्र सब संस्तुति गायें, इसी पुण्य से मुक्ति पायें।
मेरुशिखर पे प्रभु को लाये, इन्द्र-इन्द्राणी न्हवन कराये॥15॥
रत्नजड़ित वस्त्रादि लाये, इंद्राणी प्रभु को पहनाये।
काजल तिलक मुकुट पहनाये, आभूषण पहना हर्षाये॥16॥
ये प्रभु मल्लिनाथ कहलाये, चिह्न कुंभ इनका कहलाये।
सुरपति प्रभु को मिथिला लाये, आनंद नृत्य रचा गुण गाये॥17॥
बालक बन सुर प्रभु संग खेलें, प्रभु सेवा से अमृत ले ले।
नगर विवाह निमित्त सजाये, प्रभु को जाति स्मरण हो जाये॥18॥
सायंकाल में दीक्षा पायें, ध्यान लगायें कर्म जलाये।
प्रभु वाणी सन्मार्ग दिखाये, प्रभु सम्मेद शिखर जी आये॥19॥
सर्व अघाति कर्म विनशाये, मोक्ष लक्ष्मी जिनवर पायें।
मल्लिनाथ को मन से ध्यायें, समिति गुप्तिधर मोह नशाये॥20॥

दोहा- बाल ब्रह्मचारी प्रभु, उन्नीसवें भगवान।
मल्लि-मल्लि हम सब जपें, करें सदा गुणगान॥
सब दुःख संकट ग्रह हरो, हे जिन ! मल्लिनाथ।
'आस्था' हम प्रभु पर करें, हमें तिराओ नाथ॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	हरिवंश
पिता	–	सुमित्र
माता	–	पदमावती
आयू	–	30 हजार वर्ष
ऊँचाई	–	20 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	श्रावण कृष्ण द्वितीया
जन्म	–	कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा
जन्म स्थान	–	राजगृही
दीक्षा	–	वैशाख कृष्ण दशमी
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	वृषभसेन राजा
कैवल्य ज्ञान	–	वैशाख कृष्ण नवमी, राजगृह
गणधर	–	मल्लि आदि 18
कुल मुनि	–	30 हजार
गणिनी	–	पुष्पदत्ता आर्या
कुल आर्यिका	–	50 हजार
श्रावक	–	1 लाख
श्राविका	–	3 लाख
मोक्ष	–	फाल्गुन कृष्ण बारस
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	काला
चिह्न	–	कछुआ
चैत्यवृक्ष	–	चंपक

शासक देव

यक्ष	–	वरूण
यक्षिणी	–	बहुरूपिणी
क्षेत्रपाल	–	(1) तंद्रराज (2) गुणराज (3) कल्याणराज (4) भव्यराज।

भाग्य विधाता श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

स्थापना (शंभु छन्द)

जय-जय मुनिसुव्रत तीर्थंकर, हम नित्य तुम्हारे गुण गायें।
प्रभु पूजा में पुष्पांजलि हित, हम कमल पुष्प भी ले आये॥
जिन तीर्थों व चैत्यालय में, हैं नाथ ! तुम्हारी प्रतिमायें।
उनका आह्वान विधान करें, अपने सब संकट विनशायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं भाग्य विधाता श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक (आँचली बद्ध चौपाई छंद)

निर्मल जल प्रभु चरण चढ़ाय, जन्म जरामृत रोग नशाय।
महानंद होय, जय जगबन्धु महानंद होय॥
जय-जय मुनिसुव्रत भगवान, कर दो हम सबका उत्थान।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस केशर चंदन कर्पूर, प्रभु पद में अर्पें भरपूर।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 2॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुवर्णी ले अक्षत पुंज, पूजें जिनवर के पद कुंज।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 3॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल मालती ले कचनार, अर्चें प्रभु पद जग सुखकार।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 4॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन शुद्ध बनाय, अर्चें प्रभु को क्षुधा नशाय।
महानंद होय, जय जगबन्धु महानंद होय॥
जय-जय मुनिसुव्रत भगवान, कर दो हम सबका उत्थान।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर मणि दीप सजाय, मोह-तिमिर हर भक्ति रचाय।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 6॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ दशांग सुगंधित धूप, पूजें निशदिन जिनपद भूप।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 7॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला आदि बहुत फल सार, अर्चे जिनपद मंगलकार।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 8॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्यों से अर्घ बनाय, पद अनर्घ हित जिनपद ध्याय।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 9॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- मुनिसुव्रत जिनदेव का, करते भव्य विधान।
मंडल पर पुष्पांजलि, करें चन्देवा तान॥

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा- राजगृही में नाथ के, हुए चार कल्याण।
अर्घ चढ़ा उनको सदा, करें आत्म कल्याण॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं राजगृही क्षेत्रे गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुवन नीरज कूट से, हुआ मोक्ष कल्याण।
प्रभु को अर्घ चढ़ाय हम, पाने पद निर्वाण॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं नीरज कूट सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रे मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पैठन अतिशय क्षेत्र के, मुनिसुव्रत भगवान।
लाखों वर्षों से यहाँ, करते जग कल्याण॥ मुनिसुव्रत.. ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं पैठण अतिशय क्षेत्र विराजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मांगीतुंगी क्षेत्र तुम, प्रतिमा बनी विशाल।
अर्घ चढ़ाये भक्त जो, वो हो मालामाल॥ मुनिसुव्रत.. ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र विराजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केशोरायपाटन बना, चम्बल नदी के पास।
ग्रन्थ द्रव्य संग्रह रचा, गुरु ने प्रभु के पास॥ मुनिसुव्रत.. ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं केशवरायपाटन अतिशय क्षेत्र विराजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जटवाड़ा जहाजपुर, प्रगटे श्री भगवान।
अतिशय सुन्दर नाथ को, हम पूजें धर ध्यान॥ मुनिसुव्रत.. ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं जटवाड़ा जहाजपुर अतिशय क्षेत्र विराजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सती अंजना का किया, अंजनगिरी उद्धार।
अर्घ चढ़ायें हम तुम्हें, कर दो जिन उद्धार॥ मुनिसुव्रत.. ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं अंजनगिरी अतिशय क्षेत्र विराजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ में धातु की, प्रतिमा भव्य मनोज्ञ।
मुनिसुव्रत जिन हम भजें, बनने जिनपद योग्य॥ मुनिसुव्रत.. ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित भाग्य विधाता श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधा विघ्न विरोध संग, धीमे हो गर काम।
शीघ्र कार्य की सिद्धी हित, लो मुनिसुव्रत नाम।।
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व विघ्न विरोध विलंब आदि दोष निवारण समर्थाय शीघ्र कार्य सिद्धप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक शिक्षा में अगर, आते विघ्न अपार।
मुनिसुव्रत की अर्चना, हरती कष्ट हजार।। मुनिसुव्रत.. ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं विद्या बुद्धि प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बार-बार पढ़कर अगर, रहे न कुछ भी याद।
मुनिसुव्रत का ध्यान कर, मिले ज्ञान का स्वाद।। मुनिसुव्रत.. ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्मृति प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शिक्षा उच्च पद, पाना चाहो आप।
श्रद्धा से विधिवत करो, मुनिसुव्रत का जाप ।। मुनिसुव्रत.. ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं उच्चशिक्षा उच्चपद प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आई पी एस आदिक सभी, उच्च पदों का मान।
जिनभक्ति गुरु विनय से, मिलता सब सम्मान।। मुनिसुव्रत.. ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं उच्च राजपद प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोजगार ना हो अगर, नहीं चले व्यापार।
प्रभु के जाप विधान से, चले सफल व्यापार।। मुनिसुव्रत.. ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यापार वृद्धि उपद्रव रहिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातु के व्यापार सब, या जमीन निर्माण।
बिन माँगे जिन भक्ति से, सब में हो उत्थान॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व व्यापार सिद्धीकरण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च सफल व्यापार या, सफल बड़े उद्योग।
मुनिसुव्रत के हवन से, मिले सफल सब योग॥ मुनिसुव्रत..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाव्यापार सिद्धीकराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बार-बार घाटा लगे, कर्जा बढ़ता जाय।
मुनिसुव्रत का नाम व्रत, अंतराय विनशाय॥ मुनिसुव्रत..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं धनहानि सर्व कर्ज आदि दोष निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिर से लेकर पैर तक, तन में हो बहु रोग।
औषधि प्रभु के नाम की, हरती सारे रोग॥ मुनिसुव्रत..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं आपाद शीर्ष[1] सर्वरोग निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिर के रोग अनेक विध, या हो पक्षाघात[2]।
मुनिसुव्रत आराधना, हरें कर्म की घात॥ मुनिसुव्रत..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिरशूल पक्षाघात आदि सर्वरोग निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्तचाप बढ़ने लगे, या फिर घटता जाय।
नाम महौषधि आपकी, सबको लय में लाय॥ मुनिसुव्रत..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं रक्तचाप आदि सर्व रोग विनाशन समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सिर मस्तिष्क, 2. लकवा।

मधुमेह के रोग से, तन नित गलता जाय।
नाम मंत्र के जाप से, देह व्याधि मिट जाय।।
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं मधुमेह आदि सर्वरोग विनाशन समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैंसर किडनी हृदय के, प्राणान्तक बहु रोग।
मुनिसुव्रत की अर्चना, जीते मृत्यु योग।। मुनिसुव्रत.. ।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं कैंसर किडनी हृदयादि प्राणांतक रोग विनाशन समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध ज्वर के जोर से, थर-थर काँपे देह।
हे जिन ! तेरे भक्त की, बने निरोगी देह।। मुनिसुव्रत.. ।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व ज्वरादि रोग निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाहन दुर्घटना घटे या, पैरों में चोट।
मुनिसुव्रत के ध्यान से, मिटे कर्म की खोट।। मुनिसुव्रत.. ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं आकस्मिक दुर्घटना आदि सर्वरोग पीड़ा निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन कारण शत्रु बढ़े, बढ़े अकारण वैर।
श्री विधान जिनदेव का, हरे जगत् का वैर।। मुनिसुव्रत.. ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं बंधुत्वोपद्रव जिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झगड़े कोर्ट विवाद से, बचना चाहो भव्य।
पाप छोड़ प्रभु को भजो, पूजा कर लो भव्य।। मुनिसुव्रत.. ।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं राजभय कानूनी वाद-विवाद आदि सर्वदोष निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरते या चोटे लगें, या हड्डी हो भंग।
इन सब दुःख के नाश हित, प्रभु को भजो अभंग॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं अस्थि भंग आदि सर्व दुर्घटना निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिषेण नृप ने किया, प्रभु का श्रेष्ठ विधान।
चक्री सुख पा श्रमण बन, पाया स्वर्ग प्रधान॥ मुनिसुव्रत.. ॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं हरिषेण चक्री पूजिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लखन राम बलभद्र ने, कर मुनिसुव्रत ध्यान।
दुर्जय रावण जीतकर, पायी विजय महान्॥ मुनिसुव्रत.. ॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं रामलक्ष्मण पूजिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता ने ध्याया तुम्हें, बची सती की लाज।
अग्नि शीतल जल बनी, मिला स्वर्ग साम्राज्य॥ मुनिसुव्रत.. ॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं सीता सती पूजिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यसन मुक्त जीवन बने, कर जिनवर गुणगान।
श्रावक व्रत उत्तम पले, होवे अन्त महान्॥ मुनिसुव्रत.. ॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्यसन मुक्त श्रावक सद्व्रत बुद्धिकरण प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर श्रद्धा से नित्यमह, मुनिसुव्रत के द्वार।
नित्य महोत्सव पाय हम, बनें सिद्ध अविकार॥ मुनिसुव्रत.. ॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं नित्यमह उपदेशक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सर्वार्थ सिद्धी

मुकुटबद्ध भूपेश ही, करें महामह भव्य।
हम भी जिन अर्चा करें, पायें सुख नित्य नव्य।।
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामह उपदेशक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र करें नित इन्द्र ध्वज, आगे बने जिनेन्द्र।
वह पूजा कर भव्य सब, निश्चय बने जिनेन्द्र।। मुनिसुव्रत.. ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्रध्वज मह उपदेशक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पद्रुम आराधना, चक्री अवश कराय।
भव्य किमिच्छक दान कर, आगे जिनपद पाय।। मुनिसुव्रत.. ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्पद्रुम मह उपदेशक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो त्रय विध सत्पात्र को, दे आहार का दान।
वो ही सुख सम्पन्न हो, अन्त बने भगवान ।। मुनिसुव्रत.. ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं आहारादान उपदेशक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रोगी मुनि आदि को, करता औषधदान।
वो निरोग बल शक्ति पा, हो अनंत बलवान ।। मुनिसुव्रत.. ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं औषधदान उपदेशक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभयदान जो भी करे, करे कक्ष निर्माण।
वो चक्री तीर्थेश बन, होय सिद्ध भगवान ।। मुनिसुव्रत.. ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभयदान उपदेशक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शास्त्र प्रकाशन सृजन से, करे ज्ञान का दान।
वो अनंतज्ञानी बने, तीर्थंकर भगवान ।। मुनिसुव्रत.. ।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानदान उपदेशक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आप पर जो करे, पंचामृत अभिषेक।
उसका मेरु शिखर पर, आगे हो अभिषेक।।
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं मेरु शिखरे स्नानयुक्तपदप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत की भक्ति से, बने भव्य निर्ग्रन्थ।
उत्तम संयम पालकर, करे कर्म का अन्त।। मुनिसुव्रत..।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्ग्रंथ पद प्रदान समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तेरे साधक बने, जग प्रसिद्ध आचार्य।
गणधरादि पद प्राप्त कर, बने सिद्ध अनिवार्य।। मुनिसुव्रत..।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणधरादि सूरिपद प्रदान समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारण भावना, भाते प्रभु के दास।
श्रेष्ठ समाधि साधते, कभी न होय उदास।। मुनिसुव्रत..।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं षोडशकारण भावना साधनबलप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर पद श्रेष्ठ पा, वरें पंच कल्याण।
दिव्य देशना से करें, त्रिभुवन का कल्याण।। मुनिसुव्रत..।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याण विभूतिप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! तुम्हारे ध्यान से, मन में हो आनंद।
कर्म कटे जिनभक्ति से, होता परमानंद।। मुनिसुव्रत..।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोनंदकरण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन अगोचर गुण अमल, गाकर वचनानंद।
जो पाये उसके कटे, सकल कर्म के फन्द।। मुनिसुव्रत..।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचनानंदकरण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृदय कमल तुमको बिठा, होता कायानंद।
जीवन नित सुखमय बने, मिटे जगत् का द्वन्द॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं कायानंदकरण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु राजे जिन तीर्थ पर, अतिशय वहाँ अपार।
उन तीर्थों पर नित रहे, भक्तों की भरमार॥ मुनिसुव्रत.. ॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व तीर्थ जिनालय विराजित अतिशयकारी श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मुनिसुव्रत जिनवर का हम सब, श्रेष्ठ विधान रचायें।
अड़तालीस कोठों का सुन्दर, मंडल श्रेष्ठ बनायें॥
लड्डू श्रीफल दीप पुष्प संग, आठों द्रव्य चढ़ायें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ्य चढ़ा हम, जिनगुण वैभव पायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व ग्रह अरिष्ट निवारक, सर्व डाकिनी-शाकिनी, भूत-प्रेत, परकृत अनिष्ट मंत्र-यंत्र-तंत्र पीड़ा निवारक, धन-धान्य, पुत्र वंशवृद्धि कारक, ज्वरादि सर्व कोरोना रोग निवारक श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित भाग्य विधाता श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **नीलमणिमय कुंभ से, करता हूँ त्रय धार।**
नीलकृष्ण बहु पुष्प की, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र - (1) ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- मुनिसुव्रत तीर्थेश की, सुखदायी जयमाल।
माला ले हम सब पढ़ें, पायें जिनगुण माल।।

(शंभु छंद)

जय-जय मुनिसुव्रत तीर्थंकर, हम उनकी जयमाला गायें।
जिनवर का महा विधान रचा, अपनी सब बाधा विनशायें।।
प्रभु ने भव-भव में श्रावक व्रत, व मुनि का व्रत अपनाया था।
भव तीन पूर्व चंपापुर का, प्रभुवर ने शासन पाया था।।1।।

हरिवर्मा राजा बन उनने, जिनवर का नित अभिषेक किया।
मंदिर मूर्ति निर्माण किये, मुनियों को नित आहार दिया।।
कई गुरुकुल व औषध शाला, भोजन शालायें बनवाईं।
हर तरह प्रजा की उन्नति हित, कई नियम नीतियाँ बनवाईं।।2।।

इक दिन मुनिनाथ अनंतवीर्य, चंपापुर नगरी में आये।
उनके दर्शन करने राजा, परिवार प्रजा के संग जाये।।
वो भव्यात्मा गुरु वाणी सुन, तत्क्षण मुनिव्रत को अपनाये।
वे द्वादशांग का अध्ययन कर, चारित्र विशुद्धि को पायें।।3।।

श्री सोलह दिव्य भावना भा, तीर्थंकर प्रकृति को बाँधें।
फिर अंत समय को निकट जान, वे श्रेष्ठ समाधि आराधें।।
फिर प्राणतेन्द्र बनकर प्रभु ने, स्वर्गों में पुण्य कमाया था।
अब मगध देश में राजगृही, उसका पुण्योदय आया था।।4।।

हरिवंश शिरोमणि सुमित्र नृप, सोमा रानी का भाग्य जगा।
उनके उर में जिनवर आये, सब जीवों का मिथ्यात्व भगा।।

श्रावण वदि द्वितीया श्रवण ऋक्ष, प्रभु गर्भागम से धन्य हुए।
वैशाख कृष्ण दशमी मंगल, तप जन्म तिथि बन धन्य हुए।।5।।

वैशाख कृष्ण नवमी के दिन, जिनवर को केवलज्ञान हुआ।
फाल्गुन कृष्णा बारस के दिन, फिर उनका मोक्ष प्रयाण हुआ।।
हे नाथ ! तुम्हें जो ध्याता है, वो सर्व अरिष्ट मिटाता है।
तव नाम जाप और पूजन से, सब दुःख संकट टल जाता है।।6।।

जो तव मूर्ति निर्माण करें, तू उसका नित उत्थान करे।
जो मन्दिर बनवाये तेरा, वो निश्चय मुक्ति प्रयाण करे।।
जो मंगल द्रव्य चढ़ाता है, वो नित नव मंगल पाता है।।
जो प्रातिहार्य अर्पण करता, वो धन सुख संपत् पाता है।।7।।

जो विधिवत हवन विधान करे, प्रभु तू उसका कल्याण करे।
जो नित चालीसा जाप करे, तू उनके सारे पाप हरे।।
हम सदा तुम्हारा ध्यान करे, औ तव चारित्र पुराण पढ़े।
'गुप्तिनंदी' प्रभु गुण गाकर, वह मोक्षपुरी अविराम बढ़े।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, विघ्न, बाधा, रोग, संकट, पीड़ा, उपद्रव निवारक, वाहनादि सर्व दुर्घटना, अपमृत्यु निवारक, सर्वविद्या सिद्धीप्रदायक, सर्वधन-धान्य, ऐश्वर्य, आरोग्य आयु वृद्धिकारक अतिशयकारी श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित भाग्य विधाता श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

जय-जय मुनिसुव्रत प्रभो, हम नित्य ध्यायें आपको।
त्रय रत्न पा हम आप सम, जीते सभी दुःख ताप को।।
संसार सागर पार कर, सम्पूर्ण कर्मों को नशें।
त्रय 'गुप्ति' मुनिव्रत साधकर, लोकाग्र में शाश्वत बसें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज : माईन-माईन....)

तीर्थंकर मुनिसुव्रत जिन की, आरती हम सब गायें।
जगदुःखहर्त्ता-सबसुखकर्त्ता, जिनवर को हम ध्यायें।।
बोलो मुनिसुव्रत की जय......

राजगृही में जन्मे स्वामी, सोमा सुत मनहारे।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, मुनि बन सबको तारे।।
गिरी सम्मेद शिखर से भगवन्-2, मोक्ष महल को पायें।
जगदुःखहर्त्ता....... बोलो मुनिसुव्रत......।।1।।

जिन भक्तों ने मुनिसुव्रत को, अपने हृदय बसाया।
प्रभुवर ने भी उन भक्तों का, बेड़ा पार लगाया।।
हम भी भक्त तुम्हारे भगवन्-2, द्वार तिहारे आये।
जगदुःखहर्त्ता....... बोलो मुनिसुव्रत......।।2।।

मुनिसुव्रत के जिनमंदिर में, जगमग ज्योति जलती।
सब दुःख संकट की बाधायें, इस आरती से टलती।।
दीप जलाकर मंत्र जपें हम-2, फेरी नित्य लगायें।
जगदुःखहर्त्ता....... बोलो मुनिसुव्रत......।।3।।

मुनिसुव्रत भगवन् के तीरथ, सारे अतिशय वाले।
प्रभु चरणों की भक्ति करने, आते भक्त निराले।।
त्रय गुप्ति से तुम सम बनने-2, 'आस्था' शीश झुकाये।
जगदुःखहर्त्ता....... बोलो मुनिसुव्रत......।।4।।

****

श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा

दोहा– श्री मुनिसुव्रतनाथ को, पूजें नर सुर इन्द्र।
श्रमण आर्यिका भव्य जन, ध्यायें सर्व मुनीन्द्र॥
सर्व प्रभु को है नमन, ध्यान करें हम नाथ।
चालीसा प्रभु का पढ़ें, जय मुनिसुव्रतनाथ॥

चौपाई

जय–जय मुनिसुव्रत जिन स्वामी, केवलज्ञानी अन्तर्यामी।
हम चालीसा प्रभु का गाते, दीप लगाकर धूप चढ़ाते॥1॥
मंत्र जाप मन मंत्रित करता, जीवन को अभिमंत्रित करता।
चालीसा सब संकट हरता, अतिशय आनंद अमृत भरता॥2॥
आधि–व्याधि विपदायें हरता, तन निरोग चालीसा करता।
दुःख संकट पीड़ा मिट जाये, सुख–समता प्रभु से हम पायें॥3॥
जब तक प्राण रहे इस तन में, प्रभु का नाम रहे नित मन में।
सर्व मनोरथ पूर्ण करायें, श्रद्धा से प्रभु के गुण गायें॥4॥
चिंतायें सारी मिट जायें, राग द्वेष विनशाने आये।
सर्व कषायें दुःखी बनाये, समता अमृत पाने आये॥5॥
समता शांति मिले जहाँ पे, सोई किस्मत जगे वहाँ पे।
वो प्रभु का दरबार कहाता, शीश झुका भवि सब कुछ पाता॥6॥
मैली चादर उज्ज्वल होती, प्रभु से मिलती प्रज्ञा ज्योती।
मन का मैल यहाँ धूल जाता, हर दिन जो चालीसा गाता॥7॥
तन का ताप शीघ्र मिट जाता, वचन सदा जब प्रभु गुण गाता।
अशुभ भाव भी शुभ बन जाये, आर्त्त रौद्र द्वय अघ मिट जाये॥8॥
पूर्व जन्म की सुन्दर गाथा, मुनिसुव्रत को शीश झुकाता।
भरत क्षेत्र चंपापुर नगरी, वासुपूज्य की मंगल नगरी॥9॥
हरिवर्मा राजा कहलाये, इकदिन मुनि दर्शन को जाये।
राजा मुनि की फेरी लगायें, तीन बार वो भक्ति रचायें॥10॥

तीन बार मुनि को कर वंदन, हमें बनाओ गुरु तुम नंदन।
अनंतवीर्य मुनीश बताये, जैन धर्म जिन तत्त्व सुनायें॥11॥
हरिवर्मा वैराग्य जगाये, मुनि चरणों में दीक्षा पाये।
द्वादशांग पाठी बन जाये, तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये॥12॥
बहुत काल तक करें साधना, करते हम उनकी आराधना।
उत्तम मरण समाधि करते, प्राणतेन्द्र बन भक्ति करते॥13॥
प्रभु के पंच कल्याण मनायें, प्राणतेन्द्र द्वीपों में जाये।
पूजा अर्चा भक्ति रचाये, छह महीने आयु रह जाये॥14॥
रत्नों से वसुधा सज जाये, धनपति सुन्दर नगर सजाये।
धनद इंद्र अति पुण्य कमाये, पन्द्रह मास रत्न बरसाये॥15॥
श्री हरिवंश शिरोमणि राजा, श्री सुमित्र नगरी के राजा।
राजगृही में जन्में भगवन्, पूजें प्रभु को त्रिभुवन जन-मन॥16॥
नीलकंठ सम प्रभु की काया, तीस हजार आयु को पाया।
दीक्षा लेने वन में जाये, वृषभसेन आहार कराये॥17॥
केवलज्ञानी बने तीर्थकर, सर्वसभा के नायक जिनवर।
प्रभु निज समवशरण विघटाये, श्री सम्मेद शिखर जी आये॥18॥
कर्मनाश सिद्धालय जायें, हम सब मोक्ष कल्याण मनायें।
शनि आदि ग्रहरिष्ट मिटायें, ये चालीसा हम सब गायें॥19॥
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत बोलें, मुनिसुव्रत की जय-जय बोलें।
'आस्था' से हम प्रभु को ध्यायें, सर्व सौख्य सिद्धि पद पाये॥20॥

दोहा- मुनिसुव्रत भगवान का, करते जाप विधान।
समिति गुप्ति संयम धरें, नशने कर्म विधान॥
घृत का दीप जलाय हम, और चढ़ायें धूप।
'आस्था' से प्रभु नाम जप, पायें सिद्ध स्वरूप॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री नमिनाथ भगवान

परिचय

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	विजय
माता	–	वप्रा
आयू	–	10 हजार वर्ष
ऊँचाई	–	15 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	आश्विन कृष्ण द्वितीया
जन्म	–	आषाढ कृष्ण दशमी
जन्म स्थान	–	मिथिला
दीक्षा	–	आषाढ़ शुक्ल अष्टमी
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	दत्त राजा
कैवल्य ज्ञान	–	मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी
गणधर	–	सुप्रभ आर्य आदि 17
कुल मुनि	–	20 हजार
गणिनी	–	मंगिनी आर्या
कुल आर्यिका	–	45 हजार
श्रावक	–	1 लाख
श्राविका	–	3 लाख
मोक्ष	–	वैशाख कृष्ण दशमी
मोक्ष स्थान	–	सम्मेदशिखरजी

लक्षण

रंग	–	सुनहरा
चिह्न	–	नील कमल
चैत्यवृक्ष	–	बकुल

शासक देव

यक्ष	–	भृकुटी
यक्षिणी	–	चामुण्डी
क्षेत्रपाल	–	(1) कपिल (2) बटूक (3) भैरवनाथ (4) मल्लकारूप

महिमा बोधक श्री नमिनाथ विधान

स्थापना (गीता छंद)

शुभ लक्षणों से शोभते, जिनबिम्ब भव्य विशाल हैं।
आस्था सहित प्रभु को भजें, दर्शन करें त्रयकाल में॥
जो कमल प्रभु का चिन्ह है, वह कमल ले पूजा करें।
नमिनाथ को मन में बसा, आह्वान थापन हम करें॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

नाथ आपको मेरु शिखर पे, शचीपति न्हवन कराये।
सहस अठोत्तर कलश ढुराकर, अतिशय पुण्य कमाये॥
हम भी उसी भाव से भगवन्, न्हवन करा हर्षायें।
नमि जिनवर का ये विधान कर, मोक्ष सुखानंद पायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जीते दोष अठारह जिनने, वीतराग कहलाये।
उनको चंदन चरण चढ़ा हम, भव आताप नशायें॥
वीतराग सर्वज्ञ बने हम, यही भावना भायें॥ नमि..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षय ना होने वाला इक पद, क्षायिक पद कहलाये।
धवलाक्षत से प्रभु को अर्चें, भाव धवल बन जाये॥
बिन माँगे ही प्रभु आप से, भक्त सभी कुछ पायें॥ नमि..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से जिन द्वार सजायें, चरण चढ़ायें माला।
मालामाल बनें हम जिन सम, पा जायें श्री माला॥
रंग–बिरंगे खिले–पुष्प ले, हर दिन चरण चढ़ायें॥ नमि..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नैवेद्य लगे मनभावन, लायें शुद्ध अनूठा।
मुक्ति सुख का जो प्रतीक है, लड्डू लाये मीठा॥
क्षुधारोग विनशाने अपना, हम नैवेद्य चढ़ायें॥
नमि जिनवर का ये विधान कर, मोक्ष सुखानंद पायें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान अकेला पाने, प्रभु की आरती गायें।
करें आरती दीप जलाकर, प्रभु को दीप चढ़ायें॥
हर दिन प्रभुवर भक्त आपके, दीपावली मनायें॥ नमि..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलायें अग्नि कुण्ड में, कर्म धूम बन उड़ते।
प्रभु पूजा में ऐसा बल है, पाप कर्म सब झड़ते॥
करें साधना प्रभु आप सम, ऐसी शक्ति जगायें॥ नमि..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व फलों से करें अर्चना, हरे-भरे फल लायें।
पूजा का बस सार यही है, मोक्ष संपदा पायें॥
तीर्थंकर की करें अर्चना, फल की थाल चढ़ायें॥ नमि..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के दर्शन पूजन करने, खाली हाथ न जायें।
जब भी जायें प्रभु चरणों में, उत्तम द्रव्य चढ़ायें॥
आठों द्रव्य सजा थाली में, प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥ नमि..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- शत इन्द्रों से पूज्य हैं, तीर्थंकर नमिनाथ।
पूजें हम भी इंद्र बन, भक्ति भाव के साथ॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(शेर छंद)

जिनके हुए कल्याण वो तीर्थेश बन गये।
कल्याण मना भक्त भी परमेश बन गये॥
हम कर रहे नमिनाथ का विधान भक्ति से।
कर्मों को काटने की नाथ हमको शक्ति दे॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश पद की हेतु है सोलह की भावना।
भाई थी प्रभु आपने भी दिव्य भावना॥ हम..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं षोडशकारण भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि भावना अति श्रेष्ठ प्रथम है।
कल्याण पाँच होय जब वे लेते जनम हैं॥ हम..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथम दर्शन विशुद्धि भावना प्रदायकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो देव-शास्त्र साधु की विनयार्चना करे।
अभिमान पूर्ण नाश विनय भावना धरे॥ हम..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं विनयसम्पन्न भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये शीलव्रत की भावना ही शील सिखाये।
इस शील भावना को हम भी अर्घ चढ़ायें॥ हम..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेषु अनतिचार भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभीक्ष्ण ज्ञान भावना प्रभु आपने भायी।
उस भावना भाने को हमने भक्ति रचायी॥ हम..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवेग सर्व वेग को निर्वेद बनाये।
आवेग से बचने सदा ये भावना भायें॥
हम कर रहे नमिनाथ का विधान भक्ति से।
कर्मों को काटने की नाथ हमको शक्ति दे॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं संवेग भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये शक्तित्याग भावना नित शक्ति बढ़ाये।
शक्ति से त्याग भावना को अर्घ चढ़ायें॥ हम..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्त्याग भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय योग इच्छा वश करे तप भावना भायें।
तप भावना को पाने हम भी अर्घ चढ़ायें॥ हम..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्तप भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु समाधि भावना साधक करें सभी।
साधु समाधि के बिना ना मोक्ष हो कभी॥ हम..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं साधुसमाधि भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवा करें हम वैयावृत्ति भावना भायें।
यह भावना भी जीव को तीर्थेश बनाये॥ हम..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैय्यावृत्ति भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान श्री अरिहंत की जो भक्ति नित करें।
अरिहंत भक्ति भाव से तीर्थेश पद वरें॥ हम..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद्भक्ति भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये तीसरे परमेष्ठी हैं आचार्य हमारे।
आचार्य भक्ति भावना संसार से तारे॥
हम कर रहे नमिनाथ का विधान भक्ति से।
कर्मों को काटने की नाथ हमको शक्ति दे॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं आचार्य भक्ति भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुत की भक्ति भावना का मान हम करें।
पाठक श्रमण की अर्चना से ज्ञान हम वरें॥ हम.. ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुत भक्ति भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हंत देशना प्रवचन भक्ति कहाये।
उस वाणी को हम भक्ति से शुभ अर्घ चढ़ायें॥ हम.. ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचन भक्ति भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यकापरिहाणि भावना को भा रहे।
जिन देव-गुरु-शास्त्र की भक्ति रचा रहे॥ हम.. ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं आवश्यकापरिहाणि भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म की प्रभावना भक्ति से हम करें।
दुर्भावना का क्षय करें सद्भक्ति चित धरें॥ हम.. ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गप्रभावना भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य भावना विशेष नाथ में रहे।
समोशरण में सर्वजीव वाणी सुन रहे॥ हम.. ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचन वात्सल्य भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसी विशेष भावना हम भव्य भा रहे।
इन भावना के धारी की अर्चा रचा रहे॥
हम कर रहे नमिनाथ का विधान भक्ति से।
कर्मों को काटने की नाथ हमको शक्ति दे॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं पवित्र वैराग्य भावना बोधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शासन में मुनि आपके मुक्ति अधिक गये।
प्रभु आप नाम जपते वो भव पार कर गये॥ हम..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वाधिक मुनि मुक्ति प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण कर्म नाशने ये भावना भायें।
तीर्थेश केवली की शरण भाग्य जगायें॥ हम..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकर केवली शरण प्रदायकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथिला नगर में जन्म लिया देव आपने।
हुई थी रत्नवृष्टि दिन व मध्य रात में॥ हम..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भा वसुधा पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिनाथ पिता विजयराज के थे दुलारे।
माता सुवप्रा देवि के तुम नैन सितारे॥ हम..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं जनक जननी वंदिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथिला का राज्य आपको प्रभु रोक ना पाया।
स्वराज्य पाने आपने प्रभु कदम बढ़ाया॥ हम..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैराग्यवृत्ति साधकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि रूप में प्रभु कर्म नाश केवली बने।
इस लोक में प्रसिद्ध श्री अरिहंत जिन बने।।
हम कर रहे नमिनाथ का विधान भक्ति से।
कर्मों को काटने की नाथ हमको शक्ति दे।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरिहंत पद प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरिहंत सिद्ध साधु शरण आप हो प्रभो।
हित देशी वीतरागी व सर्वज्ञ जिन प्रभो।। हम..।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं शरण सर्वज्ञ प्रदायकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कर्म वैरी दुष्ट हैं, हरपल दुःखी करें।
जिनभक्ति नाथ आपकी हमको सुखी करें।। हम..।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनभक्ति सुखप्रदायकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौभाग्य से प्रभु आपकी हमको शरण मिली।
दुर्भाग्य मिटाने को शरण आपकी मिली।। हम..।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौभाग्य प्रदायकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप पे आस्था रहे यह भावना भायें।
सम्यक्त्व दीप को जलाने भक्ति रचायें।। हम..।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्त्व आस्था दीप प्रदायकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन-मन-वचन तल्लीन रहे भक्ति में सदैव।
जिनभक्ति से भगवान बनें प्रार्थना सदैव।। हम..।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयकरण भक्ति प्रदायकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापों की कालिमा हरो हे नाथ ! हमारी।
विनती सुनो अरजी सुनो हे नाथ ! हमारी।। हम..।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं पापकर्म हराय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म अर्थ काम मोक्ष भक्ति से मिले।
प्रभु आपकी भक्ति से हमको मोक्ष सुख मिले॥
हम कर रहे नमिनाथ का विधान भक्ति से।
कर्मों को काटने की नाथ हमको शक्ति दे॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्ष पुरुषार्थ प्रदायकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्द्ध नरेन्द्र छंद)

भवनवासी इंद्रादि देवगण, परिजन के संग आयें।
करें संस्तुति पूजा अर्चा, नमिनाथ को ध्यायें॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं भवनेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतर देव-देवियों के संग, समवशरण में जायें।
नमिनाथ को नमन करें वे, अर्चा भव्य रचायें॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्यंतरेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिष देवों के अधिपति श्री, चंद्रदेव गुण गायें।
परिकर के संग संस्तुति करते, नमि जिन को शिर नाये॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिषेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रकाश करता इस जग में, दिनकर प्रभु को ध्यायें।
फीका पड़ जाता प्रभु सन्मुख, सम्यक् दीप जलाये॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं भास्करेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र सौधर्म प्रभु के, पंचकल्याण मनायें।
करें अगाध नाथ की भक्ति, अर्चा मोक्ष दिलाये॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्मेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ऐशान इन्द्र प्रभुवर के, पंचकल्याण मनायें।
परिकर युत प्रभु भक्ति करते, अतिशय पुण्य कमाये॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऐशानेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानत इन्द्र परिजन के संग, प्रभु पर चँवर ढुरायें।
पाँचों कल्याणक में प्रभु की, भक्ति विशेष रचायें॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं सानतेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री माहेन्द्र प्रभु भक्ति में, परिकर को ले आयें।
देव देवियाँ प्रभु के दर पर, भक्ति नृत्य रचायें॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं माहेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म ब्रह्मोत्तर इंद्र परिजन, पुष्पयान से आयें।
फल पुष्पादि द्रव्य चढ़ाकर, प्रभु की संस्तुति गायें॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्म–ब्रह्मोत्तेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तव औ कापिष्ठ इंद्र भी, सुन्दर माला लायें।
पुष्प माल से पूजा करके, सुख–समृद्धि पायें॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं लांतव–कापिष्ठेद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र और महाशुक्र इंद्र भी, रत्न थाल भर लायें।
चम–चम करते रत्न चढ़ाकर, अपना भाग्य जगायें॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुक्र–महाशुक्रेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र शतार परिकर संग ले, सहस्रार भी आये।
फूल फलों की माल चढ़ाकर, मंदिर भव्य सजायें॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं शतार–सहस्रारेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनतेन्द्र गज पे आरुढ़ हो, षट्रस व्यंजन लायें।
करें अर्चना नमिनाथ की, नमो नमि गुण गायें॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं आनतेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र प्रण सदा निभाये, दीप मालिका लायें।
कीर्तन वंदन करें आरती, देवी फिरकी लगाये॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्राणतेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेंद्र प्रभु पूजा करने, धूप सुवासित लायें।
प्रभु भक्ति में धूम मचाते, देवी वाद्य बजाये॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं आरणेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेंद्र श्रीफल आदि की, माल बनाकर लायें।
परिजन के संग फेरी लगायें, अपना भ्रमण मिटायें॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं अच्युतेंद्रेण पूजिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

नमिनाथ जी मोक्ष गये जिस थान से।
श्री सम्मेद शिखर को कोटि प्रणाम है॥
धर्मतीर्थ पर नमि जिन को हम ध्या रहे।
श्रीफल ध्वज लेकर पूर्णार्घ चढ़ा रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, हृदयाघात, उदर प्राणान्तक रोग हारक, सुख-शांति प्रदायक सर्वपाप विनाशक पंचकल्याणक पूजित श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नमिनाथ भगवान पर, छोड़ें हम जलधार।
पुष्प चढ़ायें चरण में, सर्व सौख्य दातार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– जयमाला प्रभु आपकी, हरती दुःख संताप।
सर्वद्रव्य की थाल ले, करें प्रभु का जाप॥

(अडिल्ल छंद)

नमिनाथ की जयमाला हम गा रहे।
जयमाला की थाल सजाकर ला रहे॥
मिथिला नगरी में जन्मे नमिनाथ जी।
नमन करें हम आज तुम्हें नमिनाथ जी॥1॥

विजयराज वप्रा माता के लाल हो।
प्रभु चरणों में झुका रहे हम भाल को॥
गर्भ कल्याणक आश्विन सुदी द्वितिया तिथि।
जन्म कल्याणक षाढ़ मास दशमी तिथि॥2॥

षाढ़मास सुदी दशमी को दीक्षा धरी।
देवों ने आ तप की बहुँ पूजा करी॥
मार्ग शुक्ल एकादशी को अर्हत् बने।
शेष अघाति कर्म शिखर पे जा हने॥3॥

सुदी वैशाख चतुर्दशी को जिन सिद्ध बन।
उत्सव देव मनाने आये भक्त बन॥
कर्मों पे जय प्राप्त करी प्रभु आपने।
हम भी आये दुःख संकट सब नाशने॥4॥

आतम सुख–समृद्धि पाने आ रहे।
मन–वच–तन को शुद्ध बनाने ध्या रहे॥
धर्म शुक्ल दो ध्यान मिले यह भावना।
समिति गुप्ति से मोक्ष मिले यह कामना॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, असाध्य व्याधि विनाशन समर्थाय, पंचपाप हराय, राग-द्वेष, मोहादि, अशुभ ध्यान निवारकाय, शुभ ध्यान प्रदायकाय, सुख-शांति-यश-कीर्ति प्रदायकाय, पंचकल्याणक प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **इक्कीसवें प्रभु आप हो, नमि तीर्थेश महान्।**
इक्कीस सारें काम हो, 'आस्था' करें प्रणाम॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज-ना कजरे की धार...)

श्री नमिनाथ भगवान, कर दो भव सागर पार।
लेकर दीपों की थाल, आये हम प्रभुवर के द्वार॥
आये हम...

1. मिथिला में जन्म लिया है, धरती को स्वर्ग किया है।
माता वप्रा के नंदन, पितु विजय को धन्य किया है॥
हम आये, तव चरण में-2, कर दो सबका उद्धार॥ श्री...

2. धरती के चाँद सितारें, प्रभुवर का रूप निहारें।
सूरज अपनी किरणों से, आरतियाँ नित्य उतारें॥
जिनवर के, यक्ष-यक्षी-2, करते हैं नित जयकार॥ श्री...

3. हम साँझ सवेरे प्रभु दर, दीपक ले आरती गायें।
सब दुःख संकट पीड़ायें, जिन आरती अवश नशाये॥
'आस्था' से, तुमको पूजें-2, वंदन है शत-शत बार॥ श्री...

***

श्री नमिनाथ चालीसा

दोहा- परमेश्वर परमात्मा, नमिनाथ भगवान।
इक्कीसवें प्रभु आपने, किया जगत् कल्याण॥
परमेष्ठी भगवान सब, गणधर वाणी मात।
चालीसा नमिनाथ का, पढ़ें भव्य दिन-रात॥

चौपाई

नमिनाथ को हम सब ध्यायें, इक्कीसवे प्रभु के गुण गायें।
चालीसा नमि जिन का गायें, सर्व दुःखों से छुट्टी पायें॥1॥
भासमान दिनकर जिन प्यारे, नमिनाथ जिनदेव हमारे।
अंधकार में रवि बन आये, भक्तों के प्रभु कष्ट मिटायें॥2॥
पूर्व जन्म प्रभुवर का जानें, तप संयम को हम पहचानें।
कौशांबी नगरी के राजा, श्री सिद्धार्थ बने महाराजा॥3॥
पिता श्रमण बन करें समाधि, समाचार सुन संपत् त्यागी।
नाथ महाबल को नृप ध्यायें, धर्म देशना श्रमण बनायें॥4॥
द्वादशांग पाठी बन जाये, सोलह श्रेष्ठ भावना भाये।
तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये, सबके प्रति वात्सल्य जगाये॥5॥
करुणामय वात्सल्य भावना, हम भी भाये यही भावना।
तीर्थंकर पद जो दिलवाती, दिव्य भावना ये कहलाती॥6॥
करें समाधि सुरपद पाये, अपराजित वो इन्द्र कहाये।
तैंतीस सागर आयु पायें, शुभ कार्यों में समय बिताये॥7॥
आयु छह महीने रह जाये, इन्द्रों के आसन कम्पायें।
मिथिला नगरी में सुर आये, गर्भकल्याणक देव मनायें॥8॥
रत्नमयी मिथिला हो जाये, मात-पिता की भक्ति रचाये।
माँ को सोलह सपने आये, मुख से गज प्रवेश कर जाये॥9॥
उत्तम सेवा करें देवियाँ, सर्व कार्य नित करें देवियाँ।
आगे-पीछे चलें देवियाँ, संग-संग रहती सर्व देवियाँ॥10॥

माँ को भोजन बना खिलाये, झूलें में बहु बार झुलायें।
बाग बगीचों में ले जाये, प्रश्न पूछ माँ को हर्षाये॥11॥
नित नवीन श्रृंगार करायें, हाथ-पैर में तेल लगाये।
गीत नृत्य संगीत सुनायें, माता को आनंद पहुँचाये॥12॥
माँ की संस्तुति सुरपति गाये, इंद्राणी माँ के गुण गाये।
विजयराज पितु रत्न लुटायें, मात वप्रिला प्रभु को जाये॥13॥
प्रभु का जन्म कल्याण मनायें, नमिनाथ का कीर्त्तन गायें।
स्वर्ण वर्ण थी प्रभु की काया, बाह्य विभूति वैभव पाया॥14॥
राजतिलक सौधर्म कराये, दस हजार की आयु पायें।
हाथी पे चढ़ वन में जाये, देव वहाँ जिन वचन सुनायें॥15॥
बने विरागी नाथ हमारे, तप कल्याण मनायें सारे।
प्रभु संग मुनि हजारों बनते, प्रभुवर केवलज्ञानी बनते॥16॥
आर्य खंड में प्रभुवर जायें, सबको जिन उपदेश सुनायें।
श्री सम्मेद शिखर प्रभु आये, कर्मनाश प्रभु शिवसुख पायें॥17॥
हम सब मोक्ष कल्याण मनायें, दाता दत्त मुक्तिश्री पाये।
प्रभु शासन में मुनि सर्वाधिक, शिवपुर पाये मुनि सर्वाधिक॥18॥
सर्व व्याधियाँ रोग मिटाने, आये हम तो प्रभु गुण गाने।
ज्वर कोरोना मिटे बीमारी, दुःख विपदायें हरो हमारी॥19॥
नमिनाथ को हम नित ध्यायें, प्रभु का मार्ग सदा अपनायें।
'आस्था' से नमि जिन को नमते, वंदे तद्गुण पाने नमते॥20॥

दोहा- दीप धूप संग जाप कर, होवें कर्म विनाश।
गुप्ति समितियाँ प्राप्त हो, पायें दिव्य प्रकाश॥
मन वच काया से करें, नमि जिन का हम ध्यान।
'आस्था' से हमको मिले, उत्तम मोक्ष कल्याण॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री नेमिनाथ (अरिष्ट नेमि) भगवान

परिचय

पूर्व भव – (1) भील (2) इम्यकेतु (3) सौधर्म स्वर्ग में देव (4) विद्याधर चिंतागति (5) चौथे स्वर्ग में देव (6) अपराजित राजा (7) अच्युतेन्द्र (8) सुप्रष्ठिराजा (9) वैजयंत मे अहमिन्द्र (10) नेमीनाथ भगवान।

गृहस्थ जीवन

वंश	–	यदुवंश
पिता	–	समुद्रविजय
माता	–	शिवादेवी
आयू	–	1000 वर्ष
ऊँचाई	–	10 धनुष

पंचकल्याणक

गर्भ	–	कार्तिक शुक्ल षष्ठी
जन्म	–	श्रावण शुक्ल पंचमी
जन्म स्थान	–	सौरीपुर (मथुरा)
दीक्षा	–	श्रावण शुक्ल षष्ठी
सहदीक्षित मुनि	–	1000
प्रथम दाता	–	वरदत्त राजा
कैवल्य ज्ञान	–	आश्विन शुक्ल प्रतिपदा
गणधर	–	वरदत्त आदिक 11
कुल मुनि	–	18 हजार
गणिनी	–	राजुल आर्या
कुल आर्यिकायें	–	40 हजार
श्रावक	–	1 लाख
श्राविकायें	–	3 लाख
मोक्ष	–	आषाढ़ शुक्ल सप्तमी
मोक्ष स्थान	–	गिरनार पर्वत

लक्षण

रंग	–	काला
चिह्न	–	शंख
चैत्यवृक्ष	–	मेषश्रृंग

शासक देव

यक्ष	–	सर्वाण्ह
यक्षिणी	–	अम्बिका (कुष्माण्डिनी)
क्षेत्रपाल	–	(1) कोकल (2) खगनाम (3) त्रिनेत्र (4) कलिंग

ऋद्धि रहस्य श्री नेमिनाथ विधान

स्थापना (काव्य छंद)

धर्मशंख का नाद, करते नेमी जिनेश्वर।
पाया निज आल्हाद, तज राजुल परमेश्वर।।
उनका हम आह्वान, करते पुष्पांजलि भर।
हृदय कमल मम आन, तिष्ठो बाल यतीश्वर।।

ॐ ह्रीं धर्म शंखनादकर्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(काव्य छंद)

मणिमय जल के कुंभ, तीर्थोदक भर लायें।
जन्मादिक् क्षय हेत, प्रभु के चरण चढ़ायें।।
नेमिनाथ भगवान, सुनिये अरज हमारी।
कर हम नेमि विधान, पायें शिव सुकुमारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गंध, प्रभु के चरण लगायें।
सर्व पाप संताप, पूजा कर विनशायें।। नेमिनाथ..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत रत्न अनेक, गजमोती भर लायें।
भर–भर अक्षत पुञ्ज, जिनवर अग्र चढ़ायें।। नेमिनाथ..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल गुलाब मनोज्ञ, पुष्प सुगंधित लायें।
पुष्प गुच्छ वा हार, प्रभु के चरण चढ़ायें।। नेमिनाथ..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे वा नमकीन, व्यंजन शुद्ध बनायें।
क्षुधा रोग क्षय हेत, जिनवर अग्र चढ़ायें।।
नेमिनाथ भगवान, सुनिये अरज हमारी।
कर हम नेमि विधान, पायें शिव सुकुमारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चम-चम जलते दीप, बहुत प्रकार सजायें।
पाने ज्ञान प्रदीप, हम दिन-रात चढ़ायें।। नेमिनाथ..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अनेक प्रकार, सुरभित शुद्ध लिये हम।
अग्नि कुण्ड में खेय, कर्म रोग विनशें हम।। नेमिनाथ..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जामुन आदि अनेक, षट् ऋतु के फल लायें
मोक्ष सौख्य के हेत, प्रभु को आज चढ़ायें।। नेमिनाथ..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक् वसु द्रव्य, उनका अर्घ बनायें।
पाने सौख्य अनर्घ्य, हमने नाथ चढ़ायें।। नेमिनाथ..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- नेमिनाथ भगवान का, कर हम श्रेष्ठ विधान।
पुष्पांजलि कर वलय पर, पायें मोक्ष महान्।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(शंभु छंद)

जिनदेव ! तुम्हारी ऋद्धि सभी, उनको सुख सिद्धि प्रदान करें।
जो भक्ति भाव श्रद्धा पूर्वक, श्रीपति का श्रेष्ठ विधान करें।

हे नेमि ! तीसरे बालयती, तुम हो अजेय जिन ! लक्ष्मीपती।
हम पूजा भक्ति विधान करें, पाने सच्चा सुख मोक्ष गती॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ओहि जिणाणं को ध्यायें, ध्वज अर्घ फूल फल ले आये।
इस ऋद्धि से सिर सम्बन्धी, सब रोग नेमि जिन विनशायें॥ हे नेमि..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं शिरोरोग विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमोहि जिणाणं हम जपते, सब रोग नाक के प्रभु हरते।
हम नेमि विधान महान् करें, जिनवर सबका मंगल करते॥ हे नेमि..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं नासिका रोग विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सव्वोहि जिणाणं पूजें हम, सब नेत्र रोग प्रभु विनशायें।
हम प्रभु का सरल विधान करें, हर दिन प्रभु के दर्शन पायें॥ हे नेमि..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं नेत्ररोग विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणंतोहि जिणाणं नेमि नमो, इस दिव्य मंत्र को जो ध्याये।
वो कानों के सब रोग भगा, आगे जिन जैसा बन जाये॥ हे नेमि..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं कर्णरोग विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारी, श्री नेमिनाथ को ध्यायेंगे।
निज शूल उदर गड गुमड नशा, हम आत्म विवेक जगायेंगे॥ हे नेमि..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं शूल उदर गड गुमड रोग विनाशक आत्मविवेक ज्ञान प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम बीज बुद्धी ऋद्धिधारक, श्री नेमिनाथ का मनन करें।
सब श्वास व हिचकी रोग नशें, वा सर्व ज्ञान आचमन करें॥ हे नेमि..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं श्वास हेड़की रोग विनाशक सर्वज्ञानप्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पदानुसारिणि ऋद्धिपती, श्री नेमि जिनेश्वर को पूजे।
वो वैर परस्पर का विनशा, नहिं कोर्ट कचहरी से जूझें।।
हे नेमि ! तीसरे बालयती, तुम हो अजेय जिन ! लक्ष्मीपती।
हम पूजा भक्ति विधान करें, पाने सच्चा सुख मोक्ष गती।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारीणं परस्पर वैर विरोध विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभिन्न श्रोतृ ऋद्धिधारी, श्री नेमि जिनेश हमारे हैं।
वो श्वास कास सब रोग नशे, जो नित्य नमें प्रभु द्वारे में।। हे नेमि.. ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्न सोदाराणं श्वास–कास रोग विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम स्वयंबुद्ध ऋद्धि पतिवर, नेमि का जाप विधान करें।
इस पूजा से हम काव्य सृजन, पाण्डित्य ज्ञान वरदान वरें।। हे नेमि.. ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धीणं कवित्व पाण्डित्य शक्ति प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि प्रत्येक ऋद्धिधारी, नेमि की भक्ति प्रताप करे।
प्रतिवादी विद्या का विनाश, क्षणभर में आपो आप करे।। हे नेमि.. ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धीणं प्रतिवादी विद्या विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम बोधित बुद्धि ऋद्धिवान, तीर्थंकर नेमि विधान करें।
इससे हम अन्य गृहीण ज्ञान, शिवसुख साधन श्रुतज्ञान वरें।। हे नेमि.. ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धीणं अन्य गृहीण श्रुतज्ञान प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ऋजुमति मनःपर्ययज्ञानी, नेमि का ध्यान विधान करें।
तीर्थंकर जिन की अर्चा से, हम बहुश्रुत ज्ञान महान् वरें।। हे नेमि.. ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ऋजु मदीणं बहुश्रुतज्ञान प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विपुलमति ऋद्धिधारी, श्री नेमिनाथ की भक्ति करें।
तीर्थेश नेमि की अर्चा से, हम सर्व शांति सुख सिद्धि वरें॥
हे नेमि ! तीसरे बालयती, तुम हो अजेय जिन ! लक्ष्मीपती।
हम पूजा भक्ति विधान करें, पाने सच्चा सुख मोक्ष गती॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं सर्वशांति प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस पूर्व बुद्धि ऋद्धि स्वामी, नेमि के गुण हम गायेंगे।
प्रभु की पूजा करने वाले, श्रुत सर्व वेदी बन जायेंगे॥ हे नेमि.. ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं सर्ववेदन गुणप्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चौदस पूर्व ऋद्धि नायक, नेमि तीर्थंकर को पूजें।
स्वसमय और परसमय जान, षड् दर्शन में हम ना झूझें॥ हे नेमि.. ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वीणं स्वसमय–परसमय भेदज्ञान प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टांग महानिमित्त ज्ञान, जिनदेव सहज पा जाते हैं।
जीवित मरणादि ज्ञान विशद, प्रभु भक्त भक्ति से पाते हैं॥ हे नेमि.. ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांग महानिमित्त कुसलाणं जीवित मरणादि ज्ञान प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विकुर्वण ऋद्धि प्राप्त नेमि, जिन की यह महिमा होती है।
कामित वस्तु की प्राप्ति शीघ्र, प्रभु के भक्तों को होती है॥ हे नेमि.. ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विव्वइड्ढि पत्ताणं कामित वस्तु प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विद्या ऋद्धि के धारी, नेमीश्वर के गुण गाते हैं।
उनसे उपदेश प्रदेश ज्ञान, प्रभु भक्त भक्ति से पाते हैं॥ हे नेमि.. ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं उपदेश प्रदेश मात्र ज्ञान प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चारण ऋद्धि के ईश्वर, नेमि को अर्घ चढ़ाते हैं।
प्रभु भक्त नष्ट पदार्थ ज्ञान, प्रज्ञा अर्चा से पाते हैं।।
हे नेमि ! तीसरे बालयती, तुम हो अजेय जिन ! लक्ष्मीपती।
हम पूजा भक्ति विधान करें, पाने सच्चा सुख मोक्ष गती।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं नष्ट पदार्थ चिंताज्ञान प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम प्रज्ञाश्रमण ऋद्धिधारी, नेमि का श्रेष्ठ विधान करें।
उनसे आयुष अवसान ज्ञान, पाकर निजपर कल्याण करें।। हे नेमि.. ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं आयुष्य अवसान ज्ञानप्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाशगामी ऋद्धिधारी, जिनवर को जो नित ध्याते हैं।
वो आगे उन सम मुनि बनकर, आकाश गमन कर जाते हैं।। हे नेमि.. ।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं अंतरिक्षगमन शक्ति प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आशीविष ऋद्धिधारी, नेमि प्रभु का गुणगान करें।
उसका विद्वेष प्रतिहत हो, प्रतिपल समता सद्ज्ञान वरें।। हे नेमि.. ।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं विद्वेष प्रतिहत कारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम दृष्टि विष ऋद्धिधारी, प्रभुवर का पूजन भजन करें।
उससे जंगम स्थावर कृत, सारे विघ्नों का शमन करें।। हे नेमि.. ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठीविसाणं स्थावर जंगमकृत विघ्न विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम उग्र तपस्या ऋद्धि धर, प्रभु का आराधन करते हैं।
प्रभु के सेवक वच स्तंभन, अतिशय बिन साधन करते हैं।। हे नेमि.. ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं वचस्तंभक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम दीप्त तपो ऋद्धिधारी, जिनवर की अर्चा करते हैं।
प्रभु भक्त करे सेना स्तंभन, सब कौतुक चर्चा करते हैं।।
हे नेमि ! तीसरे बालयती, तुम हो अजेय जिन ! लक्ष्मीपती।
हम पूजा भक्ति विधान करें, पाने सच्चा सुख मोक्ष गती।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं सेना स्तंभक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो तप्त तपो ऋद्धिधारी, प्रभुवर की भक्ति रचाते हैं।
वो जिन सेवक अग्निस्तंभन, जल मंत्र बिना कर जाते हैं।। हे नेमि.. ।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अग्निस्तंभक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो महातप ऋद्धि के नायक, श्री नेमिनाथ को ध्याते हैं।
वो भक्त तीव्र जल का स्तंभन, जिन पूजा से कर जाते हैं।। हे नेमि.. ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं जल स्तंभक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम घोर तपस्वी ऋद्धिपति, तीर्थंकर के गुण गाते हैं।
प्रभु पूजा से विष दोष सभी, वा रोग नष्ट हो जाते हैं।। हे नेमि.. ।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं विषरोगादि विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम घोर गुणाणं ऋद्धिवान, नेमि की महिमा गाते हैं।
शेरादि दुष्ट पशुओं के भय, प्रभु पूजा से नश जाते हैं।। हे नेमि.. ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं दुष्टमृगादि भय विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम घोर पराक्रम ऋद्धिधर, नेमि जिनवर के गुण गायें।
सब लता गर्भ आदिक् के भय, प्रभु की अर्चा से मिट जायें।। हे नेमि.. ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण परक्कमाणं लता गर्भादि भय विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम घोर ब्रह्मचारी जिनवर, श्री नेमिनाथ का मनन करें।
प्रभु के विधान से भूत-प्रेत, आदिक् के भय का हनन करें॥
हे नेमि ! तीसरे बालयती, तुम हो अजेय जिन ! लक्ष्मीपती।
हम पूजा भक्ति विधान करें, पाने सच्चा सुख मोक्ष गती॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुण बंभयारीणं भूत-प्रेत आदि भय विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आमौषधि ऋद्धि धारक, प्रभु नेमि पर विश्वास करें।
जन्मांतर वैर कुदेवों का, प्रभु की पूजा ही नाश करें॥ हे नेमि..॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं जन्मांतर देवकृत वैर विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्ष्वेलौषधि ऋद्धि प्राप्त प्रभो, नेमि जिन का हम जाप करें।
सब अपमृत्यु भय का विनाश, जिन पूजा आपो आप करें॥ हे नेमि..॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहि पत्ताणं सर्व अपमृत्यु विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल्लौषधि ऋद्धि प्राप्त प्रभो !, हे नेमि ! तुम्हें जो ध्यायेंगे।
वो अपस्मार व्याधि विनशा, सम्पूर्ण स्वास्थ्य को पायेंगे॥ हे नेमि..॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं अपस्मार रोग विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ विडौषधि ऋद्धिधारी, जिनवर की पूजा होती है।
वहाँ गजमारी गजगण्ड रोग, सबकी पीड़ा क्षय होती है॥ हे नेमि..॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं गजमारी विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सर्वौषधि ऋद्धिधारक, श्री नेमिनाथ को ध्याते हैं।
वो नर सुर कृत उपसर्ग सभी, प्रभु पूजा से विनशाते हैं॥ हे नेमि..॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं मनुष्य अमरोपसर्ग विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मन बल ऋद्धि प्राप्त प्रभो, श्री नेमिनाथ के गुण गायें।
प्रभु पूजा से गौ अश्व मारी, आदिक रोगों को विनशायें।।
हे नेमि ! तीसरे बालयती, तुम हो अजेय जिन ! लक्ष्मीपती।
हम पूजा भक्ति विधान करें, पाने सच्चा सुख मोक्ष गती।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं गो अश्वमारी विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम वचन बली ऋद्धिधारी, नेमि का भव्य विधान करें।
प्रभु नाम मंत्र से अज मारी, विनशा कर जग कल्याण करें।। हे नेमि.. ।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं अजमारी विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम काय बली ऋद्धि वाले, नेमीश्वर जिन को ध्यायेंगे।
जिन सम्यक् मंत्रों के द्वारा, गो महिष मारी विनशायेंगे।। हे नेमि.. ।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं महिष गोमारि विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्षीर स्रावी ऋद्धिधारी, श्री नेमिनाथ को ध्याता है।
वो क्रूर विषैले सर्पों का, विष भय पीड़ा विनशाता है।। हे नेमि.. ।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं सर्प भय विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सर्पिष स्रावी ऋद्धिधर, जिनवर को अर्घ चढ़ाता है।
वो युद्धों का भय विनशाकर, आनंद महोत्सव पाता है।। हे नेमि.. ।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं युद्धभय विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मधुर स्रावी ऋद्धिधारक, श्री नेमिनाथ को ध्यायेंगे।
प्रभु पूजा से सब दुःख विनशा, हम सर्वसौख्य को पायेंगे।। हे नेमि.. ।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं सर्वसौख्य प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अमृत स्रावी ऋद्धिवान, भगवान नेमि को ध्याता है।
वो सर्व राजभय विनशा कर, सम्पूर्ण राज सुख पाता है।।
हे नेमि ! तीसरे बालयती, तुम हो अजेय जिन ! लक्ष्मीपती।
हम पूजा भक्ति विधान करें, पाने सच्चा सुख मोक्ष गती।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्व राजभय विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षीण महानस ऋद्धि ईश, श्री नेमिनाथ के गुण गायें।
सब कुष्ठ गंडमालादि रोग, प्रभु की पूजा से विनशायें।। हे नेमि.. ।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणं महाणसाणं कुष्ठ गंडमालादि रोग विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम वर्द्धमान ऋद्धिधारी, श्री नेमिनाथ का भजन करें।
इससे सब बंध विमोचन हो, निर्बाध मोक्ष में गमन करें।। हे नेमि.. ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं बंधन विमोचक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धायतनं वासी जिनवर, श्री नेमिनाथ का जाप करें।
जिन मंत्र कवच से अस्त्र-शस्त्र, सब शक्ति का अभिशाप हरें।। हे नेमि.. ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं अस्त्र-शस्त्रादि शक्ति निरोधक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सर्व साधु सब ऋद्धि ईश, तीर्थंकर नेमि को ध्यायें।
सत्संगत साधु चर्याकर, हम सर्व सिद्धियों को पायें।। हे नेमि.. ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसाहूणं सर्व सिद्धि प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (चौपाई छंद)

श्री कचनेर तीर्थ के अन्दर, चिंतामणि प्रभु पार्श्व मनोहर।
प्रभुवर ने अतिशय दिखलाया, सुन्दर धर्मतीर्थ बनवाया।।

उसमें नेमिनाथ जिन राजें, भविजन पुष्प चढ़ायें ताजे।
हम उनको पूर्णार्घ चढ़ायें, भक्ति सहित बहु वाद्य बजायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं कालसर्प राहु जनित दोष आदि सर्व कोरोना रोग, चिंता, दुःख संकट विघ्नहर्त्ता, ऋद्धि-सिद्धी सर्व सौभाग्य प्रदाता धर्मशंखनादकर्ता श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आत्म विजय जग शान्तिहित, करते शान्तिधार।
भव्य सजायें पुष्प से, नेमिनाथ का द्वार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- सुन पशुओं का आर्त्त स्वर, जगा जिन्हें वैराग्य।
उनकी जयमाला पढ़ें, हो उन सम सौभाग्य॥

(सखी छंद)

जय नेमिनाथ तीर्थंकर, तुम तीजे बाल यतीश्वर।
भव-भव में व्रत अपनाया, उसका ही फल अब पाया॥1॥

यो जीव अनादि अनंता, तुम कहते श्री भगवंता।
उनमें तुम दश भव न्यारे, कहते जिनशास्त्र हमारे॥2॥

जिनवर ! तुम दश भव पहले, थे वन में भील अकेले।
पत्नि ने मार्ग दिखाया, मुनि से अणुव्रत अपनाया॥3॥

फिर वृषभदत्त के सुत तुम, था नाम इम्यकेतु तुम।
नित देव-शास्त्र-गुरु ध्यायें, फिर प्रथम स्वर्ग में जायें॥4॥

विद्याधर चिंतागति बन, चतु स्वर्ग गये थे मुनि बन।
फिर बन अपराजित राजा, निशदिन पूजें मुनिराजा॥5॥

उत्तम मुनिव्रत अपनाया, फिर अच्युतेन्द्र पद पाया।
फिर सुप्रतिष्ठ मुनि बनकर, बांधी प्रकृति तीर्थंकर॥6॥
तब श्रेष्ठ समाधि व्रत कर, प्रभु पायें द्वितीय अनुत्तर।
अब प्रभु अंतिम तन पायें, श्री नेमिनाथ कहलायें॥7॥
प्रभु मात शिवा के प्यारे, नृप समुद्रजय सुत न्यारे।
राजुल को ब्याहन आये, छप्पन कोटि नर लाये॥8॥
पशु क्रन्दन घोर सुना जब, प्रभु को वैराग्य हुआ तब।
उनको बंधन से छोड़ा, और जग से नाता तोड़ा॥9॥
छप्पन दिन श्रमण रहे थे, फिर श्री अरिहंत बने थे।
तुम समोशरण मनहारी, गणिनी राजुल व्रतधारी॥10॥
शौरीपुर दो कल्याणक, गिरनार तीन कल्याणक।
सुर-नर मिल आन मनायें, सातिशय पुण्य कमायें॥11॥
सर्वाण्ह यक्ष तुम सेवक, वे जिनशासन के रक्षक।
कुष्माण्डिनी यक्षी माता, जिनधर्म प्रभावक माता॥12॥
कोकल खगनाम मनोहर, त्रिनेत्र कलिंग सुखाकर।
चउ क्षेत्रपाल महाराजा, भक्तों के रक्षक राजा॥13॥
केशव तुमको नित ध्यायें, बलराम शरण में आये।
प्रभु लक्षकोटि नर सारे, आये सब शरण तुम्हारे॥14॥
सबको सन्मार्ग दिखाया, जिनमत का शंख बजाया।
अंतिम गिरनारी आये, प्रभु अंतिम ध्यान लगायें॥15॥
प्रभु कर्म अघाति नशाये, लोकाग्र शीघ्र वे पायें।
उनका विधान हम गायें, सब कर्म रोग विनशायें॥16॥

श्री नेमिनाथ को ध्यायें, उन जैसे हम बन जायें।
'गुप्तिनंदी' गुण गायें, निज आठों कर्म नशायें।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कर्म सर्व कोरोना रोग-संकट-उपद्रव विनाशक सर्वग्रह पीड़ा निवारक, कालसर्प आदि सर्वदोष निवारक आनंद शिवसौख्य प्रदायक श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित धर्मशंखनादकर्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- राजुल सुकुमारी तजी, गये नेमि गिरनार।
उनको ध्यायें नित्य हम, पायें पद अविकार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज- ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला है...)

आरती करने आओ रे, श्री नेमी प्रभु की।
नेमी प्रभु की, नेमी प्रभु की-2
भक्ति करने आओ रे, श्री नेमी प्रभु की...

1. **शौरीपुर अवतार लिया है, इस धरती को पूज्य किया है।**
   मात शिवा के लाल कहाते, समुद्रजय पितु हर्ष मनाते।
   माता भी बलि-बलि जाये रे, श्री नेमी प्रभु की.. आरती..
2. **पशुओं पे प्रभु दया दिखायें, गिरनारी पे रथ ले जाये।**
   दीक्षा लेके कर्म नशायें, ज्ञान में अन्तिम ज्ञान वो पाये।।
   तीजें बालयतिश्वर हैं, श्री नेमी प्रभु की.. आरती..
3. **गढ़ गिरनार जिनेश्वर आये, मोक्ष शिखर पर्वत से पायें।**
   हम भी प्रभु की आरती गायें, घृत कपूर के दीप जलायें।।
   'आस्था' से आरती गायें रे, श्री नेमी प्रभु की.. आरती..

***

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा– श्री अरिष्ट नेमी प्रभु, नेमीनाथ भगवान।
करुणा जिनके उर भरी, किया जगत् कल्याण॥
श्रद्धा से हम सब करें, प्रभु के चरण प्रणाम।
चालीसा प्रभु का पढ़ें, जपें सदा प्रभु नाम॥

चौपाई

जय श्री नेमीनाथ तीर्थंकर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
गाते हम चालीसा प्रभु का, नेमीनाथ तीर्थंकर जिन का॥1॥
बाइसवें तीर्थंकर स्वामी, सर्व दु:खों को हरते स्वामी।
बाईस परिषह नाथ बताये, परिषह जेता हम बन जाये॥2॥
नो भव जिसका साथ निभायें, दसवें भव वैराग्य जगाये।
प्रभु के पूर्व भवों को जाने, नेमीनाथ को हम सब मानें॥3॥
भील भीलनी वन में जायें, मुनिवर से अणुव्रत अपनायें।
गुरु से मद्य मांस वे छोड़ें, जैन धर्म से मन को जोड़ें॥4॥
मरकर दोनों सुरपद पायें, चिंतागति खगपति बन जाये।
करें साधना सुरपद पाये, अपराजित राजा बन जाये॥5॥
अपराजित मुनि करें समाधि, अच्युतेन्द्र की पाय उपाधि।
सुप्रतिष्ठ राजा कहलाये, जग प्रतिष्ठ वे कार्य कराये॥6॥
षट् कर्त्तव्य सदा नृप पाले, मुनि सेवा नित करने वाले।
उल्कापात विरक्ति जगाये, गुरु समुन्दर से व्रत पाये॥7॥
आत्मज्ञान अभ्यास बढ़ायें, दर्श विशुद्धि भावना भाये।
तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये, व्रत अनेक मुनिवर अपनाये॥8॥
अनशन करते नाथ अनेकों, व्रत के नाम ग्रंथ में देखो।
कनकावली रत्नावली आदि, धर्मचक्र चन्द्रायण आदी॥9॥
पंचकल्याणक जिनसंपत्ति, सब व्रत हरते सर्व विपत्ति।
नाना व्रत गुरु करते जायें, करें समाधि सुरपद पायें॥10॥

बने इन्द्र जयंत स्वर्ग के, तैंतीस सागर आयु धर थे।
छह महीने आयु रह जाये, धरती पे हलचल मच जाये॥11॥
शौरीपुर को स्वर्ग बनायें, रत्नमहल सुर भव्य बनाये।
इन्द्र कुबेर रत्न बरसाये, पन्द्रह महिने पुण्य कमाये॥12॥
मात शिवा को सपने आये, देव स्वर्ग से माँ उर आये।
पिता समुद्रविजय कहलाये, नेमीनाथ का जन्म मनाये॥13॥
सहस्र वर्ष आयु प्रभु पाये, नीलकमल सम तन प्रभु पाये।
नेमीप्रभु का ब्याह रचायें, जूनागढ़ में खुशियाँ छाये॥14॥
राजकुमारी राजुल प्यारी, नो भव प्रीति साथ गुजारी।
पशु क्रंदन सुन प्रभु घबराये, मुक पशु ये मुझे बुलाये॥15॥
सारी बात जानकर स्वामी, उनको छोड़ें अन्तर्यामी।
पशुबंधन वैराग्य जगाये, प्रभु गिरनार गिरी पे जाये॥16॥
तत्क्षण मुनि दीक्षा को धारे, तीजे बाल यतीश हमारे।
आर्यिका दीक्षा ले राजुल, गणिनी माता बन गई राजुल॥17॥
केवलज्ञान जिनेश्वर पाये, गिरनारी से मोक्ष उपायें।
प्रभु के पंचकल्याण मनायें, सब पापों से मुक्ति पाये॥18॥
रोग-शोक विपदा मिट जाये, हर दिन प्रभु दर दीप जलाये।
धूप चढ़ा हम मंत्र जपेंगे, सर्व ग्रहों को नाथ हरेंगे॥19॥
श्री जिन नेमीनाथ को वंदन, हरो हमारे कर्मन् बंधन।
गुप्ति धर प्रभु के गुण गाये, प्रभु के लघुनंदन बन जाये॥20॥

दोहा- शौरीपुर द्वारावती, गिरनारी के नाथ।
शंख चिह्न शोभित प्रभु, जिनवर नेमीनाथ॥
चालीसा चालीस दिन, पढ़े सुने गुण गाय।
'आस्था' को मुक्ति मिले, जिन शरणा नित पाय॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का जीवन-परिचय

(1) मरूभूति मंत्री (2) वज्रघोष हाथी (3) सहस्रार स्वर्ग में देव (4) रश्मिवेग विद्याधर (5) अच्युत स्वर्ग में देव (6) वज्रनाभि चक्रवर्ती (7) मध्यम ग्रैवेयक में देव (8) आनंद राजा (9) आनत स्वर्ग में इन्द्र (10) पारसनाथ भगवान

पिता	–	अश्वसेन
माता	–	वामा देवी
जन्म भूमि	–	बनारस
गर्भ	–	वैशाख कृष्ण द्वितीया
जन्म	–	पौष कृष्ण एकादशी
तप	–	पौष कृष्ण एकादशी
सहदीक्षित मुनि	–	300
कैवल्य ज्ञान	–	चैत्र कृष्ण चतुर्थी
मोक्ष	–	श्रावण शुक्ल सप्तमी
वंश	–	उग्रवंश
आयु	–	100 वर्ष
शरीर की कांति	–	हरितमणि के समान
ऊँचाई	–	नौ हाथ
कुमार काल	–	30 वर्ष का
वैराग्य कारण	–	पूर्वभव स्मरण, बालयति
प्रथम आहार	–	गुल्मखेट नगर मे
प्रथम दाता	–	धन्य राजा
छद्मस्थ काल	–	चार महीने
केवलज्ञान	–	पाँच माह कम सत्तर वर्ष
गणधर	–	स्वयंभू आदि 10
कुल मुनि	–	16000
गणिनी	–	सुलोचना आर्या
कुल आर्यिकायें	–	36 हजार
श्रावक	–	1 लाख
श्राविकायें	–	3 लाख
मोक्ष भूमि	–	सम्मेद शिखर स्वर्णभद्र कूट
यक्ष	–	धरणेन्द्र
यक्षिणी	–	पद्मावती
चिह्न	–	सर्प
दसभव का वैरी	–	कमठ
क्षेत्रपाल	–	(1) कीर्तिधर (2) स्मृतिधर (3) विनयधर (4) अब्जधर

चिंतामणि श्री पार्श्वनाथ विधान

स्थापना (नरेन्द्र छन्द)

कलिकुण्ड चिंतामणि पारस, संकट हर कहलाते।
सहस्त्रफणि श्री पार्श्वनाथ जी, सबके उनके कष्ट मिटाते॥
हर मंदिर में आप विराजे, हर भक्तों के मन में।
सावलियाँ प्रभु तुम्हें बुलाये, आओ हृदय कमल में॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुःख–दारिद्रय निवारक, कामनापूर्ण फलप्रदायक श्री चिंतामणि कलिकुण्ड पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणकारक, इच्छापूरक, धरणेन्द्र पद्मावती पूजित सहस्त्रफणी श्री चिंतामणि कलिकुण्ड पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हं संकटहर, अभीष्ट ऋद्धि–सिद्धिप्रदायक, विजयकेतु उपसर्गजयी चंडौग्र श्री चिंतामणि कलिकुण्ड पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

कलशों में नीर क्षीर ले अभिषेक करेंगे।
जन्मादि तीन रोग को प्रभु आप हरेंगे॥
चिंतामणि कलिकुण्ड सहस्त्रफणि को प्रणाम।
पूजन विधान करके जपें पार्श्वनाथ नाम॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंतामणि भगवान को हम गंध लगायें।
भगवान के चरणों की गंध शीश लगायें॥ चिंतामणि..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल व मोती आदि से आराधना करें।
प्रभु आपके समान हम भी साधना करें॥ चिंतामणि..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ को गुलाब आदि चढ़ायें।
प्रभु आपके समान हम भी काम नशायें।।
चिंतामणि कलिकुण्ड सहस्रफणि को प्रणाम।
पूजन विधान करके जपें पार्श्वनाथ नाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी कचौरी पूर्णपोली लड्डू मिठाई।
नाना प्रकार की चढ़ायें शुद्ध मिठाई।। चिंतामणि..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर ये जगमगा रहा अखण्ड ज्योति से।
हम दीप दान करके सजें ज्ञान ज्योति से।। चिंतामणि..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

साँवरिया पार्श्वनाथ को हम धूप चढ़ायें।
आठों करम को नाश भूमि आठवीं पायें।। चिंतामणि..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल की महामाल बना, वेदी सजायें।
हे नाथ ! हम भी मोक्ष के सोपान को पायें।। चिंतामणि..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हर भव में आपने क्षमा का सूत्र सिखाया।
हमने अनर्घपद के हेतु अर्घ चढ़ाया।। चिंतामणि..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा– छवि आपकी मोहनी, मन मंदिर बस जाय।
संकट हर प्रभु पार्श्व जी, चिंतामणि कहलाय।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

तीर्थंकर के पाँच कल्याणक, जन-जन मंगलकारी।
पाँचों कल्याणक में सुरगण, भक्ति करें मनहारी॥
बालयति श्री पार्श्वनाथ का, श्रेष्ठ विधान रचायें।
सर्वक्षेत्र के पार्श्वनाथ जिन, सबके कष्ट मिटायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक पूजित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ प्रभु हर भक्तों को, अपने पास बुलायें।
रहे सदा जो पार्श्व चरण में, उनके विघ्न भगायें॥ बालयति..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसंकट हराय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम के तीर्थ अनेकों, सब ही अतिशय वाले।
करुणाधारी पार्श्वनाथ जी, भक्तों के रखवाले॥ बालयति..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं करुणामूर्ति श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस्रफणा में मूरत प्रभु की, लगती अति ही प्यारी।
सहस्रफणी परमेश्वर पारस, कीर्ति तुम्हारी भारी॥ बालयति..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रफणीश्वर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छोटी हो या बहुत बड़ी हो, प्रभुवर की प्रतिमायें।
पूर्ण करें सब मनोकामना, भक्त भक्ति से ध्यायें॥ बालयति..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्ववांछापूर्णकराय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर प्रतिमा में चमत्कार है, ऐसा भाव बनायें।
सब प्रतिमा की पूजा करके, तीर्थों का फल पायें॥ बालयति..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशयकारी सर्वजिन तीर्थरूपाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमस्कार श्रद्धा से जब हो, चमत्कार हो जाये।
हर मंदिर की हर मूरत में, पारस नाथ समायें॥ बालयति..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैतन्य चमत्कारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन मद में जो प्रभु को तजकर, भोगों में लग जाये।
आये जब आपत्ति उस पर, प्रभु के दर तब आये॥
बालयति श्री पार्श्वनाथ का, श्रेष्ठ विधान रचायें।
सर्वक्षेत्र के पार्श्वनाथ जिन, सबके कष्ट मिटायें॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व आपत्तिहराय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कालसर्प या केतुग्रह की, बाधा जब-जब आये।
तब सब मिथ्यामत को तजकर, प्रभु की भक्ति रचायें॥ बालयति..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं कालसर्प दोष केतुग्रह अरिष्ट निवारक भक्तिप्रदायक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

चिंतामणि चिंता हरे, रहे ना चिंता पास।
पारस के जो दास है, उनके प्रभुवर पास॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं चिंताहर चिंतामणि श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलिकुण्ड जिन यंत्र पे, बैठे पारसनाथ।
कलिकुण्ड हैं पाप हर, झुका रहे हम माथ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं कलिकुण्ड श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकट हर संकट हरें, साँवरिया भगवान।
संकट में जो साथ दे, उनका करें विधान॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं संकटहर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छायें पूरी करें, इच्छापूरक नाथ।
इच्छित फल देते अवश, श्री जिन पारसनाथ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं इच्छापूरक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि-सिद्धि दाता प्रभू, करो सिद्ध सब कार्य।
पद्मावती माँ आपकी, भक्ति करें अनिवार्य॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋद्धि-सिद्धिदाता पद्मावत्यै पूजिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षेश्वर धरणेन्द्र नित, पूजा करें त्रिकाल।
श्रद्धा से गुणगान कर,जीवन करें निहाल॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं धरणेश्वर पूज्याय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व सिद्धिदायक विभो !, नीलमणि सी काय।
आधि-व्याधि विपदा हरे, जो प्रभु को नित ध्याय॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसिद्धी प्रदायक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्व सर्वतोभद्र हैं, सबको अति सुखदाय।
भक्त सदा भगवन् बने, पार्श्व प्रभु समझाय॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वतोभद्र श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहसनाम से आपकी, संस्तुति करता इन्द्र।
गुण अनंत हैं आपके, गा न सके गण इन्द्र॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रनाम अनंतगुणधारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नगर बनारस के मंदिर की, प्रतिमा अतिशयकारी।
नमन करें हम भगवन् तुमको, तुम हो संकटहारी॥
सर्व क्षेत्र में पार्श्व प्रभु की, सर्वाधिक प्रतिमायें।
उनका यहाँ विधान करें हम, ध्वज संग अर्घ्य चढ़ायें॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशय क्षेत्र बनारस नगर स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बिजौलियाँ तीर्थ पार्श्व की, तप कैवल्य नगरिया।
यहीं हुआ उपसर्ग आप पे, प्रगटी मोक्ष मगरिया॥ सर्व क्षेत्र में... ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं बिजौलिया तीर्थ क्षेत्र स्थित उपसर्ग विजयी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बालूकण से बनी है प्रतिमा, चवलेश्वर में प्यारी।
सिंगोली में पार्श्व प्रभु की, मुरतियाँ मनहारी॥
सर्व क्षेत्र में पार्श्व प्रभु की, सर्वाधिक प्रतिमायें।
उनका यहाँ विधान करें हम, ध्वज संग अर्घ्य चढ़ायें॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशयकारी चवलेश्वर क्षेत्र सिंगोली स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुबन आये भक्त टोलियाँ, सप्तम हो या होली।
लड्डू ले पूजा में रंगते, भरते अपनी झोली॥ सर्व क्षेत्र में... ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहिक्षेत्र में अतिशय तेरा, नजर आज भी आये।
हम भी भगवन् भक्ति भाव से, आठों द्रव्य चढ़ायें॥ सर्व क्षेत्र में... ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं अहिक्षेत्र स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नोखंडी पारस बाबा के, दर्शन करने जायें।
स्तवनिधि के जिन मंदिर में, पारस प्रभु मिल जायें॥ सर्व क्षेत्र में... ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्तवनिधि (तोंदी) क्षेत्र स्थित श्री नोखंडी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाबा नगर पार्श्व जिनवर की, घटना गुडिया वाली।
चमत्कार अति भारी प्रभु का, मन को हरने वाली॥ सर्व क्षेत्र में... ॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं बाबानगर क्षेत्र स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीजापुर के सहस्रफणीश्वर, पारस भू से प्रगटे।
दूध डालते एक फणा पे, सभी फणों से प्रगटे॥ सर्व क्षेत्र में... ॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं बीजापुर क्षेत्र स्थित श्री सहस्रफणी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजपंथा उत्तुंग पहाडी, उस पर पारस बाबा।
भक्त जपें नित नाम आपका, जय-जय पारस बाबा॥ सर्व क्षेत्र में... ॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं गजपंथा सिद्धक्षेत्र स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कचनेर क्षेत्र के खंडित, पारस हुए अखंडित।
लाखों पदयात्री दर्शन पा, होते महिमा मंडित।।
सर्व क्षेत्र में पार्श्व प्रभु की, सर्वाधिक प्रतिमायें।
उनका यहाँ विधान करें हम, ध्वज संग अर्घ्य चढ़ायें।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं कचनेर क्षेत्र स्थित अतिशयकारी चिंतामणी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तागिरी व नागपुर के, पारस पास बुलायें।
पंचामृत अभिषेक करें भवि, अतिशय आनंद पायें।। सर्व क्षेत्र में... ।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तागिरी सिद्धक्षेत्र वा नागपुर स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नैनागिरी में पारसप्रभु का, मंदिर भव्य बना है।
समवशरण प्रभुवर का आया, आगम का कहना है।। सर्व क्षेत्र में... ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं नैनागिरी सिद्धक्षेत्र स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्र अणिंदा में पारस की, प्रतिमा तेज दिखाये।
तस्कर हाथ लगाये फण पे, वो अंधा हो जाये।। सर्व क्षेत्र में... ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं अणिंदा अतिशय क्षेत्र स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महुआ में अति सुन्दर प्रतिमा, बालू की मनहारी।
सब प्रश्नों के उत्तर मिलते, कहते सब नर-नारी।। सर्व क्षेत्र में... ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं महुआ अतिशय क्षेत्र स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस्रफणीश्वर पारस बाबा, धर्मतीर्थ पर आये।
सहस्र अर्घ की थाल सजाकर, प्रभु को अर्घ चढ़ाये।। सर्व क्षेत्र में... ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र स्थित श्री सहस्रफणीश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एलोरा की बड़ी गुफा में, पारसनाथ विराजे।
पारस के चरणों में पारस, पारस पार्श्व विराजे।।
सर्व क्षेत्र में पार्श्व प्रभु की, सर्वाधिक प्रतिमायें।
उनका यहाँ विधान करें हम, ध्वज संग अर्घ्य चढ़ायें।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं एलोरा क्षेत्र स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मांगीतुंगी सिद्ध क्षेत्र में, भक्त दूर से आयें।
पंचामृत अभिषेक करे वे, अपने कष्ट मिटायें।। सर्व क्षेत्र में... ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जटवाड़ा में संकटहर्ता, सावलियाँ मन भायें।
दीप जलायें अर्घ्य चढ़ायें, हम सब प्रभु को ध्यायें।। सर्व क्षेत्र में... ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं जटवाड़ा अतिशय क्षेत्र स्थित श्री संकटहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकगिरी में विजय पार्श्व जिन, सबको विजय दिलाये।
जो आये इनके चरणों में, कर्मों पे जय पाये।। सर्व क्षेत्र में... ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं कनकगिरी अतिशय क्षेत्र स्थित श्री विजय पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ में विजयकेतु जिन, सहस्रफणी सुखकारी।
श्री चंडोग्र अभीष्ट पार्श्व जी, नव जिन शांतिकारी।। सर्व क्षेत्र में... ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र स्थित श्री विजयकेतु सहस्रफणी चंडोग्र अभीष्टसिद्धि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतरिक्ष जिन्तूर तीर्थ में, अधर विराजे पारस।
जाप करें हम नाथ आपका, हमें बना दो पारस।। सर्व क्षेत्र में... ।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिरपुर जिन्तूर अतिशय क्षेत्र स्थित श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुगिरी में कलिकुण्ड श्री, काले पारस बाबा।
करवाते अभिषेक वहाँ पर, कुंथुसागर बाबा॥
सर्व क्षेत्र में पार्श्व प्रभु की, सर्वाधिक प्रतिमायें।
उनका यहाँ विधान करें हम, ध्वज संग अर्घ्य चढ़ायें॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं कुंथुगिरी क्षेत्र स्थित श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार तीरथ है प्यारा, पार्श्व बिम्ब मनहारी।
देवनंदी गुरुवर नित ध्यायें, भक्ति करें मनहारी॥ सर्व क्षेत्र में... ॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोकार तीर्थ क्षेत्र स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे ऊँची पारस प्रतिमा, अति मनोज्ञ मन भाये।
गुणधरनन्दी वरुर क्षेत्र में, धर्म ध्वजा फहरायें॥ सर्व क्षेत्र में... ॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं वरुर क्षेत्र स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्देश्वर में पार्श्व प्रभु की, प्रतिमा काली काली।
खडगासन प्रतिमा प्रभुवर की, भाग्य जगाने वाली॥सर्व क्षेत्र में... ॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं अन्देश्वर अतिशय क्षेत्र स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुमचा क्षेत्र प्रसिद्ध जगत् में, आते भक्त यहाँ पे।
पार्श्वनाथ व पद्मा माँ के, मिलते दर्श यहाँ पे॥ सर्व क्षेत्र में... ॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं हुमचा अतिशय क्षेत्र स्थित श्री सर्वतोभद्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कश्मलगी व हालेबिडु में, प्रतिमायें मन भायें।
साधु श्रावक पार्श्वप्रभु के, दर्शन करने आये॥ सर्व क्षेत्र में... ॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं कश्मलगी हालेबिडु क्षेत्र स्थित श्री विजय पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरियाणा रोहतक नगरी में, अतिशयकारी पारस।
पारस ! पारस हे प्रभु पारस !, तारों हमको पारस।।
सर्व क्षेत्र में पार्श्व प्रभु की, सर्वाधिक प्रतिमायें।
उनका यहाँ विधान करें हम, ध्वज संग अर्घ्य चढ़ायें।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं रोहतक नगर स्थित अतिशयकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्णपुरा संभाजीनगर के, पार्श्व हमें मन भाये।
मंत्र जाप कर कीर्त्तन कर हम, प्रभु को अर्घ चढ़ायें।। सर्व क्षेत्र में... ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्णपुरा संभाजीनगर स्थित श्री सर्वतोभद्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वदेश व नगर प्रांत में, पारस सर्व दिशा में।
त्रय योगों से पूजें हम नित, प्रातः मध्य-निशा में।। सर्व क्षेत्र में... ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदेश नगर ग्राम गृह प्रांत तीर्थक्षेत्र स्थित श्री सर्व पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

जय-जय सहस्रफणी पार्श्व जिन, चिंतामणि दुःखहारी।
विजयकेतु तेइसवें प्रभु की, मूरत लगती प्यारी।।
अश्वसेन वामा के नंदन, जन्में नगर बनारस।
हम पूर्णार्घ चढ़ायें उनको, बोलें जय-जय पारस।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिंतामणि संकटहर कलिकुण्ड, कल्पतरु, कामनापूर्ण, ऋद्धि-सिद्धिदायक, विजय सिद्धि प्रदायक विद्यापति, कालसर्प आदि सर्वग्रह निवारक, सर्वसौख्य प्रदायक, कर्मकष्ट हारक, सर्व कोरोना रोग निवारक सुख-शांतिदायक, अभीष्ट फल प्रदायक श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित सहस्रफणी चंडौग्र विजयकेतु श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

पार्श्वनाथ की प्रतिमा मन पावन करे।
श्री सम्मेदशिखर से प्रभु शिवपुर वरें।।

प्रभु पद में हम त्रय धारा जल की करें।
कर-कमलों से पुष्पाञ्जलि अर्पण करें।।

शांतये शांतिधारा/दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र – ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– त्रिभुवन वंदित नाथ हैं, पार्श्वनाथ भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें, पाने केवलज्ञान।।

शंभु छंद

श्री पार्श्वनाथ वामा नंदन, शत इन्द्रों से पूजें जायें।
वे अश्वसेन ! के राजकुँवर, उनके गुण गाने हम आये।।
प्रभु नगर बनारस में जन्में, ये बाल यतीश्वर कहलाये।
सम्मेद शिखर से पार्श्व प्रभु, सिद्धों का शाश्वत पद पायें।।1।।

दस भव तक जिसने कष्ट दिया, वो कमठ क्रूर अति पापी था।
अरविन्द राज का मंत्री मित्र, मरुभूति सरल स्वभावी था।।
भाई के मोही मरुभूति, उसके पग में झुक जाते हैं।
तब कमठ करे हत्या उनकी, मरुभूति गज बन जाते हैं।।2।।

अब कमठ विषैला सर्प बना, हाथी को आकर डसता है।
हाथी द्वादशवे स्वर्ग गया, वह सर्प नरक में फँसता है।।
जब अग्निवेग मुनि ध्यान करें, अजगर उनको ग्रस जाता है।
मुनिराज सोलहवे स्वर्ग गये, अजगर पाताल सिधाता है।।3।।

प्रभु वज्रनाभि चक्रीश बने, ध्यानस्थ खड़ें जब जंगल में।
तब कमठ भील बन बाण छोड़, उपसर्ग करे उन मुनिवर पे।।
मुनि मध्यम ग्रैवेयक पहुँचे, वह भील सातवें नरक गया।
प्रभु श्रमण श्रेष्ठ आनंद बने, सिंह ने उन पर उपसर्ग किया।।4।।

मुनि प्राणत स्वर्ग सिधार गये, वह सिंह पाँचवें नरक गया।
नाना गतियों में दुःख पाकर, वो महीपाल भूपाल बना।।
वामा माँ से जन्में पारस, यौवन वय में मुनि बन जायें।
ध्यानस्थ मुनि को देख कमठ, पत्थर अग्नि जल बरसाये।।5।।

उस कमठ दैत्य ने सात दिवस, जिनवर पर अति उपसर्ग किया।
धरणेन्द्र देव पद्मावती ने, उपसर्ग नाथ का दूर किया।।
केवलज्ञानी प्रभु पार्श्व बने, वह कमठ हृदय में पछताया।
दस भव तक जिसने कष्ट दिया, वह भी प्रभु की शरणा आया।।6।।

श्री विजयकेतु पारस जिनवर, तुम धर्मतीर्थ के अतिशय हो।
गुरु गुप्तिनंदी के चित्त बसे, तुम चिंतामणि के अतिशय हो।।
श्री नवजिन शांति जिनालय में, तुम करते हर पल अतिशय हो।
हम भी तुम सम बन जाय प्रभो, जीवन में ऐसा अतिशय हो।।7।।

समताधारी उपसर्गजयी, तेरी महिमा हम क्या गायें।
समता का हमको भी वर दो, हम यही भावना नित भाये।।
चिंतामणि पार्श्व जिनेश्वर को, 'आस्था' श्रद्धा से नित ध्याये।
अतिशयकारी पारस प्रभु को, त्रय गुप्ति सहित हम शिर नाये।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय कालसर्प दोष केतु आदि दुष्ट ग्रह, शोक, सर्वज्वर-रोगाल्पमृत्यु विनाशनाय, कोरोना रोगहराय सुख-शांति प्रदायकाय, ऋद्धि-सिद्धिदायकाय श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित अभीष्ट फल प्रदायकाय, सहस्रफणी, चंडौग्र विजयकेतु अभीष्ट सिद्धि श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पार्श्वनाथ भगवान की, मूरत भव्य विशाल।
ऋद्धि-सिद्धि धन धान्य दे, कटे करम का जाल।।
आस्था से पूजें प्रभु, गुप्ति त्रय मन धार।
पायें हम आनंद नित, आकर प्रभु के द्वार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

आरती

(तर्ज - चला चला रे...)

आओ-आओ रे प्रभु के द्वारे चले आओ, चले आओ...
झूम-झूम के पार्श्व प्रभु की आरती गाओ॥ आओ...2

1. पार्श्व प्रभु का ये विधान है, सबके संकट हरता।
दुःख दारिद्र्य नशाने भगवन्, मंगल आरती करता॥ आओ...2

2. वामा माँ के राजदुलारे, अश्वसेन के प्यारे।
नगर बनारस में प्रभु जन्में, सबके तारण हारे॥ आओ...2

3. सारंगी वीणा आदिक ले, सात सुरों में गाओ।
पारस बाबा के मंदिर में, दीपावली मनाओ॥ आओ...2

4. छम-छम बजते पायल घुँघरु, वाद्य सुमंगल बाजे।
हर भक्तों के मन में देखो, पारसनाथ विराजे॥ आओ...2

5. केवलज्ञानी पारस स्वामी, केवल इतना वर दो।
''आस्था'' से हम करें आरती, केवल ज्योति वर दो॥ आओ...2

***

श्री पारसनाथ चालीसा

दोहा– चिंतामणि प्रभु पार्श्व जिन, कलिकुण्ड भगवान।
पारस प्रभुवर आपकी, एक अलग पहचान।।
क्षेत्र नगर गृह गाँव में, रहें पार्श्व भगवान।
चालीसा प्रभु का पढ़ें, हम करते गुणगान।।

चौपाई

पार्श्व प्रभु को शीश झुकायें, चालीसा प्रभुवर का गायें।
सहस्रनाम संस्तुति सुर गाये, सहस्र नयन कर दर्शन पाये।।1।।
पार्श्वनाथ जिन जहाँ–जहाँ हैं, अलग नाम पहचान वहाँ है।
सहस्रफणी संकटहर देवा, श्री चण्डोग्र चिंतामणि देवा।।2।।
सर्वतोभद्र व ईच्छापूरक, विजयकेतु आदि जिन मूरत।
दस भव जिसने कष्ट दिया था, उसने प्रभु का शरण लिया था।।3।।
समताधारी पार्श्व जिनेशा, तेइसवें प्रभुवर तीर्थेशा।
तुम हो प्रभु उपसर्ग विजेता, हे परमेश्वर त्रिभुवन नेता।।4।।
मरुभूति भाई को मनायें, भाई उनको मार गिराये।
दूजें भव हाथी बन जाये, गज मुनि से अणुव्रत अपनाये।।5।।
पानी पीने हाथी जाये, सर्प जहर से वो मर जाये।
करें समाधि सुरतन पाये, पुनः मनुज बन मुनि बन जाये।।6।।
रश्मिवेग मुनि ध्यान लगायें, अजगर मुनिवर को ग्रस जाये।
अच्युत स्वर्ग में मुनिवर जाये, प्रभु की पूजा नित्य रचायें।।7।।
वज्रनाभि चक्री बन जाये, तज वैभव मुनि दीक्षा पाये।
भील महा उपसर्ग रचाये, मुनि मध्यम ग्रैवेयक पाये।।8।।
मण्डलेश्वर आनंद बन जाये, सूर्य बिम्ब जिन चैत्य बनाये।
श्वेत केश वैराग्य जगाये, समुद्रगुप्त से दीक्षा पाये।।9।।
चउ आराधन ज्ञान बढ़ाये, द्वादशांग पाठी बन जाये।
तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये, वन में प्रतिमा योग लगाये।।10।।

कमठ जीव केशरी बन आये, मुनिवर को वो सिंह खा जाये।
हुई समाधि स्वर्ग सिधायें, प्राणतेन्द्र मुनि अब बन जाये॥11॥
छह महीने आयु थी बाकी, धनद इन्द्र की भक्ति जागी।
नगर बनारस भव्य सजाये, चार समय में रत्न गिराये॥12॥
स्वप्न माल माता को आये, स्वप्नों का फल पिता बताये।
जग जननी माँ वामा देवी, सेवा करती शचि सुर देवी॥13॥
धन्य-धन्य है वामा माता, सारा जग माँ तुमको ध्याता।
अश्वसेन उत्तम महाराजा, जन्मेंगे अब श्री जिनराजा॥14॥
जन्म लिया जब पार्श्व प्रभु ने, शांति हुई तीनों लोकों में।
मेरु पे प्रभू को ले जाये, इन्द्र-इन्द्राणि न्हवन कराये॥15॥
चौथे बालयती कहलाये, सौ वर्षों की आयू पाये।
काया हरितवर्ण की पाये, जन्मोत्सव सुर भव्य मनायें॥16॥
दूत अयोध्या से जब आये, वृषभ देव की बात बताये।
वैरागी जिनवर बन जाये, दीक्षा ले प्रभु वन को जाये॥17॥
धन्यराज आहार कराये, प्रभु संग वो भी मुक्ति पाये।
शुक्ल ध्यान जब नाथ लगाये, कमठ महा उपसर्ग रचायें॥18॥
पद्मावती व अहिपति आये, कमठ दुष्ट को दूर भगाये।
चार घातिया कर्म नशायें, केवलज्ञानी जिन बन जायें॥19॥
वाणी प्रभु की हम सब पायें, गुप्ति समितियाँ हम अपनायें।
प्रभु सम्मेद शिखर जी आये, कर्म काट प्रभू मुक्ति पाये॥20॥

दोहा- रोग-शोक संकट मिटें, कर्म क्लेश मिट जाय।
ऋद्धि-सिद्धि सुख-शांति दे, यश-कीर्ति मिल जाय॥
पार्श्वनाथ भगवान को, वंदन बारम्बार।
'आस्था' से प्रभु को नमें, होने भवदधि पार॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

महावीर भगवान के दस भवों का परिचय

1. सिंह	2. सिंहकेतु देव	3. कनकोज्वल राजा
4. सातवें स्वर्ग में देव	5. हरिषेण राजा	6. महाशुक्र स्वर्ग में देव
7. प्रियमित्र चक्रवर्ती	8. सहस्रार स्वर्ग में देव	9. नन्द राजा
10. अच्युत स्वर्ग में देव	11. महावीर भगवान	

पिता	–	राजा सिद्धार्थ
माता	–	त्रिशला (प्रियकारिणी)
जन्म स्थान	–	कुण्डलपुर
वंश	–	नाथवंश
गर्भ	–	आषाढ़ कृष्णा षष्ठी
जन्म	–	चैत्र कृष्ण तेरस
तप	–	माघ कृष्ण दशमी
प्रथम दाता	–	कूल राजा
ज्ञान	–	वैशाख शुक्ल दशमी
गणधर	–	गौतम आदि 11
कुल मुनि	–	14000
गणिनी	–	चन्दना आर्या
कुल आर्यिकायें	–	36 हजार
श्रावक	–	1 लाख
श्राविका	–	3 लाख
मोक्ष	–	कार्तिक कृष्ण अमावस्या
नाना–नानी	–	चेटक राजा, सुभद्रा रानी
आयु	–	72 वर्ष
ऊँचाई	–	7 हाथ
शरीर की कांति	–	स्वर्ण के समान
निर्वाण भूमि	–	पावापुर
चिह्न	–	सिंह
यक्ष	–	मातंग यक्ष
यक्षिणी	–	सिद्धायिनी यक्षी
क्षेत्रपाल	–	(1) कुमुद (2) अंजन (3) चामर (4) पुष्पदन्त
तिर्यंच	–	संख्यात तिर्यंच
मोक्ष तिथि	–	कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के दिन रात्रि के अन्तिम प्रहर में स्वाति नक्षत्र दीपावली के दिन

शासन नायक श्री महावीर विधान

स्थापना (नरेन्द्र छंद)

कुण्डलपुर के कुलदीपक जो, सिद्धारथ सुत कहलाये।
अच्युत से च्युत होकर स्वामी, त्रिशला माँ के उर आये॥
वर्द्धमान अतिवीर जिनेश्वर, वीर सन्मति दे जाओ।
पुष्पों से आह्वान करें हम, मन मंदिर में आ जाओ॥

ॐ ह्रीं श्री शासन नायक महति, महावीर, वर्द्धमान जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्री अनंतगुण प्रदायक, अंतिम शासननायक, महावीर जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि–सिद्ध प्रदायक, श्री वीर, अतिवीर, सन्मति, वर्द्धमान, महावीर जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

श्रावक इन्द्र सरीखे बनकर, बड़े–बड़े कलशा लाये।
तीन लोक के परमेश्वर का, न्हवन कराके हर्षाये॥
वर्तमान के वर्द्धमान की, हम सब पूजा करते हैं।
नाम मात्र प्रभु का लेने से, बिगड़े काम सुधरते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री महति महावीर जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सोने जैसी काया प्रभु की, चम–चम करती रहती है।
केशर से प्रभुवर की अर्चा, भव की ज्वाला हरती है॥ वर्तमान..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री महति महावीर जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

माणिक मोती हीरा पन्ना, उज्ज्वल अक्षत भर लाये।
पद अखंड की अभिलाषा से, वीर प्रभु के गुण गायें॥ वर्तमान..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री महति महावीर जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कुछ पाकर सब कुछ छोड़ा, मुक्ति रमा वर पाने को।
पुष्प सुगंधित लाये हम सब, काम अरि विनशाने को॥
वर्तमान के वर्द्धमान की, हम सब पूजा करते हैं।
नाम मात्र प्रभु का लेने से, बिगड़े काम सुधरते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री महति महावीर जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नैवेद्य लगे अति सुन्दर, सब जीवों के मन भाये।
सर्व वर्ण की सर्व मिठाई, प्रभु पूजा में हम लाये।॥ वर्तमान..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री महति महावीर जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मासन पे स्वर्ण सिंहासन, उस पर हैं सबके स्वामी।
उनकी आरती करें सदा हम, मिथ्या भ्रम हरते स्वामी॥ वर्तमान..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री महति महावीर जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व दिशायें सुरभित होती, धूप अग्नि में खेने से।
अष्ट कर्म भी क्षय हो जाता, वीर नाम के लेने से॥ वर्तमान..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री महति महावीर जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व ऋतु के फल लग जाते, जहाँ-जहाँ प्रभु गमन करें।
आम जाम केलादि चढ़ा हम, मोक्ष महल को गमन करें॥ वर्तमान..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री महति महावीर जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्पादिक, दीप धूप चरू फल लाये।
मंगल द्रव्य ध्वजा श्रीफल ले, भक्ति भाव से हम आये॥ वर्तमान..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री महति महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- **विविध वर्ण का मांडला, मंगल तोरण द्वार।**
सजा हुआ चहुँ ओर से, भक्त करें जयकार॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पाँच नाम के अर्घ *(शेर छंद)*

प्रभु 'वीर' का श्रद्धा से जो भी नाम जपेगा।
बिगड़े हुये सब काम को वो पूर्ण करेगा।।
श्री वीर अतिवीर वर्द्धमान सन्मति।
महावीर जिन की अर्चना हर लेगी दुर्मति।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बलवान 'अतिवीर' जैसा कोई नहीं है।
आगम पुराण शास्त्र में ये बात कही है।। श्री वीर... ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अतिवीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश 'सन्मति' सभी के प्रश्न हल करें।
पापी अधर्मी जीव के भी कर्म मल हरें ।। श्री वीर... ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सन्मति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन धान्य सिद्धी वृद्धि दें भगवान 'वर्द्धमान'।
श्रीनाथ वंश के जिनेश आप हो महान्।। श्री वीर... ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसने किया उपसर्ग उसे क्षमा कर दिया।
'महावीर' ने समता से रूद्र को झुका दिया।। श्री वीर... ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ *(नरेन्द्र छंद)*

धन्य-धन्य हैं माता त्रिशला, जिसके उर प्रभुवर आये।
सोलह सपने देखें माँ प्रभु, स्वर्ग सोलहवें से आये।।
वर्द्धमान महावीर सन्मति, रोग शोक दुःख विनशाये।
वीर प्रभु का हम विधान कर, अतिशय पुण्य कमा जायें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भमंगल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म लिया जब वीर प्रभु ने, त्रिभुवन में आनंद हुआ।
नरकों में भी शांति समाई, कुण्डलपुर में हर्ष हुआ।।
वर्द्धमान महावीर सन्मति, रोग शोक दुःख विनशाये।
वीर प्रभु का हम विधान कर, अतिशय पुण्य कमा जायें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं जन्ममंगल मंडिताय श्री वीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बालयति प्रभु ने दीक्षा ली, हिंसा पाप मिटाने को।
चंदनबाला सी सतियों को, भव से पार लगाने को।। वर्द्धमान... ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं तपोमंगल मंडिताय श्री अतिवीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी बने प्रभुवर, किन्तु खिरी ना प्रभु वाणी।
गौतम आये बने गणेश्वर, हमें मिली तब जिनवाणी।। वर्द्धमान... ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानमंगल मंडिताय श्री सन्मति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कर्म को नशकर भगवन्, हुये सिद्ध शिवपथगामी।
हम भी मोक्षमहल को पाने, पूज रहे हैं जगनामी।। वर्द्धमान... ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षमंगल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत के अर्घ (शंभु छंद)

तुम जिओ सभी को जीने दो, प्रभु ने यह शुभ संदेश दिया।
पालो तुम धर्म अहिंसा सब, सारे जग को उपदेश दिया।।
सन्मति प्रभु से सम्यक् मति पा, हम अपनी कुमति दूर करें।
श्री वीर प्रभु की पूजा कर, अपने कर्मों को चूर करें।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसाव्रत प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छोटी-छोटी बातों में हम, प्रभु झूठ अनेकों बोल रहे।
रहता है सत्य वहाँ प्रभु हैं, यह सूत्र प्रभु महावीर कहे।। सन्मति. ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यव्रत प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपहरण किया पर के धन का, और ब्याज लिया छल-कपट किया।
इन पापों से बचने भगवन्, तव आश्रय अब निष्कपट लिया।। सन्मति. ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचौर्यव्रत प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ब्रह्म स्वरूपी आतम को, हमने अब तक ना पहिचाना।
श्री बालयति प्रभु की भक्ति से, निज आतम का सुख पाना॥
सन्मति प्रभु से सम्यक् मति पा, हम अपनी कुमति दूर करें।
श्री वीर प्रभु की पूजा कर, अपने कर्मों को चूर करें॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्य व्रत प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन धान्य परिग्रह बहु जोड़ा, कुछ काम नहीं आने वाला।
इस परिग्रह के चक्कर में पड़, हमने सच्चा सुख खो डाला॥ सन्मति. ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं अपरिग्रह व्रत प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार पुरुषार्थ के अर्घ (गीता छंद)

हे भव्य प्राणी नित करो, पहले धरम पुरुषार्थ तुम।
जिसने धरम हमको दिया, उसका करो गुणगान तुम॥
पुरुषार्थ प्रभुवर आपने, हमको बतायें चार हैं।
पूजा करें हम आपकी, मिल जाये मुक्ति द्वार ये॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म पुरुषार्थ प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम न्याय नीति धर्मयुत, अर्जित करे धन को सदा।
पुरुषार्थ दूजा अर्थ ये, धन धर्म में लागे सदा॥ पुरुषार्थ.. ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्थ पुरुषार्थ प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुषार्थ तीजा काम है, संचय कराये पाप को।
इस पाप से बचने प्रभो, हम ध्या रहे हैं आपको॥ पुरुषार्थ.. ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं काम पुरुषार्थ प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाने को मोक्ष महान् हम, पूजा करें कीर्तन करें।
मुनिराज ही इस लोक में, सर्वोच्च मुक्ति श्रम करें॥ पुरुषार्थ.. ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्ष पुरुषार्थ प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार भावना के अर्घ (चौपाई)

रहे सदा वात्सल्य सभी से, तीन लोक के सब जीवों से।
निश्चल सबसे प्रेम हमारा, मैत्री का हो भाव हमारा॥
श्री महावीर विधान रचायें, दुष्ट भावना दूर हटायें।
चार भावना निशदिन भायें, वीर प्रभु का पथ अपनायें॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं मैत्री भावना प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें सदा हम गुरु की सेवा, गुरु सेवा से मिलता मेवा।
प्रमुदित मन से उनको ध्यायें, नित्य प्रमोद भावना भायें॥ श्री.. ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रमोद भावना प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःखी किया कर्मों ने जिनको, कष्ट नहीं देंगे हम उनको।
करुणा भाव हृदय में लाये, दुःखियों पर करुणा बरसाये॥ श्री.. ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं कारुण्य भावना प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हमसे विपरीत चलेंगे, उनसे हम माध्यस्थ रहेंगे।
हम माध्यस्थ भावना भायें, हरपल प्रभु का ध्यान लगायें॥ श्री.. ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं माध्यस्थ भावना प्रबोधकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परावर्तन के अर्घ (नरेन्द्र छंद)

ऐसा कोई द्रव्य नहीं जो, जिसको हमने ना भोगा।
उसको छोड़ बने जो योगी, वो प्राणी पूजित होगा॥
इस विधान से हम सब अपने, रोग-शोक विनशायेंगे।
पूजा करके वीर प्रभु की, अतिशय पुण्य कमायेंगे॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्य परावर्तन निवारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में चारों गति में, ऐसा कोई क्षेत्र नहीं।
जन्म मरण करते हम आये, कब पायेंगे मोक्ष मही।।
इस विधान से हम सब अपने, रोग-शोक विनशायेंगे।
पूजा करके वीर प्रभु की, अतिशय पुण्य कमायेंगे।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्र परावर्तन निवारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कालचक्र में भटक रहे हम, हमको सतपथ दिखला दो।
कैसे हो कल्याण हमारा, भगवन् हमको बतला दो।।। इस... ।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं काल परावर्तन निवारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव परिवर्तन करते-करते, अति रिश्ते-नाते जोड़े।
भव-भव का मिथ्यात्व मिटाने, प्रभु से हम मन को जोड़े।। इस... ।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं भव परावर्तन निवारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव शुभाशुभ पुण्य पाप का, बंध कराते हैं हमको।
शुद्ध भाव ही सुख स्वभाव है, कहते हैं जिनवर हमको।। इस... ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं भाव परावर्तन निवारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव लब्धि के अर्घ (अडिल्ल छंद)

क्षायिक ज्ञानी हे जिनवर !, तुमको नमन।
करते हम सन्मति जिन का, पूजन भजन।।
वर्धमान का ये विधान, हम कर रहे।
संकट पीड़ायें वीरा प्रभु, हर रहे।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिक ज्ञान लब्धिधारी श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजी लब्धि क्षायिक, दर्शन जानिये।
प्रभु दर्शन से, मिथ्यादर्शन हानिये।। वर्धमान... ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिकदर्शन लब्धिधारी श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक सम्य्क लब्धि, भूषित आप हैं।
तव चरणों में धुल जाये, सब पाप ये।।
वर्धमान का ये विधान, हम कर रहे।
संकट पीड़ायें वीरा प्रभु, हर रहे।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिक सम्यक् लब्धिधारी श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का चारित्र, सदा अक्षय रहे।
क्षय नहीं होता वो, क्षायिक चारित कहे।। वर्धमान... ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिक चारित्र लब्धिधारी श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक दानी प्रभु के, दर जो आ गया।
प्रभु के दर से फिर वो, खाली ना गया।। वर्धमान... ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिकदान लब्धिधारी श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष प्रभु, कामधेनु अतिवीर हैं।
अक्षय लाभ मिले हमको महावीर से।। वर्धमान... ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिक लाभ लब्धिधारी श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक भोग लब्धि, होती जिनराज की।
हमने भक्ति रचाई, उन जिनराज की।। वर्धमान... ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिक भोग लब्धिधारी श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक लब्धि में, उपभोग महान् है।
इस लब्धि से युत जिन, तुम्हें प्रणाम है।। वर्धमान... ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिक उपभोग लब्धिधारी श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक वीर्य लब्धि, होती भगवान में।
वो बल पायें हम भी, श्री भगवान से।। वर्धमान... ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिक वीर्य लब्धिधारी श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार आराधना के अर्घ

(दोहा)

दर्शन की आराधना, आठ अंग के साथ।
अष्ट द्रव्य ले हम भजें, पाने प्रभु का साथ॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शन आराधना उपदेशकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजी ज्ञानाराधना, तम अज्ञान नशाय।
उसको पाने हम सभी, आठों द्रव्य चढ़ाय॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानाराधना उपदेशकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये चारित्र आराधना, मुक्ति की सोपान।
सम्यक् चारित की करें, पूजा भव्य महान्॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं चारित्र आराधना उपदेशकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथी तप आराधना, धारें सर्व मुनीन्द्र।
उन गुरुओं को अर्चते, नर सुर इन्द्र मुनीन्द्र॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं तप आराधना उपदेशकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर भगवान के क्षेत्रों के अर्घ

(दोहा)

कुण्डलपुर जन्में प्रभो, वर्द्धमान भगवान।
जन्म कल्याणक क्षेत्र का, हम करते गुणगान॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं कुण्डलपुर जन्मकल्याणक क्षेत्र स्थित श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋजुकूला के तीर पर, पाया केवलज्ञान।
ज्ञान कल्याणक क्षेत्र को, हम पूजें धर ध्यान॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋजुकूला ज्ञानक्षेत्र स्थित श्री अतिवीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राजगृही में शोभता, श्री विपुलाचल शैल।
यहीं दिखाई वीर ने, भव्यों को शिव गैल[1]॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं राजगृही क्षेत्र स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष गये महावीर जिन, पावापुर उद्यान।
लड्डु ले हम पूजतें, करते महा विधान॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं पावापुर सिद्धक्षेत्र स्थित श्री सन्मति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाँदनपुर महावीर जी, जग में अति विख्यात।
प्रभु के अतिशय से यहाँ, भीड़ लगे दिन-रात।46॥

ॐ ह्रीं अर्हं महावीरजी अतिशय क्षेत्र स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपोभूमि उज्जैन में, करी तपस्या आन।
यहीं जीत उपसर्ग जिन, बने वीर भगवान॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं तपोभूमि उज्जैन क्षेत्र स्थित श्री वीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व में आपकी, गूँजें जय-जयकार।
धर्मतीर्थ प्रभु राजते, हम पूजें बहु बार॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

संजीवनी प्रभु नाम की, जिसको मिली वो तर गये।
जिनराज की पाकर शरण, जिनराज सम वो बन गये॥

1. रास्ता, गली।

आशीष दो प्रभुवर हमें, यह प्रार्थना हम कर रहे।
हम आप सम पद लाभ हित, पूर्णार्घ अर्पण कर रहे।।

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रय प्रदायकाय, सर्वपाप संकट हराय, सर्व कोरोना रोग, दुःख कर्कादि रोग, अपमृत्यु, अपघात, चिंता हराय कर्म विनाशन समर्थाय जिनगुणसंपत्ति प्रदायकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

सब जीव को सब दो अभय, संदेश यह महावीर का।
शासन सदा जयवंत हो, अंतिम जिनेश्वर वीर का।।
शांति करो प्रभु विश्व में, हम शांतिधारा कर रहे।
अभिवंदना अभिवंदना, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे।।

शांतये शांतिधारा/दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र – ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा– वर्द्धमान अतिवीर जिन, सन्मति श्री महावीर।
जयमाला प्रभु वीर की, हरे हमारी पीर।।

(चौपाई)

जय-जय महावीर गुणधारी, प्रभु की जयमाला सुखकारी।
वर्द्धमान अतिवीर हमारे, सिद्धारथ सुत सन्मति प्यारे।।1।।
शासन नायक नाथ हमारे, हम सबके प्रभु पालन हारे।
हम सब मिलकर आज पुकारे, बन जाओ प्रभु आप सहारे।।2।।
वीर प्रभु की पूर्व कहानी, जिनवाणी से हमने जानी।
भील पुरुरवा व्रत अपनाये, प्रथम स्वर्ग में सुरपद पाये।।3।।
आदीश्वर तीर्थेश कहाये, मारिच उनके पौत्र कहाये।
पहले प्रभु संग घर को छोड़ा, फिर मानी हो समकित छोड़ा।।4।।

जिनवर पर अपवाद लगाये, नाना मिथ्यामार्ग चलाये।
मिथ्यात्वी हो भ्रमण बढ़ाये, त्रस थावर बहु योनी पाये॥5॥
भ्रमण किया चारों गतियों में, दुःख पाया उनने नरकों में।
विश्वनंदी से देव बने वो, प्रथम अर्ध चक्रीश बने वो॥6॥
अंत समय पाताल सिधाये[1], तैंतिस सागर तक दुःख पाये।
फिर आगे मृगराज बने वो, सम्बोधे मुनिराज उन्हें दो॥7॥
जाति स्मरण उसे हो आया, उसने अणुव्रत को अपनाया।
व्रत की महिमा शास्त्र बताये, सिंह सिंहकेतु बन जाये॥8॥
सुर तन त्याग मनुज भव पाया, कनकोज्ज्वल नृप नाम कहाया।
मुनि बन मरण समाधि पाया, जिससे स्वर्ग सातवाँ पाया॥9॥
फिर भूपति हरिषेण कहाये, क्रम से अणुव्रत मुनिव्रत पाये।
महाशुक्र में देव बने वो, फिर चक्री प्रियमित्र बने वो॥10॥
मुनि बन स्वर्ग बारवा पाया, नंदराज बन पुण्य कमाया।
उत्तम श्रावक धर्म निभाया, चउविध दान किया करवाया॥11॥
फिर विरक्त हो मुनिव्रत पाये, सोलह दिव्य भावना भायें।
अंत समाधि मरण किया था, स्वर्ग सोलहवाँ प्राप्त किया था॥12॥
बाईस सागर वर्ष बिताये, फिर प्रभु त्रिशला माँ उर आये।
सिद्धारथ के भाग्य जगे थे, पन्द्रह मास रत्न वर्षे थे॥13॥
कुण्डलपुर में खुशियाँ छाईं, सुरगण गायें जन्म बधाई।
जन्मोत्सव हम नित्य मनाये, नाम प्रभु का कष्ट मिटाये॥14॥
वर्ष बहत्तर आयु पाई, सात हाथ की देह कहाई।
तीस वर्ष में मुनिव्रत धारा, बालयती को नमन हमारा॥15॥

1. गये।

मुनि बन बारह वर्ष बिताये, फिर केवलज्ञानी बन जाये।
तीस वर्ष अर्हंत कहाये, जग को मोक्ष मार्ग दर्शायें॥16॥
प्रभु ने भव्य अनेकों तारे, जो-जो आये उनके द्वारे।
पावापुर से शिवपद पाये, दीपोत्सव त्रय लोक मनाये॥17॥
धर्मतीर्थ में प्रभु तुम महिमा, रत्नमयी अति सुन्दर प्रतिमा।
गुप्तिनंदी नित तुमको ध्यायें, सुन्दर पंचकल्याण करायें॥18॥
यह विधान जो करे कराये, सर्व सम्पदा निश्चित पाये।
हरपल जो प्रभु के गुण गाये, आधि व्याधि विपदा विनशाये॥19॥
जो प्रभुवर की शरणा आये, धन वैभव कुल दीपक पाये।
जगत्पूज्य उत्तम पद पाये, सुख यश कीर्ति जिनगुण पाये॥20॥
सब इच्छा पूरी हो जाये, अद्‌भुत आनंद मन में आये।
हम प्रभु की जयमाला गायें, उत्तम जिन गुण माला पायें॥21॥
अर्चा कर हम प्रभु को ध्यायें, गुप्ति सहित प्रभु सम बन जाये।
'आस्था' को भव पार उतारो, हे भगवन्! हम सबको तारो॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, दुःख, संकट, भव, व्याधि, अशांति, दुर्बुद्धि, तनाव, चिंता हारक, प्रज्ञा प्रदायक, सहस्रनामधारक, अनंत गुणप्रदायक श्री महति महावीर वर्द्धमान वीर सन्मति अतिवीर जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

महावीर प्रभु के मार्ग पे, जो भव्य जन चलते रहे।
इनकी शरण में आ सभी, श्रावक श्रमण बनते रहे॥
अतिवीर सम हम व्रत धरे, गुप्ति व्रतों के साथ में।
'आस्था' की है यह प्रार्थना, हमको रखो प्रभु साथ में॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज – माईन–माईन....)

वीरा वीरा श्री महावीरा, रटते हम सब आये।
चम–चम करते दीपक ले हम, आरती करने आये।।
बोलो वर्द्धमान की जय, बोलो महावीर की जय....

1. षाढ़ सुदी षष्ठी के शुभ दिन, त्रिशला उर प्रभु आये।
चैत सुदी तेरस को जन्मे, सुर अभिषेक कराये।।
माघ वदी दशमी को स्वामी–2, वीर श्रमण पद पायें।
चम–चम करते...

2. श्री वैशाख सुदी दशमी को, बन गये केवलज्ञानी।
गौतम गणधर के आने से, खिरी प्रभु की वाणी।।
कार्तिक कृष्ण अमावस्या को–2, मोक्ष महल को पायें।
चम–चम करते...

3. ताथई थैया छम–छम नाचे, ढ़ोल मृदंग बजायें।
वीणा की झंकार ध्वनि पे, नाचे सुर वनितायें।।
मन भावन प्रभु की मुद्रा लख–2, मन सबका हर्षाये।
चम–चम करते...

4. वर्द्धमान अतिवीर सन्मति, सिद्धारथ के प्यारे।
कुण्डलपुर में जाकर भविजन, तेरी छवि निहारे।।
वीर प्रभु के सूत्रों पर हम–2, 'आस्था' धर सुख पाये।
चम–चम करते...

***

श्री महावीर चालीसा

दोहा- वर्द्धमान अतिवीर जिन, महावीर भगवान।
वीर सन्मति दो हमें, करो प्रभु कल्याण॥
चालीसा हम पढ़ रहे, वीर प्रभु का आज।
शासन नायक आप हो, त्रिभुवन के सरताज॥

चौपाई

जय-जय श्री महावीर हमारे, त्रिभुवनपति तीर्थेश हमारे।
वीर प्रभु को हम सब ध्यायें, चालीसा हम प्रभु का गायें॥1॥
हो शासन जयवंत तुम्हारा, प्रभु से मिला हमें इक नारा।
परम अहिंसा धर्म सिखाया, सत्य अहिंसा सूत्र बताया॥2॥
पंचशील सिद्धांत बताये, हम सिद्धांत अवश अपनाये।
सत्य आदि अणुव्रत बतलाये, ये भी त्रिभुवन पूज्य बनाये॥3॥
पूर्व भवों की प्रभु की गाथा, जाने प्रभु की सुन्दर गाथा।
आचार्यों से हमने जाना, आगम से हमने पहचाना॥4॥
भील पुरुरवा वन में जाये, सागरसेन श्रमण समझाये।
प्रथम स्वर्ग में सुर तन पाया, फिर आदि प्रभु का कुल पाया॥5॥
मारिच मुनि दीक्षा को धारे, मुनिपद छोड़ कुतप स्वीकारे।
मारिच पंथ अनेक चलाये, त्रयशत त्रैषठ मत दिखलाये॥6॥
चारों गति में भ्रमण रचायें, खुद भटके सबको भटकाये।
विश्वनंदी मुनिवर बन जाये, करें निदान महादुःख पाये॥7॥
नारायण त्रिपृष्ठ कहाये, मरकर नर्क सातवाँ पाये।
सिंह बन नर्क पाँचवाँ पाये, क्रूर सिंह फिर से बन जाये॥8॥
क्रूर सिंह जीवों को मारे, मुनिवर से वो व्रत स्वीकारे।
सिंह सिंहकेतु बन जाये, कनकोज्ज्वल खगपति कहलाये॥9॥
मुनि बन स्वर्ग सातवाँ पाये, हरिषेण नृप दीक्षा पाये।
करें समाधि सुर-तन पाये, महाशुक्र तज मनु पद पाये॥10॥

प्रियमित्र चक्री बन जाये, षट् कर्त्तव्य करे करवायें।
वैभव छोड़ श्रमण बन जाये, स्वर्ग बारहवाँ मुनिवर पायें॥11॥
पंचकल्याणक नित्य मनायें, अकृत्रिम चैत्यों में जाये।
गुरु दर्शन अभिषेक करें वो, नंदराज बन सुखी करें जो॥12॥
प्रोष्ठिल गुरु से दीक्षा पाये, नंदराज मुनि ज्ञान उपाये।
तीर्थंकर प्रकृति बंध जाये, अच्युतेन्द्र बन पूजें जायें॥13॥
छह महीने आयु रह जाये, सुरपति धनपति पुण्य कमाये।
कुण्डलपुर में महल बनाये, पन्द्रह मास रत्न बरसाये॥14॥
सपने माँ त्रिशला को आये, सिद्धारथ नृप फल बतलाये।
जन्में जब महावीरा स्वामी, पूजें धरती सुर नभ गामी॥15॥
इन्द्र-इन्द्राणी न्हवन करायें, सहसनाम से संस्तुति गायें।
पाँच नाम प्रभु के प्रसिद्ध है, वीर सन्मति वर्द्धमान है॥16॥
पंचम बालयति कहलाये, आयु बहत्तर वर्ष कहाये।
स्वर्ण समान देह जिन पाये, जाति स्मृति से दीक्षा पाये॥17॥
सति चंदनबाला पड़गाये, दर्शन से बंधन कट जाये।
दीक्षा ले गणिनी बन जाये, इंद्रभूति मिथ्यात्व नशाये॥18॥
दिव्य देशना प्रभु की पाये, भव्य अनेकों शिवसुख पाये।
पावापुर में आये स्वामी, मोक्ष पधारे अंतिम स्वामी॥19॥
प्रभु के पंचकल्याण मनाये, प्रभु सम पदवी हम सब पायें।
ॐ ह्रीं महावीर जपें हम, वीर सन्मति नाम जपें हम॥20॥

दोहा- ऋद्धि सिद्धि दाता प्रभु, महावीर भगवान।
ज्ञान निधि के ईश से, पायें गुप्ति ज्ञान॥
नाम मंत्र प्रभु आपका, सब दुःख शोक मिटाय।
'आस्था' से पाये शरण, अंत मोक्ष सुख पाय॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री लक्ष्मी प्राप्ति विधान

स्थापना (गीता छंद)

श्रीयुक्त श्रीपति श्री प्रभु, श्रीमान् जिनके नाम हैं।
जिनके चरण में श्री बसे, सबके वही भगवान हैं।।
कमलापति भगवान का, आह्वान कमलों से करें।
मनवा कमल सम खिल गया, मन कमल में प्रभु को धरें।।

ॐ ह्रीं श्री कमलाधिपते त्रैलोक्य स्वामिन् सर्व जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

सहस घड़ों में नीर क्षीर ले, पंचामृत अभिषेक करे।
शांतिधारा करें प्रभु पे, आगम ये उल्लेख करें।।
श्रीपति भगवन् श्री हमको दो, मोक्ष लक्ष्मी पायें।
करके पूजा पाठ आपका, श्रीपति हम बन जायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के न्हवन पूर्व हम निशदिन, चंदन से श्री लिखते।
श्री बीजाक्षर श्री को देता, श्री में श्रीजिन दिखते।। श्रीपति.... ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती जैसे धवलाक्षत हम, गजमुक्ता ले आयें।
उत्तम अक्षय पदवी पाने, पूजा भव्य रचायें।। श्रीपति.... ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल थल रत्न स्वर्ण चाँदी के, प्रभु को पुष्प चढ़ायें।
पुष्पों की सुन्दर माला से, प्रभु का द्वार सजायें।। श्रीपति.... ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध बना पकवान हाथ से, प्रभु को नित्य चढ़ायें।
भरा रहे भंडार सदा ही, प्रभु पूजा से पाये।।
श्रीपति भगवन् श्री हमको दो, मोक्ष लक्ष्मी पायें।
करके पूजा पाठ आपका, श्रीपति हम बन जायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाकर करें आरती, प्रभु की सांझ-सवेरे।
मूरख भी ज्ञानी बन जाये, उसके दिन प्रभु फेरे।। श्रीपति.... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व सुगंधित धूप जलाकर, मंदिर को महकायें।
आठों कर्म नशाने अपने, हम जिनवर गुण गायें।। श्रीपति.... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसा उत्तम फल चाहें हम, वैसे सुफल चढ़ायें।
जो रसदार मधुर सुस्वादु, फल आम्रादि चढ़ायें।। श्रीपति.... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

24 थाली आठ द्रव्य की, सजा-धजाकर लायें।
झूम-झूमकर नाच बजाकर, हम जिन तुम्हें चढ़ायें।। श्रीपति.... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- श्रीमंडप के मध्य में, बैठे श्री भगवान।
कदली गन्ने फूल से, करें सजा गुणगान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पंचकल्याणक के अर्घ (अडिल्ल छंद)

पन्द्रह महीने रत्न वृष्टि धनपति करे।
माँ की सेवा अष्ट कुमारी शची करें।।

मात-पिता की पूजा करते सुरपति।
प्रभु पूजा से भविजन बनते श्रीपती॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गर्भमंगल मंडिताय सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जिनवर का सुर मेरु पे कर न्हवन।
देव-देवियाँ युगल करें प्रभु का न्हवन॥
ताण्डव आनंद नृत्य करे फिर सुरपति॥ प्रभु..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जन्ममंगल मंडिताय सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब वैराग्य जगा सांसारिक सुख तजा।
मुनि बनकर प्रभु लेते निज सुख का मजा॥
दाता भी प्रभु के संग जाता शिवगति॥ प्रभु..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तपोमंगल मंडिताय सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातियाँ नाश केवली बन गये।
धरती से शत पाँच धनु ऊँचे गये॥
केवलज्ञानी ही कहलाते श्रीपति॥ प्रभु..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानमंगल मंडिताय सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेष अघाति कर्म नाश मुक्ति वरे।
लड्डू चढ़ाकर हम प्रभू की पूजा करें॥
पंचकल्याणक धारी चौबीस जिनपति॥ प्रभु..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मोक्षमंगल मंडिताय सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के 3 अर्घ (नरेन्द्र छन्द)

सम्यग्दर्शन के धारी ही, मोक्ष महा पद पायें।
सम्यग्दर्शन प्राप्त हमें हो, यही भावना भायें॥
तीनों सम्यग्दर्शन में से, एक बार हो जाये।
क्षायिक सम्यक्त्वी सब प्रभू को, आठों द्रव्य चढ़ायें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन प्रदायक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट मातृका प्रवचन का ही, ज्ञान एक हो जाये।
शिवभूति मुनिवर के जैसे, केवलज्ञान जगायें।।
दर्शन के बिन ज्ञान अधूरा, बिना ज्ञान के दर्शन।
सम्यक्ज्ञान जगाने भगवन्, नाशें मिथ्या दर्शन।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्ज्ञान प्रदायक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित की महिमा है, जगत्पूज्य बनवायें।
सम्यक्चारित से हर प्राणी, श्रेष्ठ सिद्ध पद पायें।।
रत्नत्रय ही मोक्ष मार्ग है, तीनों इक हो जाये।
सिद्ध बने वे त्रयगुणधारी, उनको अर्घ चढ़ायें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक् चारित्र प्रदायक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

24 भगवान के अर्घ (शेर छंद)

श्री आदिनाथ ने चलाया धर्म जगत् में।
षट्कर्म का उपदेश दिया पूर्ण जगत् में।।
चौबीस प्रभु आपका विधान हम करें।
जिन श्रीपति से लक्ष्मी का वरदान हम वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ जय दिलायें सर्व क्षेत्र में।
प्रभु की छवि बिठायें हम भी हृदय नेत्र में।। चौबीस...।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव प्रभु सब काम को संभव करें सदा।
जो इनकी पूजा पाठ करे भक्ति से सदा।। चौबीस...।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनंदन नाथ का विधान कीजिये।
सम्मान चाहिये तो प्रभु की भक्ति कीजिये।। चौबीस...।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमति बिना कोई भी कार्य सिद्ध ना होवे।
सुमति प्रभु की अर्चना से सिद्धियाँ होवें॥
चौबीस प्रभु आपका विधान हम करें।
जिन श्रीपति से लक्ष्मी का वरदान हम वरें॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके चरण में पद्म श्री स्थान बनाये।
ये पद्मनाथ सबको मालामाल बनाये॥ चौबीस...॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भक्त आपके हैं हमको पास लीजिये।
सुपार्श्वनाथ अर्चना स्वीकार कीजिये॥ चौबीस...॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा सी शीतल छाँव मिले चन्द्र चरण में।
चंदा की चाँदनी बने हम आके शरण में॥ चौबीस...॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदंत के चरण में पुष्प चढ़ायें।
जीवन खिले पुष्पों सा ही आशीष ये पायें॥ चौबीस...॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर के गर्भ पूर्व रत्न वृष्टि जो हुई।
शीतल प्रभु से धर्म की वृष्टि पुनः हुई॥ चौबीस...॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ श्रीपति श्री श्रेय के दाता।
श्री श्रेय पाने भव्य भक्ति से सदा ध्याता॥ चौबीस...॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुधा पे पूज्य वासुपूज्य बाल यतीश्वर।
हे नाथ ! आपको भजे ये सर्व मुनीश्वर॥ चौबीस...॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ सर्व जन का पाप मल हरें।
मन को विमल बनाने हम उनपे अमल करें॥
चौबीस प्रभु आपका विधान हम करें।
जिन श्रीपति से लक्ष्मी का वरदान हम वरें॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनंतनाथ से मिले अनंत गुणनिधी।
प्रभु मोक्ष जाने की बताई आपने विधी॥ चौबीस... ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ धर्मश्री के धर्म विधाता।
भव-भव के पुण्य से हमें जिनधर्म सुहाता॥ चौबीस... ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ ने अखण्ड धर्म चलाया।
क्रांति नहीं शांति धरो यह सूत्र सिखाया॥ चौबीस... ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी प्रभु की दासी बनके पीछे घूमती।
प्रभु कुंथु कहे दुनिया उसके पीछे घूमती॥ चौबीस... ॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ जब बने अरहंत लोक में।
समवशरण के रूप में आई श्री लोक में॥ चौबीस... ॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते अरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ के चरण में चिन्ह कुंभ का।
वह कुंभ सिर पे ले के करे न्हवन प्रभु का॥ चौबीस... ॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनियों के ईश मुनिसुव्रत देव हमारे।
संकट में नाथ आपको नित भक्त पुकारे॥ चौबीस... ॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिनाथ ने नियम दिया इच्छायें कम करो।
जितना है उतने में ही तो संतोष गुण धरो॥
चौबीस प्रभु आपका विधान हम करें।
जिन श्रीपति से लक्ष्मी का वरदान हम वरें॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ ने कहा सब जीव सिद्ध हैं।
जो सबको अभयदान दे वो अनंत सिद्ध है॥ चौबीस... ॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते नेमीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंतामणि कलिकुण्ड सहस्रफणी पार्श्वनाथ।
चिंताओं से मुक्ति दिलाये देव पार्श्वनाथ॥ चौबीस... ॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वीर महावीर अतिवीर वर्द्धमान।
हे सन्मति ! प्रभु हमें दो एक केवलज्ञान॥ चौबीस... ॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कमलाधिपते महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्द्ध नरेन्द्र छंद)

घर से जाती हुई लक्ष्मी को, दान धर्म से रोकें।
दान धर्म से बढ़ती लक्ष्मी, आगम में अवलोकें॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं धनलक्ष्मी वृद्धि उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मध्यम जघन पात्र को, भक्ति से पड़गायें।
अंब अग्निला सम दाता बन, गुरु की विधि मिलायें॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमदाता उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूप सोम श्रेयांस महल में, आदि तीर्थंकर आयें।
श्रेय कुँवर प्रभु को पड़गाये, प्रथम आहार करायें॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम पात्र उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम पात्र आहार जहाँ लें, पंचाश्चर्य वहाँ हो।
दाता चाहे भूप प्रजा हो, उत्तम विधि सदा हो ॥36॥
ॐ ह्रीं अर्हं पंचाश्चर्य उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृतपुण्य की कुटियाँ में जब, मुनि आहार को आयें।
उसकी माता खीर खिलायें, पापक पुण्य कमाये॥37॥
ॐ ह्रीं अर्हं दान अनुमोदना उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आर्यिका पात्र श्रेष्ठ हैं, दान करें जो दाता।
मात-पिता बनकर वो भविजन, कहलाता है दाता॥38॥
ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम पात्र भक्ति उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यम पात्र हैं ऐलक क्षुल्लक, और क्षुल्लिका माता।
जघन्य पात्र है सम्यक्दृष्टि, आगम हमें बताता॥39॥
ॐ ह्रीं अर्हं मध्यम जघन्य पात्र उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन पात्रों को अभयदान दे, अंतराय विनशायें।
सप्त गुणों से सहित बने हम, सम्यक् दीप जलायें॥40॥
ॐ ह्रीं अर्हं अभयदान उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार संघ को औषध देकर, करें निरोगी काया।
औषध दान करें मुनियों को, जिनने छोड़ी माया॥41॥
ॐ ह्रीं अर्हं औषधदान उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानदान सुज्ञान जगाये, केवल ज्योति दिलाये।
ज्ञानी गुरु की सेवा भक्ति, ज्ञान विशेष बढ़ाये॥42॥
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानदान उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रजंघ नृप श्रीमति रानी, युगल श्रमण पड़गाये।
वे ही बनते आदिनाथ जिन, श्रेयस नृप पड़गाये॥43॥
ॐ ह्रीं अर्हं वज्रसंघ सम दान उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नृप श्रीषेण उभय रानी संग, मुनिचर्या करवायें।
राजा बनते शांतिनाथ जिन, शाश्वत शिव सुख पायें॥44॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीषेण समदान उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राम सिया वन में मुनि युग को, जब आहार करायें।
पक्षी जटायु मुनि दर्शन कर, अणुव्रत को अपनाये॥45॥
ॐ ह्रीं अर्हं राम-सीता समभक्ति उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगे राम मुनि को वन में, कई राजा पड़गायें।
तुंगीगिरी से राम केवली, सिद्ध रूप को पायें॥46॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीराम सिद्ध रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीरप्रभु को चंदनबाला, बंधन में पड़गाये।
पड़गाहन से बंधन टूटें, श्रमणी श्रेष्ठ कहाये॥47॥
ॐ ह्रीं अर्हं चंदनासती सम दान उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो-जो करते दान धर्म नित, लक्ष्मी वो ही पायें।
भविजन बाह्य लक्ष्मी तजकर, मोक्ष लक्ष्मी पायें॥48॥
ॐ ह्रीं अर्हं दानधर्म उपदेशक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

लक्ष्मीपति भगवान सब, जिनवाणी लक्ष्मी मात है।
जिसको सभी जन चाहते, कैवल्य लक्ष्मी मात है॥
हे माँ ! कृपा करना सदा, सब भक्त नित सुख से रहे।
परिवार भूखा ना रहे, सत्कार अतिथि का करे॥
हम दान धर्म सदा करें, हर भक्त की यह भावना।
पूर्णार्घ अर्पण हम करें, प्रभु भक्ति की हो भावना॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, दुःख-दारिद्रय निवारक, सुख-शांति, ऋद्धि-सिद्धि वांछापूर्णकारक, मंत्र, यंत्र, तंत्र प्रदायक, ऋद्धिपति कल्याणकारक, मंगलदायक, श्री प्रदायक श्री सर्व जिनेन्द्राय नमः श्री केवलज्ञान लक्ष्मी मात चरणेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चौबीसों जिनराज पे, करते शांतिधार।
सर्वदेश के पुष्प ले, चढ़ा रहे हम हार।।
शांतये शांतिधारा/दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- (1) ॐ ह्रीं श्री कमलाधिपते सर्व जिनेभ्यों नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं कैवल्यज्ञान लक्ष्मीपते सर्व जिनेभ्यों नमः स्वाहा। (3) ॐ श्रीं नमः स्वाहा। (4) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बाप जाप करें।)

जयमाला

दोहा- चौबीसों भगवान की, गायें हम जयमाल।
24 श्रीफल पे ध्वजा, उनपे फूल की माल।।

नरेन्द्र छंद

श्री चौबीस प्रभु का हम सब, जय-जयकार लगायें।
आदिनाथ से महावीर तक, सबको शीश झुकायें।।
चौबीस जिन का गुण कीर्तन ही, सबका भाग्य जगाये।
स्वप्ने में भी सब जिनवर को, छोड़ कहीं ना जाये।।1।।

आदि अजित संभव अभि सुमति, पद्म सुपारस ध्यायें।
चंद्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासु विमल मन भायें।।
श्री अनंत व धर्म शांति जिन, कुंथु अर मल्लीश्वर।
मुनिसुव्रत नमि नेमी पार्श्व जी, अंतिम वीर जिनेश्वर।।2।।

धन के बिना दुःखी सब प्राणी, दीन हीन बन जायें।
जिसके पास बहुत पैसा हो, उसके सब गुण गायें।।
धनवालों का इस दुनियाँ में, निशदिन गौरव होता।
जो गरीब है उस मानव का, अपना सगा ना होता।।3।।

धनवाला भी रोता रहता, पैसा और बढ़ जाये।
इक गरीब भी रोता रहता, कुछ पैसा मिल जाये।।
कोई राजा कोई रंक तो, कोई बना भिखारी।
इक संतोष धरा है जिसने, उसकी है बलिहारी।।4।।

प्रभु भक्ति से सब कुछ मिलता, भक्त बनो भगवन् के।
धर्म कार्य में अर्थ लगाओ, खर्च करो भगवन् पे।।
यश कीर्ति सम्मान दिलाये, मंदिर मूर्ति बनाये।
तीर्थों में अपनी लक्ष्मी का, सद् उपयोग कराये।।5।।

पुण्य-पाप और सुख-दुःख में हम, प्रभुवर को ही ध्यायें।
हर संकट में नाथ आपका, नाम ही मुख में आये।।
इस विधान को करके हम भी, धर्म लक्ष्मी वर पायें।
'आस्था' धरकर त्रय गुप्ति से, मोक्ष लक्ष्मी पायें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, दुःख, संकट, पीड़ा, आधि-व्याधि, अपयश, अंतराय कर्म निवारक, धन-धान्य, ऐश्वर्य, यश, कीर्ति, सुख, शांति, ऋद्धि, सिद्धि, समृद्धि प्रदायक, सर्वपाप विनाशक, सर्व संकट हारक, श्री केवलज्ञान लक्ष्मी मात चरणेभ्यों नमः, श्री कमलाधिपते सर्व जिनेभ्यों नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्रीमत परम विशुद्ध जिन, सर्व प्रभु श्रीमान।
सब जिनवर के चरण में, 'आस्था' करे प्रणाम।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

आरती

(धीरे-धीरे बोल कोई सुन ना ले....)

आरती करलो प्रभुवर की, प्रभुवर की सब जिनवर की।
हम आरती करने आ रहे, चौबीसों प्रभु को ध्या रहे॥
आरती कर लो.....

ऋषभ अजित संभव अभिनंदननाथ।
सुमति पद्म सुपार्श्व चंद्र का साथ॥
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस भगवान।
वासुपूज्य श्री विमल अनंत महान्॥
भक्ति करें, मुक्ति वरें-2,
हम आरती.... चौबीसो प्रभु... ॥1॥

धर्म शांति कुंथु अर मल्लिनाथ।
मुनिसुव्रत नमि नेमी व पारसनाथ॥
वीर सन्मति महावीर भगवान।
वृषभसेन से गौतम का गुणगान॥
जय-जय प्रभु, गणधर प्रभु-2,
हम आरती.... चौबीसो प्रभु... ॥2॥

ये विधान जो निशदिन करता जाय।
पुण्य खजाना निश्चित भरता जाय॥
प्रभु भक्ति से भक्त सदा सुख पाय।
हमको युगपत् चौबीस जिन मिल जाय॥
'आस्था' धरे, श्रद्धा करे-2
हम आरती.... चौबीसो प्रभु... ॥3॥

***

चौबीस तीर्थंकर चालीसा

दोहा- नमन करूँ अर्हंत को, सिद्ध प्रभु सुख धाम।
पाठक यति मुनिराज का, करूँ जाप अविराम॥
सरस्वती से अर्ज ये, कर दो भव से पार।
चौबीसों भगवान का, चालीसा सुखकार॥

(चौपाई)

जय-जय हो तीर्थंकर स्वामी, चौबीसों जिन अन्तर्यामी।
पंच कल्याणक प्रभु का प्यारा, पाया प्रभु ने शिवपुर द्वारा॥1॥
वीतराग सर्वज्ञ बने थे, तीन लोक के ईश बने थे।
चालीसा प्रभुवर का गायें, नवग्रह की बाधा नश जाये॥2॥
माता सोलह स्वप्ने देखे, जागे नाम प्रभु का लेके।
पिता स्वप्न का फल बतलाते, राजमहल में हर्ष मनाते॥3॥
प्रभु का जन्म महोत्सव न्यारा, अन्तिम जन्म प्रभु ने धारा।
देव समूह प्रभु संग खेले, देव बने प्रभुवर के चेले॥4॥
जब मन में वैराग्य समाया, सारे वैभव को ठुकराया।
द्वादश अनुप्रेक्षायें भायें, तत्क्षण लौकान्तिक सुर आये॥5॥
जिनमुद्रा भी देती शिक्षा, हे प्रभु ! हम भी पाये दीक्षा।
मोक्षमार्ग के ये अभिनेता, कर्मविजेता जग के त्रेता॥6॥
जब भी नवग्रह बाधा आये, चौबीसों प्रभुवर को ध्यायें।
रविग्रह जब प्रतिकूल बने तो, पद्म प्रभु का नाम जपे वो॥7॥
पद्मप्रभु ही भाग्य जगावे, दुःख भी मेरा सुख बन जावे।
चन्द्र अरिष्ट निवारण हेतू, चन्द्रप्रभु हैं सुख के सेतू॥8॥
चन्द्र प्रभु शीतलता देते, भव-भव के सब दुःख हर लेते।
आधि-व्याधि विपदायें भारी, प्रभु की पूजा ही सुखकारी॥9॥
मंगल जब पीड़ा पहुँचावे, वासुपूज्य ही शांति दिलावे।
बुध ग्रह बुद्धी को हर लेवे, चित् में चंचलता भर देवे॥10॥

अष्ट जिनेश्वर कष्ट मिटावे, बुधग्रह को अनुकूल बनावे।
विमल अनंत धर्म सुखदाता, कुंथु अरह नमि भाग्य विधाता॥11॥
महावीर शांति को ध्यायें, बुधग्रह से छुटकारा पायें।
जो जिनवर की भक्ति रचाते, उनके अष्ट कर्म नश जाते॥12॥
गुरु ग्रह गुरु से दूर करावे, तब प्रभुवर की शरणा आवे।
आदि अजित संभव जिनस्वामी, अभिनंदन सुमति के दानी॥13॥
श्री सुपार्श्व शीतलता दाता, श्रेयनाथ प्रभु कष्ट मिटाता।
अष्ट जिनेश्वर मंगलकारी, नाम आपका संकटहारी॥14॥
शुक्र दोष बहु नाच नचाता, धर्म कार्य से दूर भगाता।
पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शुक्र दोष को दूर भगायें॥15॥
शनिग्रह की लीला है न्यारी, नाच नचावे वो अति भारी।
सुख वैभव यश आदि दिलावे, कभी दीन दारिद्र बनावे॥16॥
मुनिसुव्रत की शरणा आओ, मन में श्रद्धा दीप जलाओ।
राहू की बाधा जब आवे, बंधु बांधव प्रीत भुलावें॥17॥
नेमीनाथ का कीर्त्तन गाओ, उनके चरण कमल नित ध्याओ।
केतूग्रह दुर्योग बनाता, जीवन मृत्यु सम बन जाता॥18॥
चिंतामणि चिन्तित फल देते, पार्श्वनाथ संकट हर लेते।
मल्लिनाथ को शीश झुकायें, गुप्ति त्रय हित भक्ति रचायें॥19॥
चौबीस तीर्थंकर जग त्राता, विघ्ननिवारक शिवसुख दाता।
'आस्था' को प्रभु दर्श दिखाओ, भवसागर से पार लगाओ॥20॥

(दोहा)

चालीसा चालीस दिन, पढ़ो सुनो मन लाय।
धूप अनल में खेयकर, सम्यक् दीप जलाय॥
चरण कमल जिनराज के, पाऊँ बारम्बार।
'आस्था' को बोधि मिले, नमन करूँ शतबार॥

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

श्री बाहुबली भगवान

परिचय

पूर्वभव– (1) सेनापति (2) भोगभूमि में आर्य (3) प्रभंकर देव (4) अकंपन राजा (5) अहमिन्द्र (6) महाबाहु (7) अहमिन्द्र (8) बाहुबली

गृहस्थ जीवन

वंश	–	इक्ष्वाकु
पिता	–	आदिनाथ
माता	–	सुनंदा

पंचकल्याणक

जन्म स्थान	–	अयोध्या
पद	–	कामदेव
दीक्षा	–	पोदनपुर
कैवल्य ज्ञान	–	एक वर्ष में
मोक्ष स्थान	–	अष्टापद

लक्षण

रंग	–	स्वर्ण
विशेष गुण	–	अखंड ध्यान
ऊँचाई	–	525 धनुष

श्री बाहुबली विधान

स्थापना (गीता छन्द)

बाहुबली बलधर प्रभो, शिव सौख्य के भरतार हो।
हो कामदेव जिनेश तुम, चारित्र के भण्डार हो।।
मन में बिठाऊँ आज मैं, आह्वान करता भाव से।
गुणगान गाऊँ मैं तुम्हारा, अर्चता नित चाव से।।

ॐ ह्रीं प्रथम कामदेव अखंड ध्यानधारक श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

निर्मल जल चरणों में आज चढ़ा रहा।
प्रभुवर की पूजा से कर्म नशा रहा।।
मैं विधान बाहुबली प्रभुवर का करूँ।
बाहुबली सम सर्वश्रेष्ठ पदवी वरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन का मोह ममत्व मुझे झुलसा रहा।
शीतलता पाने चरणों में आ रहा।। मैं....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अविनाशी सुख पाने पुञ्ज चढ़ाऊँगा।
कर्म नशाके अक्षय पदवी पाऊँगा।। मैं....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

खिले हुए पुष्पों से तव अर्चन किया।
कामदेव ने मन्मथ का मर्दन किया।। मैं....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर नैवेद्य सुगंधित ला रहा।
अपनी क्षुधा नशाने तुम्हें चढ़ा रहा।। मैं....।।5।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली मैं ला रहा।
सम्यक् दीप जलाने तव गुण गा रहा।।
मैं विधान बाहुबली प्रभुवर का करूँ।
बाहुबली सम सर्वश्रेष्ठ पदवी वरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी आज चरण में ला रहा।
कर्म कालिमा नशने धूप चढ़ा रहा।। मैं....।।7।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाने सुफल चढ़ा रहा।
नारंगी केला अनार फल ला रहा।। मैं....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदि द्रव्यों से पूजा करूँ।
पाप तिमिर का हनन करूँ मुक्ति वरूँ।। मैं....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- बाहुबली भगवान को, वंदन बारम्बार।
मंडल पर अर्पण करे, पुष्पांजलि मनहार।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ सुत, मात सुनंदा प्यारे।
नगर अयोध्या में तुम जन्मे, कामदेव मनहारे।।
बाहुबली है नाम तुम्हारा, हम सबके मन भाये।
तुम सम बनने नाथ ! आपकी, पूजन करने आये।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं आदिनाथ नंदन श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोल सुडौल सुभग तन सुन्दर, कामदेव मनहारी।
इस युग में थी सबसे ऊँची, काया नाथ तुम्हारी।।
बाहुबली है नाम तुम्हारा, हम सबके मन भाये।
तुम सम बनने नाथ ! आपकी, पूजन करने आये।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथम कामदेवाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सवा पाँच सौ धनु तन पाया, बाहुबली बलधारी।
भरत चक्री भी हारा तुमसे, चक्री पे तुम भारी।। बाहुबली... ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तुंग देह अनंत बलधारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयुर्वेद पशु के लक्षण, आदि प्रभु सिखलाये।
स्त्री पुरुष व रत्न परीक्षा, धनुर्विद्या सिखलाये।। बाहुबली... ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं विद्यार्थी रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि प्रभु ने बड़े प्रेम से, राजा तुम्हें बनाया।
पोदनपुर के सिंहासन पर, धर स्नेह बिठाया।। बाहुबली... ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापिता रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न्याय नीति से आप प्रजा का, सुत वत पालन करते।
सर्व प्रजाजन बाहुबली की, आज्ञा पालन करते।। बाहुबली... ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं आदर्श नृपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरतेश्वर के नगर द्वार पर, चक्र रत्न रुक जाये।
चक्रवर्ती ने तुम्हें झुकाने, मंत्रीगण पहुँचाये।। बाहुबली... ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रविज्ञ रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि जल मल तीन युद्ध में, आप विजेता स्वामी।
धन वैभव को तुच्छ समझकर, तज गये अन्तर्यामी।। बाहुबली... ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविजेता रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा ली प्रभु स्वयं आपने, गुरु को शीश झुकाया।
केशलोच वस्त्राभूषण तज, पंच महाव्रत पाया।। बाहुबली... ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाश्रमण रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक जगह व एक थान का, उत्तम योग लगाया।
एक वर्ष तक खड़े रहे प्रभु, उत्तम ध्यान लगाया॥
बाहुबली है नाम तुम्हारा, हम सबके मन भाये।
तुम सम बनने नाथ ! आपकी, पूजन करने आये॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं अखंड ध्यान रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छंद

केशराशि बढ़ गई प्रभु सिर पे आपके।
अहि ने बनायी बामीयाँ चरणों में आपके॥
प्रभु आपने करी अखण्ड ध्यान साधना।
सुध्यान सिद्धि हेतु हम करें आराधना॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व जन्तु शरण रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन पे चढ़ी प्रभु आपके सब बेल लतायें।
विद्याधरियाँ अपने कर से उनको हटायें॥ प्रभु... ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं निस्पृह रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशुओं ने क्रूरता तजी प्रभु देख आपको।
आनंद से वो भक्ति करते सुबह शाम को॥ प्रभु... ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं दया भक्ति रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो आप ने अखण्ड ध्यान कैसे लगाया।
वो ध्यानसूत्र पाने मैं भी पूजने आया॥ प्रभु... ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूज्य रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक वर्ष तक बाहुबली इक थान पर रहे।
आहार पानी छोड़के निज ध्यान कर रहे॥ प्रभु... ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं महात्याग रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप साधना से प्रगट हुईं सर्व ऋद्धियाँ।
सब प्राणियों के रोग हरे सर्व सिद्धियाँ॥ प्रभु... ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋद्धि सिद्धी रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपि मोर कोकिला व सर्प नृत्य रचायें।
गजराज प्रभु के चरण में पद्म चढ़ाये।।
प्रभु आपने करी अखण्ड ध्यान साधना।
सुध्यान सिद्धि हेतु हम करें आराधना।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोक वंदना रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हथिनी कमल के पत्र संग नीर चढ़ाये।
प्रभु के समीप भूमि धोये भक्ति रचाये।। प्रभु... ।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं अद्भुत अर्चना रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के भी आसन हिले उस समय बार-बार।
बाहुबली की साधना को वंदना हजार।। प्रभु... ।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोक पूज्य साधना रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे योगीराज ! आप यू ऐसे अचल रहे।
तिर्यंच सभी आपकी भक्ति में रत रहे।। प्रभु... ।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचल योगी रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक बात मन में आपके इक वर्ष तक रही।
वो बात केवलज्ञान को होने न दे रही।। प्रभु... ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं समत्व रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकर के भरत ने किया प्रभु आपको प्रणाम।
भू है नहीं मेरी तजूँ मैं सर्व क्रोध मान।। प्रभु... ।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं भरत पूज्य रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इतने में प्रगट हो गया प्रभुवर को पूर्ण ज्ञान।
सर्वज्ञ वीतरागी नाथ आप हो महान्।। प्रभु... ।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञ रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंधकुटी धनपति कुबेर बनाये।
चारों निकाय देव देवी भक्ति रचाये।। प्रभु... ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्ववंदनीयाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह सभा को आपने जिनधर्म बताया।
संसार दुःख से छूटने का मार्ग बताया।।
प्रभु आपने करी अखण्ड ध्यान साधना।
सुध्यान सिद्धि हेतु हम करें आराधना।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं हितोपदेशी रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस आर्यखंड पे किया प्रभू आपने विहार।
निरपेक्ष भाव से किया था धर्म का प्रचार।। प्रभु...।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म प्रचारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ज्ञान महोत्सव की करे देव अर्चना।
सुज्ञान पाने हम भी करे दीप अर्चना।। प्रभु...।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुज्ञान रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस जिन समान पूजे लोक आपको।
इक वर्ष ध्यान करने वाले वीर आप हो।। प्रभु...।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनरूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीछी कमण्डल आपके कभी काम न आया।
बस ज्ञान ध्यान ने ही पूर्णज्ञान दिलाया।। प्रभु...।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं अकिंचित् रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैलासगिरी क्षेत्र पे प्रभु आप आ गये।
सम्पूर्ण कर्म नाश के शिव लोक पा गये।। प्रभु...।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण महोत्सव मनाये देव देवियाँ।
आनंद से बजायें देव वाद्य भेरियाँ।। प्रभु...।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्र भी करें प्रभु की भव्य अर्चना।
पशु-पक्षी आदि भव्य करें भक्ति वंदना।। प्रभु...।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं शतेन्द्र पूज्याय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

श्री जी के चरणों में, ही श्री नित बसे।
प्रभु पूजक के अंतराय, जिनवर नशें॥
सर्व द्रव्य लेकर विधान, हम नित करें।
बाहुबली का पूजन, कीर्तन हम करें॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मी रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन के रोग मिटे, प्रभु के गुणगान से।
मन के रोग नशे, प्रभुवर के ध्यान से॥ सर्व द्रव्य... ॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वरोग निवारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या बुद्धि बढ़ती, प्रभु के जाप से।
सद्बुद्धि मिल जाती, प्रभुवर आप से॥ सर्व द्रव्य... ॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व विद्या सद्बुद्धि प्रदायकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपमृत्यु टल जाती, मंत्र विधान से।
सर्व व्याधियाँ मिटती, प्रभु के ध्यान से॥ सर्व द्रव्य... ॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं अकाल मृत्यु हरणाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व क्षेत्र में विजय, जिन्हें भी चाहिये।
बाहुबली की भक्ति, नित्य रचाइये॥ सर्व द्रव्य... ॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकार्य सिद्धिकराय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कीर्तन से यश, कीर्ति मिलती सदा।
देव गुरु की वाणी, ना झूठी कदा॥ सर्व द्रव्य... ॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रय रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रोग भयंकर, जिनको हो रहे।
पूर्ण आयु के पहले, जीवन खो रहे॥ सर्व द्रव्य... ॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व क्रूर रोग हरणाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे भगवन् ! हम सबके, दुःख संकट हरो।
हम भक्तों की अर्जी को, पूरी करो॥ सर्व द्रव्य... ॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसंकट हराय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काव्य छंद

जिनकी कीर्ति विशाल, बाहुबली बलधारी।
सर्व दुःखों से नाथ, रक्षा करो हमारी।।
आदिनाथ के लाल, बाहुबली मन भाये।
सुन्दर द्रव्य सजाय, पूजन हित हम आये।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुःख पीड़ा हरणाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा रहे जयवंत, भरत चक्री के भ्राता।
ब्राह्मी सुन्दरी दोय, बहन बनी जग माता।। आदिनाथ.. ।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेष्ठ बंधु रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोम्मटेश के द्वार, सारा जग नित आये।
पंचामृत अभिषेक, करके पुण्य कमाये।। आदिनाथ.. ।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं गोम्मटेश देवाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थ अनेक महान्, बाहुबली स्वामी के।
अतिशयवान महान्, बाहुबली स्वामी ये।। आदिनाथ.. ।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशय तीर्थरूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोम्मट चामुण्डराय, प्रभु प्रतिमा बनवाये।
अति उत्तुंग मनोज्ञ, सबके मन को भाये।। आदिनाथ.. ।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तुंग रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अतिशय बेजोड़, कभी ना पड़ती छाया।
पक्षी न बैठे शीश, ये अतिशय दिखलाया।। आदिनाथ.. ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं अद्भुत अतिशय रूपाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कार्य हो सिद्ध, जो प्रभु तुमको ध्याते।
सुत नारी यशगान, भव्य यहाँ पर पाते।। आदिनाथ.. ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसिद्धि कराय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ ऋद्धि नाथ, गुण अनंत के स्वामी।
यही प्रार्थना आज, बने आप सम ध्यानी।। आदिनाथ.. ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुषष्टि ऋद्धिधारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

श्री कामदेव प्रथम प्रभू, बाहुबली शुभ नाम है।
माता सुनंदा लाल का, हम कर रहे गुणगान हैं॥
वसु द्रव्य की थाली सजा, ध्वज श्रीफलों के साथ में।
पूर्णार्घ अर्पण हम करे, मस्तक झुकाये साथ में॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, दुःख, संकट, विषमता, आर्त्त–रौद्र ध्यान निवारक, समता, धर्म धुरन्धर, अखण्ड ध्यान साधना, मौनव्रत शील समुन्दर सर्वसिद्धी दायक, दुर्ध्यान विनाशक श्री प्रथम मन्मथ बाहुबली जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

हे बाहुबली मन्मथ प्रभु, मनभू प्रथम ही आप हो।
शांति सुखद सुफलं सदा, जिस क्षेत्र पर प्रभु आप हो॥
करते हैं शांतिधार हम, शांति मिले हमको सदा।
बहु पुष्प मालायें चढ़ा, तव पाद रज पायें सदा॥

शांतये शांतिधारा/दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– गोम्मटेश बाहुबली, उनकी ये जयमाल।
ध्वज श्रीफल व माल ले, पढ़ते हम जयमाल॥

नरेन्द्र छंद

ऋषभदेव के लघुनंदन की, जयमाला हम गायें।
मात सुनंदा के नंदन को, सारा जग नित ध्याये॥
बाहुबली बलशाली भगवन्, तव शरणा हम आये।
कामदेव ये प्रथम हमारे, इनको शीश झुकायें॥1॥

बाहुबली के पूर्व भवों की, सुन्दर जीवन गाथा।
सेनापति आहारदान लख, भोगभूमि में जाता।।
देव प्रभंकर देवलोक तज, राजा बने अकंपन।
अहमिन्द्र से महाबाहु बन, इन्द्र ऋद्धि से सम्पन्न।।2।।

बन अहमिन्द्र सर्वार्थ सिद्धि के, बाहुबली बन जाये।
अनुमोदन आहारदान से, कामदेव पद पाये।।
कामदेव के नाम अनेकों, जिन आगम बतलाये।
अंगज मदन मनोज मनोभू, आदि मनोभव आये।।3।।

मदन विजेता मनमथ स्वामी, मंद-मंद मुस्काये।
भरतराज के आयुध गृह में, चक्र प्रगट हो जाये।।
उससे भारत जीत भरत नृप, नगर अयोध्या आये।
नगर द्वार पर रुका चक्र जब, भरत राज भरमाये।।4।।

पूर्ण विजय पाने तब चक्री, भ्रातृ वृन्द बुलवाये।
सभी भाई बन गये मुनिवर, बाहुबली नहीं आये।।
दृष्टि जल मल तीन युद्ध में, बाहुबली जय पाये।
नीति तज तब क्रुद्ध भरत भी, तुमपे चक्र चलाये।।5।।

चक्र आपकी लगा फेरियाँ, तव समीप रुक जाये।
तभी हुआ वैराग्य आपको, प्रज्ञा आप जगाये।।
धन वैभव भाई-भाई में, कैसा युद्ध कराये।
अपने ही तब खुद अपनों के, हत्यारे बन जाये।।6।।

अब वैराग्य जगा बाहुबली, मुनि मुद्रा अपनाये।
एक वर्ष तक एक जगह पर, कायोत्सर्ग लगाये।।
निश्चल मुद्रा वन प्राणी लख, तन पर चढ़कर आये।
सांप सिंह गज मयूर हंसी, प्रभु की भक्ति रचाये।।7।।

एक वर्ष पूरा होने पर, चक्री शरणा आये।
केवलज्ञान हुआ उस पल ही, धर्म सभा लग जाये॥
केवलज्ञानी बाहुबली प्रभु, हित उपदेश सुनाये॥
कर्म नाशकर सिद्ध बने जिन, अष्टापद जब आये॥8॥

भारत भर में कई क्षेत्र हैं, बाहुबली स्वामी के।
विंध्यगिरी में 57 फूट, ऊँचे बाहुबली हैं॥
कनकगिरी कुंभोज कारकल, धर्मस्थल में राजे।
गोम्मटगिरी व अरतिपुर में, बाहुबली विराजे॥9॥

धन-वैभव सुख-शांति पाने, बाहुबली को ध्यायें।
रोग-शोक संकट विनशाने, प्रभुवर के गुण गायें॥
दर्शन करके नाथ आपका, मन पुलिकत हो जाये।
पूजन वंदन कीर्तन कर हम, चरणन् शीश झुकाये॥10॥

बाहुबली के इस विधान से, धन कीर्ति यश पाये।
सर्व विघ्न संकट विनशाकर, सुख-समृद्धि पाये॥
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, समता भाव जगायें।
'आस्था' से प्रभुवर को ध्याकर, उन सम पदवी पायें॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, सर्व ज्वरादि, सर्व आपादशीर्ष हराय,सौभाग्य, वृद्धि, पूज्य पद प्रदायक, सर्वकर्म दुःख, विपत्ति विनाशक, विजय सिद्धिदायक सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- बाहुबली का नाम ही, अतिशय पुण्य बढ़ाय।
बाहुबली भगवान को, 'आस्था' शीश झुकाय॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

आरती

(तर्ज – माईन–माईन...)

बाहुबली की आरती करने, घृत के दीपक लायें।
करें आरती इस विधान की, अतिशय पुण्य कमायें॥
बोलो बाहुबली की जय–2, बोलो गोम्मटेश की जय–2

आदिनाथ के राजदुलारे, मात सुनंदा प्यारे।
नगर अयोध्या में प्रभु जन्में, बाहुबली मनहारे॥
कामदेव ये प्रथम कहाये–2, इनका कीर्तन गायें॥1॥
करें आरती...बोलो बाहुबली....

श्रवणबेलगोला में प्रभु की, मुरतियाँ अति प्यारी।
दूर–दूर से दर्शन करने, आते हैं नर–नारी॥
तीर्थ अनेकों बाहुबली के–2, भक्तों के मन भायें॥2॥
करें आरती...बोलो बाहुबली....

गोम्मटेश के अभिषेक का, मेला जब–जब लगता।
सप्तरंगी अभिषेक करें भवि, फिर भी मन नहीं भरता॥
वीणा घुंघरु ढ़ोल बाँसुरी–2, ढ़पली मृदंग बजायें॥3॥
करें आरती...बोलो बाहुबली....

धन–वैभव सद्बुद्धि शांति, मिलती प्रभु चरणों में।
दुःख संकट व कष्ट बिमारी, मिटती प्रभु चरणों में॥
आस्था से हम ध्यायें भगवन्–2, 'आस्था' भव तिर जायें॥4॥
करें आरती...बोलो बाहुबली....

***

श्री बाहुबली भगवान का चालीसा

दोहा- गोम्मटेश बाहूबली, तुमको करूँ प्रणाम।
नंदन आदिनाथ के, बाहुबली भगवान॥
पाँचों परमेष्ठी नमूँ, श्रुतदेवी दो ज्ञान।
चालीसा इनका पढ़ूँ, मेटूँ कर्म विधान॥

(चौपाई)

जय-जय बाहुबली जिन स्वामी, मन्मथ प्रथम आद्य शिवगामी।
आदिनाथ के राज दुलारे, मात सुनंदा के सुत प्यारे॥1॥
नगर अयोध्या धन्य हुआ था, जहाँ आपका जन्म हुआ था।
बाहुबली है नाम तुम्हारा, प्रभु चरणों में नमन हमारा॥2॥
भरत चक्री सा भाई पाया, सौ भाई में मुख्य कहाया।
बहन सुंदरी-ब्राह्मी प्यारी, मात-पिता की आज्ञाकारी॥3॥
सवा पाँच शत धनु थी काया, सबसे सुंदर तन को पाया।
कामदेव ये प्रथम कहाये, आदिनाथ से शिक्षा पाये॥4॥
आदि पिता ने ज्ञान कराया, अस्त्र-शस्त्र का पाठ पढ़ाया।
निज पितु से पोदनपुर पाया, न्याय-नीति से राज्य चलाया॥5॥
चक्ररत्न भरतेश्वर पावे, षट खण्डों पर वे जय पावें।
चक्र अयोध्या में ना जावे, बाहुबली ना शीश झुकावे॥6॥
दृष्टि-मुष्ठि-जल युद्ध हुए थे, बाहुबली नृप विजय हुए थे।
चक्री ने निज चक्र चलाया, बाहुबली को हरा न पाया॥7॥
चक्र बाहुबली को शिरनाये, बाहुबली वैराग्य जगाये।
यह धन-वैभव युद्ध कराता, भ्रात-प्रेम में कलह मचाता॥8॥
यह विचार छोड़ी सब माया, आदि प्रभु को शीश झुकाया।
आदि प्रभु से दीक्षा धारी, करी तपस्या प्रभु ने भारी॥9॥

कठिन साधना बाहुबली की, आठ ऋद्धियाँ प्रगट हुई थी।
पशु भी अपनी पशुता छोड़े, प्रभु पद रज को पाने दौड़े॥10॥
मृग-सिंह-गज प्रभु भक्ति रचायें, मोर कोकिला प्रभु गुण गायें।
प्रभु के तन पे लगी लतायें, विषधर चरणों में रम जाये॥11॥
विद्याधरियाँ लता हटायें, बाहुबली की भक्ति रचायें।
एक वर्ष होने को आया, केवलज्ञान नहीं हो पाया॥12॥
भरत चक्री आ भक्ति रचायें, केवलज्ञान बाहुबली पायें।
आठों कर्मो को विनशाया, अष्टापद से शिव पद पाया॥13॥
बाहुबली को जो भी ध्याये, नवग्रह की बाधा टल जाये।
खड़गासन प्रतिमा मनहारी, पूजा करते सुर नर-नारी॥14॥
सारे जग में प्रतिमा देखो, बाहुबली का अतिशय देखो।
चामुण्डराजा पुण्य कमाये, स्वप्न मात का पूर्ण कराये॥15॥
अति विशाल प्रतिमा बनवाई, बाहुबली की महिमा गाई।
विन्ध्यगिरी के गोम्मट स्वामी, बाहुबली प्रभु जग में नामी॥16॥
इतना अतिशय उस प्रतिमा का, प्रभु के शिर पे पक्षी न आता।
ना पड़ती प्रभुवर की छाया, प्रभु मुद्रा लख मन हर्षाया॥17॥
प्रतिमा लगती सबको प्यारी, मंद-मंद मुस्कान तुम्हारी।
नयन आपके चाँद-सितारे, अधर लगे पुष्पों से प्यारे॥18॥
कुंभोज वेणुर लगे सुनहरा, कनकगिरी में मंदिर तेरा।
क्षेत्र कारकल दर्शन पाये, गोम्मटगिरि धर्मस्थल जाये॥19॥
बन जाओ प्रभु आप खिवैया, पार लगा दो मेरी नैया।
वंदन पूजन भजन करेंगे, 'आस्था' से शिवराज वरेंगे॥20॥

दोहा- बाहुबली भगवान का, चालीसा सुखकार।
चालीस दिन तक जो पढ़े, पायें शांति अपार॥
गोम्मटेश बाहुबली, तीन लोक के ईश।
दीप-धूप लेकर भजे, सदा नमावें शीश॥

जाप्य मंत्र:- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नम:। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

श्री धर्मतीर्थ विधान

स्थापना (नरेन्द्र छंद)

किया प्रवर्तन धर्मतीर्थ का, चौबीसों जिनवर ने।
जिनवाणी गुरुवाणी पाई, हमने उन प्रभुवर से।।
सब तीर्थंकर को हम पूजें, सूत्र धर्म के पायें।
अंजलि में पुष्पाञ्जलि ले हम, प्रभु को हृदय बसायें।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ स्थित सर्व तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

चौबीस नाथ आपका अभिषेक हम करें।
जन्मादि तीन रोग नाश मुक्ति को वरें।।
श्री धर्मतीर्थ क्षेत्र गुप्तिनंदि बनायें।
हम धर्मतीर्थ के सभी जिनराज को ध्यायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ विराजित सर्व जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना प्रकार गंध चंदनादि ला रहे।
जिनदेव के चरण लगा आनंद पा रहे।। श्री...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ विराजित सर्व जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य में जिनधर्म का प्रचार जिन करें।
अक्षत उन्हें चढ़ाके पुण्य कोष हम भरें।। श्री...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ विराजित सर्व जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों की माल आपको अतिश्रेष्ठ चढ़ायें।
प्रभु के चरण में नित्य ही हम पुष्प चढ़ायें।। श्री...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ विराजित सर्व जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूड़ी पकोड़ी खीर मेवा लड्डू चढ़ायें।
नमकीन व मिठाई के हम थाल चढ़ायें॥
श्री धर्मतीर्थ क्षेत्र गुप्तिनंदि बनायें।
हम धर्मतीर्थ के सभी जिनराज को ध्यायें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ विराजित सर्व जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर घी के दीप से हम आरती करें।
जिनदेव का गुणगान नित्य भक्ति से करें॥ श्री.... ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ विराजित सर्व जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मंत्र बोल अग्नि में हम धूप चढ़ायें।
ये धूप अग्नि मंत्र की पवित्र कहाये ॥ श्री... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ विराजित सर्व जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम फलों की माल बना चरण चढ़ायें।
प्रभु के चरण ही आचरण के सूत्र सिखायें ॥ श्री... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ विराजित सर्व जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अष्ट द्रव्य की हम थाल सजायें।
श्रीफल पे पुष्प दीप ध्वजा लेके चढ़ायें ॥ श्री.... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ विराजित सर्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा– धर्मतीर्थ यह नाम तो, सब प्रभुवर की देन।
धर्मतीर्थ के नाथ को, पूजें हम दिन रैन॥

अथ मंडलस्योऽपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

धर्मतीर्थ पे सूर्य बिम्ब सम, चमके पद्म जिनेश्वर।
सर्वसौख्यदायक पदमेश्वर, हम सबके परमेश्वर॥

रविग्रहरिष्ट विनाशक प्रभु को, आठों द्रव्य चढ़ायें।
धर्मतीर्थ के पद्म प्रभु को, हम सब शीश झुकायें॥1॥
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसौख्य प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रकांत चूड़ामणि भगवन्, चंद्र प्रभु मन भायें।
पूनम का चंदा भी प्रभु के, सन्मुख आ शरमाये॥
चन्द्रप्रभु की महिमा ऐसी, अतिशय नित दिखलाये।
धर्मतीर्थ पे चन्द्रप्रभु की, पूजा करने आये॥2॥
ॐ ह्रीं अर्हं चंद्रकांत चूड़ामणि श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ मंगलकारी जिन, मंगल करने वाले।
सर्व अमंगल हरलो भगवन्, हम सबके रखवाले॥
धर्मतीर्थ पे वासुपूज्य के, हम सब दर्शन पायें।
अर्घ चढ़ायें शीश झुकायें, मंगल ध्वजा लगायें॥3॥
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वमंगलकारी श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ के नायक भगवन्, शांतिनाथ सुखदाता।
मात-पिता भी धन्य आपके, जन्म तीर्थ सुखदाता॥
धर्म अखण्ड चला प्रभु तुमसे, आगम हमें बताये।
धर्मतीर्थ के नायक को हम, भर-भर थाल चढ़ायें॥4॥
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ साम्राज्य नायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छापूरक आदिनाथ जी, अतिशय नित दिखलायें।
सोने जैसी चमचम करती, प्रभु प्रतिमा मन भाये॥
धर्मतीर्थ के प्रथम प्रवर्त्तक, आदिनाथ कहलाये।
धर्मतीर्थ पर जिनवर तुम ही, सबसे पहले आये॥5॥
ॐ ह्रीं अर्हं इच्छापूरक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे त्रैलोक्य तिलक सुविधि जिन ! तीन लोक के राजा।
प्रभु की प्रतिमा हमको कहती, हे भवि शरणा आजा॥

धर्मतीर्थ पर अष्ट धातुमय, पुष्पदंत प्रभु आये।
अर्घ थाल ले कर कमलों में, प्रभु को नित्य चढ़ायें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्य तिलक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्नहरण प्रभु भाग्यविधाता, मुनिसुव्रत जिनदेवा।
सर्व मुनीश्वर करते भक्ति, सुर-नर करते सेवा॥
धर्मतीर्थ पे मुनिसुव्रत जी, दर्शनीय मन भाये।
धर्म ध्वजा संग अर्घ थाल ले, हम प्रभु तुम्हें चढ़ायें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं भाग्यविधाता श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म शंख का नाद किया जिन, शंख चिह्न कहलाये।
शंख चिह्न युत नेमीनाथ को, हर प्राणी नित ध्यायें॥
धर्मतीर्थ के नेमीनाथ की, पूजा भव्य रचायें।
धर्मतीर्थ के इस विधान को, हम सब करने आये॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मशंखनादकर्त्ता श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयकेतु श्री पार्श्वनाथ जिन, विजय सिद्धि दिलवायें।
प्रभु की पूजा विजय दिलाये, निशदिन प्रभु को ध्यायें॥
नव फणवाले पार्श्वनाथ जी, धर्मतीर्थ पे आयें।
धर्मतीर्थ के पार्श्व प्रभु की, हम सब संस्तुति गायें॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं विजयकेतु श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी चौबीस जिनेश्वर, सब गणधर रत्नों के।
रत्नमयी हैं सिद्ध प्रभुवर, पूजें हम रत्नों से॥
धर्मतीर्थ पर यक्ष-यक्षिणी, प्रभु का यश फैलायें।
भैरव पद्मावती जगदम्बा, सब प्रभुवर को ध्याये॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थस्य सर्व जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस्रफणी पारस प्रभुवर की, प्रतिमा यहाँ बिठायें।
एक शतक सौ आठ फणों से, प्रभु का न्हवन करायें॥
कलिकुंड चंडोग्र पार्श्व जिन, वर्धमान के दर्शन।
गणधर भी तीर्थंकर सम हैं, करें कर्म का भंजन॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मतीर्थ विराजित सर्व जिनेभ्यो सहस्रफणी चंडोग्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्रेभ्यो, सर्व गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पुण्य वृद्धि प्रभु भक्ति बढ़ाये, पाप हरे बहु पुण्य दिलाये।
धर्मतीर्थ सुविधान रचायें, ध्वज फल ले हम अर्घ चढ़ायें॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म वृद्धि हम पाने आये, सब अधर्म के भाव नशायें। धर्म... ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण आयु पा जिनगुण गायें, त्रय रोगों से मुक्ति पायें। धर्म... ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं आयुवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री का वर्धन श्री जिन देवें, दुःख दारिद्र सभी हर लेवें। धर्म... ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा से यश बढ़े हमारा, अयश कीर्ति का हो निस्तारा। धर्म... ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं यशवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मिक शांति प्रभु सम पायें, सर्व प्रभु के गुण हम गायें। धर्म... ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप संयम की कांति जगायें, उससे निज आतम चमकायें। धर्म... ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं कांतिवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति को सन्मति नाथ बनायें, कुमति नशायें सुमति जगायें। धर्म... ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं सन्मतिवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि सद्बुद्धि बन जाये, भक्ति से दुर्बुद्धि नशाये।
धर्मतीर्थ सुविधान रचायें, ध्वज फल ले हम अर्घ चढ़ायें॥20॥
ॐ ह्रीं अर्हं सद्बुद्धिवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय ही मुक्ति दिलाये, रत्नत्रय धारी को ध्यायें। धर्म... ॥21॥
ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रयवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्दर्शन पाने आये, श्रद्धा रख मिथ्यात्व नशायें। धर्म... ॥22॥
ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्दर्शनवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् प्रज्ञा दीप जलाये, मोह-तिमिर विनशाने आये। धर्म... ॥23॥
ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्ज्ञानवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित को अपनाये, ये ही हमको मोक्ष दिलाये। धर्म... ॥24॥
ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्चारित्रवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेय मिले निश्रेय दिलायें, सर्व प्रभु सुख श्रेय दिलायें। धर्म... ॥25॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल मूर्ति मंगलकारी, सर्व अमंगल संकटहारी। धर्म... ॥26॥
ॐ ह्रीं अर्हं मंगलवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह स्वस्थ पा धर्म निभायें, सर्व रोग हर जिनपद पायें। धर्म... ॥27॥
ॐ ह्रीं अर्हं आरोग्यवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम कुल अति पुण्य दिलाये, जिन पूजें हम जिनकुल पायें। धर्म... ॥28॥
ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम कुलवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च गोत्र मुनिव्रत दिलवाये, मुनि ही मोक्षमहल को पायें। धर्म...॥29॥
ॐ ह्रीं अर्हं उच्चगोत्र वर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम जाति हमने पाई, प्रभु चरणों से प्रीत लगाई। धर्म... ॥30॥
ॐ ह्रीं अर्हं उच्चजातिवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति करो जिनदेव हमारा, धर्ममयी हो जीवन सारा।
धर्मतीर्थ सुविधान रचायें, ध्वज फल ले हम अर्घ चढ़ायें॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्तिवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म सभी जग सुख का दाता, स्वर्ग मोक्ष भी धर्म दिलाता। धर्म... ॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुखवर्धक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जिनवर ने जिसे चलाया, वो ही धर्मतीर्थ कहलाया। धर्म... ॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ प्रवर्तक सर्व जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्द्ध नरेन्द्र छंद)

धर्म अनादि निधन हमारा, आदि अंत नहीं है।
केवलज्ञानी की वाणी से, प्रगटित धर्म वही हैं॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद् धर्म प्ररूपकाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वत्थु सहावों धम्मों रूपं, अनेकांत बतलाया।
स्याद्वाद और सप्त भंग से, श्री प्रभु ने समझाया॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तभंग प्ररूपकाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख शांति आनंद स्वरूपी, निज आतम परमातम।
परमेश्वर की पूजा करके, बन जायें शुद्धातम॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं आनंद स्वरूपाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर प्राणी का जैन धर्म ही, बनता सदा सहायक।
जैन धर्म ही शरणभूत है, जैनधर्म सुखदायक॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म शरण प्रदायकाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध कषायें हैं विभाव सब, कहता धर्म हमारा।
क्षमा शांति समता में रहना, ये निज भाव हमारा॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वाभाविक गुण प्ररूपकाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बड़े पुण्य से जैन धर्म व, सर्वश्रेष्ठ कुल पाया।
भक्ति करें हम जैन धर्म की, जिसने मार्ग दिखाया॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं जैनधर्म पुण्य प्रदायकाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनधर्म की महिमा जाने, नाग हार बन जाये।
शूली भी सिंहासन बनती, धर्म पूज्य बनवाये॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनधर्म अतिशय प्ररूपकाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनधर्म की शरणा पाकर, अंजन भी तिर जाये।
पापी से पापी भी सुधरे, पुण्य राह अपनाये॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनधर्म शरण प्रदायकाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म सदा सुख देता हमको, दुःख से मुक्ति दिलाये।
धर्मध्यान में बीते हरक्षण, प्रभु से प्रीत लगायें॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व सुखप्रदायकाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दया अहिंसा करुणा मैत्री, जैन धर्म सिखलाये।
देव-शास्त्र-गुरुओं की भक्ति, करना धर्म सिखाये॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनधर्म भक्तिप्रदायक श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब तक घट में प्राण हमारे, जैन धर्म ना छूटे।
तन छूटे पर धर्म न छूटे, कभी प्रभु ना छूटे॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनधर्म फल प्रदायकाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म है संयम धर्म ही तप है, धर्म ही त्याग तपस्या।
धर्म है सिद्धि धर्म ही मुक्ति, पाने करें तपस्या॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म सर्वसौख्य प्रदायकाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब हम धारण करें धर्म को, उत्तम गति ले जाये।
दुर्गतियों से जैनधर्म ही, हमको अवश बचाये॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगति प्रदायकाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनधर्म को जिनसे पाया, वो हैं बड़े दयालू।
दृष्टि सदा रहे हम सब पर, वो हैं बड़े कृपालू॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं दयादृष्टि धारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन करें हम जैनधर्म को, आस्था से अपनाये।
जब तक मुक्ति मिले ना हमको, जैनधर्म हम पाये।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं भव–भव जिनधर्म प्राप्ताय श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

जिनधर्म के सब नाथ व, परमेष्ठियों की वंदना।
सब सिद्ध जिन गणधर प्रभु, उनकी करें हम अर्चना।।
इस धर्मतीर्थ विधान को, पूर्णार्घ अर्पण हम करें।
सुन्दर लगे ये मांड़ला, फल गुच्छ ध्वज अर्पण करें।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, नवग्रह अरिष्ट दोष विनाशकाय, सुख–शांति–समृद्धि प्रदायकाय धर्मतीर्थ प्रवर्त्तक सर्व जिनेन्द्रेभ्यो, सर्व सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, सर्व गणधर परमेष्ठिभ्यो श्री धर्मतीर्थ विधाने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जैन धर्म की शान है, धर्मतीर्थ शुभ नाम।
शांति मिले इस तीर्थ पर, करते सदा प्रणाम।।

शांतये शांतिधारा

दोहा– धर्मतीर्थ के बाग से, लेकर आये फूल।
पुष्पाञ्जलिं हम कर रहे, पाने प्रभु पद धूल।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ क्षेत्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– जयमाला हम गा रहे, लिये द्रव्य की थाल।
धर्मतीर्थ के जिनप्रभु, वंदन तुम्हें त्रिकाल।।

(नरेन्द्र छंद)

धर्मतीर्थ के सर्वप्रभु को, हम सब शीश झुकायें।
महिमा मंडित अतिशयकारी, सब जिनवर को ध्यायें।।
पद्म चंद्र वसुपूज्य शांति जिन, तीर्थंकर आदीश्वर।
पुष्पदंत मुनिसुव्रत नेमी, जय हो पार्श्व जिनेश्वर।।1।।

रत्नमयी चौबीस जिनेश्वर, सिद्ध प्रभु रत्नों के।
चौदह सौं बावन गणधर जिन, वे भी हैं रत्नों के।।
यक्ष-यक्षिणी क्षेत्रपाल सब, अतिशय नित दिखलायें।
भैरव पद्मावती माता भी, सबके कष्ट मिटायें।।2।।

अतिशयकारी ये तीरथ है, मनभावन उपकारी।
धर्मतीर्थ के नायक प्रभुवर, शांतिनाथ सुखकारी।।
प्रतिमा बनने पूर्व प्रभु ने, अतिशय बहुत दिखाया।
सबकी जान बचाकर प्रभु ने, अपना बिम्ब बनाया।।3।।

इच्छापूरक आदिनाथ जिन, इच्छा पूरी करते।
जिसकी जो इच्छा होती है, उसकी झोली भरते।।
विजयकेतु श्री पार्श्व प्रभुवर, सबको विजय दिलाये।
मुनिसुव्रत की पूजा कर हम, मनवांछित फल पायें।।4।।

सहस्रफणी पारस प्रभु प्रतिमा, सुन्दर काले बाबा।
जिनवाणी गुरु सूरज चंदा, नवग्रह वाले बाबा।।
पावापुर का जल मंदिर भी, अति मनोज्ञ मनहारी।
जिन प्रतिमा प्रभु चरण बिठाये, वर्धमान सुखकारी।।5।।

यहाँ विराजें सभी जिनेश्वर, रोग-शोक विनशायें।
जो जन इनको आकर पूजें, वो धन-वैभव पायें।।
सर्व कार्य में सिद्धी दिलाये, सिद्धों की प्रतिमायें।
ऋद्धि-सिद्धि सुख शांति देती, गणधर की प्रतिमायें।।6।।

हर दिन हम सब ये विधान कर, सोया भाग्य जगायें।
दान धर्म की शक्ति पाकर, त्याग धर्म अपनायें।
चारों ही पुरुषार्थ सिद्धकर, अंतिम मुक्ति पायें।
जब तक मुक्ति मिले ना हमको, धर्म मार्ग अपनायें॥7॥

धर्मतीर्थ ये नाम मनोहर, चारों दिश हरियाली।
मन को बढ़ा सुकून दिलाये, मिलती हैं खुशहाली॥
हर दिन इस तीरथ में होती, पंचामृत की धारा।
नर-नारी बालक युवती जन, करते प्रभु पर धारा॥8॥

महाशांति मंत्रों की ऊर्जा, धर्मतीर्थ में फैले।
धर्मतीर्थ के तिर्यंचों में, मंत्रों की ध्वनि फैले॥
गुरु से णमोकार सुन कर वे, भव दुःख से तिर जाये।
धर्मतीर्थ गुरु गुप्ति बनाये, धर्म सूर्य चमकाये॥9॥

धर्मतीर्थ में आकर हम सब, धर्म ध्वजा फहराये।
धर्मतीर्थ की यशोपताका, दिग्दिगंत फैलाये॥
धर्मतीर्थ के प्रेरक गुरुवर, गुप्तिनंदि कहलाये।
धर्मतीर्थ के सब जिनवर को, 'आस्था' शीश झुकायें॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वग्रह अरिष्ट निवारक, सर्व कोरोना रोग, दुःख, अशांति, क्लेश, अपमृत्यु, संकट, पीड़ा, रोग, शोक, सर्व पाप विनाशक, सुख, शांति, ऋद्धि, सिद्धि, बुद्धि, धन-धान्य, ऐश्वर्य, शिव समृद्धि प्रदायक, दुर्गति निवारक, जिनगुणसंपत्ति दायक, श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित सर्वजिन बिम्बेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- धर्मतीर्थ के नाथ को, 'आस्था' करे प्रणाम।
श्रद्धा से आस्था वरे, निश्चय मोक्ष मुकाम॥

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

आरती

(तर्ज – माईन–माईन....)

धर्मतीर्थ के इस विधान की, आरती करने आये।
धर्म ही अपना सच्चा साथी, सब जिनवर बतलायें॥
बोलो धर्मतीर्थ की जय–2...

धर्मतीर्थ पर चौबीस जिन की, रत्नों की प्रतिमायें।
नव तीर्थंकर अष्ट धातु के, अति मनोज्ञ मन भायें।
धर्मतीर्थ के नायक भगवन–2, शांतिनाथ कहलाये। धर्म ही..
बोलो धर्मतीर्थ की जय–2... ॥1॥

धर्मतीर्थ पर प्रभु के संग में, यक्ष यक्षिणी राजे।
भैरव पद्मावती माँ के सिर, पारसनाथ विराजे॥
चौदह सौ बावन गणधर की–2, रत्नमयी प्रतिमायें। धर्म ही..
बोलो धर्मतीर्थ की जय–2...॥2॥

सहस्त्रफणी सावलियाँ पारस, अति मनोज्ञ बनायें।
पावापुरी का जलमंदिर भी, गुरुवर यहाँ बनायें॥
इन सब प्रभु की करें आरती–2, अतिशय पुण्य कमाये। धर्म ही..
बोलो धर्मतीर्थ की जय–2...॥3॥

गुप्तिनंदी गुरु इस तीरथ की, महिमा सदा बढ़ायें।
भक्त यहाँ भक्ति से आकर, सबके दर्शन पायें॥
'आस्था' से हम करें आरती–2, प्रज्ञा ज्योति पाये। धर्म ही..
बोलो धर्मतीर्थ की जय–2...॥4॥

***

श्री धर्मतीर्थ चालीसा

दोहा– जैन धर्म की शान है, धर्मतीर्थ शुभ नाम।
किया प्रवर्तन धर्म का, वहीं तीर्थ का नाम॥
धर्मतीर्थ के जिन प्रभु, चौबीसों भगवान।
सब प्रभुवर को है नमन, दो सुख समता दान॥

चौपाई

धर्मतीर्थ सुन्दर मन भाये, सर्व भक्त चालीसा गायें।
धर्मतीर्थ उपदेशक जिनवर, वंदनीय सारे तीर्थंकर॥1॥
महाराष्ट्र की पावन भू पर, श्री कचनेर तीर्थ के पूरब।
चारों ओर बहुत हरियाली, भक्तों का मन हरने वाली॥2॥
भक्त यहाँ दर्शन को आये, अद्भुत शांति वे सब पायें।
भूरि-भूरि करें प्रशंसा, पूरी होती सबकी मंशा॥3॥
इस तीरथ के प्रेरक गुरुवर, श्री गुप्तिनंदी सूरीश्वर।
नवजिन बिम्ब यहाँ बैठाये, नवग्रह के सब कष्ट मिटायें॥4॥
भव्य जिनालय बना यहाँ पे, पाँच वेदी त्रय शिखर यहाँ पे।
स्वर्ण कलश पर स्वर्ण पताका, फर-फर करती यहाँ पताका॥5॥
धर्मतीर्थ के नायक भगवन्, शांतिनाथ को करते वंदन।
अतिशय कारी शांति प्रदाता, सब भक्तों के भाग्य विधाता॥6॥
पुष्प गिरा अतिशय दिखलाये, प्रश्नों का उत्तर हम पाये।
मन मोहक मुस्कान प्रभु की, अष्ट धातु में प्रतिमा प्रभु की॥7॥
अतिशय बनते समय दिखाया, सबने प्रभु को शीश झुकाया।
सब भक्तों के प्राण बचायें, रक्षक बनकर प्रभुवर आये॥8॥
अष्ट धातु की सब प्रतिमायें, खड्गासन श्री जिन प्रतिमायें।
पद्म-चंद्र श्री वासुपूज्य जी, शांति आदि श्री पुष्पदंत जी॥9॥
मुनिसुव्रत श्री नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ चौबीस प्रभु जी।
गणधर हैं चौदह सौ बावन, प्रभु चरणों में लगता सावन॥10॥
सुन्दर सिद्धों की प्रतिमायें, सर्व कार्य में सिद्धि दिलाये।
सहस्र फणों में पारस स्वामी, मनवांछित फल देते स्वामी॥11॥

नीर क्षीर की डाले धारा, हो अभिषेक फणों से धारा।
खडगासन पद्मासन प्रभु जी, जय बोले हम सिद्ध प्रभु की॥12॥
नवग्रह की जो जिन प्रतिमायें, प्रभु संग यक्ष यक्षी बैठायें।
ये अपना अतिशय दिखलाये, पुष्प गिरा उत्तर दे जायें॥13॥
इच्छापूरक आदिनाथ जी, इच्छापूरी करते प्रभु जी।
सब प्रभु का चालीसा गायें, ग्रह अनुकूल सभी हो जाये॥14॥
रोने वाले हंसकर जायें, खाली झोली भर ले जाये।
अर्द्धरात में घंटे बाजे, भक्ति से सुर देवी नाचे॥15॥
चौबीस भुजा धारिणी माता, पद्मा माँ को जन-जन ध्याता।
अष्ट धातु की प्रतिमा प्यारी, भक्तों पे माँ कृपा तुम्हारी॥16॥
गोद भरें श्रृंगार करायें, सबपे माँ वात्सल्य दिखाये।
पद्मावती में चौबीस माता, हे माँ ! सबकी हरो असाता॥17॥
श्वेत वर्ण के क्षेत्रपाल जी, ढाई द्वीप के रक्षपाल जी।
नो मुख नवग्रह शासन देवा, घंटाकर्ण यक्ष जिन देवा॥18॥
क्षेत्र पहाड़ों बीच बना है, मंदिर बीचोंबीच बना है।
रंगबिरंगे ध्वज फहराये, भक्तों को नित पास बुलायें॥19॥
करें आरती आर्त्त मिटाने, फेरी करते भ्रमण मिटाने।
धर्म सरोवर अतिशय सुन्दर, वीर प्रभु का मंदिर सुन्दर॥20॥
धर्म तीर्थ है मंगलकारी, भक्त यहाँ आते नर-नारी।
गंध पुष्प प्रभु चरण चढ़ायें, 'आस्था' रख सुख-शांति पायें॥21॥

दोहा- धर्मतीर्थ में हम करें, पंचामृत अभिषेक।
शांति मंत्र जप पाठ व, करें विधान विशेष॥
पूजा यहाँ त्रिकाल में, होती प्रभु के पास।
दीप धूप से हवन हो, करने कर्म विनाश॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थ क्षेत्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव

परिचय

जन्म स्थान	–	भोपाल (म.प्र.)
माता	–	श्रीमती त्रिवेणी बाई जैन (वर्तमान में क्षु. धन्यश्री माताजी)
पिता	–	श्री कोमलचंदजी जैन
जाति	–	परवार दिगम्बर जैन
आजीवन ब्रह्मचर्य	–	विद्याभूषण आचार्य सन्मतिसागरजी से
मुनि दीक्षा	–	22 जुलाई, 1991–रोहतक (हरियाणा)
दीक्षा गुरु	–	ग. ग. श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव
शिक्षा गुरु	–	वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव
आचार्य पदारोहण	–	27 मई, 2001, श्रुतपंचमी गोम्मटगिरी (इन्दौर)
आचार्य पद प्रदाता	–	ग. ग. श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव

आचार्यश्री गुप्तिनंदी विधान

स्थापना (गीता छंद)

छत्तीस गुणधारी गुरु, पालन करें त्रय गुप्तियाँ।
गुरु गुप्तिनंदी धर्म की, नित बाँटते हैं सूक्तियाँ॥
ऐसे गुरु की अर्चना, सौभाग्य से हमको मिले।
आह्वान करने आपका, हम पुष्प ले आये खिले॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

(नरेन्द्र छंद)

काव्य कुशलता गुरुवर तेरी, प्रमुदित भाव बनाती है।
इतनी प्यारी वाणी तेरी, हमको राह दिखाती है॥
करें पाद-प्रक्षाल नीर से, जन्म-जरा-मृत हर लेना।
हे गुप्तिनंदी ! सूरीश्वर, हमको चरण-शरण देना॥1॥

ॐ ह्रीं प.पू. आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(नाराच छंद)

आप पादपद्म में, सुगंध ये लगा रहे।
पाप ताप नाश हेत, शीश पे लगा रहे॥
आपकी सदा करें, सुभक्ति से सुअर्चना।
गंध आपको चढ़ा, करें सदा सुवंदना॥2॥

ॐ ह्रीं प.पू. आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपेन्द्रवज्रा छंद)

अखंड अक्षत गजमोती लाये, गुरु चरण में अक्षत चढ़ायें।
गुरु के जैसा कोई न दूजा, करें सदा हम गुरु की पूजा॥
गुरु गुप्तिनंदी त्रय गुप्तिधारी, कृपालू गुरुवर जय हो तुम्हारी।
महाकवीश्वर विनती हमारी, सदा करें हम भक्ति तुम्हारी॥3॥

ॐ ह्रीं प.पू. आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

रंग बिरंगे फूल, संग चढ़ायें माला।
पाने तव पद धूल, आये शरण कृपाला॥
कुंथु गुरु के लाल, सबके कष्ट मिटायें।
गुप्ति गुरु यति बाल, हम सब शीश झुकायें॥4॥

ॐ ह्रीं प.पू. आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(पंच चामर छंद)

जहाँ-जहाँ गुरु चले, वहाँ करें प्रभावना।
करें प्रचार धर्म का, सुज्ञान की सुभावना॥
मनोज्ञ ले मिठाइयाँ, सुअर्चना रचा रहे।
क्षुधादि रोग नाशने, सुभक्ति से चढ़ा रहे॥5॥

ॐ ह्रीं प.पू. आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

लक्ष्य-लक्ष्य दीपों से गुरु की आरती।
गुरु आरती मोह तिमिर परिहारती॥
वीणा ढपली ढोल मृदंग बजा रहे।
नृत्य गीत संग, हम सब भक्ति रचा रहे॥6॥

ॐ ह्रीं प.पू. आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

जिनवाणी के सूत्र बताते, जिनवाणी घर-घर पहुँचाते।
विधि विधान के गुरुवर ज्ञाता, दुःखियों के हो भाग्य विधाता॥
गुरु के रंग में हम रंग जायें, गुरु भक्ति की धूम मचायें।
सुरभित होवे दशों दिशायें, ऐसी गुरु को धूप चढ़ायें॥7॥

ॐ ह्रीं प.पू. आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

गुप्ति गुरूवर हर भक्तों को, जिनवृष[1] की शिक्षा देते हैं।
उनके संस्कारों को पा हम, जिनधर्म सुधानंद लेते हैं।।
हे कविहृदय ! प्रज्ञायोगी, हम तेरी महिमा गाते हैं।
नाना रंगों के हरे-भरे, सुन्दर फल गुच्छ चढ़ाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं प.पू. आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने कमाल कर दिया।
वात्सल्य दे सभी को मालामाल कर दिया।।
पूजा हमारी आप ये स्वीकार कीजिये।
गुरुदेव मुस्कुराके आशीर्वाद दीजिये।।9।।

ॐ ह्रीं प.पू. आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- गुप्तिनंदी गुरुदेव का, करते भव्य विधान।
प्रज्ञायोगी आप हो, दो प्रज्ञा सुख दान।।

अथ मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

1 अगस्त 1972, जन्मे गुरुवर प्यारे।
चाँद सा टुकड़ा हँसता मुखड़ा, देखन आये सारे।।
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, ज्ञानी गुरु हमारे।
पूजन भजन विधान रचाने, आये हम गुरु द्वारे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि गुण रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे गुरु भोपाल नगर में, मात-पिता हर्षायें।
नाम रखा राजेन्द्र आपका, सबके मन को भाये।। प्रज्ञायोगी..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि मंगल रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. जिनधर्म।

जन्म कुण्डली नानाजी ने, गुरु की श्रेष्ठ बनाई।
नाम कमायेगा ये बेटा, बाँटी खूब मिठाई।।
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, ज्ञानी गुरु हमारे।
पूजन भजन विधान रचाने, आये हम गुरु द्वारे।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि शरण रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल्दी ही ये घर छोड़ेगा, सबको राह दिखाने।
कुल दीपक ये पुत्र तुम्हारा, आया कुल चमकाने।। प्रज्ञायोगी..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि कुलदीपकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मकार्य में आगे रहते, श्री गुरुदेव हमारे।
पूजन जिन अभिषेक करें नित, द्रव्य मनोहर सारे।। प्रज्ञायोगी..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि भक्ति रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छन्द)

भोपाल नगर में एक बार, सन्मति सागर क्षुल्लक आये।
बालक राजेन्द्र देख उनको, उनके संग बैरागढ़ जाये।।
सूरि गुप्तिनंदी गुरु का, हम श्रेष्ठ विधान रचाते हैं।
गुरुवर का कीर्तन करके हम, मन में अति आनंद पाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि दर्शन रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राजेन्द्र विरागी बालक को, पर मात-पिता घर ले आये।
इक दिन मुनिराज बनूँगा मैं, यह लक्ष्य आप मन में लाये।। सूरि..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि ज्ञान रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक शिक्षा उत्तम पायी, विद्यार्थी बन श्री गुरुवर ने।
एन.सी.सी. में आगे रहते, सार्जेंट कमाण्डर बनकर वे।। सूरि..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि विद्यार्थी रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फिर से सूरी सन्मति सागर, भोपाल संघ लेकर आये।
उनके चतुमास में अंत समय, वैराग्य भाव तुमने भाये।। सूरि..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि विरक्त रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज मात-पिता से आप कहें, अब मैं नश्वर जग छोड़ूँगा।
तीर्थंकर जिन का मोक्ष मार्ग, अब मैं हर्गिज ना छोड़ूँगा॥
सूरि गुप्तिनंदी गुरु का, हम श्रेष्ठ विधान रचाते हैं।
गुरूवर का कीर्त्तन करके हम, मन में अति आनंद पाते हैं॥10॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि संकल्प रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

दृढ़ त्याग लख परिवार ने, सानंद तब छोड़ा तुम्हें।
श्रद्धान् दृढ़ तुम देखकर, ले संघ में छोड़ा तुम्हें॥
हे धर्मक्रांति सूर्य गुरु !, व्याख्यान वाचस्पति अहा।
हे गुप्ति गुरु ! हम आपकी, करते यहाँ पूजा महा॥11॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि तप रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिमा युगल सह ब्रह्मव्रत, आचार्य सन्मति से लिया।
10 अक्टूबर गुरुदेव ने, उत्साह से घर तज दिया॥ हे धर्म.... ॥12॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि संयम व्रत रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु के चरणों में आ गये।
वात्सल्य देख उनका वो ही मन को भा गये॥
गुरुदेव गुप्तिनंदी का हम कर रहे विधान।
हे ज्ञानसूर्य ! आपको प्रणाम है प्रणाम॥13॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि चरण रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनती करे गुरुदेव से दीक्षा की बार-बार।
आया शरण मैं आपकी कर दो मेरा उद्धार॥ गुरुदेव... ॥14॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि प्रार्थना रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैराग्य देख आपका गुरु हो गये तैयार।
राजी गुरु को देख मिला तुमको सुख अपार॥ गुरुदेव... ॥15॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि सुख रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

22 जुलाई आपने मुनि वेश धर लिया।
व्रत में भी महाव्रत को तुमने प्राप्त कर लिया॥
गुरुदेव गुप्तिनंदी का हम कर रहे विधान।
हे ज्ञानसूर्य ! आपको प्रणाम है प्रणाम॥16॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि महाव्रत रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा हुई रोहतक नगर में भव्य आपकी।
दीक्षा में भीड़ भक्तों की आयी अपार थी॥ गुरुदेव...॥17॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि दीक्षा रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राजेन्द्र से अब आप गुप्तिनंदी बन गये।
हरेक भक्त के लिये गुरु पूज्य बन गये॥ गुरुदेव...॥18॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि संज्ञा रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथु गुरु ने दीक्षा दी गुरुदेव आपको।
गुरुदेव कनकनंदी ने शिक्षा दी आपको॥ गुरुदेव...॥19॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि शिष्य रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु ज्ञान ध्यान साधना में लीन हो गये।
हर एक कला में गुरु प्रवीण हो गये॥ गुरुदेव...॥20॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि साधना रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बच्चों की तरह हर गुरु के पास में पढ़े।
चारों ही अनुयोग को श्रद्धा से नित पढ़े॥ गुरुदेव...॥21॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि स्वाध्याय रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चामर छंद)

आप ज्ञानवान हो, व आप दानवान हो।
आप हो महाव्रती, सुधर्म ज्ञान दान दो॥
आप धैर्यवान हो, व आप ध्यानवान हो।
श्री मुनीन्द्र गुप्तिनंदि को, सदा प्रणाम हो॥22॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि अनेक गुण रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप तेजवान हो, व आप दीप्यवान हो।
आप शक्तिवान हो, व आप भक्तिवान हो।।
आप सूर्यवान हो, व आप चंद्रवान हो।
आप पुण्यवान हो, व आप भाग्यवान हो।।23।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि पुण्य रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही महान् हो, व आप ही विधान हो।
आप कीर्तिवान हो, व आप नीतिवान हो।।
धर्म में प्रधान आप, धर्म तीर्थ शान हो।
आप हो महाकवी, महान् काव्य दान दो।।24।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि धर्मतीर्थ रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप आर्ष मार्ग के, जला रहे प्रदीप हो।
आप देव भक्ति के, सुना रहे सुगीत हो।।
पाप ताप नाश हो, सुशांति सौख्य प्राप्त हो।
ना मिला अनादि से, वही सुमोक्ष प्राप्त हो।।25।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि प्रदीप रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

जहाँ-जहाँ भी गुरुवर जायें, संस्कारों का दीप जलायें।
आर्ष मार्ग की राह बतायें, जिनवाणी के सूत्र सिखायें।।
ये विधान हम करें करायें, गुरुवर की गुण गाथा गायें।
गुप्तिनंदी गुरुवर को ध्यायें, सुन्दर-सुन्दर द्रव्य चढ़ायें।।26।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि संस्कार रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाकवि गुरुवर कहलाते, पूजन भजन विधान बनाते।
काव्य गोष्ठी संगीत सुनाते, काव्य कथा अतिश्रेष्ठ सुनाते।। ये विधान..।।27।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि महाकवि रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर कंठ जनप्रिय गुरु वाणी, सुनकर समझे सारे प्राणी।
आगम चक्खु आप कहाते, गुरुवर आगम खोल बताते॥
ये विधान हम करें कराये, गुरुवर की गुण गाथा गायें।
गुप्तिनंदी गुरुवर को ध्यायें, सुन्दर-सुन्दर द्रव्य चढ़ायें॥38॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि आगम चक्षु रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ अनुयोगों के तुम ज्ञाता, भक्तों के हो ज्ञान प्रदाता।
मंत्र सुनाकर कष्ट मिटाते, प्रभु भक्ति का मार्ग बताते॥ ये विधान..॥29॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि मंत्र रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु भक्ति तुम श्रेष्ठ कराते, कार्य सिद्धी के सूत्र बताते।
शुभ मुहूर्त में कार्य कराते, गुरुवर ज्योतिर्विद कहलाते॥ ये विधान..॥30॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि ज्योतिर्विद रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मंदिर या संत भवन हो, वास्तु शास्त्र से नित्य चमन हो।
वास्तु शिल्प से गुरु बनवाते, भव्य सफलता उसमें पाते॥ ये विधान..॥31॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि वास्तुविद् रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक या विधान हो, शुभ मुहूर्त उसमें प्रधान हो।
बिम्ब प्रतिष्ठा भूमि पूजन, कभी न आये उसमें अड़चन॥ ये विधान..॥32॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि प्रतिष्ठा रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छंद)

श्री कुंथु सूरि गुरुराया, तुम्हें गुप्तिनंदी बनाया।
आचार्य कनकनंदी ने, फिर प्रज्ञायोगी बनाया॥
गुप्तिनंदी गुरुज्ञानी, भजते हैं नाना-नानी[1]।
जिनधर्म सूत्र बतलाते, हम तुमको अर्घ चढ़ाते॥33॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि गुप्ति प्रज्ञा रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. छोटे बच्चे।

कवितायें गुरु की प्यारी, है सावधान फुलवारी।
कविहृदय महापद पाया, बड़नगर बड़ा हर्षाया।।
गुप्तिनंदी गुरुज्ञानी, भजते हैं नाना-नानी।
जिनधर्म सूत्र बतलाते, हम तुमको अर्घ चढ़ाते।।34।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि काव्य रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगीन्द्र सिन्धु ने आकर, बोले तुम ज्ञान दिवाकर।
ना रखना ज्ञान छिपाकर, बन जाओ ज्ञान दिवाकर।। गुप्तिनंदी..।।35।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि ज्ञान दिवाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम धर्म क्रांति सूरज हो, हम पायें तुम पग रज को।
गुरु धर्म क्रांति करवाते, सोते को आप जगाते।। गुप्तिनंदी..।।36।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि धर्मक्रांति सूर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा गुरु तुम्हें बुलाये, पदवी दे गुरु हर्षायें।
हे आर्षमार्ग संरक्षक !, तुम बनो धर्म के रक्षक।। गुप्तिनंदी..।।37।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि आर्षमार्ग संरक्षकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहँ श्रावक ना ले जायें, वहाँ गुरुवर निश्चय जायें।
गुरुवर जब उन्हें पढ़ायें, वे धर्म मार्ग अपनायें ।। गुप्तिनंदी..।।38।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि धर्म आकर्षकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक संस्कार उन्नायक, गुरु नाम बड़ा सुख दायक।
मौजी बंधन करवाते, भक्तों का भाग्य जगाते।। गुप्तिनंदी..।।39।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि श्रावक संस्कार उन्नायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम महाकवि पद धारी, कई ग्रन्थ लिखे मनहारी।
हे अंजनगिरी उद्धारक !, सब भक्तों के हो तारक।। गुप्तिनंदी..।।40।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि तीर्थोद्धारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

करते धर्म प्रभावना, गुप्तिनंदी गुरुदेव।
गुरुवर के व्यवहार से, जुड़ते भक्त सदैव॥
गुप्तिनंदी गुरुदेव का, है विधान सुखकार।
जो श्रद्धा से नित करे, उसकी हो जयकार॥41॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि धर्मप्रभावकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे गुरु पग पायले, भाग्यवान कहलाय।
आप भक्त के भक्ति से, कार्य सिद्ध हो जाय॥ गुप्तिनंदी... ॥42॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि कार्यसिद्धि रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवग्रह शांति विधान भी, रचना आप विशेष।
इस विधान से भक्त जन, मेटें कष्ट अशेष॥ गुप्तिनंदी... ॥43॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि सृजन रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कोई बीमार हो, उसको मंत्र सुनाय।
रोग मुक्त वो हो सके, ऐसा मार्ग दिखाय॥ गुप्तिनंदी... ॥44॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि रोग निवारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीछी जिसके सिर लगे, धन्य वही हो जाय।
जिसको जिसकी चाह है, उसको वो मिल जाय।॥ गुप्तिनंदी... ॥45॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि आशीष रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नगर नागपुर भेंट दे, पदवी एक प्रधान।
तुम वात्सल्य सिंधु गुरु, हो समता गुणखान॥ गुप्तिनंदी... ॥46॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि वात्सल्य सिंधु रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नगर औरंगाबाद में, किये अनेकों कार्य।
ज्ञानमूर्ति तुम ज्ञानविद, जपते जप अनिवार्य॥ गुप्तिनंदी... ॥47॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि ज्ञानविद्, धर्मतीर्थ प्रवर्तक, विधान मार्तण्ड, जैन संस्कृति रक्षक, ज्ञानमूर्ति रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्याख्यान वाचस्पति, धर्म प्रभावक आप।
आकर्षक प्रवचन करें, हरते जग संताप॥ गुप्तिनंदी... ॥48॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि व्याख्यान वाचस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

श्री गुरुवर छत्तीस मूलगुण को धरें।
हम पूर्णार्घ चढ़ा उनके सद्गुण वरें।।
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी की अर्चना।
गुरु पूजन से मिटे सर्व दुःख वंचना।।

ॐ ह्रीं श्री परम पूज्य प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य, ज्ञान दिवाकर, धर्मक्रांति सूर्य, व्याख्यान वाचस्पति, अंजनगिरी उद्धारक, धर्मतीर्थ प्रणेता, वात्सल्य सिंधु, ज्ञानमूर्ति आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव चरणेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांति पथ पर चल रहे, गुप्तिनंदी गुरुराज।**
त्रय धारा जल से करें, पाने सुख का राज।। शांतये शांतिधारा.....

दोहा– **निर्गुंडी उत्पल जुही, कमल केवड़ा फूल।**
अर्पित श्री गुरु चरण में, पाने चरणन् धूल।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र–ॐ हूँ गुप्तिनंदी सूरिभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सखी छंद– गुरु की जयमाला गायें, सुन्दर सी थाल सजायें।
नाना द्रव्यों की थाली, ध्वज श्रीफल नेवज वाली।।

(शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी का जयकार कीजिये।
गुरु नाम मंत्र का सदैव जाप कीजिये।।
कुंथु गुरु के लाल का सुंदर सा प्यारा नाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम।।1।।

है जन्म भूमि आपकी भोपाल नगरिया।
नगरी को छोड़ आप चले मोक्ष डगरिया।।
माता–पिता ने आपका राजेन्द्र रखा नाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम।।2।।

कुंथु गुरु के पास में ली आपने दीक्षा।
गुरु कनकनन्दी जी से ली है ज्ञान की शिक्षा॥
मुनि से बने आचार्य आप गोम्मटेश[1] धाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥3॥

पूजन भजन विधान कवितायें बनायें।
जिनभक्त को जिनभक्ति में गुरुदेव लगायें॥
हर एक विषय का विशेष आपको है ज्ञान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥4॥

सब कर्म-कष्ट-रोग हरे रत्नत्रय विधान।
धन-धान्य से पूरण करें गणधर वलय विधान॥
सुख-शांति विद्या ऋद्धि देवें चालीसा प्रधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥5॥

श्री विजय पताका त्रिकाल चौबीसी विधान।
श्री तीस चौबीसी नवग्रह शांति का विधान।
जिन पंचकल्याणक व विद्या प्राप्ति का विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥6॥

है सर्वकार्य सिद्धी व श्रुतदेवि का विधान।
जिनदेव के विधान हैं कविता में सावधान॥
इत्यादि गुरुदेव ने लिखे सरल विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥7॥

धन धान्य से पूरण करें गुरुदेव का विधान।
हर भक्त के दुःख कष्ट हरे आपका विधान॥
सद्ज्ञान ऋद्धि-सिद्धि देवें आपका विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥8॥

1. गोम्मटगिरी, इन्दौर।

गुरुवर जहाँ चरण धरें वो भूमि तीर्थ है।
गुरुवर की प्रेरणा से बना धर्म तीर्थ है।।
भक्ति से 'आस्था' करें गुरुदेव का गुणगान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य, निर्यापकत्व, वात्सल्य सिंधु, प्रवर्तक, कल्याण कल्पतरु, विश्व चिंतामणि आर्षमार्ग संरक्षक, श्रावक संस्कार उन्नायक, कथाविद्, विधान मार्तण्ड, धर्मक्रांति सूर्य, धर्मतीर्थ प्रणेता, अंजनगिरी उद्धारक, कविहृदय, ज्ञानविद् महाकवि आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्रद्धा से 'आस्था' नमे, जोड़े दोनों हाथ।
गुरु चरणों में विनय से, सदा झुकाये माथ।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज - एके मोक्ष दरवाजे तंबु...)

कंचन थाल में घृत के जगमग दीप जले।
गुप्तिनंदी गुरु की आरती करने चले।।

हो ज्ञान दिवाकर, गुरु धर्म प्रभाकर-2
प्रज्ञायोगी से प्रज्ञा ज्योति पाने चले।। गुप्तिनंदी...।।1।।

गुरुवर तेरी वाणी, जैसे हो माँ जिनवाणी-2
गुरुवाणी का अमृत दिन-रात मिले।। गुप्तिनंदी...।।2।।

आरती करके गुरु की, हम अपना ज्ञान बढ़ाये-2
हर भक्त को गुरुवर तुमसे ज्ञान मिले।। गुप्तिनंदी...।।3।।

ज्ञानी ध्यानी गुरुवर, सन्मार्ग बतायें-2
सर्व विषयों की शिक्षा गुरुवर तुमसे मिले।। गुप्तिनंदी...।।4।।

गुरुवर तेरी सेवा, देती है सच्ची मेवा-2
करे 'आस्था' गुरु पे सुख-शांति मिले।।
गुप्तिनंदी गुरु की आरती करने चले।। गुप्तिनंदी...।।5।।

***

आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव का चालीसा

दोहा- चौबीसों जिनराज का, करें सतत् गुणगान।
परमेष्ठी पाँचों प्रभू, श्रद्धा के स्थान।।1।।
जिनवाणी माँ को नमन, ज्ञान ज्योति मिल जाय।
गुप्तिनंदी गुरु का पढ़ें, चालीसा सुखदाय।।2।।

(चौपाई)

जय-जय श्री गुरुदेव हमारे, गुप्तिनंदी हम सबको प्यारे।
ऐसे गुरु को शीश झुकायें, उनका हम चालीसा गायें।।1।।
श्री भोपाल नगर के तारे, कोमलचंद के राज दुलारे।
लाल त्रिवेणी के मनहारे, दो बहनें दो भाई तुम्हारे।।2।।
इक अगस्त को जन्म लिया था, सबको अति आनंद दिया था।
उल्टे जन्मे गुरुवर प्यारे, भाग्यवान कुलदीपक न्यारे।।3।।
नानाजी तुम भविष बतायें, कहे शिशु यह नाम कमाये।
सबके दिल पर राज करेगा, जग इसको राजेन्द्र कहेगा।।4।।
तुम बचपन से मंदिर जाते, जैन पाठशाला भी जाते।
जिन दर्शन का नियम निभाते, पुरस्कार पूजा में पाते।।5।।
तुमने अच्छी शिक्षा पाई, विद्यालय में करी पढ़ाई।
आर्केस्ट्रा में गीत सुनाते, एन.सी.सी. कैम्पों में जाते।।6।।
धर्म कार्य में रहते आगे, इससे भाग्य आपका जागे।
अपनी प्रतिभा स्वयं बढ़ाते, कविता लिखते भजन सुनाते।।7।।
क्षुल्लक सन्मति सागर आये, नगर भोपाल शिविर लगवायें।
तब भोपाल बना शिविरार्थी, उसमें तुम अग्रिम विद्यार्थी।।8।।
बाल उमर में विरक्ति जागी, बने आप गुरु पद अनुरागी।
नगर छोड़ तुम गुरु संग आये, पूज्य पिता पर घर ले जाये।।9।।
मुनि बन सन्मति गुरु फिर आये, अब वे चातुर्मास रचायें।
तब तुमने बिल्कुल घर छोड़ा, मोक्ष मार्ग से नाता जोड़ा।।10।।

सन्मति सागर राह बतायें, तुम्हें कुंथु गुरु तक पहुँचायें।
तुमने जब गुरु दर्शन पाये, प्रेम संघ का तुम्हें लुभाये॥11॥
कनक गुरु की करके सेवा, शीघ्र मिला भक्ति का मेवा।
कुंथु गुरु से दीक्षा पायी, रोहतक दीक्षा भूमि कहायी॥12॥
दीक्षा ली बाईस जुलाई, गुप्तिनंदी मुनि संज्ञा पायी।
शिक्षा में अब चित्त लगाया, ज्ञान साधना को अपनाया॥13॥
कनकनंदी गुरु ज्ञान प्रदाता, प्रज्ञायोगी पदवी दाता।
पूजन भजन विधान बनायें, कविता मुक्तक सहज बनायें॥14॥
श्रुत पंचम सूरी पद पाया, गोम्मटगिरी[1] में उत्सव छाया।
पंचकल्याणक श्रेष्ठ करायें, सुखद भक्ति का मार्ग बतायें॥15॥
दशलक्षण में शिविर लगाये, श्रावक में संस्कार जगायें।
मौंजी बंधन आप करायें, सबका उज्ज्वल भाग्य बनायें॥16॥
प्रतिभाओं के आप धनी हैं, सर्व कला में आप गुणी हैं।
दुःखियों की नित व्यथा मिटायें, भक्ति का इक मार्ग दिखायें॥17॥
नवग्रह आदि विधान करायें, सब भक्तों के कष्ट मिटायें।
भक्त सभी इच्छित फल पायें, उनको सम्यक् राह बतायें॥18॥
रोगी को जब मंत्र सुनायें, वो निरोग हो तव गुण गायें।
जिसके सर पीछी लग जाये, उसके तो दिन ही फिर जाये॥19॥
विद्यार्थी प्रज्ञा को पाये, पुत्र हीन सुत कन्या पाये।
घर दुकान धन मिले प्रतिष्ठा, जो रखते गुरुवर पर निष्ठा॥20॥
श्रद्धा से हम भक्ति रचायें, तव समान बन मुक्ति पायें।
चालीसा गुरुवर का गायें, 'आस्था' से सुख-शांति पायें॥21॥

दोहा- गुप्तिनंदी गुरुदेव का, चालीसा सुखकार।
गुरुवर के आशीष से, मिलती शांति अपार॥1॥
भक्ति से हम नित पढ़ें, चालीस दिन ये पाठ।
'आस्था' से जप मंत्र को, पायें उत्तम ठाठ॥2॥

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रूँ गुप्तिनंदी सूरिभ्यो नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

1. गोम्मट गिरी, इन्दौर

सर्व विधान प्रशस्ति

(दोहा)

आदि वीर चौबीस जिन, परमेष्ठी भगवान।
बाहुबली श्री सरस्वती, गुरु करते कल्याण॥1॥
महावीर कुंथु कनक, नमन सर्व गुरुराय।
गुप्तिनंदी गुरुदेव को, मन-वच-तन से ध्याय॥2॥
गुप्तिनंदी गुरुदेव ने, लिखे अनेक विधान।
अजित वासु मुनि नेमि जिन, सुन्दर भव्य विधान॥3॥
बीस प्रभु संग बाहुबली, लक्ष्मी धर्म विधान।
गुप्तिनंदी गुरुदेव का, इसमें पूर्ण विधान॥4॥
सब विधान सुख शांति दे, सबके कष्ट मिटाय।
श्रद्धा से प्रभु को भजें, आस्था मोक्ष दिलाय॥5॥
अल्प समय में बन गये, प्रभु के सर्व विधान।
करें करावें भक्त सब, पावें मोक्ष विमान॥6॥
गुप्तिनंदी गुरु ने किया, संपादन का कार्य।
ध्यान करें प्रभु का गुरु, श्रद्धा मन में धार्य॥7॥
जब तक सूरज चाँद है, तब तक प्रभु के नाम।
जब तक प्रभु के नाम हैं, होते रहे विधान॥8॥
शब्द छंद का ज्ञान ना, ना छंदों का ज्ञान।
प्रभु भक्ति के वश लिखा, पाने सम्यक् ज्ञान॥9॥
रहे सदा जिनदेव वा, आगम पर श्रद्धान।
देव-शास्त्र-गुरु को सदा, 'आस्था' करे प्रणाम॥10॥

॥ इति अलम्॥

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर,

गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्छेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे....... प्रान्ते–नगरे...... मासानांमासे......मासे....... पक्षे....... तिथौ........ वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छ्वास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी।।1।।

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर।।2।।

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा।।3।।

छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी।।4।।

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु शांति दिलाओ॥5॥

पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)
(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥

जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥

अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हो शब्द॥3॥

मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)
(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पोस्ट कचनेर गट नं. 11-12, जिला संभाजी नगर (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ष संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री बृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री बृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री नवग्रह शान्ति विधान (समुच्चय)
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री सर्व सिद्धि (पंच परमेष्ठी) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर (चिंतामणि पार्श्वनाथ) विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री सहस्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति-बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. श्री दीपावली पूजन (मंत्र-यंत्र-तंत्र संग्रह)
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)
62. आचार्य शांतिसागर विधान
63. श्री सिद्धचक्र विधान